

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर

AMARASINHAWIRACHITA

AMARAKOSH

WITNESS
HINDI ASSOCIATION

PANDIT RAVIDATT SHASTRI

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर
CORRECTED AND ENLARGED

BY

PT. RAMESHWAR BHATT

HEAD TANDIT AGRA COLLEGE

PRINTED AND PUBLISHED

BY

GANGAVISHNU SHRIKRISHNADASS

PROPRIETOR "LAXMI VENKATESHWAR" PRESS

KALYAN-BOMBAY.

1905

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

महाकव्यमरसिंहेन विरचितः

अमरकोशः । ~~१५२~~

रोहतकप्रदेशान्तर्गत-बेरीप्रामनिवासि-पाण्डित
रविदत्तशास्त्रिकृतभाषाटीकासहितः ।

स च

आगगनगरस्थमुख्यपाठशालीयप्रथमसस्कृताध्यापक
पाण्डितरामेश्वरभट्टेन संशोधितः ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णुना
स्वकीये ' लक्ष्मीविकटेश्वर ' मुद्रणालये
मुद्रित प्रकाशितश्च ।

तृतीयावृत्तिः ।

शके १८२२, सवत् १९६४

कल्याण-मुंबई.

राजिहरी सव हम् यन्त्राधिकारीने मपने स्वार्थीन स्वत्वा दे

भूमिका.



विदित हो कि आज दिन अमरकोश छोटे और बड़े सब पण्डितोंके हाथका आभूषण हो रहा है। व्याकरण पढ़कर इसके बिना क्षणमात्र कार्य नहीं चल सकता। मैदिनी आदि अन्य कोशोंके होनेपरभी इसहीकी मायता क्यों ? कारण जो सूक्ष्म और सरल रीति पाणि यादि व्याकरणसे सिद्ध शब्दोंकी इसमें है सो अन्यत्र नहीं इसी हेतु इसकी मायता सर्वोपरि हो रही है।

इस कोशके कर्ता कवि अमरसिंहजी है। अत एव यह अमरकोशके नामसे प्रसिद्ध है और इसमें तीन काण्ड हैं। कवि अमरसिंहका होना विक्रमादित्यके समयमें सिद्ध होता है क्योंकि वे उक्त महाराजकी समाके नगरत्नोंमें गिने जाते थे। यह बात कवि क्षीरोमणि कालिदासकृत ज्योतिर्विदाभरणके श्लोकसे प्रमाणित होती है। यथा,—

“ धन्वन्तरि क्षपणकोऽमरसिंहशकुवेतालमघटकर्परकालिदासा ॥

रयातो वराहमिहिरो नृपते सभार्यारत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य ॥ १ ॥

अथात्-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेतालम, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि ये विक्रमादित्यकी समाके नव रत्न हैं ॥ १ ॥ ”

श्रोत्रपरपरासे यहभा सुना जाता है कि अमरसिंह बौद्धमतवलम्बी थे। उन्होंने अपने कोशमें भगलाचरणको एक नवीन रीतिपर लिखकर और स्वर्ग आदिके २४ मुख्य श्लोक लिखकर अन्य देवताओंके होतेभी इन्होंने बुद्धके नामकीही अग्रणी किया है इससे उनका बौद्ध होना स्पष्ट दीखता है। और कोई कोई यहभी निश्चित करते हैं कि इनके बौद्ध होनेका घणन शकरीदिगिजयमें है।

सरकृतमें जो वाचस्पत्यादि बड़े २ कोश हैं वे केवल पण्डित होनेपर काममें आते हैं। विद्यार्थीकी दृष्टात्में उपयोगी नहीं। उस अस्थानमें तो अमरकोशही अधिक लाभदायक है। क्यों कि श्लोकबद्ध होनेसे जितना और जो कुछ वे अपनी बाल्या ज्ञानम कण्ठ कर लेते हैं और फिर गुरुमुखसे अर्थ समझ लेते हैं तो उनके ज्ञान पर्यन्त फटामही रहता है। जहाँ जहाँ पण्डितयोग विद्यमान है वहाँ विद्यार्थीका पाठ सुगम रीतिसे हो सकता है परन्तु ग्रामोंमें कि जहाँ पण्डितोंका अभाव है वहाँ विद्यार्थीको अर्थ समझनेके लिये बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है।

अमरकोशकी पादचन्द्रिका, रामाश्रमी, वाच्यसुधा, सारसुन्दरी आदि अनेक टीका हैं परन्तु वे सरकृतमें होनेसे पण्डितोंकेही काममें आ सकती हैं उनसे विद्यार्थीको लाभ नहीं पहुँच सकता, अत एव ऐसे अभावको दूर करनेके लिये श्रीयुक्त गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी जो परोपकारके लिये दत्तचित्त और कटिबद्ध हैं। उन्होंने इस कोशकी भाषाटीका बेरीप्रामाणिका १० विदित शास्त्रीजीसे करवाकर छापनेका उपाय किया। उक्त शास्त्रीजीने जो सरलता इसके अनुवादमें कर दी सो सब स्पष्ट है कि आज दिन अनेक भाषाटीका होने परन्तु भी ऐसी सरल सूची भाषाटीका नहीं है।

जब इस टीकाका छापनेका समय आया तो सेठजी गदाशयने इसके विषयमें

मुझसेभी सम्मति ली और मेरे अवलोकनार्थ वा संशोधनार्थ भेज दी । इसकी उत्तमता देखनेपरभी मुझको इसमें कुछ अधिक तारतम्य दीख पडा और कहीं अर्थांशमें ऐसे संस्कृत शब्द दीख पड़े कि जिनका अर्थ बालकोंकी समझमें आना कठिन था अत एव मैंने उक्त सेठजीकी अनुमतिसे इसके विस्तारको कुछ न्यून किया । और इसके बदले लिंगसकेत बडा दिया और आखिरमें गुणेश काशीनाथ काळे इनकी बनाई हुई अमरकोशस्थ-शब्दानुक्रमणिका जोड दी है । इससे पुस्तकमें विषयभी अधिक हो गया और मौल्यभी अन्य छोपेकी पुस्तकोसे इतना अधिक नहीं हुआ कि विद्यार्थियोंको लेनेमें कुछ कष्टकल्पना करनी पडे ।

- यदि यथार्थमें देखा जाय तो पण्डितके लिये लिंगज्ञानही अधिक कठिन है सो वह अमरकोश पढते समय या तो गुरुमुखसे अर्थ सुननेपर समझमें बैठ जाता है और या लोग व्याकरणका बोध होनेपर कोशनियमके अनुसार स्वयं जान लेते हैं परन्तु साधारण देखनेमें बहुतसे लोगोंको सदेहमें पडना पडता है । कारण अमरसिंहजीन जो लिंगव्यवहार जताया है सो बडी चतुरता की है । थोड़ेसे लेखमेंही बहुतसा काम सिद्ध कर दिया है । ज १ जिसके मध्यमें वा अन्तमें " अर्द्धा, त्रिषु वा पुत्र-पुंसकम् " आदि लिख दिया है वहाँ तो स्पष्टही है । परन्तु अभी यह बात इस योग्य न हुई कि विद्यार्थियोंको बाल्यावस्थासेही नामके ज्ञान होनेके साथही सब शब्दोंका लिंगव्यवहारभी चित्तमें बैठता हुआ चला जाय कि जिससे बडे होनेपर उनको लिंगज्ञानके लिये वारंवार कोश नहीं खखोलने पडे । यदि टीकामें संस्कृतके शब्द विभक्त्यनुसार धरे जाय तो व्याकरणके बोधसे शब्दमें प्रत्येक लिंगकी कल्पना हो सकती है । परन्तु भाषामें विभक्तिहीन शब्दोंसे कदापि यह ज्ञान नहीं हो सक्ता कि अमुक शब्द अमुक लिंग है अत एव मैंने विद्यार्थियोंके उपकारार्थ और उक्त सेठजीकी गुणग्राहकतासे यहभी भार अपने ऊपर लिया कि कोई शब्द ऐसा न छोडा कि जिसका लिंगज्ञान इस भाषाटीकासे न हो । कुछ यह बात नहीं है कि अमरसिंहजीने लिंगज्ञानका नियम न लिखा हो । उन्होंने कोशके आरभमें लिखकर तृतीयकाँडके पंचम वर्गमेंभी स्पष्ट किया है परंतु जो कुछ है सब उनहीके लिये है कि जिनको व्याकरणके प्रकृतिप्रत्ययका यथार्थ ज्ञान है । अत एव भाषामें प्रत्येक शब्दका लिंग आगेके नियमोंके अनुसार पाठकोको मिलेगा और इतने लिखनेपरभी जिनको अधिक शंका हो वे समय पाकर किसी विद्वान्से पूछकर अपनी शंका दूर करें । जहाँतक हुआ है कोई बात उठा तो धरी नहीं है ।

अंतमें पाठकोसे सविनय निवेदन है कि जिन शब्दोंका लिंग अधिक बढ़ाया है वह सब बडे २ वाचस्पत्यादि कोशोंकी सहायतासे सावधानतापूर्वक लिखा है । इस-प्राभी जहाँ कहीं भ्रमादिदोषसे रह गया हो अथवा यंत्रदोषसे कुछका कुछ छप गया हो तो सज्जनजन उसको शोधकर मुझे कृतार्थ करें ।

लिङ्गादिज्ञानके लिये आवश्यकीय नियमः



१ प्रत्येक नामको जुदा २ दिखलानेके लिये नामोंके बीचमें ऐसा () चिह्न जर दिया है ।

२ जहाँ वहाँ अर्थाशमे एक शब्दका पर्याय शब्द दिया है अथवा इतन्त नान्त शब्दोंका भेद लिखा है वा मूलक अतिरिक्त लिङ्गव्यवहार स्पष्ट किया है अथवा कहीं कुछ अधिक विशेषता दिखाई है वह सब () इस प्रकारके कोष्ठकमें लिखा है ।

३ जहाँ मूलमें लिंगका विषय आया है जैसे " पुत्रपुत्रम् " आदि वहाँ ती भाषामें स्पष्टरीतिसे लिख दिया है कि अमुक शब्द अमुक लिंगी है परन्तु मूलसे अधिक जो लिखा है वहाँ पुँल्लिङ्गके लिये (पु०), स्त्रीलिङ्गके लिये (स्त्री०) नपुमकालिङ्गके लिये (न०) और त्रिलिङ्गोंके लिये (त्रि०) ऐसे स्वरुत कर दिये हैं ।

४ जहाँ देखा है कि बहुतसे शब्द एकही लिंगके चले गये ह वह प्रथम शब्दके आरम्भमें ऐसा लिख दिया है कि आगेके शब्द अमुक लिंगी है और अमुक शब्दतक है अथवा शब्दोंके अतमें दे दिया है कि यहाँतक अमुक लिंगी शब्द हुए और जहाँ कइ शब्द एकही अर्थके ह और उनके लिंगमें भेद है ती उन शब्दोंके पासही लिंगसकेत जर दिये गये ह ।

५ नानावर्गमें इतना ध्यान रहे कि एक - शब्द अनेक शब्दोंका वाकी ह किन्तु वे शब्द पीछेके काण्डोंमें ही गये हैं और स्थल २ पर उनका लिंगभी जताया गया है अन एव उन्हींके अनुसार अलगनिश्चय जानना । जहाँतक हुआ है लिखभी दिया गया है ।

रामश्वरभट्ट,

हेड पण्डित आगकालिज,

पश्चिमोत्तरा देश.

अमरकोशस्य वर्गानुक्रमणिका.

वर्गाङ्काः	वर्गनाम.	पृष्ठाङ्काः	मूलश्लो०	प्र० श्लो०
	प्रथमकाण्डम्.	१	२८०॥	१९
०	मङ्गलाचरणम्	१	१	०
०	प्रस्तावना	१	१	०
०	परिभाषा	२	३	०
१	स्वर्गवर्गः	४	६९॥	६॥
२	व्योमवर्गः	१५	२	॥
३	दिग्बर्गः	१६	३५	४
४	कालवर्गः	२२	३१	१॥
५	धीवर्गः	२९	१७	१
६	शब्दादिवर्गः	३२	२५॥	२
७	नाटयवर्गः	३७	३८	१॥
८	पातालभोगिवर्गः	४५	११	१॥
९	नरकवर्गः	४७	३॥	०
१०	वारिवर्गः	४८	४३	॥
	द्वितीयकाण्डम्.	५७	७३३॥	११॥
१	भूमिवर्गः	५७	१८	२
२	पुत्रवर्गः	६०	२०	॥
३	शैलवर्गः	६४	८	॥
४	वनोपनिवर्गः	६६	१६९॥	०
५	सिंहादिवर्गः	९४	४३	२॥
६	प्रतुष्यवर्गः	१०२	१३९॥	१
७	नद्रवर्गः	१२९	५८	४
८	क्षत्रियवर्गः	१४०	११९॥	०
९	पैशयवर्गः	१६२	१११	१
१०	शूद्रवर्गः	१८३	४७	०
	तृतीयकाण्डम्.	१९२	४८१	८
१	त्रिशोष्यनिघ्नवर्गः	१९२	११२॥	०
२	संकीर्णवर्गः	२११	४२॥	०
३	नानार्थवर्गः	२२०	२५७	८
४	अव्ययवर्गः	२७०	२३	०
५	लिगादिसंघवर्गः	२७४	४६	०
२६			६४९८	३८॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अर्थप्रकाशिकया भाषाटीकया समन्वित-

अमरकोशः ।

प्रथमकाण्डम् ।

श्रीअमरसिंह निवित्रपूर्वक इस ग्रन्थकी समाप्ति और शिष्योंकी शिक्षाके लिये ग्रन्थके आदिमें प्रथम मंगलाचरण करते हैं -

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानया गुणा ।

सेव्यतामक्षयो धीरा स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

अन्वय - भो धीरा । यस्य अगाधस्य ज्ञानदयासिन्धो अनया गुणा (सन्ति), स अक्षय श्रिये अमृताय च (भवति) सेव्यताम् ॥ १ ॥

श्रीमद्ब्रह्मसंहिताय रविदत्तेन धामता ।

नूनमरकोशस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

भाषार्थ - हे धीरपुरुषो ! जिस अत्यन्त गम्भीर ज्ञान और दयाके समुद्रके क्षांति आदि निमल गुण हैं उस अपिनाशीकी सम्पत्ति और मोक्षके लिये आप आराधना करो ॥ १ ॥

प्रस्तावना ।

समाहृत्यान्यतन्त्राणि सक्षिप्तैः प्रतिमस्कृतैः ।

संपूर्णमुच्यते वर्गेर्नामलिङ्गानुशासनम् ॥ २ ॥

अन्वय - अन्यतन्त्राणि समाहृता सक्षिप्तैः प्रतिमस्कृतैः वर्ग सम्पूर्ण नामलिङ्गानुशासनम् (मया) उच्यते ॥ २ ॥

भाषार्थ - नाम और लिङ्गके प्रतिपादन करनेवाले अन्य ग्रन्थोंको एकत्र करके अल्पविस्तारक बहु अर्थवाले और प्रत्येक पदके प्रकृति प्रत्यय आदिके विचारमें जिनमें प्रत्येक पदका मन्त्राग किया गया है ऐसे वर्गोंके द्वारा सम्पूर्ण स्वर इत्यादि नाम और पुरुष आदि लिङ्ग इनके व्युत्पत्तिभिन्नायक शास्त्रों में कहता हूँ ॥ २ ॥

परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित् ।

स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः—प्रायशः रूपभेदेन, कुत्रचित् साहचर्यात्, क्वचित् तद्विशेष-विधेः स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः—इस ग्रन्थमें बहुधा करके रूपभेदसे अर्थात् आकारविशेष करके स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना चाहिये । जैसे—“ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा ” “पिनाकोऽजगवं धनुः” इन श्लोकोंमें रूपभेदसे लक्ष्मीसे पद्माशब्दतक स्त्रीलिंग है । पिनाकः यह पुँल्लिङ्ग है, अजगव यह नपुंसकलिंग है । तथा कहीं कहीं साहचर्यसे अर्थात् अन्यशब्दके समीप होनेसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे—“ अश्वयुगाश्विनी ” “ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठः ” “ वियद्विष्णुपदम् ” इन श्लोकोंमें अश्विनीकी साहचर्यसे अश्वयुक् शब्द स्त्रीलिंग है । आत्मभू शब्दके साहचर्यसे ब्रह्मा पुँल्लिङ्ग है । विष्णुपदके साहचर्यसे वियतशब्द नपुंसकलिंग है और कहीं लिंगको विशेष उक्तिसे स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग जानना । जैसे—“ भेरी स्त्री दुंदुभिः पुमान् ” “ छीवे त्रिविष्टपम् ” इन श्लोकोंमें स्त्रीपद कहनेसे भेरी स्त्रीलिंग है और पुमान् पद कहनेसे दुंदुभिश्च पुँल्लिङ्ग है । छीव पद कहनेसे त्रिविष्टप स्त्रीव अर्थात् नपुंसकलिंग है ॥ ३ ॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न संकरः ।

कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादत्रे ॥ ४ ॥

अन्वयः—अत्र अनुक्तानां भिन्नलिङ्गानां भेदाख्यानाय द्वन्द्वो न कृतः, (तथा) एकशेषः न कृतः, (तथा) क्रमात् ऋते संकरः अपि न कृतः ॥ ४ ॥

भाषार्थः—इस ग्रन्थमें अनुक्त अर्थात् अव्युत्पादित और भिन्नलिङ्गवाले नामोंका लिंगभेद कहनेके लिये द्वन्द्वसमास नहीं किया गया । जैसे—“ कुलिशं भिदुरं पविः ” इस श्लोकमें ‘ कुलिशभिदुरपवयः ’ ऐसा होता सो नहीं किया । तथा एकशेषभी नहीं किया क्योंकि एकशेषमें जो शेष रहता उसीके लिंगका बोध होता । जैसे—नमः खं श्रावणो नभाः ” इसकी जगह ‘ स्वश्रवणौ तु नमसी ’ ऐसा नहीं किया । तथा क्रमके विना भिन्न लिङ्गोंका संकर अर्थात् मेलभी नहीं किया; क्योंकि साहचर्यसे लिंगके निश्चयका अभाव हो जाता, किन्तु स्त्रीलिंग, पुँल्लिङ्ग, नपुंसकलिंग ये क्रमसे

पडे । जैसे “ स्तव स्तोत्र स्तुतिर्नुति ” इसकी जगह ‘ स्तुति स्तोत्र स्तवो नुति ’ ऐसा नहीं किया । यहाँ बहुधा रूपभेद करके जिन्होंका लिंग कहा, उन भिन्नलिंगवालोंका द्वन्द्व आदि किया है । जैसे—“अप्स रोयक्षरक्षोगन्धर्वकिन्नरा ” “ मातापितरो पितरो ” इन श्लोकोंमें द्वन्द्वमास और एकशेष किया है ॥ ४ ॥

त्रिलिङ्गया त्रिष्विति पद मिथुने तु द्वयोरिति ।

निषिद्धलिङ्ग शेषार्थं त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वय - त्रिपु इति पद त्रिलिङ्गां (ज्ञेयम्), मिथुने तु द्वयो इति पद (ज्ञेयम्), निषिद्धलिङ्ग शेषार्थं (ज्ञेयम्), त्वन्तायादि पूर्वभाक् न (भवति) ॥ ५ ॥

भाषाये - तीनों लिंगोंके कहनेमें त्रिपु यह पद कहा । जैसे—“ त्रिपु स्फुलिङ्गोऽग्निऋण ” यहाँ त्रिपु कहनेसे स्फुलिङ्गशब्द तीनों लिंगवाची है । तथा स्त्रीलिङ्ग पुंलिङ्गके कहनेमें द्वयो यह पद कहा है । जैसे—“वद्रेद्रे योज्ज्वलक्रीली ” यहाँ द्वयो कहनेमें पाठक्रील शब्द पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग हैं तथा निषिद्ध लिंग शेषके लिये जानना । जैसे—“व्योम यान रिमानोऽघ्नी ” यहाँ स्त्रीलिङ्गके निषेधमें विमानशब्द पुंलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग है । तथा तु जिनके अन्तमें हो वह त्यत और न्य जिनके आदिमें हो वह अयादि ये दोनों पूर्वपदके साथ सम्बन्ध करनेगले नहीं होते । जैसे—“ पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती । ” यहाँ नगरी यह त्वत् पद इन्द्राणीसे सम्बन्ध नहीं ग्यता किंतु अमरावतीसे सम्बन्ध ग्यता है । तथा “ नित्या नक्षरताजप्रमप्ययातिशयो भग । ” यहाँ अयादिपद न्यतिशय पूर्वपदको नहीं कहता किन्तु भगका पयाय है ॥ ५ ॥



स्वर्गवर्गः १ ।

स्वरव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवत्रिदशालयाः ।

सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदश विबुधाः सुराः ।

सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥ ७ ॥

आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।

आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

बार्हिर्मुखाः ऋतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।

बृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुपिताऽभास्वरानिलाः ।

महाराजिकराध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

विद्याधरोऽप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकिंनराः ।

पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनेयः ॥ ११ ॥

अथ स्वर्गवर्गः । स्वर, स्वर्ग, नाक, त्रिदिव, त्रिदशालय, सुरलोक, द्यौः, दिव्, त्रिविष्टप ये नव नाम स्वर्गके हे । तहां स्वर अव्यय है । द्यौः, दिव् (स्त्री =) हैं । त्रिविष्टप (न०) है । शेष पुँल्लिग हैं ॥ ६ ॥ अमर, निर्जर, देव, त्रिदश, विबुध, सुर, सुपर्वा (नान्त), सुमनस् (सान्त), त्रिदिवेश, दिवौकस् (सान्त) ॥ ७ ॥ आदितेय, दिविषद्, लेख, अदितिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतांधस् (सान्त) ॥ ८ ॥ बार्हिर्मुख, ऋतुभुज् (जान्त); गीर्वाण, दानवारि, बृन्दारक, दैवत, देवता ये छव्वीस नाम देवताओंके हैं । देवत पुँल्लिग नपुंसक लिग है । देवता स्त्रीलिग है । शेष (पु०) है ॥ ९ ॥ आदित्य १२, विश्व १०, वसु ८, तुपित ३३, आभास्वर ६४, अनिल ४९, महाराजिक २२०, राध्य १२, रुद्र ११ ये सत्र (पु०) नाम गणदेवताके हैं । यहां तुपित आदि गण बौद्ध, पतञ्जलि आदिमें देखने उचित हैं ॥ १० ॥ विद्याधर (पु० जी-मृतवाहन आदि), अप्सरम् (सान्त देवताआंकी स्त्रियां), यक्ष (पु० कृबेर आदि), रक्षस् (सान्त रुकादिके वासी), गन्धर्व (तुवरू आदि), किंनर (अश्वदि मुखवाले मनुष्याकृति), पिशाच (भूतविशेष), गुह्यक (मणिन्द्र आदि), सिद्ध (विश्वावसु आदि), भूत (बालग्रह आदि)

असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः ।

शुक्रशिष्या दितिसुता. पूर्वदेवाः सुरद्विपः ॥ १२ ॥

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।

समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिन' ॥ १३ ॥

पडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ।

मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु य' ॥ १४ ॥

स शाक्यसिंह. सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च स ।

गौतमश्चाकवन्धुश्च मायादेवीसुतश्च स' ॥ १५ ॥

ब्रह्मात्मभू' सुरज्येष्ठ' परमेष्ठी पितामहः ।

हिरण्यगर्भो लोकेश स्वयम्भूश्चतुरानन. ॥ १६ ॥

धाताञ्जयोनिर्दुहिणो विरिञ्चि कमलासन' ।

स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृष्टिधि' ॥ १७ ॥

“ नामिजन्माण्डज पूर्वो निधनः कमलोद्भव ।

सदानदो रजोमूर्ति सत्यको हसवाहन ॥ ”

ये देवयोनिस्तज्ञरु हे । अप्सरस्शब्द स्त्रीलिंग, रक्षस् शब्द (न०) और शेष (पु०) हे ॥ ११ ॥ असुर, दैत्य, दैतेय, दनुज, इन्द्रारि, दानव, शुक्रशिष्य, दितिसुत, पूर्वदेव, सुरद्विप, (पान्त) ये दश प्रालग नाम दैत्या के ह ॥ १२ ॥ सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत् (मत्तन्त), मारजित, लोकजित, जिन ॥ १३ ॥ पडभिज्ञ, दशबल, अद्वयवादिन् (इन्द्रन्त), विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्तृ (ऋकारान्त), मुनि ये अठारह पुंल्लिग नाम बुद्धके ह । शाक्यमुनि ॥ १४ ॥ शाक्य सिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम, अकवधु, मायादेवीसुत ये सात नाम शाक्यमुनिके ह ॥ १५ ॥ ब्रह्मन् (नान्त), आत्मभू, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठिन (इन्द्रन्त), पितामह, हिरण्यगर्भ, लोकेश, स्वयम्भू, चतुरानन ॥ १६ ॥ धातृ (ऋकारान्त), अञ्जयानि, दुहिण, विरिञ्चि, कमलासन, स्रष्टृ (ऋकारान्त), प्रजापति, वेम् (सान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विश्वसृष्टृ (जान्त), विधि ये वाँस और “ नामिजन्मन् (नान्त), अण्डज, पूर्व, निधा, कमलोद्भव, सदानद, रजोमूर्ति, सत्यक, हसवाहन ” ये नव कुल

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः ।

दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः ॥ १८ ॥

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः ।

पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विश्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥

उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ।

पद्मनाभो मधुरिपूर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥

देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः ।

वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥

विश्वंभरः कैटभाजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः ।

पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः ॥ २२ ॥

जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो सुरमर्दनः ।

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २३ ॥

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः ।

रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २४ ॥

नीलाम्बरो गौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली ।

संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २५ ॥

उन्तीस (पु०) नाम ब्रह्माके हैं ॥ १७ ॥ विष्णु, नारायण, कृष्ण, वैकुण्ठ, विष्टरश्रवस् (सान्त), दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू ॥ १८ ॥ दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शार्ङ्गिन् (इन्द्रन्त), विश्वक्सेन, जनार्दन ॥ १९ ॥ उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिप, वासुदेव, त्रिविक्रम ॥ २० ॥ देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमालिन् (इन्द्रन्त), बलिध्वंसिन् (इन्द्रन्त), कंसाराति, अधोक्षज ॥ २१ ॥ विश्वंभर, कैटभाजिन् (तान्त), विधु, श्रीवत्सलाञ्छन, पुराणपुरुष, यज्ञपुरुष, नरकान्तक ॥ २२ ॥ जलशायिन् (इन्द्रन्त), विश्वरूप, मुकुन्द, सुरमर्दन ये चवालीस (पु०) नाम विष्णुके हैं । वसुदेव यह एक (पु०) नाम कृष्णके पिता वसुदेवका है । वही आनकदुन्दुभि हैं । अर्थात् ये दोनों नाम कृष्णके पिताके हैं ॥ २३ ॥ बलभद्र, प्रलम्बघ्न, बलदेव, अच्युताग्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध ॥ २४ ॥ नीलाम्बर, गौहिणेय, तालाङ्क, मुसलिन् (इन्द्रन्त), हलिन् (इन्द्रन्त), संक-

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
 कदर्पो दर्पकोऽनङ्गः काम' पञ्चशर' स्मरः ॥ २६ ॥
 शम्बरारिर्मनसिज' कुसुमेपुरनन्यजः ।
 पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥ २७ ॥
 ब्रह्मसूर्क्षुप्यकेतु' स्यादनिरुद्ध उपापतिः ।
 लक्ष्मी' पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ॥ २८ ॥
 इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ।
 " भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका । "
 शंखो लक्ष्मीपते' पाञ्चजन्यश्चक्र सुदर्शनम् ॥ २९ ॥
 कौमोदकी गदा खड्गो नन्दक' कौस्तुभो मणिः ।
 चाप' शार्ङ्गं सुरोरेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छन' स्मृतम् ॥ ३० ॥
 " अश्वश्च शैव्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।
 साराथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवो वनजो गजः ॥ "

र्पण, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन, बल ये सत्रह (पु०) नाम बलदेवजीके
 है ॥ २५ ॥ मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, दर्पक, अनङ्ग,
 काम, पञ्चशर, स्मर ॥ २६ ॥ शम्बरारि, मनसिज, कुसुमेपु, अनन्यज,
 पुष्पधन्वा (नान्त), रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू ये उन्नीस (पु०)
 नाम कामदेवके है ॥ २७ ॥ ब्रह्मसू, ऋष्यकेतु, अनिरुद्ध, उपापति ये चार
 (पु०) नाम अनिरुद्धके है । लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री, हरि-
 प्रिया ॥ २८ ॥ इन्दिरा, लोकमातृ (ऋकारान्त), मा, क्षीरोदतनया, रमा
 ये ग्यारह और " भार्गवी, लोकजननी, क्षीरसागरकन्यका " ये तीन कुल
 चौदह (स्त्री०) नाम लक्ष्मीके है । पाञ्चजन्य यह एक (पु०) नाम वि-
 ष्णुके शस्त्रका है । सुदर्शन यह एक (पु० न०) नाम विष्णुके चक्रका है
 ॥ २९ ॥ कौमोदकी यह एक (स्त्री०) नाम विष्णुकी गदाका है । न-
 न्दक यह एक (पु०) नाम विष्णुके खड्गका है । कौस्तुभ यह एक (पु०)
 नाम विष्णुकी मणिका है । शार्ङ्ग यह एक (न०) नाम विष्णुके धनुषका
 है । श्रीवत्स यह एक (पु०) नाम विष्णुकी छाताके लाञ्छनका है ॥ ३० ॥
 " शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, बलाहक ये चार (पु०) नाम विष्णुके घोडोंके
 है । दारुन यह एक (पु०) नाम विष्णुके साराथिका है । उद्धव यह एक

गरुत्मान्गरुडस्ताक्षर्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
 नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ॥ ३१ ॥
 शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
 ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ३२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
 मृत्युञ्जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३३ ॥
 उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
 वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥ ३४ ॥
 कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
 हरः स्मरहरो भर्गह्यम्बकास्त्रिपुरान्तकः ॥ ३५ ॥
 गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः ऋतुध्वंसी वृषध्वजः ।
 व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ॥ ३६ ॥
 “ अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः । ”
 कपर्दोऽस्य जटाजूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
 प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३७ ॥

(पु०) नाम विष्णुके मंत्रीका है । वनज यह एक (पु०) नाम विष्णुके
 हाथीका है । ” गरुत्मान् (मत्त्वन्त), गरुड, ताक्षर्य, वैनतेय, खगेश्वर, ना-
 गांतक, विष्णुरथ, सुपर्ण, पन्नगाशन ये नव (पु०) नाम गरुडके हैं ॥ ३१ ॥
 शंभु, ईश, पशुपति, शिव, शूलिन् (इन्नन्त), महेश्वर, ईश्वर, शर्व, ईशान,
 शंकर, चन्द्रशेखर ॥ ३२ ॥ भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्यु-
 ञ्जय, कृत्तिवासस् (सान्त), पिनाकिन् (इन्नन्त), प्रमथाधिप ॥ ३३ ॥ उग्र,
 कपर्दिन् (इन्नन्त), श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपालभृत् (तान्त), वामदेव,
 महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन ॥ ३४ ॥ कृशानुरेतस् (सान्त), सर्वज्ञ,
 धूर्जटि, नीललोहित, हर, स्मरहर, भर्ग, व्यंबक, त्रिपुरान्तक ॥ ३५ ॥
 गंगाधर, अधकरिपु, ऋतुध्वंसिन् (इन्नन्त), वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम,
 स्थाणू, रुद्र, उमापति ये अडतालीस और “ अहिर्बुध्न्य, अष्टमूर्ति, गजारि,
 महानट ” ये चार कुल बावन (पु०) नाम शिवके हैं ॥ ३६ ॥ कपर्द यह एक
 (पु०) नाम शिवजीके जटाजूटका है । पिनाक (पु०), अजगव (न०) ये

“ ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।
 वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त मानरः ॥ ”
 विभूतिभूति ऐश्वर्यमणिमादिकमष्टया ।
 “ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
 प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्व चाष्टसिद्धयः ॥ ”
 उमा कत्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी ॥ ३८ ॥
 शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमगला ।
 अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाभिका ॥ ३९ ॥
 आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।
 विनायको विघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः ॥ ४० ॥
 अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः ।
 कार्तिकेयो महासेन शरजन्मा पटाननः ॥ ४१ ॥
 पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरामिभूर्गुहः ।
 बाहुलेयस्तारकाजिद्विशखः शिखिवाहनः ॥ ४२ ॥

दो नाम शिवजीके धनुषके हे । शिपके पाण्डिपद (सभामें रहनेवाले) प्रमथ
 ऋहाते हे । प्रमथ शब्द (पु०) हे । “ ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्ण
 वी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा ” ये सात (स्त्री०) नाम मातृकावाची हैं
 ॥ ३७ ॥ विभूति (स्त्री०), भूति (स्त्री०), ऐश्वर्य (न०) ये तीन नाम ऐश्वर्य
 वा सिद्धिके ह । “ अणिमन्, महिमन्, गरिमन्, लघिमन् ये चार (नान्त
 पु०) हे । प्राप्ति (स्त्री०), प्राकाम्य, ईशित्व वशित्व ये तीन (न०) हे
 इन भेदोंसे आठ प्रकारकी सिद्धियाँ ह । उमा, कत्यायनी, गौरी, काली,
 हैमवती, ईश्वरी ॥ ३८ ॥ शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमगला,
 अपर्णा, पार्वती, दुर्गा, मृडानी, चण्डिका, अभिका ॥ ३९ ॥ आर्या, दाक्षा
 यणी, गिरिजा, मेनकात्मजा ये इक्कीस (स्त्री०) नाम पार्वतीके हैं । विना
 यक, विघ्नराज, हैमातुर, गणाधिप ॥ ४० ॥ एकदन्त, हेरव, लम्बोदर,
 गजानन ये आठ (पु०) नाम गणेशजीके ह । कार्तिकेय, महासेन, शर
 जन्मन् (नान्त), पटानन ॥ ४१ ॥ पार्वतीनन्दन, स्कन्द, सेनानी, अमिभू,
 गुह, बाहुलेय, तारकाजिद्व (नान्त), विशख, शिखिवाहन ॥ ४२ ॥

षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ।

शृंगी भृंगी रिटिस्तुंटी नन्दिको नन्दिकेश्वरः ॥ ४३ ॥

“ कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चार्चिका । ”

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडौजाः पाकशासनः ।

वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः ॥ ४४ ॥

जिष्णुलेंखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।

सुत्रामा गोत्रभिद्ग्री वासवो वृत्रहा वृषा ॥ ४५ ॥

वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वलारातिः शचीपतिः ।

जम्भेदी हरिहयः स्वाराणमुचिसूदनः ॥ ४६ ॥

संक्रन्दनो दुश्शयवनस्तुराषामेघवाहनः ।

आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया ॥ ४७ ॥

पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती ।

इय उच्चैश्रवाः सूतो मातलिर्नन्दनं वनम् ॥ ४८ ॥

षाण्मातुर, शक्तिधर, कुमार, क्रौञ्चदारण ये सत्रह (पु०) नाम स्वामि-
कार्तिकके हैं । शृङ्गिन्, भृङ्गिन् (इन्नन्त), रिटि, तुंङ्गिन् (इन्नन्त),
नन्दिक, नन्दिकेश्वर ये छः (पु०) नाम नन्दिगणके हैं ॥ ४३ ॥ “कर्म-
मोटी यह एक (स्त्री०) नाम चामुंडाका और चर्ममुंडा यह एक (स्त्री०)
नाम चार्चिकाका है । ” इन्द्र, मरुत्वत् (मत्वन्त), मघवत् (मत्वन्त),
विडौजस् (सान्त), पाकशासन, वृद्धश्रवम् (सान्त), सुनासीर, पुरुहूत,
पुरन्दर ॥ ४४ ॥ जिष्णु, लेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामन् (नान्त),
गोत्रभृत् (तान्त), वज्रिन् (इन्नन्त), वासव, वृत्रहन् (नान्त), वृषन्
(नान्त) ॥ ४५ ॥ वास्तोष्पति, सुरपति, वलाराति, शचीपति, जम्भेदिन्
(इन्नन्त), हरिहय, स्वाराज् (जान्त), नमुचिसूदन ॥ ४६ ॥ संक्रन्दन,
दुश्शयवन, तुरापाह् (हान्त), मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष, ऋभुक्षिन्
(नान्त), ये पतिंस (पु०) नाम इन्द्रके हैं । इन्द्रकी-प्रियाके ॥ ४७ ॥
पुलोमजा, शची, इन्द्राणी ये तीन (स्त्री०) नाम हैं । अमरावती यह एक
(स्त्री०) नाम इन्द्रकी नगरीका है । उच्चैःश्रवस् (सान्त) यह एक
(पु०) नाम इन्द्रके घोड़ेका है । मातलि यह एक (पु०) नाम इन्द्रके सार-
थिक है । नन्दन यह एक (न०) नाम इन्द्रके बागका है ॥ ४८ ॥

स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनि ।
 ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभा ॥ ४९ ॥
 हादिनी वज्रमखी स्यात्कुलिश भिदुर पवि ।
 शतकोटिः स्वरुः शम्भो दम्भोलिरशनिर्द्वयो ॥ ५० ॥
 व्योमयान विमानोऽस्त्री नारदाद्या. सुरर्षय ।
 स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।
 मेरु सुमेरुर्हेमाद्री रत्नमानु सुरालय ॥ ५२ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दार. पारिजातकः ।
 संतान कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥
 सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्व्यापश्चिनीसुती ।
 नासत्यावश्चिनी दत्तावाश्चिनेयौ च ताहुभौ ॥ ५४ ॥

वैजयन्त यह एक (पु०) नाम इन्द्रके महलका है । जयन्त और पाकशासनि
 ये दो (पु०) नाम इन्द्रके पुत्रके हैं । ऐरावत, अभ्रमानग, ऐरावण, अभ्र
 मुवल्लभ ये चार (पु०) नाम इन्द्रके हाथीके हैं ॥ ४९ ॥ हादिनी (स्त्री०),
 वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, शतकोटि, स्वरु, शम्भ, दम्भोलि, अशनि ये दश
 नाम वज्रके हैं । वज्रशब्द (पु० न०) है । अशनिशब्द (पु०) और
 (स्त्री०) है । कुलिश, भिदुर (न०), शेष (पु०) हैं ॥ ५० ॥ व्योम
 यान (न०), विमान ये दो नाम विमानके हैं । विमानशब्द (पु०) और
 (न०) है । नारद, देवल आदि देवताओंमें ऋषि हैं । सुधर्मा, देवसभा ये दो
 (स्त्री०) नाम देवताओंकी सभाके हैं । पीयूष (न०), अमृत (न०), सुधा
 (स्त्री०) ये तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दाकिनी, वियद्गङ्गा, स्वर्णदी, सुर
 दीर्घिका ये चार (स्त्री०) नाम आशाशगणके हैं । मेरु, सुमेरु, हेमाद्री,
 रत्नमानु, सुरालय ये पाँच (पु०) नाम सुमेरुपर्वतके हैं ॥ ५२ ॥ मन्दार,
 पारिजातक, संतान, कल्पवृक्ष, हरिचन्दन ये पाँच (पु०) नाम देवता
 ओंके वृक्षके हैं । हरिचन्दनशब्द (पु० न०) है ॥ ५३ ॥ सनत्कुमार,
 वैधात्र ये दो (पु०) नाम मनसादिदेवके हैं । स्वर्व्या, अश्चिनीसुत, नाम
 रत, अश्चिन, दत्त, आश्चिनेय ये छ (पु०) नाम अश्चिनीसुतके हैं ।
 ये दसल अर्थात् दोनों एकमात्र उत्पन्न हुए हैं, इसलिये इन्द्र पाँचव शब्द

द्वियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
 हाहा हूहृश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवीकसाम् ॥ ५५ ॥
 अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
 कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥
 बर्हिःशुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
 आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः ॥ ५७ ॥
 लोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षाणिः ।
 हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥ ५८ ॥
 सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
 शुचिरपिप्तमौर्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥ ५९ ॥
 वह्नेर्द्रयोर्ज्वालकीलावर्हिर्हेतिः शिखा द्वियाम् ।
 त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः संतापः संज्वरः समौ ॥ ६० ॥
 “ उल्का स्यान्निर्गतज्वाला भूतिर्भसितभस्मनी ।
 क्षारो रक्षा च दावस्तु दवो वनहुताशनः ॥ ”

सर्वदा द्विवचनांत होते हैं ॥ ५४ ॥ अप्सरस्, स्वर्वेश्या ये दो (स्त्री०)
 नाम उर्वशी मेनका आदिके हैं । तहां अप्सरस्शब्द (स्त्री०) बहुवच-
 नांत है । हाहा, हूहृ आदि (पु०) नाम देवताओंके गन्धर्व अर्थात् गा-
 नेवालोंके हैं ॥ ५५ ॥ अग्नि, वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपी-
 टयोनि, ज्वलन, जातवेदस् (सान्त), तनूनपात् (तान्त) ॥ ५६ ॥ बर्हिस्
 (सान्त), शुष्मन् (नान्त), कृष्णवर्त्मन् (नान्त), शोचिष्केश, उष-
 र्बुध, आश्रयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल ॥ ५७ ॥ रोहिताश्व,
 वायुसख, शिखावत् (मत्वन्त), आशुशुक्षाणि, हिरण्येतस् (सान्त),
 हुतभुग् (जान्त), दहन, हव्यवाहन ॥ ५८ ॥ सप्तार्चिस् (सान्त), दमु-
 नस् (सान्त), शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि (पु०), अपिप्त (न०)
 ये चौतीस नाम अग्निके हैं । और्व, वाडव, वडवानल ये तीन (पु०) नाम
 वडवाग्निके हैं ॥ ५९ ॥ ज्वाल, कील, अर्चिस्, हेति, शिखा ये पांच
 नाम अग्निकी शिखाके हैं । ज्वाल और कीलशब्द (पु० स्त्री०) हैं ।
 अर्चिस्शब्द (सान्त स्त्री० न०) है । हेति और शिखाशब्द स्त्रीलिंग हैं ।
 स्फुलिग, अग्निकण ये दो (पु०) नाम अग्निके कणके हैं । स्फुलिगशब्द

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराद् ।
 कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराडचमः ॥ ६१ ॥
 कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।
 राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्त्रप आशरः ॥ ६२ ॥
 रात्रिचरो रात्रिचरः कर्बुरो निकपात्मजः ।
 यातुधानः पुण्यजनो नैऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥
 प्रचेता वरुणः पाशी यादसापतिरप्पतिः ।
 श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥
 पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
 समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणा ॥ ६५ ॥
 नभस्वद्वातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ।
 प्रकम्पनो महावातो ज्ञज्ञावात सवृष्टिकः ॥ ६६ ॥

तीनों लिंगका वाची है । सताप, सञ्चर ये दो (पु०) नाम अग्निके मता पके हैं ॥ ६० ॥ “ उल्का यह एक (स्त्री०) नाम अगारेका है । भूति (स्त्री०), भसित (न०), भस्मन् (नान्त न०), क्षार (पु०), रक्षा (स्त्री०) ये पांच नाम रक्षाके हैं । दान, दध ये दो (पु०) नाम वनाग्निके हैं ।” धर्मराज, पितृपति, समवर्तिन् (इन्नन्त), परेतराज् (जान्त), कृतात्, यमुनाभ्रातृ (ऋकारान्त), शमन, यमराज् (जान्त), यम ॥ ६१ ॥ काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत, अन्तक ये चौदह (पु०) नाम यमके हैं । राक्षस, कौणप, क्रव्याद् (दान्त), क्रयाद्, अस्त्रप, आशर ॥ ६२ ॥ रात्रिचर, रात्रिचर, कर्बुर, निकपात्मज, यातुधान, पुण्यजन, नैऋत, यातु, रक्षस् (सान्त) ये पन्द्रह नाम राक्षसके ह । इनमें यातु और रक्षस् ये दो नाम (न०) शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ६३ ॥ प्रचेत्स् (सान्त), वरुण, पाशिन् (इन्नन्त), यादसापति, अप्पति ये पाच (पु०) नाम वरुणके ह । श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वा (नान्त), सदागति ॥ ६४ ॥ पृषदश्व, गन्धवह, गन्धवाह, अनिल, आशुग, समीर, मारुत, मस्त् (तान्त), जगत्प्राण, समीरण ॥ ६५ ॥ नभस्त् (मत्तन्त), वात, पवन, पवमान, प्रभञ्जन ये बीस (पु०) नाम वायुके हैं । प्रकम्पन, महावात ये दो (पु०) नाम महावायु अर्थात् आर्धाके ह । और जो वृष्टि करके महित हों तो

प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ।
 शरीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ ६७ ॥
 जवोऽथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ।
 सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमानु च ॥ ६८ ॥
 सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ।
 नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः ॥ ६९ ॥
 अतिवेलभृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढनिर्भरम् ।
 तीव्रैकान्तनितान्तानि गाढवाढदृढानि च ॥ ७० ॥
 क्लीबे शीघ्राद्यसत्त्वे स्थात्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ।
 कुबेरद्वयम्बकसखो यक्षराज्-गुह्यकेश्वरः ॥ ७१ ॥
 मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ।
 किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ७२ ॥

उसीको झंझावात कहते हैं यह पुँल्लिग है ॥ ६६ ॥ प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान ये पाँच (पु०) नाम शरीरमें स्थित वायुके हैं । हृदयमें प्राण है, गुदामें अपान है, नाभिमें समान है, कंठमें उदान और सम्पूर्ण शरीरमें व्यान है । रंहस् (सान्त न०), तरस् (सान्त न०), रय (पु०), स्यद (पु०) ॥ ६७ ॥ जव (पु०) ये पाँच नाम वेगके हैं । शीघ्र, त्वरित, लघु, क्षिप्र, अर, द्रुत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविलम्बित, आशु ये ग्यारह (न०) नाम शीघ्रताके हैं ॥ ६८ ॥ सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, अविरत, अनिश, नित्य, अनवरत, अजस्र ये नव (न०) नाम नित्यके हैं । अतिशय (पु०), भर (पु०) ॥ ६९ ॥ अतिवेल, भृश, अत्यर्थ, अतिमात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकांत, नितान्त, गाढ, वाढ, दृढ ये बारह (न०) कुल चौदह नाम अतिशयके हैं ॥ ७० ॥ शीघ्रसे आदि छे दृढपर्यंत शब्द असत्त्व विषे अर्थात् द्रव्यवृत्तिपनेके अभावमें नपुंसकालिग हैं । जैसे— 'शीघ्रं कृतवान्, भृशं मूर्खः, भृशं याति' इन वचनोंमें नपुंसकालिग है और इन शीघ्र आदिकोंके मध्यमें जो सत्त्वगामी द्रव्यवृत्ति हैं वह तीनों लिगवाची हैं । जैसे— 'शीघ्रा धेनुः, शीघ्रो वृषः, शीघ्र गमनम्' इन वचनोंमें (स्त्री० पु० न०) है । कुबेर, द्यंबकसख, यक्षराज (जान्त), गुह्यकेश्वर ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन् (नान्त), धनद, राजराज, धनाधिप, किन्नरेश,

यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदपुण्यजनेश्वरा ।

अस्योद्यानं चैत्ररथ पुत्रस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

कैलासः स्थानमलका पूर्वमानं तु पुष्पकम् ।

स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥

निधिर्ना शेवधिर्भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्गः २ ।

द्योदिवौ द्वे द्वियामभ्र व्योम पुष्करमम्बरम् ।

नमोऽन्तरिक्षं गगनमनन्त सुरवर्त्म खम् ॥ १ ॥

वियद्विष्णुपद वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।

विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् ॥ २ ॥

“तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाविलम्” इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥

चैश्रवण पौलस्त्य, नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष, एकपिंग, ऐलविल, श्रीद, पुण्यजनेश्वर ये सत्रह (पु०) नाम कुबेरके हैं । चैत्ररथ यह एक (न०) नाम कुबेरके बगीचेका है । नलकूबर यह एक (पु०) नाम कुबेरके पुत्रका है ॥ ७३ ॥ कैलास यह एक (पु०) नाम कुबेरके स्थानका है । अलका यह एक (स्त्री०) नाम कुबेरकी पुरीका है । पुष्पकः यह एक (पु० न०) नाम कुबेरके विमानका है । किन्नर, किंपुरुष, तुरगवदन, मयु ये चार (पु०) नाम किन्नरोंके हैं ॥ ७४ ॥ निधि, शेवधि ये दो (पु०) नाम खजानेके हैं । (यहाँ “ ना ” अर्थात् पुंलिंगका काककी आंखकी पुतलीके समान दोनोंमें सम्बन्ध है) पद्म (पु०), शङ्ख (पु०) आदि नाम निधि अर्थात् खजानेके भेदवाची हैं । “ महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ । मुकुन्दकुन्दौ नीलश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ ” महा पद्म, पद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व ये नव (पु०) नाम निधि अर्थात् खजानेके भेद हैं ॥ इति स्वर्गवर्ग ॥ १ ॥

अथ व्योमवर्ग । द्यो, दिव्, अभ्र, व्योमन् (नान्त), पुष्कर, अम्बर, नभस् (सान्त), अन्तरिक्ष, गगन, अनन्त, सुरवर्त्मन् (नान्त), ख ॥ १ ॥ वियत् (तान्त), विष्णुपद, आकाश, विहायस् (सान्त), विहायस, नाक, द्यु ये उन्नीस “ तारापथ (पु०), अन्तरिक्ष (न०), मेघाध्वन् (नान्त पु०), महाविल (न०) ये चार कुल तेईस नाम आकाशके हैं । द्यो और

अथ दिग्बर्गः ३ ।

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।
 प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः ॥ १ ॥
 उत्तरा दिग्दीची स्यात् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।
 “ अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुद्गभवम् ।
 प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ ”
 इन्द्रो वह्निः पितृपतिनैऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥
 कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।
 “ रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्मानुर्भानुजो विधुः ।
 बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥ ”
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।
 करिण्योऽभ्रमुक्कपिलापिगलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥

दिव् शब्द स्त्रीलिंग हैं । आकाश और विहायस् शब्द (पु० न०) हैं ।
 और द्युस् यह अव्यय है शेष (न०) है ॥ २ ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥
 अथ दिग्बर्गः । दिग् (शान्त), ककुम् (भान्त), काष्ठा, आशा,
 हरित (तांत) ये पांच (स्त्री०) नाम दिशाके हैं । वे पूर्व, दक्षिण, प-
 श्चिम इनके प्राची, अवाची, प्रतीची ये क्रमसे (स्त्री०) नाम हैं ॥ १ ॥
 उदीची यह एक (स्त्री०) नाम उत्तर दिशाका है । दिशामें होनेवालेको
 दिश्य कहते हैं और यह तीनों लिंगवाची है । जैसे—‘दिश्यो हस्ती, दिश्या
 हस्तिनी’ इन वचनोंमें हस्तीके साथ दिश्यशब्द पुँल्लिंग है और हस्तिनीके
 साथ दिश्याशब्द स्त्रीलिंग है । “ अवाचीन, उदीचीन, प्रतीचीन, प्राचीन
 ये तीनों लिंगवाची चार नाम दक्षिण, उत्तर, पश्चिम, पूर्व इन चार दिशा-
 ओमें होनेवाले पदार्थके यथाक्रम हैं । ” इन्द्र, वह्निः, पितृपति, नैऋत, वरुण,
 मरुत् (तान्त) ॥ २ ॥ कुबेर, ईश ये आठों (पु०) नाम पूर्व आदि
 दिशाओंके क्रमसे स्वामियोंके हैं ॥ “ रविः, शुक्र, महीसूनु, स्वर्मानु, भानुज,
 विधु, बुध, बृहस्पति ये आठ ग्रहोंके (पु०) नाम क्रमसे पूर्व आदि दिशा-
 ओंके स्वामियोंके हैं । ” ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन ॥ ३ ॥
 पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक ये आठ (पु०) नाम पूर्व आदि दिशाओंके

ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चागना चाञ्जनावती ।
 क्लीवाव्ययं त्वपादिश दिशोर्मध्ये विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥
 अभ्यन्तर त्वन्तराल चक्रवाल तु मण्डलम् ।
 अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्वलाहक ॥ ६ ॥
 धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
 घनजीमूतमुदिरजलमुग्धमयोनयः ॥ ७ ॥
 कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।
 स्तनितं गर्जित मेघनिर्गोपे रसितादि च ॥ ८ ॥
 शपाशतहृदाह्लादिन्यैरावत्प्र क्षणप्रभा ।
 तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि ॥ ९ ॥
 स्फूर्जयुर्वज्रनिर्घापां मेघज्योतिरिरमदः ।
 इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥

क्रमसे दिग्गज अर्थात् दिशाओंको धारण करनेवाला कह । अभ्रसु, क
 पिला, पिगला, अनुपमा ॥ ५ ॥ ताम्रकर्णी, शुभ्रदन्ती अगना, अञ्जना
 वती ये आठ (स्त्री०) नाम दिग्गजोंकी हथिनियों ह । अपदिश,
 विदिक् (ज्ञान्त) ये दो नाम दिशाओंके मध्यमाली दिशाये ह । तहाँ
 अपदिशशब्द (न०) और अव्यय है और विदिक् शब्द (स्त्री-)
 है ॥ ५ ॥ अभ्यन्तर, अन्तराल ये दो (न०) नाम भीतर अन्तर्काशक ह ।
 चक्रवाल, मटल ये दो (न०) नाम मण्डल अर्थात् घेरेक ह । अभ्र (न०)
 मेघ, वारिवाह, स्तनयित्नु, वलाहक ॥ ६ ॥ धाराधर, जलधर, तडित्नु,
 (मतान्त), वारिद, अम्बुभृत् (तान्त), घन, जीमूत, मुदिर, जम्बु
 (चान्त), मयोनयि ये पदक (पु०) नाम मेघके ह ॥ ७ ॥ कादम्बिनी,
 मेघमाला ये दो (स्त्री०) नाम मेघकी पत्निके ह । मेघमें जो दो उसे
 अभ्रिय कहते ह और वह तानों लिंगा है । जैसे-^१ अभ्रिया नाप, अ
 भ्रिय आसार, अभ्रिय जम्म् : इन वाक्योंमें स्त्रीलिंग, पुंलिंग, नपुंसक
 लिंग क्रममें है । स्तनित, गर्जित, रसित आदि ये तीन (स्त्री-) नाम तानके
 गर्जनके ह ॥ ८ ॥ शपा, शतहृदा, ह्लादिनी ऐगती, क्षणप्रभा तडित्
 (तान्त), सौदामनी, विद्युच्चञ्चला, चपला ये द्वा (स्त्री)
 नाम विज्जलके ह ॥ ९ ॥ स्फुरन्तु, द्वात्रिंशत् ये दो (पु०) नाम तानके

वृष्टिर्वर्षं तद्विधातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुर्कणाः स्मृताः ॥ ११ ॥

वर्षोपलस्तु करका मेघच्छन्नेऽङ्घ्रि दुर्दिनम् ।

अन्तर्धा व्यवधा पुंनि त्वन्तर्धिःपवारणम् ॥ १२ ॥

अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।

हिमांशुश्चंद्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदवान्धवः ॥ १३ ॥

विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुगोपधीशो निशापतिः ।

अञ्जो जैवातृकः सोमो ग्लौर्मृगांकः कलानिधिः ॥ १४ ॥

द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

कला तु षोडशा भागो विव्वोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

शब्दके हे । मेघज्योतिस् (सान्त), इरमद ये दो (पु०) नाम मेघकी ज्योतिके हैं । इन्द्रायुध, शक्रधनुस् (सान्त), ऋजुरोहित ये तीन (न०) नाम इन्द्रके धनुषके हैं ॥ १० ॥ वृष्टि (स्त्री०), वर्ष (न०) ये दो नाम वर्षाके हैं । अवग्राह, अवग्रह ये दो (पु०) नाम वर्षाके निरोधके हैं । धारासंपात, आसार ये दो (पु०) नाम निरन्तर वर्षनेके हैं । शीकर यह एक (पु०) नाम जलके छोटे २ कणकोंका है ॥ ११ ॥ वर्षोपल (पु०), करका (स्त्री०) ये दो नाम ओलोंके हैं । दुर्दिन यह एक (न०) नाम मेघसे आच्छादित हुए दिनका है । अन्तर्धा (स्त्री०), व्यवधा (स्त्री०), अन्तर्धि (पु०), अपवारण (न०) ॥ १२ ॥ अपिधान (न०), तिरोधान (न०), पिधान (न०), आच्छादन (न०) ये आठ नाम आच्छादनके हैं । तहां अंतर्धिशब्द पुंल्लिग है । हिमांशु, चन्द्रमस् (सान्त), चन्द्र, इन्दु, कुमुदवान्धव ॥ १३ ॥ विधु, सुधांशु, शुभ्रांशु, ओपधीश, निशापति, अञ्ज, जैवातृक, सोम, ग्लौ, मृगांक, कलानिधि ॥ १४ ॥ द्विजराज, शशधर, नक्षत्रेश, क्षपाकर ये बीस (पु०) नाम चन्द्रमाके हैं । कला यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमाके मण्डलके सोलहवें भागका है । विव्व, मण्डल ये दो नाम विव्वके हैं । तहां विव्वशब्द (पु० न०) है और मण्डलशब्द त्रिलिगी है ॥ १५ ॥ भित्त (न०), शकल, खण्ड, अर्ध ये चार नाम टुकड़ेके हैं ।

कलङ्काङ्गी लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।
 सुपमा परमा शोभा शोभा कान्तिद्युतिश्छविः ॥ १७ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुपारस्तुहिनं हिमम् । ।
 प्रालेय मिहिका चाथ हिमानी हिमसहतिः ॥ १८ ॥
 शीत गुणे तद्वदर्याः सुपीम शिशिरो जड ।
 तुपार' शीतल शीतो हिम सप्तान्यलिङ्गकाः ॥ १९ ॥
 ध्रुव औत्तानपादि स्यादगस्त्य' कुम्भसम्भवः ।
 मैत्रावरुणिरस्यैव लोषामुद्रा सधर्मिणी ॥ २० ॥
 नक्षत्रमृच भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।
 टाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगाश्विनी ॥ २१ ॥

तहाँ शकल और खण्डशब्द (पु० न०) हे । अर्द्धशब्द पुँल्लिग है । जैसे—
 ' कवलस्यार्द्ध खण्ड ' इत्यर्थ । और वाच्यलिगभी हे । जैसे—' अर्धा
 शाटी, अर्ध पट, अर्ध वस्त्रम् ' और समानभागमें अर्द्धशब्द नपुंसकलिग
 है । चाद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये तीन (स्त्री०) नाम चद्रमात्री चाँद
 नीके हे । प्रसाद (पु०), प्रसन्नता (स्त्री०) ये दो नाम निर्मलताके हे
 ॥१६॥ कलक, अक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्मन् (नाँव) लक्षण ये छ नाम
 चिह्नके ह । कलक, अक ये दो (पु०) हे शेष (न०) लिग हे । सु
 पमा यह एक (स्त्री०) नाम उत्तम शोभाका है । शोभा, कान्ति, द्युति,
 छवि ये चार (स्त्री०) नाम कान्तिके ह ॥ १७ ॥ अवश्याय (पु०),
 नीहार (पु०), तुपार (पु०), तुहिन (न०), हिम (न०), प्रालेय
 (न०), मिहिका (स्त्री०) ये सात नाम हिम अर्थात् जाटेके हे । हि
 मानी, हिमसहति ये दो (स्त्री०) नाम बहुत हिमके हे ॥ १८ ॥ शीत
 शब्द गुण अर्थात् स्पर्शविशेषमेही (न०) है, गुणजालेमें नहीं है । सुपीम,
 शिशिर, जट, तुपार, शीतल, शीत, हिम ये सातो नाम शीतगुणवालेके हे।
 अन्यलिग अर्थात् त्रिलिगी हे । इनका लिग विशेष्यके अनुसार होना हे
 ॥१९॥ ध्रुव, औत्तानपादे ये दो (पु०) नाम उत्तानपादके पुत्रके ह ।
 'अगस्त्य, कुम्भसम्भव, मैत्रावरुणि ये तीन (पु०) नाम अगस्त्यमुनिके ह ।
 लोषामुद्रा यह एक (स्त्री) नाम अगस्त्यकी समानधर्मवाली स्त्रीका हे
 ॥२०॥ नक्षत्र (न०), ऋक्ष (न), न (न०), तारा (स्त्री०), ता
 रका (स्त्री०), उडु ये उ नाम नक्षत्रके ह । तहाँ उडुशब्द (स्त्री- न०)

राधा विशाखा पुष्ये तु सिध्यतिष्यौ श्रविष्ठया ।
 समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २१ ॥
 मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।
 इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
 बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिर्धिषणो गुरुः ।
 जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिरखण्डिजः ॥ २४ ॥
 शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।
 अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः ॥ २५ ॥
 रौहिणेयो बुधः सौम्यः समौ सौर्गजनैश्चरौ ।
 तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥
 सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रजिखण्डिनः ।
 राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥

हे । अश्विनीनक्षत्रसे आदि ले रेवतीपर्यंत दाक्षायणी नामसे प्रसिद्ध है ।
 अश्वयुज् (जान्त), अश्विनी ये दो (स्त्री०) नाम अश्विनीके हैं ॥ २१ ॥
 राधा, विशाखा ये दो (स्त्री०) नाम विशाखाके हैं । सिध्य, तिष्य, पुष्य
 ये तीन (पु०) नाम पुष्यके हैं । श्रविष्ठा, धनिष्ठा ये दो (स्त्री०) नाम
 धनिष्ठाके हैं । श्रविष्ठाके तुल्य हैं । प्रोष्ठपदा, भाद्रपदा ये दो (स्त्री०)
 नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपदके हैं ॥ २२ ॥ मृगशीर्ष (न०), मृग
 शिरम् (सान्त न०), आग्रहायणी (स्त्री०) ये तीन नाम मृगशिरके हैं ।
 इल्वका एक (स्त्री०) नाम मृगशिरके शिरके देशमें रहनेवाले पांच तारोंका
 है ॥ २३ ॥ बृहस्पति, सुराचार्य, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आंगिरस,
 वाचस्पति, चित्रशिरखण्डिज ये नव (पु०) नाम बृहस्पतिके हैं ॥ २४ ॥ शुक्र,
 दैत्यगुरु, काव्य, उशनम् (सान्त), भार्गव, कवि ये छः (पु०) नाम शुक्रके
 हैं । अंगारक, कुज, भौम, लोहितांग, महीसुत ये पांच (पु०) नाम मग-
 लके हैं ॥ २५ ॥ रौहिणेय, बुध, सौम्य ये तीन (पु०) नाम बुधके हैं ।
 सौरि, जनैश्चर ये दो (पु०) नाम शनिके हैं । तमम् (सान्त), राहु-स्व-
 भानु, सैहिकेय, विधुंतुद ये पांच नाम राहुके हैं । तहां तमम् शब्द (न०)
 है । शेष (पु०) है ॥ २६ ॥ चित्रजिखण्डिज यह एक (इत्थन्त पु०) नाम
 मरीचि; आंगिरस, अत्रि; पुलस्त्य, पुलह; क्रतु, वसिष्ठ इन सप्तऋषियोंका

सूरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदेवाकराः ।
 भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकरा ॥ २८ ॥
 भास्वाद्विवस्वत्सप्ताश्वहरिदश्वोष्णरश्मय ।
 विकर्त्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥
 द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
 विभावसुर्ग्रहपतिस्त्रिपापतिरहर्षति ॥ ३० ॥
 भानुर्हस सहस्राशुस्तपनः सविता रवि ।
 “ पद्माक्षस्तेजसाराशिश्छायानाथस्तमिच्छहा ।
 कर्मसाक्षी जगच्चतुर्लोकनन्द्युस्त्रयीतनु ॥
 प्रद्योतनो दिनमणि सद्योतो लोकवान्धव ।
 इनो मागो धामनिधिश्चाशुमाल्यविजनीपति ॥ ”
 माठर पिङ्गलो दण्डश्चण्डाशो पारिपार्श्वका ॥ ३१ ॥
 सूरसूतोऽरुणोऽनूरु काश्यपिर्गरुडाग्रज ।
 परिवेपस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥

है । लग्न यह एक (न०) नाम भेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन इन राशियोंके उदयका है ॥२७॥
 सूर, सूर्य, अर्यमन् (नान्त), आदित्य, द्वादशात्मन् (नान्त) दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, ब्रध्न, प्रभाकर, विभाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् (तात), विस्वत् (तात), सप्ताश्व, हरिदश्व, उष्णरश्मि, विकर्त्तन, अर्क, मार्त्तण्ड, मिहिर, अरुण, पूषन् (तात) ॥२९॥ द्युमणि, तरणि, मित्र, चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्रिपापति, अहर्षति ॥३०॥ भानु, हस, सहस्राशु, तपन, सवितृ (ऋकारान्), रवि ये सतीस और “ पद्माक्ष, तजसाराशि, छायानाथ, तमिच्छहन् (नान्त), कर्मसाक्षिन् (इन्त), जगच्चक्षु, लोकनन्दु, ब्रद्योतनु, प्रद्योतन, दिनमणि, सद्योत, लोकवान्धव, इन, माग, धामनिधि, अशुमालि, अविजनीपति ये सत्रह उल चौवन (पु०) नाम सूर्यके हैं । माठर, पिङ्गल, दण्ड ये तीन (पु०) नाम सूर्यके पास रहनेवालोंके हैं ॥३१॥ सूरमत, अरुण, अनूरु, काश्यपि, गरुडाग्रज ये पाँच (पु०) नाम सूर्यके सारथिके हैं । परिवेप (पु०), परिधि (पु०), उपसूर्यक

किरणोत्स्रमयूखांशुगभस्तिघृणिरश्मयः ।

भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोर्दीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

स्युः प्रभा रुचिस्त्विद् भा भाच्छविद्युतिदीप्तिः ।

रोचिः शोचिरुभे क्लीबे प्रकाशा द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वन्मृगतृष्णा मरीचिका ३५ इति दिग्वर्गः ३

अथ कालवर्गः ४ ।

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽप्यथ पक्षतिः ।

प्रतिपद्मे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिययो द्वयोः ॥ १ ॥

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरौ ।

प्रत्युषोऽहर्मुखं कलयमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥

(न०), मण्डल (न०) ये चार नाम सूर्यके कुण्डलनाके हैं ॥ ३२ ॥

किरण, उत्स्र, मयूख, अंशु, गभस्ति, घृणि, रश्मि, भानु, करो, मरीचि, दीधिति ये ग्यारह नाम किरणके हैं । तहाँ मरीचिशब्द स्त्रीलिंग पुँल्लिंग, दीधितिशब्द स्त्रीलिंग और शेष पुँल्लिंग हैं ॥ ३३ ॥ प्रभा, रुच (चान्त), रुचि, त्विप् (सांत), भा, मास् (सांत), छवि, द्युति, दीप्ति, रोचिस् (सांत), शोचिस् (सांत) ये ग्यारह नाम प्रभाके हैं । इनमें प्रभासे दीप्तिशब्दतक स्त्रीलिंग हैं । रोचिप् और शोचिप् शब्द (न०) हैं । प्रकाश, द्योत, आतप ये तीन (पु०) नाम सूर्यकी घामके हैं ॥ ३४ ॥ कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण, कदुष्ण ये चार नाम अल्पगर्मके हैं । ये धर्ममें रूपभेदसे (न०) हैं । धर्मी अर्थात् धर्मवालेमें त्रिलिङ्गी हैं । तिग्म, तीक्ष्ण, खर ये तीन नाम अत्यन्त गर्मके हैं । येभी धर्ममें रूपभेदसे नपुंसकलिंग हैं और धर्मी अर्थात् धर्मवालोंमें त्रिलिङ्गी हैं । मृगतृष्णा, मरीचिका ये दो (स्त्री०) नाम मृगजल अर्थात् मरुदेशमें फैली हुई रेतपर सूर्यकी किरणें पडनेसे जो अमरूप जलका आभास होता है उसके हैं ॥ ३५ ॥ इति दिग्वर्गः ॥ ३ ॥

अथ कालवर्गः । काल, दिष्ट, अनेहस् (सान्त), समय ये चार (पु०) नाम कालके हैं । पक्षति, प्रतिपद् (दांत) ये दो नाम पडवाके हैं । प्रतिपद्से आदि तिथि कहाती हैं । पक्षति और प्रतिपद्शब्द (स्त्री०) हैं । तिथिशब्द (स्त्री०) और (पु०) है ॥ १ ॥ घस्र (पु०), दिन (न०), अहर् (नांत न०), दिवस, वासर ये पांच नाम दिनके हैं । तहाँ दिवस,

“ व्युष्टं विभात द्वे क्लीबे पुंसि गोसर्ग इष्यते । ”
 प्रभात च दिनान्ते तु साय सध्या पितृप्रसू ।
 प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यमथ शर्वरी ॥ ३ ॥
 निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा ।
 विभावरीतमस्विनी रजनी यामिनी तमी ॥ ४ ॥
 तमिस्रा तामसी रात्रिर्ज्योत्स्नी चन्द्रिकयान्विता ।
 आगामिवर्तमानाहर्द्युक्ताया निशि पक्षिणी ॥ ५ ॥
 गणरात्र निशा बह्वचः प्रदोषो रजनीमुखम् ।
 अर्द्धरात्रनिशीथौ द्वौ द्वौ यामप्रहरी समौ ॥ ६ ॥
 स पर्वसाधि प्रतिपत्पञ्चदशोर्यदन्तरम् ।
 पक्षान्तौ पञ्चदशौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥

वासर शब्द (पु० न०) है । प्रत्युष, अहर्मुख, कल्य, उपम् (सात), प्रत्युषस् (सात) ॥ २ ॥ प्रभात ये छ और “ व्युष्ट (न०), विभात (न०), गोसर्ग (पु०) ” ये तीन श्लो नौ नाम प्रभातके हैं । प्रत्युष (पु० न०) है । शेष (न०) है । दिनान्त (पु०), साय (अव्यय, न०) सध्या (स्त्री०), पितृप्रसू (स्त्री०) ये चार नाम सायकालके हैं । प्राह्ण, अपराह्ण, मध्याह्न इन तीनोंको त्रिसन्ध्य कहते हैं । प्राह्ण यह एक (पु०) नाम दिनके पूर्वभागका है । मध्याह्न यह एक (पु०) नाम दुपहरका है । अपराह्ण यह एक (पु०) नाम दुपहर पीछेका है । शर्वरी ॥ ३ ॥ निशा, निशीथिनी, रात्रि, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, तमस्विनी, रजनी, यामिनी, तमी ये बारह (स्त्री०) नाम रात्रिके हैं ॥ ४ ॥ तमिस्रा यह एक (स्त्री०) नाम अंधेरी रात्रिका है । ज्योत्स्नी यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमासे युक्त अर्थात् चाँदनीरात्रिका है । पक्षिणी यह एक (स्त्री०) नाम पहले पिछले दिनसे युक्त हुई रात्रिका है ॥ ५ ॥ गणरात्र यह एक (न०) नाम बहुतसी रात्रियोंके समूहका है । प्रदोष (पु०), रजनीमुख (न०) ये दो नाम रात्रिके पूर्वभागके हैं । अर्द्धरात्र, निशीथ ये दो (पु०) नाम आधी रातके हैं । याम, प्रहर ये दो (पु०) नाम प्रहरके हैं ॥ ६ ॥ पर्वसाधि यह एक (पु०) नाम प्रतिपदा और पचदशीके अंतरका है । पक्षान्त (पु०), पञ्चदशी (स्त्री०) ये दो नाम

कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे ।

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः ॥ ८ ॥

सा दृष्टेन्दुः मिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥

सोपप्लवोपरक्तौ द्वावग्न्युत्पात उपाहितः ।

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकरनिशाकरौ ॥ १० ॥

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिंशत्तु ताः कला ।

तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु सुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥

ते तु त्रिंशद्द्वोरात्रः पक्षस्ते दश पञ्च च ।

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ १२ ॥

पक्षके अन्तकी तिथिके है । पौर्णमासी, पूर्णिमा ये दो (स्त्री०) नाम पूर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ अनुमति यह एक (स्त्री०) नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । राका यह एक (स्त्री०) नाम पूर्णचंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है । अमावास्या (स्त्री०), अमावस्या (स्त्री०) दर्श (पु०), सूर्येन्दुसंगम (पु०) ये चार नाम अमावसके हैं ॥ ८ ॥ सिनीवाली यह एक (स्त्री०) नाम चन्द्रमा जिसमें दिखाई दे उस अमावसका है । और कुहू यह एक (स्त्री०) नाम जिसमें चंद्रमा नहीं दीखे उस अमावसका है । उपराग, ग्रह ये दो नाम राहुसे किये गये चंद्रमा और सूर्यके ग्रासके हैं ॥ ९ ॥ सोपप्लव, उपरक्त ये दो नाम राहुसे ग्रस्त हुए चंद्रमा और सूर्यके हैं । ये चारों (पु०) नाम हैं । अग्न्युत्पात, उपाहित ये दो (पु०) नाम अग्निकृत उत्पातके हैं । पुष्पवन्त यह एक (पु०) नाम एक युक्ति करके अर्थात् दोनोंको एक साथ कहनेसे सूर्य चंद्रमाका है ॥ १० ॥ निमेष (पु०) नाम आंखके मीचने और खोलनेका है । अठारह निमेषका नाम काष्ठा (स्त्री०) है । तीस काष्ठाओंका नाम एक कला (स्त्री०) है । तीस कलाओंका नाम एक क्षण (पु०) है । बारह क्षणोंका नाम सुहूर्त है । और सुहूर्तशब्द (पु० न०) है ॥ ११ ॥ तीस सुहूर्तोंका एक अहोरात्र (पु०) अर्थात् दिनरात्रि होती है । पंद्रह अहोरात्रका पक्ष (पु०) होता है । महीनेका पूर्वपक्ष शुक्ल (पु०) है और परपक्ष कृष्ण (पु०) है । और दोनों पक्षोंका मास (पु०) अर्थात् महीना होता है ॥ १२ ॥

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तैरयन त्रिभिः ।

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सर ॥ १३ ॥

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुव च तत् ।

“ पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।

नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैत्रमेकादशापरे ॥ ”

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥ १४ ॥

पौषे तैषसहस्यौ द्वौ तर्पा माघेऽथ फाल्गुने ।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिक स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥ १५ ॥

वैशाखे माधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।

आषाढे श्रावणे तु स्यान्नमाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥

स्युर्नभस्यप्रौष्ठपदंभाद्रभाद्रपदाः समाः ।

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १७ ॥

मगशिर आदि दो दो मासोंका ऋतु (पु०) होता है । (मूलमें जो माघसे दो दो मासोंकी गणना है वह केवल अयनारम्भके वशसे है) । तीन ऋतुओंका अयन (न०) होता है । अयन दो प्रकारका है । उत्तरायण और दक्षिणायन इन दोनों अयनोंका वत्सर (पु०) होता है ॥ १३ ॥ विषुवत (तान्त), विषुव ये दो (न०) नाम समान रात्रिदिनवाले काल अर्थात् मेघतुलाकी सत्रातिरेके कालके हैं । “ पुष्यनक्षत्रसे युक्त जो पौर्णमासी उसको पौषी ऐसा (स्त्री०) एक नाम है वह पौषी जिस मासमें हो उसको पौष ऐसा (पु०) एक नाम है । मघानक्षत्रयुक्त पौर्णमासी जिस मासमें हो उसको माघ ऐसा (पु०) एक नाम है इस प्रकार पौषसे लेके सब मास जानना । ” मार्गशीर्ष, सहस्र (सान्त), मार्ग, आग्रहायणिक ये चार (पु०) नाम मगशिरके हैं ॥ १४ ॥ पौष, तैष, सहस्य ये तीन (पु०) नाम पौषके हैं । तपस् (सान्त), माघ ये दो (पु०) नाम माघके हैं । फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये तीन (पु०) नाम फाल्गुनके हैं । चैत्र, चैत्रिक, मधु ये तीन (पु०) नाम चैत्रके हैं ॥ १५ ॥ वैशाख, माधव, राध ये तीन (पु०) नाम वैशाखके हैं । ज्येष्ठ, शुक्र ये दो (पु०) नाम जेठके हैं । शुचि, आपाढ ये दो (पु०) नाम आपाढके हैं । श्रावण, नभस् (सान्त), श्रावणिक ये तीन (पु०) नाम श्रावणके हैं ॥ १६ ॥ नभस्य,

बाहुलोजौ कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिर्ग्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूमि वर्षा अथ शरत् स्त्रियाम् ॥ १९ ॥

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ।

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥

श्रीषपद, भाद्र, भाद्रपद ये चार (पु०) नाम भाद्रोंके हैं । आश्विन, इष, आश्वयुज ये तीन (पु०) नाम आश्विनके हैं । कार्तिक ॥ १७ ॥ बाहुल, ऊर्ज, कार्तिक ये चार (पु०) नाम कार्तिकके हैं । हेमन्त यह एक ऋतु है । शिशिर यह एक ऋतु है । हेमन्त और शिशिरशब्द (पु० न०) हैं । वसन्त, पुष्पसमय, सुरभि ये तीन (पु०) नाम वसन्तऋतुके हैं । ग्रीष्म, ऊष्मक ॥ १८ ॥ निदाघ, उष्णोपगम, उष्ण, ऊष्मागम, तप ये सात (पु०) नाम ग्रीष्म ऋतुके हैं । प्रावृष्, वर्षा ये दो नाम वर्षाऋतुके हैं । तहां प्रावृट्शब्द षकारान्त (स्त्री०) है और वर्षाशब्द (स्त्री०) और नित्य बहुवचनांत है । शरत् (दान्त) यह एक नाम शरत् ऋतुका है और स्त्रीलिंग है ॥ १९ ॥ मर्गशिर आदि दो दो महर्णिके क्रमसे ये छः ऋतु हैं और ऋतुशब्द (पु०) है । संवत्सर, वत्सर, अब्द, हायन, शरत्, समा ये छः नाम वर्षके हैं । तहां हायनान्त शब्द (पु० न०) हैं । शरत् (स्त्री०) है । समाशब्द स्त्रीलिंग बहुवचनांत है । शेष पुँल्लिग है ॥ २० ॥ मनुष्योंके एक महर्णिके पितरोंका एक दिनरात्रि होता है । तहां कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें दिनका आरम्भ होता है और शुक्लपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें रात्रिका आरम्भ होता है । मनुष्योंके एक वर्षमें देवताओंका दिनरात्रि होता है । उत्तरायण दिन है, दक्षिणायन रात्रि है और मनुष्योंके कृतयुग आदि चौकड़ी देवताओंका एक युग होता है । इस प्रकार देवताओंके दो हजार युगका ब्रह्माका एक दिनरात्रि होता है । ब्रह्माके दिनमें संसारकी स्थिति है और ब्रह्माजीकी रात्रिमें प्रलयकाल होता है । ऐसे देवताओंके दो हजार युगमें मनुष्योंकी स्थिति और प्रलय

मन्वन्तरं तु दिव्याना युगानामेकसप्ततिः ।
 संवत्सं प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यापि ॥ २२ ॥
 अस्त्री पङ्क पुमान् पाप्मा पापं किल्विषकल्मषम् ।
 कलुषं वृजिनैनोघमहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
 स्याद्धर्ममाध्विया पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृष ।
 सुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदा ॥ २४ ॥
 स्यादानन्दधुरानन्द शर्मशातसुत्पानि च ।
 श्व.श्रेयस शिवं भद्रं कल्याणं मगल शुभम् ॥ २५ ॥
 भावुक भविक भव्य कुशल क्षेममाध्वियाम् ।
 शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥
 मतालिका मचार्चिका प्रकाण्डमुद्धतलज्जौ ।
 प्रशस्तवाचकान्यमून्यय. शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥

होता है ॥ २१ ॥ देवताओंके ७१ युगोंका एक मन्वन्तर होता है । संवत्सं, प्रलय, कल्प, क्षय, कल्पान्त ये पाँच (पु०) नाम प्रलयके हैं ॥ २२ ॥ पङ्क, पाप्मन् (नान्त), पाप, किल्विष, कल्मष, कलुष, वृजिन, एनस् (सांत), अघ, अहस् (सांत), दुरित, दुष्कृत ये बारह नाम पापके हैं । तहाँ पाप्मन्शब्द (पु०) है । पङ्क शब्द (पु० न०) है । और सब स्त्रीव है ॥ २३ ॥ धर्म, पुण्य, श्रेयस् (सांत), सुकृत, वृष ये पाँच नाम धर्मके हैं । इनमें धर्मशब्द (पु० न०), वृष (पु०), शेष (न०) हैं । पुण्यशब्द जब विशेषण होता है तब इसका लिंग विशेष्यके समान होता है । सुद (दांत), प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, समद ॥ २४ ॥ आनन्द, आनन्द, शर्मन् (नांत); शात, सुख ये बारह नाम सुखके हैं । इनमें सुद और प्रीतिशब्द स्त्रीलिंग हैं । शर्मन्, शात, सुख (न०), शेष (पु०) हैं । श्व श्रेयस् (सान्त), शिव, भद्र, कल्याण, मगल, शुभ ॥ २५ ॥ भावुक, भविक, भव्य, कुशल, क्षेम, शस्त ये बारह नाम कल्याणमात्रके हैं । तहाँ क्षेम और शस्त शब्द (पु० न०) हैं । पाप-पुण्यशब्द और सुखादिशब्द (श्व श्रेयस्से लंके शस्तपर्यंत शब्द) विशेष्यके साथ आनेसे वाच्यलिंग अर्थात् तीनों लिंग हैं । जैसे- ' पापा स्त्री, पाप पुमान्, पाप कुलम् ' इन वाचनोंमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग और नपुंसकलिंग है ॥ २६ ॥ मतालिका (स्त्री०)

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम् ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः ध्रियाम् ।

विशेषः कालिकोऽवस्था गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्त्युशरीरिणः ॥ ३० ॥

जातिर्जातं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

मर्चाचिका (स्त्री०), प्रकांड (पु०), उद्घ (पु०), तल्लज (पु०) ये पांच नाम प्रशस्तवाचक हैं । जैसे—प्रशस्ता ब्राह्मणाः ब्राह्मणमतल्लिका आदि जानने । अथ यह एक (पु०) नाम शुभको उत्पन्न करनेवाले दैव अर्थात् भाग्यका है ॥ २७ ॥ दैव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति, विधि ये छः नाम पूर्वजन्मके कर्मके हैं । यहां नियतिशब्द (स्त्री०) है । विधिशब्द (पु०) और शेष (न०) हैं । हेतु, कारण, बीज ये नाम कारणके हैं । इनमें हेतुशब्द (पु०), शेष (न०) हैं । निदान यह एक (न०) नाम आदिकारणका है ॥ २८ ॥ क्षेत्रज्ञ, आत्मन् (नान्त), पुरुष ये तीन (पु०) नाम शरीरके अधिदैवतके हैं । प्रधान (न०), प्रकृति ये दो नाम सत्त्वआदि गुणोंकी साम्यअवस्थाके हैं । प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है । अवस्था यह एक (स्त्री०) नाम कालकृत यौवन आदि विशेषका है । सत्त्वं, रजस् (सान्त), तमस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम गुणोंके हैं ॥ २९ ॥ जनस् (सान्त न०), जनन (न०), जन्मन् (नान्त न०), जनि (स्त्री०) उत्पत्ति (स्त्री०), उद्भव (पु०) ये छः नाम जन्मके हैं । प्राणिन् (इन्नन्त), चेतन, जन्मिन् (इन्नन्त), जन्तु, जन्त्यु, शरीरिन् (इन्नन्त) ये छः नाम प्राणीके हैं ॥ ३० ॥ जाति (स्त्री०), जात (न०), सामान्य (न०) ये तीन नाम घट आदि जातिके हैं । व्यक्ति, पृथगात्मता ये दो (स्त्री०) नाम घट आदि व्यक्तिके हैं । चित्त, चेतस् (सान्त), हृदय, स्वान्त, हृद् (दान्त), मानस, मनस् (सान्त) ये सात (न०) नाम मनके हैं ॥ ३१ ॥

इति कालवर्गः ॥ ४ ॥

अथ धीवर्गः ५ ।

बुद्धिर्मनीषा धिपणा धी' प्रज्ञा जेमुषी मतिः ।

प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिप्रज्ञातिचेतना ॥ १ ॥

धीर्धारणावती मेधा सङ्कल्पः कर्म मानमय ।

“ अवधानं समाधानं प्राणिधानं तथैव च । ”

चित्ताभोगो मनस्कारश्चर्चा सख्या विचारणा ॥ २ ॥

“ विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते । ”

अध्याहारस्तर्क ऊहो विचिकित्सा तु मशय ।

सन्देहद्वारौ चाथ समौ निर्णयनिश्चयौ ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ भ्रातिर्मिथ्यामतिभ्रम ॥ ४ ॥

संविदागू. प्रतिज्ञान नियमाश्रवसश्रवा' ।

अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधय ॥ ५ ॥

अथ धीवर्ग । बुद्धि, मनीषा, धिपणा, धी, प्रज्ञा, जेमुषी, मति, प्रेक्षा, उपलब्धि, चित् (तान्त), सविद् (दान्त), प्रतिपद् (दान्त), जाति, चेतना ये चौदह (स्त्री०) नाम बुद्धिके हे ॥ १ ॥ मेधा यह एक (स्त्री०) नाम धारणावाली बुद्धिका हे । सङ्कल्प यह एक (पु०) नाम मनके व्यापारका हे । “अवधान, समाधान प्राणिधान ये तीन(न०)नाम समाधानके हे ।” चित्ताभोग, मनस्कार ये दो (पु०) नाम सुख आदिमे तत्पर मनते है। चर्चा, सख्या, विचारणा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रमाणांकरके अर्थकी परीक्षाके हे ॥ २ ॥ “ विमर्श (पु०), भावना, वासना (दा स्त्री०) ये तीन नाम वासनाके हे।” अध्याहार, तर्क, ऊह ये तीन (पु०) नाम तर्कके हे । विचिकित्सा (स्त्री०), सशय (पु०), सन्देह (पु०), द्वार (पु०) ये चार नाम सशयज्ञानके ह । निर्णय, निश्चय ये दो (पु०) नाम निर्णयके हे ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता ये दो (स्त्री०) नाम नास्तिकरूपनेहे हे । व्यापाद् (पु०), द्रोहचित्तन (न०) ये दो नाम अद्रोहचित्तनके ह । सिद्धान्त, राद्धान्त ये दो (पु०) नाम सिद्धान्तके ह । भ्रान्ति (स्त्री०), मिथ्यामति (स्त्री०), भ्रम (पु०) ये तीन नाम भ्रमके ह ॥ ४ ॥ सवित्, आगू, प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, सश्रव, अङ्गीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव,

मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥

मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम् ।

रूपं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया अमी ॥ ७ ॥

गोचरा इन्द्रियार्थाश्च हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

कर्मोन्द्रियं तु पाय्वादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री मधुरो लवणः कटुः ।

तिक्तोऽम्लश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥ ९ ॥

विमर्दात्ये परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

आमोदः सोऽतिनिर्हारी वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥

समाधि ये दश नाम अगीकारके हैं । इनमें सवित् और आगू (स्त्री०), प्रतिज्ञान (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ५ ॥ ज्ञान यह (न०) नाम मोक्षमें बुद्धिका है । विज्ञान यह (न०) नाम शिल्प और अन्यशास्त्रमें जो बुद्धि है उसका है । मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस् (सान्त), निःश्रेयस् (सान्त) अमृत ॥ ६ ॥ मोक्ष, अपवर्ग ये आठ नाम मोक्षके हैं । तहां मुक्ति (स्त्री०), मोक्ष, अपवर्ग (पु०), शेष (न०) हैं । अज्ञान (न०), अविद्या, अहंमति ये तीन नाम अज्ञानके हैं । तहां अविद्या, अहंमति-शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं । रूप (न०), शब्द (पु०), गंध (पु०), रस (पु०), स्पर्श (पु०) ये पांच विषय हैं ॥ ७ ॥ गोचर (पु०), इन्द्रियार्थ (पु०) इन नामोंसे वे प्रसिद्ध हैं । हृषीक, विषयिन् (इन्नन्त), इन्द्रियार्थे तीन (न०) नाम चक्षुआदि इन्द्रियके हैं । तहां गुदा, लिङ्ग, हाथ, पैर, वाणी ये कर्मोन्द्रिय हैं । मन और नेत्र आदि ज्ञानोन्द्रिय कहाते हैं ॥ ८ ॥ तुवर, कषाय, मधुर, लवण, कटु, तिक्त, अम्ल ये छः रसवाचक शब्द (पु०) हैं । कषायशब्द (पु० न०), शेष (पु०) हैं । ये शब्द रसवानोंमें वर्तमान हों तो त्रिलिङ्गी है । तहां तुवरशब्द, हरड आदिमें प्रसिद्ध है । मधुर रस जल आदिमें प्रसिद्ध है । लवण रस सिंघा आदिमें प्रसिद्ध है । कटुरस मरीच आदिमें प्रसिद्ध है । तिक्त रस जीव आदिमें प्रसिद्ध है । अम्लरस अमली आदिमें प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥ परिमल यह (पु०) नाम स्वर्षण आदिसे उत्पन्न और मनोहारी गंधका है । आमोद यह (पु०) नाम अ-

समाकर्षी तु निर्हारी सुरभिघ्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः त्यादामोदी मुखवासन. ॥ ११ ॥

पृतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्त्र स्यादामगन्धि यत् ।

शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डरा* ॥ १२ ॥

अवदात* सितो गौरोऽवलक्षो धवलोऽर्जुन* ।

हरिण. पाण्डुर* पाण्डुरीपत्पाण्डुस्तु धूसरः । १३ ॥

कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचका* ।

पीतो गौरो हरिद्राम पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥

रोहितो लोहितो रक्त* शोण कोकनदच्छविः ।

अव्यक्तरागस्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥

त्यन्त समाकर्षणवाले गधका हे । इससे आगे ' गुणे शुक्लादय ' इसपर्यंत वक्ष्यमाण (जो आगे कहे जायगे) शब्द त्रिलिङ्गी हे । कस्तूरीमे आमोद गध है । कपूरमे मुखवासना गध है । वज्रुलमे परिमल गध है । चपा आ, दिमे सुरभिगध है ॥ १० ॥ समाकर्षिन् (इन्नन्त), निर्हारिन् (इन्नन्त) ये दो (पु-) नाम दूर जानेवाले गधके हैं । सुरभि, घ्राणतर्पण, इष्टगध, सुग, न्धि ये चार (पु०) नाम सुन्दर गधके हैं । आमोदिन् (इन्नन्त), मुखवा-सन ये दो (पु०) नाम ताम्बूल आदि गधके हैं ॥ ११ ॥ पृतिगध, दुर्गध ये दो (पु०) नाम दुष्टगधके हैं । विस्त्र, आमगधि ये दो (न०) नाम कच्ची गधिके हैं अर्थात् विना पके हुए मांस आदिके हैं । शुक्ल, शुभ्र, शुचि, श्वेत, विशद, श्वेत, पांडर ॥ १२ ॥ अवदात, सित, गौर, अवलक्ष, धवल, अर्जुन ये तेरह नाम सुपेद रगके हैं । हरिण, पांडुर, पीडु ये तीन नाम पीलेसे मिले हुए सुपेद रगके हैं । ईपत्पांडु, धूसर ये दो नाम अल्पश्वेत रगके हैं ॥ १३ ॥ कृष्ण, नील, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये सात नाम नीले आदि रगके हैं । पीत, गौर, हरिद्राम ये तीन नाम पीले रगके हैं । पालाश, हरित, हरित् ये तीन नाम हरे रगके हैं ॥ १४ ॥ लोहि-त, रोहित, रक्त ये तीन नाम लाल रगके हैं । शोण यह एक नाम लाल-रमलके समान रगका है । अस्त्रण यह एक नाम थोड़े लाल रगका है । पाटल यह नाम सुपेद और लाल मिश्र हुए अर्थात् गुठली रगका है ॥ १५ ॥

श्यावः स्यात्कपिशो धूम्रधूमलौ कृष्णलोहिते ।

कडारः कपिलः पिंगपिशंगौ कट्टुपिंगलौ ॥ १६ ॥

चित्रं किर्मीरकलमापशवलैताश्च कर्बुरे ।

गुणे शुक्लादयः पुंसि गुणिलिगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः ६ ।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वानी सरस्वती ।

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥ १ ॥

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

तिङ्मुबन्तघयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता ॥ २ ॥

श्रुतिः स्त्री वेद आम्रायस्त्रयी धर्मस्तु तद्विधिः ।

स्त्रियासृक् सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

श्याव, कपिश ये दो नाम धूसर अरुण अर्थात् वानरकेसे रंगके हैं । धूम्र, धूमल, कृष्णलोहित ये तीन नाम कालेसहित लाल रंगके हैं । कडार, कपिल, पिंग, पिशग, कट्टु, पिंगल ये छः नाम पिंगल (पीले) वर्णके हैं ॥ १६ ॥ चित्र, किर्मीर, कलमाप, शवल, एत, कर्बुर ये छः नाम विचित्रवर्णके हैं । गुणमात्रमें शुक्ल आदि शब्द पुँल्लिग हैं और गुणबालोंमें त्रिलिगी हैं । जैसे ' शुक्ला शायी, शुक्लः पटः, शुक्ल वस्त्रम् ' इन वचनोंमें तीनों लिग हैं ॥ १७ ॥ इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

इति धीवर्गः ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः । ब्राह्मी, भारती, भाषा, गी (रान्त), वाच् (चान्त), वाणी, सरस्वती ये सात (स्त्री०) नाम सरस्वतीके हैं । व्याहार (पु०), उक्ति (स्त्री०) लपित (न०), भाषित (न०), वचन (न०), वचस् (सान्त न०) ये छः नाम वचनके हैं ॥ १ ॥ अपशब्द यह एक (पु०) नाम अपभ्रंशशब्दका है । व्याकरण आदिमें जो वाचक है वह शब्द कहाता है । तिङन्त लुबन्त पदोंका समूह वाक्य कहाता है । जैसे—' पचाति भवति, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महारमनाम् ' यह वाक्य है । अथवा कारकोंकरके क्रिया वाक्य कहाती है । जैसे—' देवदत्त गामभिरक्ष शुक्लदंडेन ' यह वाक्य है ॥ २ ॥ श्रुति, वेद (पु०), आम्राय (पु०) ये तीन नाम वेदके हैं । तहां श्रुतिशब्द स्त्रीलिग है । धर्म यह एक (पु०) नाम वैदिक विधि

शिक्षेत्यादि श्रुतेरंगमोकारप्रणवौ समौ ।
 इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥ ४ ॥
 आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः ।
 आख्यायिकोपलब्धार्थाः पुराण पञ्चलक्षणम् ॥ ५ ॥
 प्रबन्धकल्पना कथा प्रवह्निका प्रहेलिका ।
 स्मृतिस्तु धर्मसहिता समाहृतिस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥
 समस्या तु समासार्था विवदन्ती जनश्रुतिः ।
 वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यादथाह्वयः ॥ ७ ॥
 आख्याहे अभिधान च नामधेय च नाम च ।
 हृतिराकारणाह्वानं सद्दृतिर्बहुभिः कृता ॥ ८ ॥

यज्ञ आदिका है । ऋच् (चान्त), सामन् (नान्त न०), यजुप् (पान्त न०) इन तीन वेदोंके समूहको त्रयी कहते हैं । तर्हा ऋच्शब्द (स्त्री०) है ॥ ३ ॥ शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये सब वेदके अंग ह । अगशब्द (न०) है । छ अग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण ये चौदह विद्या ह । ओंकार, प्रणव ये दो (पु०) नाम ओंकारके ह । इतिहास (पु०), पुरावृत्त (न०) ये दो नाम भारत आदि पूर्वचरितके ह । उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ये तीन स्वर कहाते हैं ॥ ४ ॥ आन्वीक्षिकी (स्त्री०) यह एक नाम गौतमप्रणीत तर्कविद्याका है । दण्डनीति यह एक (स्त्री०) नाम बृहस्पति आदि प्रणीत अर्थनीति शास्त्रका है । आख्यायिका, उपलब्धार्था ये दो (स्त्री०) नाम वासवदत्ता आदि ग्रन्थके ह । पुराण यह एक (न०) नाम सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वश्यानुचरित इन पाँच लक्षणोंसे युक्तका है ॥ ५ ॥ कथा यह एक (स्त्री०) नाम वासयके विस्तारकी रचनाका है । प्रवह्निका, प्रहेलिका ये दो (स्त्री०) नाम पहेलीके ह । स्मृति यह एक (स्त्री०) नाम धर्मके बोधके लिये रची हुई संहिताका है । समाहृति (स्त्री०), संग्रह (पु०) ये दो नाम संग्रह ग्रन्थके हैं ॥ ६ ॥ समस्या यह एक (स्त्री०) नाम कविकी शक्तिकी परीक्षाके अर्थ किसी श्लोक वा कवित्तरे सन्नेत देनेका है । विवदती, जनश्रुति ये दो (स्त्री०) नाम लोकप्रवादके ह । वार्त्ता (स्त्री०), प्रवृत्ति (स्त्री०), वृत्तान्त (पु०), उदन्त (पु०) ये चार नाम लोकवृत्तान्त कथनके ह । आह्वय (पु०) ॥ ७ ॥ आख्या (स्त्री०), आह्वा (स्त्री०), अभिधान

विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।
 उपोद्घात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥
 प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च प्रतिवाक्योत्तरे समे ।
 मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमथ मिथ्याभिर्शंसनम् ॥ १० ॥
 अभिशापः प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।
 यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥
 आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तमुच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।
 काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥
 अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।
 उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे ॥ १३ ॥

(न०), नामधेय (न०), नामन् (नान्त न०) ये छः नाम नामके हैं ।
 ह्यति (स्त्री०), आकारणा (स्त्री०), आह्वान (न०) ये तीन नाम आ-
 ह्वान अर्थात् बुलानेके हैं । संह्यति यह एक (स्त्री०) नाम बहुतोंसे मिलके
 बुलानेका है ॥ ८ ॥ विवाद, व्यवहार ये दो (पु०) नाम कर्जा आदिके
 निमित्त अनेक प्रकारके विवादके हैं । उपन्यास (पु०), वाङ्मुख (न०)
 ये दो नाम वचनके आरंभके हैं । उपोद्घात, उदाहार ये दो (पु०) नाम
 प्रकृतसिद्धिके अर्थ किये हुए चिन्तनके हैं । शपन (न०), शपथ (पु०)
 ये दो नाम कसमके हैं ॥ ९ ॥ प्रश्न (पु०), अनुयोग (पु०), पृच्छा
 (स्त्री०) ये तीन नाम प्रश्नके हैं । प्रतिवाक्य, उत्तर ये दो (न०) नाम
 उत्तरके हैं । मिथ्याभियोग (पु०), अभ्याख्यान (न०) ये दो नाम
 झूठे दोष लगानेके हैं । मिथ्याभिर्शंसन (न०) ॥ १० ॥ अभिशाप (पु०)
 ये दो नाम मदिरापान आदि मिथ्यापापके उद्भावनके हैं । प्रणाद यह एक
 (पु०) नाम अनुरागसे उत्पन्न शब्दका है । यशस् (न०), कीर्त्ति
 (स्त्री०), समज्ञा (स्त्री०) ये तीन नाम कीर्तिके हैं । स्तव (पु०), स्तोत्र
 (न०), स्तुति (स्त्री०), नुति (स्त्री०) ये चार नाम स्तुतिके हैं ॥ ११ ॥
 आम्रेडित यह एक (न०) नाम दो बार तीन बार कहेका है । उच्चैर्घुष्ट
 (न०), घोषणा (स्त्री०) ये दो नाम ऊंचे शब्दके हैं । काकु यह एक
 (स्त्री०) नाम शोक और भय आदिसे उत्पन्न ध्वनिविकारका है ॥ १२ ॥
 अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परीवाद, अपवाद, उपक्रोश यहाँतक (पु०), जु-

पारुष्यमतिवादः स्याद्रत्सन त्वपकारगीः ।

य. सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।

विप्रलापो विरोधोक्तिः सलापो भाषणं मिथः ॥ १६ ॥

सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निद्वयः ।

“चोद्यमाक्षेपाभियोगौ शापाक्रोशा दुरेपणा ।

अस्त्री चाट्टु चट्टु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकृत्यनम् ॥ ”

सदेशवाग्वाचिक स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिपूत्तरे ॥ १७ ॥

गुप्ता, कुत्सा, निन्दा ये (स्त्री०), गर्हण (न०) ये दण नाम निन्दाके हे ॥ १३ ॥ पारुष्य (न०), अतिवाद (पु०) ये दो नाम कठोर बोलनेके हैं । रत्सन यह एक (न०) नाम अपकारके लिये बोलने अर्थात् धमकानेका है । परिभाषण यह एक (न०) नाम त्रोधपूर्वक दोषके प्रति पादनका है ॥ १४ ॥ आक्षारणा यह एक (स्त्री०) नाम परस्त्री पुरपके संयोगनिमित्त निद्वयका है । आभाषण (न०), आलाप (पु०) ये दो नाम आपसमें सवोधनपूर्वक बोलनेके हैं । प्रलाप यह एक (पु०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ १५ ॥ अनुलाप (पु०), मुहुर्भाषा (स्त्री०) ये दो नाम बहुतवार बोलनेके हैं । विलाप (पु०), परिदेवन (न०) ये दो नाम रदनपूर्वक बोलनेके हैं । विप्रलाप (पु०), विरोधोक्ति (स्त्री०) ये दो नाम आपसमें विरुद्ध बोलनेके हैं । सलाप यह एक (पु०) नाम आपसमें बोलनेका है ॥ १६ ॥ सुप्रलाप (पु०), सुवचन (न०) ये दो नाम सुंदर बोलनेके हैं । अपलाप, निद्वय ये दो (पु०) नाम गुप्तवचनके हैं । “चोद्य (न०), आक्षेप (पु०), अभियोग (पु०) ये तीन नाम अट्टत प्रश्नके हैं । शाप (पु०), आक्रोश (पु०), दुरेपणा (स्त्री०) ये तीन नाम श्लाघवचनके हैं । चाट्टु, चट्टु, श्लाघा (स्त्री०) ये तीन नाम प्रेमवचनके मिथ्या बोलनेके हैं । नत्ती चाट्टु चट्टु शब्द (पु० न०) हैं । ‘सदेशवाग्’ (वाग् न० स्त्री०), वाचिक (न०) ये दो नाम दूत आदिके मुखमें कहे हुए वचनके हैं । इनके परे वाग्भेदात् शब्दों आदि नाम समस्त परित नाम हैं

रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं हृदयंगमम् ॥ १८ ॥

निष्ठुरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं सूत्रतं प्रिये ।

सत्येऽथ संकुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् ।

अम्बूकृतं सनिष्ठीवमवद्धं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥

अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु सृषार्थकम् ।

“ सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासं भणितं रतिकूजितम् ।

श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥ ”

अथ म्लिष्टमविस्पष्टं वितथं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥

सत्यं तथ्यसृतं सम्यगमूनि त्रिषु तद्वति ।

शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥

भेद त्रिलिङ्गी हैं ॥ १७ ॥ रुशती यह एक (स्त्री०) नाम अकल्याणी वाणीका है । कल्या यह एक (स्त्री०) नाम शुभवाणीका है । सान्त्वं यह एक (न०) नाम अत्यन्त मधुर बोलनेका है । संगत, हृदयंगम ये दो (न०) नाम संबद्ध वचनके हैं ॥ १८ ॥ निष्ठुर, परुष ये दो (न०) नाम कठोर वचनके हैं । ग्राम्य, अश्लील ये दो (न०) नाम शिथिल वचनके हैं । सूत्रत यह एक (न०) नाम प्रिय और सत्यवचनका है । संकुल, क्लिष्ट ये दो (न०) नाम आपसमें पूर्वापर विरुद्धके हैं । जैसे—‘ मेरी माता वंध्या है ’ ॥ १९ ॥ ग्रस्त यह एक (न०) नाम असंपूर्ण उच्चारित वचनका है । निरस्त यह एक (न०) नाम शीघ्र कहे हुए वचनका है । अम्बूकृत यह एक (न०) नाम लार अर्थात् थूकसहित वचनका है । अवद्ध यह एक (न०) नाम अनर्थक वचनका है ॥ २० ॥ अनक्षर, अवाच्य ये दो (न०) नाम नहीं कहने योग्य वचनके हैं । आहत यह एक (न०) नाम मिथ्या और असंभावित अर्थवालेका है । जैसे—‘ यह वंध्याका पुत्र जाता है ’ । “ सोल्लुण्ठन, सोत्प्रास ये दो (न०) नाम उपहाससहित वचनके हैं । भणित, रतिकूजित ये दो (न०) नाम स्त्रीसंगके समय बोलनेके हैं । श्राव्य, हृद्य, मनोहारिन् (इन्नन्त), विस्पष्ट, प्रकटोदित ये पांच (न०) नाम प्रकट वचनके हैं ” । म्लिष्ट, अविस्पष्ट ये दो (न०) नाम स्पष्टवचनके हैं । वितथ यह एक (न०) नाम मिथ्यावचनका है ॥ २१ ॥ सत्य, तथ्य,

स्वाननिर्घोषनिर्हादनादनिस्वाननिस्वनाः ।

आरवारावसंरावविरावा अथ मर्मरः ॥ २३ ॥

स्वनिते वस्त्रपर्णाना भूषणाना तु शिञ्जितम् ।

निकाणो निकणः क्काण. क्कणः क्कणनमित्यपि ॥ २४ ॥

वीणाया. क्कणिते प्रादेः प्रक्काणप्रक्कणादयः ।

कोलाहल' कलकलस्तिरश्चा वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने गीतं गानमिमे समे ।

इति शब्दादिवर्ग. ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७ ।

निपादर्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः ।

पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः ॥ १ ॥

काकली तु कले सूक्ष्मे ध्वनौ तु मधुरास्फुटे ।

कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽन्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु ॥ २ ॥

ऋत, सम्यच् (चान्त) ये चार (न०) नाम सत्यवचनके हे । ये शब्द विशेषण होते हैं तब त्रिलिङ्गी ह । जैसे- 'सत्या स्त्री, सत्य पुमान्, सत्य' जुल्म् ' इत्यादि । शब्द, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव, स्वन ॥ २२ ॥ स्वान, निर्घोष, निर्हाद, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, सराव, वि- राव ये सत्रह (पु०) नाम शब्दमात्रके हे । मर्मर ॥ २३ ॥ यह एक (पु०) नाम वस्त्र और पर्तोंके शब्दका हे । शिञ्जित यह एक (न०) नाम गहनों के शब्दका हे । निकाण, निकण, क्काण, क्कण, क्कणन ये पांच नाम वीणा आदिके शब्दके हैं । इनमें क्कणन (न०) शेष (पु०) है ॥ २४ ॥ प्रक्काण, प्रक्कण आदि (पु०) नामभी वीणाहीके शब्दमें हैं, अन्यके शब्दमें नहीं हैं । कोलाहल, कलकल ये दो (पु०) नाम बहुतांसे मिलकर किये हुए शब्दके हैं । वाशित, रुत ये दो (न०) नाम पक्षियोंके शब्दके हैं ॥ २५ ॥ प्रतिश्रुत् (तान्त स्त्री०), प्रतिध्वान (पु०) ये दो नाम प्रतिशब्दके हे । गीत, गान ये दो (न०) नाम गानेके हैं । इति शब्दादिवर्ग ॥ ६ ॥

अथ नाट्यवर्ग । स्वरके भेद कहते हैं-निपाट, ऋषभ, गान्धार, पट्ज, मध्यम, धैवत, पञ्चम ये सात (पु०) नाम वीणा या कठसे उठे हुए स्वरोंके हे ॥ १ ॥ " हस्ती निपाट स्वरसे चोलता हे । गौ ऋषभ स्वरसे चोलती हे ।

“ नृणामुरासि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः ।
 स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥ ”
 समन्वितलयस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी ।
 विपञ्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं सुरजादिकम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥
 चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् ।
 मृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्ग्यालिङ्गचोर्ध्वकास्त्रयः ॥ ५ ॥
 स्याद्यशःपटहो ढक्का भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।
 आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥

बकरी आदि गांधार स्वरसे बोलती है। मोर षड्ज स्वरसे बोलता है। कंज मध्यम स्वरसे बोलती है। घोडा धैवत स्वरसे बोलता है। कोयल पञ्चम स्वरसे बोलती है। ” काकली यह एक (स्त्री०) नाम सूक्ष्म कलका है। कल यह एक नाम मधुर और अस्पष्ट शब्दका है। मन्द्र यह एक नाम गंभीर ध्वनिका है। तार यह एक नाम अत्यन्त ऊँची ध्वनिका है। ये तीनों शब्द (त्रि०) हैं ॥२॥ “ मनुष्योंके हृदयसे बाईस प्रकारका ध्वनि गाया जाता है। कण्ठसे मन्द्र और मस्तकसे तार स्वर गाया जाता है। ” जिसमें अच्छी लय हो और गीतके तुल्य हो उसे एकताल कहते हैं यह (पु०) है। वीणा, वल्लकी, विपञ्ची ये तीन (स्त्री०) नाम वीणाके हैं। परिवादिनी यह एक (स्त्री०) नाम सात तंत्रियोंकरके बन्धी हुई वीणाका है ॥३॥ तंतु यह (न०) नाम वीणा आदि वाजेका है। आनक यह एक (न०) नाम मृदंग आदि वाजेका है। सुषिर यह एक (न०) नाम वशी, अलगोजा, शंख आदि वाजेका है। घन यह एक (न०) नाम कांसीका वाजा घंटा झालर आदिका है ॥४॥ वादित्र, आतोद्य ये दो (न०) नाम पूर्वोक्त तंतु आदि चार प्रकारके वाजेके हैं। मृदङ्ग, मुरज ये दो (पु०) नाम मृदङ्गके हैं। अंक्य, आलिंग्य, ऊर्ध्वक ये तीन (पु०) नाम भी मृदङ्गके ही भेदके हैं ॥५॥ यशःपटह (पु०); ढक्का (स्त्री०) ये दो नाम ढोलकके हैं। भेरी, दुन्दुभि ये दो नाम नकारके हैं। तहां भेरीशब्द (स्त्री०) और दुन्दुभिशब्द (पु०) है। आनक (पु०), पटह ये दो नाम बड़े नगाड़ेके हैं। तहां पटह-

वीणादण्डः प्रवाल स्यात्ककुभस्तु प्रसेवक' ।
 कोल्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमझरारा ।
 मर्दल' पणवोऽन्ये च नर्तकीलासिके समे ॥ ८ ॥
 विलम्बितं द्रुत मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामान लय' साम्यमथास्त्रियाम् ॥ ९ ॥
 ताण्डव नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।
 तौर्यत्रिक नृत्यगीतवाद्य नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥
 भ्रुकुसश्च भृकुंसश्च भ्रुकुंसश्चेति नर्तक ।
 स्त्रीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाञ्जुका ॥ ११ ॥

शब्द (पु० न०) है । कोण यह एक (पु०) नाम जिससे वीणादि बजाई जाती है उस धनुषाकार काष्ठका है ॥ ६ ॥ प्रवाल यह एक (पु०) नाम वीणाके ढङ्का है । ककुभ, प्रसेवक ये दो (पु०) नाम वीणाके प्रान्तमे स्थित चर्मसे मटे हुए काष्ठनुचीके हैं । जो शब्दकी गभीरताके लिये रहते हैं । कोल्बक यह एक (पु०) नाम वीणाके तंत्रीरहित दट आदिके समुदायका है । उपनाह यह एक (पु०) नाम जहा वीणाके प्रान्तमे तन्त्री बांधी जाती है उसका है ॥ ७ ॥ डमरुसे आदि लेकर ये वाजोंके मेदके नाम हैं । डमरु, मडु, टिटिम, झरार, मर्दल, पणव आदि । नर्तकी, लासिका ये दो (स्त्री०) नाम नाचनेवालीके हैं ॥ ८ ॥ तत्त्व यह एक (न०) नाम हाथ पर आदि ऋके देरमे नाचने आदिका है । ओघ यह एक (पु०) नाम शीघ्र नाचने आदिका है । घन यह एक (न०) नाम जो न देरसे और न शीघ्रता नाचना हो उसका है । ताल यह एक (पु०) नाम कालक्रियाके नियमके हेतुका है । लय यह एक (पु०) नाम गाना बजाना और पर आदिका धरना इहोकी क्रियाकालके साम्यका है । तहां ताल और लयशब्द (पु०) हैं ॥ ९ ॥ तांडव, नटन, नाट्य, लास्य, नृत्य, नर्तन ये छ (न०) नाम नाचनेके हैं । इनमे तांडवशब्द (पु०) भी है । नृत्य, गीत, वाद्य ये तीन मिलके तौर्यत्रिक और नाट्य कहते हैं । ये (न०) हैं ॥ १० ॥ भ्रुकुस, भृकुस, भ्रुकुस ये तीन (पु०) नाम स्त्रीके भेषको धारण कर नाचनेवाले पुंसके हैं । 'अगहार' यहाँनर नाट्यप्रदर्शनके शब्द कहते हैं । अञ्जुका यह एक (स्त्री०) नाम वे-पाषा

मगिनीपतिरावुत्तो भावो विद्वानथावुकः ।

जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १२ ॥

राजा भट्टारको देवस्तत्सुता भर्तृदारिका ।

देवी कृताभिषेकायापितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ राजशालस्तु राष्ट्रियः ।

अम्बा माताऽथ वाला स्याद्वासूगार्यस्तु मारिपः ॥ १४ ॥

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा निष्ठानिर्वहणे समे ।

हण्डे हंजे हलाहाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १५ ॥

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्वाभ्यां द्वे त्रिष्वङ्गिकमात्त्विके ॥ १६ ॥

है ॥ ११ ॥ आवुत्त यह एक (पु०) नाम बहनके पतिका है । भाव यह एक (पु०) नाम विद्वानका है । आवुक यह एक (पु०) नाम पिताका है । कुमार, भर्तृदारक ये दो (पु०) नाम युवराज अर्थात् राजपुत्रके हैं ॥ १२ ॥ भट्टारक, देव ये दो (पु०) नाम राजाके हैं । भर्तृदारिका यह एक (स्त्री०) नाम राजाकी पुत्रीका है । देवी यह एक (स्त्री०) नाम अभिषेक हुई रानीका है । भट्टिनी यह एक (स्त्री०) नाम अन्यरानीका है ॥ १३ ॥ अब्रह्मण्य यह एक (न०) नाम अवध्य ब्राह्मण आदिके दोष प्रकाश करनेका है । राष्ट्रिय यह एक (पु०) नाम राजाके सालेका है । अम्बा, माता ये दो (स्त्री०) नाम माताके हैं । मातृशब्द ऋकारान्त है । वाला, वासू ये दो (स्त्री०) नाम कुमारीके हैं । आर्य्य, मारिप ये दो (पु०) नाम उत्तमके हैं ॥ १४ ॥ अत्तिका यह एक (स्त्री) नाम जेठी बहनका है । निष्ठा (स्त्री०), निर्वहण (न०) ये दो नाम नाटककी निर्वहण संधिके हैं । हंडे यह एक नाम नीच सहेलीके प्रति बुलानेका है । हंजे यह एक नाम चेटीको बुलानेका है । हला यह एक नाम सखीको बुलानेका है । तहां हंडे, हंजे, हला ये अव्यय हैं ॥ १५ ॥ अंगहार, अंगविक्षेप ये दो (पु०) नाम नृत्यविशेषके हैं । व्यञ्जक, अभिनय ये दो (पु०) नाम हाथ आदि करके मनोगत अर्थके प्रकाशके हैं । आंगिक यह नाम अंगकरके निष्पन्न कर्मका है । सात्त्विक यह एक नाम अंतःकरणकरके हुए कर्मका है । आंगिक, सात्त्विक ये दोनों त्रिलिगी हैं । “ स्तंभ, स्वेद, रोमाञ्च, स्वरभंग, कप, वर्णका बदलना, अश्रु, प्रलय ये आठ सात्त्विक गुण हैं ” ॥ १६ ॥

शृंगारवीरकरुणाद्भुतहास्यभयानकाः ।
 वीभत्सरीद्रौ च रसा. शृंगार. शुचिरुज्ज्वलः ॥ १७ ॥
 उत्साहवर्द्धनो वीर' कारुण्यं करुणा घृणा ।
 कृपा दयानुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽप्यथो हसः ॥ १८ ॥
 हासो हास्यं च वीभत्स विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।
 विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमप्यथ भैरवम् ॥ १९ ॥
 दारुणं भीषणं भीष्म घोरं भीमं भयानकम् ।
 भयंकरं प्रतिभयं रौद्र तूग्रममी त्रिषु ॥ २० ॥
 चतुर्दश दरस्त्रासो भीतिर्भी. साध्वसं भयम् ।
 विकारो मानसो भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१ ॥
 गर्वोऽभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नति ।
 “ दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेक' स्मयो मदः । ”
 अनादरः परिभव. परीभावास्तिरस्क्रिया ॥ २२ ॥

शृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र ये आठ (पु०) नाम नाटकके रसके हैं । चकारसे नववां शान्तरस जानना । शृङ्गार, शुचि, उज्ज्वल ये तीन (पु०) नाम शृंगारके हैं ॥ १७ ॥ उत्साहवर्द्धन, वीर ये दो (पु०) नाम वीरसके हैं । कारुण्य, करुणा, घृणा, कृपा, दया, अनुकम्पा, अनुक्रोश ये सात नाम दयाके हैं । यहा कारुण्य (न०), अनुक्रोश (पु०), शेष (स्त्री०) है । हस ॥ १८ ॥ हास, हास्य ये तीन नाम हासके हैं । हास्य (न०) शेष, (पु०) है । वीभत्स, विकृत ये दो नाम वीभत्सके हैं और ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । विस्मय, अद्भुत, आश्चर्य, चित्र ये चार नाम अचरजके हैं । विस्मय (पु०) शेष (न०) है । भैरव ॥ १९ ॥ दारुण, भीषण, भीष्म, घोर, भीम, भयानक, भयकर, प्रतिभय ये नव नाम भयानकके हैं । रौद्र, उग्र ये दो नाम उग्रके हैं । भैरवसे लेकर रौद्रपर्यंत चौदह शब्द तीनों लिङ्गवाची हैं ॥ २० ॥ दर (पु० न०), त्रास (पु०), भीति (स्त्री०), भी (स्त्री०), साध्वस (न०), भय (न०) ये छ नाम भयके हैं । भाव यह एक (पु०) नाम मनसबधी विकारका है । अनुभाव यह एक (पु०) नाम चित्तके विकारको प्रकाश करनेवाला है ॥ २१ ॥ गर्व, अभिमान, अहंकार ये

रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूक्षणम् ।

मन्दाक्षं हीस्त्रपा व्रीडा लज्जा सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

क्षान्तिस्तितिक्षाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

अक्षान्तिरीर्ष्याऽसूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥ २४ ॥

वैरं विरोधो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि ॥ २५ ॥

कोपक्रोधामर्षरोपप्रतिघा रुद्क्रुधौ स्त्रियौ ।

शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादाश्चित्तविभ्रमः ॥ २६ ॥

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहोऽय दोहदम् ।

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृद्धाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

तीन (पु०) नाम गर्वके हैं । मान यह एक (पु०) नाम चित्तकी बहुत उंचाई अर्थात् उन्नताका है । “ दर्प, अवलेप, अवष्टंभ, चित्तोद्रेक, स्मय, मद ये छः (पु०) नाम मदके हैं । ” अनादर, परिभव, परीभाव ये तीन (पु०), तिरस्त्रिया ॥ २२ ॥ रीढा, अवमानना, अवज्ञा ये चार (स्त्री०), अवहेलन, असूक्षण ये दो (न०) ये नव नाम अनादरके हैं । मन्दाक्ष, ह्री, त्रपा, व्रीडा, लज्जा ये पांच नाम लाजके हैं । यहाँ मन्दाक्ष (न०) शेष (स्त्री०) हैं । अपत्रपा यह एक (स्त्री०) नाम दूसरेसे लाजका है ॥ २३ ॥ क्षान्ति, तितिक्षा ये दो (स्त्री०) नाम अन्यके सुखको सहनेके हैं । अभिध्या यह एक (स्त्री०) नाम अन्यके धनके विषयमें इच्छाका है । अक्षांति, ईर्ष्या ये दो (स्त्री०) नाम ईर्ष्याके हैं । असूया यह एक (स्त्री०) नाम गुणोंमें दोष आरोपणका है ॥ २४ ॥ वैर, विरोध, विद्वेष ये तीन नाम वैरके हैं । वैरशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । मन्यु, शोक, शुक् (चान्त) ये तीन नाम शोकके हैं । शुक्शब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार ये तीन (पु०) नाम पश्चात्तापके हैं ॥ २५ ॥ कोप, क्रोध, अमर्ष, रोष, प्रतिघं, रुष् (षान्त), क्रुध, ये सात नाम क्रोधके हैं । तहाँ स्प और क्रुध ये दोनों शब्द (स्त्री०) हैं । शेष (पु०) हैं । शील यह एक (न०) नाम शुद्ध, चरितका है । उन्माद, चित्तविभ्रम ये दो (पु०) नाम चित्त बिगडनेके हैं ॥ २६ ॥ प्रेमन् (नान्त पु०), प्रियता (स्त्री०), हार्द (न०), प्रेमन् (नान्त न०), स्नेह (पु०) ये पांच नाम प्रेमके हैं । दोहद, इच्छा, कांक्षा, स्पृहा, ईहा, तृष्

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः ।
 उपाधिर्ना धर्मचिन्ता पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥ २८ ॥
 स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्कालिके समे ।
 उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
 कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयश्छन्नकैतवे ।
 कुसृतिर्निकृतिः शाठ्य प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
 कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम् ।
 स्त्रीणां विलासविव्वोकविभ्रमा ललित तथा ॥ ३१ ॥
 हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृगारभावजाः ।
 द्रवकेलिपरीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ॥ ३२ ॥

(घान्त), बाँछा, लिप्सा, मनोरथ ॥ २७ ॥ काम, अभिलाष, तर्ष ये बारह नाम मनोरथके है । दोहदशब्द (पु० न०), इच्छासे लिप्सातरु (स्त्री०) और शेष (पु०) है । लालसा यह एक नाम अत्यन्त इच्छाका है और (स्त्री० पु०) है । उपाधि, धर्मचिन्ता (स्त्री०) ये दो नाम धर्मकी चिन्ताके है । तहाँ उपाधिशब्द (पु०) है । आधि, मानसीव्यथा ये दो नाम मनकी पीडाके है । तहाँ आधिशब्द (पु०) है दूसरा (स्त्री०) है ॥२८॥ चिन्ता, स्मृति, आध्यान ये तीन नाम स्मरणके है । आध्यान (न०) शेष (स्त्री०) है । उत्कठा, उत्कालिका ये दो (स्त्री०) नाम उत्कठाके है । उत्साह, अध्यवसाय ये दो (पु०) नाम उत्साहके ह । वीर्य (न०) यह एक नाम अत्यन्त उत्साहका है ॥२९॥ कपट, व्याज (पु०), दम्भ (पु०), उपधि (पु०), छन्न (नान्त न०), कैतव (न०), कुसृति (स्त्री०), निकृति (स्त्री०), शाठ्य (न०) ये नव नाम शठपनेके है । तहाँ कपटशब्द (पु० न०) है ॥ ३० ॥ कौतूहल, कौतुक, कुतुक, कुतूहल ये चार (न०) नाम कौतुकके ह । विलास (पु०), विव्वोक (पु०), विभ्रम (पु०), ललित (न०) ॥३१॥ हेला (स्त्री०), लीला (स्त्री०) ये सब स्त्रियोंके शृङ्गारसे उपजी छ' चेष्टा हाव नामसे प्रासिद्ध है । द्रव (पु०),

१ नेत्र मुद्र भ्रुकुटी आदिके जो रस उत्पन्न हो उसे विलास कहते है । २ गर्भसे उत्पन्न अनादरादिको विव्वोक कहते है । ३ वर आभूषणादिकरके उलट पुलटको विभ्रम कहते है । ४ अगोके अच्छे विन्यासको ललित कहते हैं । ५ नृत्य आदिको हेला कहते है । ६ प्रिय भूषण और वचन आदिके अनुकरणको लीला कहते है ।)

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।
 धर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्प्रलयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥
 अवाहित्याकारगुप्तिः समौ संवेगसंभ्रमौ ।
 स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥
 मध्यमः स्याद्विहसितं रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।
 ऋन्दितं रुदितं क्रुष्टं जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥ ३५ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादो रिङ्गणं स्वलनं समे ।
 स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥
 तन्द्री प्रमीला भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः द्वियाम् ।
 अट्टिः स्यादसौम्येऽक्षिण संसिद्धिप्रकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

केलि (पु० स्त्री०), परीहास (पु०), क्रीडा (स्त्री०), लीला (स्त्री०),
 नर्मन् (न०) ये छः नाम क्रीडामात्रके हैं ॥ ३२ ॥ व्याज (पु०), अ-
 पदेश (पु०), लक्ष्य (न०) ये तीन नाम अपने रूपको छिपानेके हैं ।
 क्रीडा (स्त्री०), खेला (स्त्री०), कूर्दन (न०) ये तीन नाम बालली-
 लाके हैं । धर्म, निदाघ, स्वेद ये तीन (पु०) नाम पसीनेके हैं । प्रलय
 (पु०), नष्टचेष्टता (स्त्री०) ये दो नाम मूर्च्छा करके बेहोशपानेके हैं
 ॥ ३३ ॥ अवाहित्या, आकारगुप्ति ये दो (स्त्री०) नाम शोक आदिसे
 उपजी मुखकी ग्लानिके वा गुप्त आकारके हैं । संवेग, संभ्रम ये दो (पु०)
 नाम आनन्दपूर्वक कर्मोंमें शीघ्रताके हैं । आच्छुरित यह एक (न०) नाम
 अभिप्रायसहित हँसनेका है अथवा शब्दसहित हँसनेका है । स्मित यह
 एक (न०) नाम मुसकुरानेका है ॥ ३४ ॥ विहसित यह एक (न०) नाम
 मध्यम हँसनेका है । रोमाञ्च (पु०), रोमहर्षण (न०) ये दो नाम रोमा-
 वली खडी होनेके हैं । ऋन्दित, रुदित, क्रुष्ट ये तीन (न०) नाम रोवनेके
 हैं । जृम्भ, जृम्भण (न०) ये दो नाम जंभाईके हैं । तहां जृम्भशब्द त्रिलिगी
 है ॥ ३५ ॥ विप्रलम्भ, विसंवाद ये दो (पु०) नाम ठगार्इसे मिले हुए
 बोलनेके हैं । रिङ्गण, स्वलन ये दो (न०) नाम अपने धर्म आदिसे उल्टे
 चलनेके हैं । निद्रा (स्त्री०), शयन (न०), स्वाप (पु०), स्वप्न (पु०),
 संवेश (पु०) ये पांच नाम नींदके हैं ॥ ३६ ॥ तन्द्री, प्रमीला ये दो
 (स्त्री०) नाम नींदके आदि और अन्त्यमें हुए आलस्यके हैं । भ्रुकुटि,

स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्चाथ वेपथुः ।

कम्पोऽथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः ८ ।

अधोभुवनपातालं बलिसन्न रसातलम् ।

नागलोकोऽथ कुहरं सुपिरं विवरं विलम् ॥ १ ॥

छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपां शुपिः ।

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे सरन्ध्रे सुपिरं त्रिषु ॥ २ ॥

अन्धकारोऽस्त्रिया ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः ।

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेऽवतमसं तमः ॥ ३ ॥

विष्वक् सतमसं नागाः काद्रवेयास्तदीश्वरः ।

शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजोऽथ गोनसे ॥ ४ ॥

भ्रुमुटि, भ्रूमुटि ये तीन नाम भ्रुमुटी चढानेके हैं तहां भ्रुमुटि आदि तीनों शब्द (स्त्री०) हैं । अट्टि यह एक (स्त्री०) नाम रोपसहित टेढी आंखसे देखनेका है । ससिद्धि (स्त्री०), प्रकृति (स्त्री०) ॥ ३७ ॥ स्वरूप (न०), स्वभाव (पु०), निसर्ग (पु०) ये पांच नाम स्वभावके हैं । वेपथु, कप ये दो (पु०) नाम कपके हैं । क्षण, उद्धर्ष, मह, उद्धव, उत्सव ये पांच (पु०) नाम उत्सवके हैं ॥ ३८ ॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः । अधोभुवन, पाताल, बलिसन्न, रसातल, नागलोक ये पांच नाम पातालके हैं । यहाँ नागलोक (पु०) शेष (न०) है । कुहर, सुपिर, विल ॥ १ ॥ छिद्र, निर्व्यथन, रोक, रन्ध्र, श्वभ्र, वपा, शुपि ये ग्यारह नाम छिद्रमात्रके हैं । तहाँ वपा और शुपि शब्द (स्त्री०) और शेष (न०) है । गर्त, अवट ये दो (पु०) नाम पृथ्वीछिद्रके हैं । सुपिर यह एक नाम छिद्रयुक्त वस्तुका है और तीनों लिगजाची है ॥ २ ॥ अन्धकार (पु० न०), ध्वान्त (न०) तमिस्र (न०), तिमिर (न०), तमस् (न०) ये पांच नाम अन्धकारके हैं । अधतमस यह एक (न०) नाम अत्यन्त अधरेका है । अवतमस यह एक (न०) नाम विगत अधरेका है ॥ ३ ॥ सतमस यह एक (न०) नाम सर्वव्यापी अधरेका है । नाग, काद्रवेय ये दो (पु०) नाम सर्पोंके हैं । शेष, अनन्त ये दो (पु०) नाम

तिलित्सः स्यादजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।
 अलगर्दो जलव्यालः समौ राजिलडुण्डुभौ ॥ ५ ॥
 मालुधानो मातुलाहिर्निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।
 सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः ॥ ६ ॥
 आशीविपो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
 कुण्डली गूढपाचक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
 दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको विलेशयः ।
 उरगः पन्नगो भोगी जिह्वमः पवनाशनः ॥ ८ ॥
 “ लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कंचुकी तथा ।
 कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥
 अहः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका । ”
 त्रिष्वाहेयं विषास्थयादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
 समौ कञ्चुकनिर्मोकौ क्ष्वेडस्तु गगलं विषम् ॥ ९ ॥

सर्पोंके पति शेषनागके हैं । वासुकि, सर्पराज ये दो (पु०) नाम सर्पोंके राजाके हैं । गोनस ॥ ४ ॥ तिलित्स ये दो (पु०) नाम पाणससर्पके हैं । अजगर, शयु, वाहस ये तीन (पु०) नाम अजगरके हैं । अलगर्द, जल-व्याल ये दो (पु०) नाम पानीके सर्पके हैं । राजिल, डुण्डुभ ये दो (पु०) नाम निर्विष और दो मुखवाले सर्पके हैं ॥ ५ ॥ मालूधान, मातुलाहि ये दो (पु०) नाम खड्गके आकारवाले चित्रसर्पके हैं । निर्मुक्त, मुक्तकंचुक ये दो (पु०) नाम त्यागी हुई कांचलीवाले सर्पके हैं । सर्प, पृदाकु, भुजग, भुजंग, अहि, भुजंगम ॥ ६ ॥ आशीविप, विषधर, चक्रिन् (इन्नंत), व्याल, सरीसृप, कुंडलिन् (इन्नंत), गूढपाद् (दान्त), चक्षुःश्रवस् (सान्त), काकोदर, फणिन् (इन्नंत) ॥ ७ ॥ दर्वीकर, दीर्घपृष्ठ, दंदशूक, विलेशय, उरग, पन्नग, भोगिन् (इन्नंत), जिह्वग, पवनाशन ये पच्चीस (पु०) नाम सर्पके हैं ॥ ८ ॥ “ लेलिहान, द्विरसन, गोकर्ण, कंचुकिन् (इन्नंत), कुंभीनस, फणधर, हरि, भोगधर ये आठ (पु०) नाम सर्पमात्रके हैं । भोग यह एक (पु०) नाम सांपके शरीरका है । आशिस् (सान्त), अहिदंष्ट्रिका ये दो (स्त्री०) नाम सांपकी डारके हैं । ” आहेय यह एक नाम सर्पके विष और हड्डी आदिका है । तहां आहेयशब्द तीनों

पुसि क्लीबे च काकोलकालकूटहलाहलाः ।

सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १० ॥

दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी नव ।

विषवैद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥ ११ ॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः ॥ ९ ॥

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।

तद्भेदास्तपनावीचिमहारौरवरौरवाः ॥ १ ॥

सघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्वास्तु नारकाः ।

प्रेता वैतरणी सिंधुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋति ॥ २ ॥

विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

पीडा वाधा व्यथा दुःखमामनस्य प्रसूतिजम् ॥ ३ ॥

लिंगवाची है। स्फटा, फणा ये दो (पु० स्त्री०) नाम सर्पके फनके हे। कचुक,
निमोक ये दो (पु०) नाम सांपकी कांचलीके हे। क्ष्वेड (पु०), गरल
(न०), विष ये तीन नाम विषके ह। तहां विषशब्द (पु० न०) हे ॥१॥
काकोल, कालकूट, हलाहल ये तीन (पु० न०) ह और सौराष्ट्रिक, शौ
क्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन ॥ १० ॥ दारद, वत्सनाभ ये छ नाम (पु०)
हे। इस प्रकार ये नव भेद विषके हे। विषवैद्य, जाङ्गुलिक ये दो (पु०)
नाम विषवैद्यके हे। व्यालग्राहिन (इन्द्रन्त), अहितुण्डिक ये दो (पु०)
नाम सर्प पकडनेवालेके हे ॥ ११ ॥ इति पातालभोगिवर्ग ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्ग । नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये चार नाम नरकके हैं।
तहां दुर्गतिशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) है। तपन (पु०), अवीचि
(पु०), महारौरव (पु०), रौरव (पु०) ॥ १ ॥ सघात (पु०), का
लसूत्र (न०) आदि नरकके भेद ह। यहां आदिशब्दसे ताभिस्त्र, जुभी
पाक आदि लेने चाहिये। प्रेत यह एक (पु०) नाम नरकमें रहनेवाले
जीवोंका है। वैतरणी यह एक (स्त्री०) नाम नरककी नदीका है। नि
र्ऋति यह एक (स्त्री०) नाम नरककी अशोभाका है ॥ २ ॥ विष्टि,
आज ये दो (स्त्री०) नाम नरकमें हठसे मरनेके ह। कारणा, यातना,
तीव्रवेदना ये तीन (स्त्री०) नाम नरककी पीडाके हे। पीडा (स्त्री०) वाधा

स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ॥ ४ ॥

इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १० ।

समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपति ।

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

आपः स्त्री भूमिर् वार्वारि सलिलं कमलं जलम् ।

पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।

अम्भोऽर्णस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंवरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरसस्त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

भंगस्तरंग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरयोर्मिषु ॥ ५ ॥

(स्त्री०), व्यथा (स्त्री०), दुःख (न०), आमनस्य (न०), प्रसूतिज (न०) ॥ ३ ॥ कष्ट (न०), कृच्छ्र (न०), आभील (न०) ये नव नाम दुःखके हैं । इन्हींके मध्यमें जो दुःख आदि विशेष्यवृत्तिवाले हैं वे तीनों लिंगवाची हैं । जैसे—‘ सेयं सेवा दुःखा च बहुरूपा, सोयं दुःखसुतो गुणः, सर्वं दुःखं विवेकिनः ’ और भेद्यगामित्व (विशेष्यवृत्तित्व) का जहाँ अभाव है वहीं वेही लिंग हैं ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः । समुद्र, अब्धि, अकूपार, पारावार, सरित्पति, उदन्वत् (मत्वन्त), उदधि, सिन्धु, सरस्वत् (मत्वन्त), सागर, अर्णव ॥ १ ॥ रत्नाकर, जलनिधि, यादःपति, अपांपति ये पन्द्रह (पु०) नाम समुद्रके हैं । क्षीरोद, लवणोद, दध्युद, वृतोद, सुरोद, इक्षुद, स्वादूद ये सात (पु०) शब्द समुद्रभेदके हैं ॥ २ ॥ अप् (स्त्री० बहुवचन), वार, वारि, सलिल, कमल, जल, पयस् (सान्त), कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन ॥ ३ ॥ कवन्ध, उदक, पाथस् (सान्त), पुष्कर, सर्वतोमुख, अम्भस् (सान्त), अर्णस् (सान्त), तोय, पानीय, नीर, क्षीर, अंबु, शंवर ॥ ४ ॥ मेघपुष्प, घनरस (पु०) ये सत्ताईस (न०) नाम पानीके हैं । आप्य, अम्मय ये दो नाम पानीके विकारके हैं और त्रिलिगी हैं । भंग (पु०), तरंग (पु०), ऊर्मि,

महत्सल्लोलकल्लोलौ स्यादावर्त्तोऽम्भसा भ्रमः ।
 पृपन्ति विन्दुपृपता' पुमासो विप्रुप. स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
 चक्राणि पुटभेदा' स्युर्भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।
 कूल रोधश्च तीर च प्रतीर च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
 पारावारे परार्वाची तीरे पात्र तदन्तरम् ।
 द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीप यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥ ८ ॥
 तोयोत्थित तत्पुलिन सैकत सिकतामयम् ।
 निपद्मस्तु जम्बाल' पंकोऽस्त्री शादकदर्दमौ ॥ ९ ॥
 जलोच्छ्वासा' परीवाहाः कूपकास्तु विदारक' ।
 नाव्य त्रिलिङ्ग नौतार्य स्त्रिया नौस्तरणिस्तरि' ॥ १० ॥

वीचि ये चार नाम लहरके है । तहां अमिशब्द (स्त्री० पु०) है और वीचिशब्द (स्त्री०) है शेष (पु०) है ॥ ६ ॥ उल्लोल, कल्लोल ये दो (पु०) नाम बड़ी लहरके है । आवर्त यह एक (पु०) नाम मटलके आकारवाले भँवरका है । पृपत् (तान्त न०), विन्दु (पु०), पृपत (पु०), विप्रुप् ये चार नाम पानीकी बूदोके है । तहां विप्रुप्शब्द पकारान्त (स्त्री०) है ॥ ६ ॥ चक्र (न०), पुटभेद (पु०) ये दो नाम चक्रके आकारकरके नीचे जाते हुए पानीके है । भ्रम, जलनिर्गम ये दो (पु०) नाम पानी निकसनेके जालके है । कूल, रोधम् (सान्त), तीर, प्रतीर, तट ये पाँच (न०) नाम तीरके है । तहां तटशब्द त्रिलिङ्गी है ॥ ७ ॥ पार यह (न०) नाम नदीके परले तीरका है । आवार यह (न०) नाम नदीके उरले तीरका है । पात्र यह (न०) नाम दोनो तीरोके मध्यका है । द्वीप, अन्तरीप ये दो (पु० न०) नाम पानीके मध्यमे तट अर्थात् टापूके है ॥ ८ ॥ पुलिन यह एक (न०) नाम पानीके क्रमसे निकली हुई पृथ्वीका है । सैकत, सिकतामय ये दो (न०) नाम बहुत बालू रेतजाली जगहके है । निपद्म, जजाल, पद्म, शाद, कर्दम ये पाँच (पु०) नाम कीचटके है । तहां पद्मशब्द (पु० न०) है ॥ ९ ॥ जलोच्छ्वास, परीवाह ये दो (पु०) नाम निर्गम मार्गोकरके बढे हुए और बहते हुए पानीके है । कूपक, विदारक ये दो (पु०) नाम सूखी नदी आदिमें पानीके लिये जो गढे किये जाव उनके है । नाव्य यह नाम नावकरके तारनेके योग्य पानी आदिका है और

उडुपं तु प्लवः कोलः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

आतरस्तरपण्यं स्याद् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥

सांयात्रिकः पोतवणिक्कणधारस्तु नाविकः ।

नियामकाः पोतवाहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥

नौकादण्डः क्षेपणी स्यादरित्रं केनिपातकः ।

अत्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥

ह्रिवेऽर्धनावं नावोऽर्धेऽतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

त्रिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कल्पोऽनच्छ आविलः ॥ १४ ॥

निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपर्यये ।

अगाधमतलस्पर्शं कैवर्त्तं दाशधीवरौ ॥ १५ ॥

त्रिलिगी है । नौ, तरणि, तरि ये तीन (स्त्री०) नाम नावके हैं ॥ १० ॥
 उडुप, प्लव, कोल ये तीन (पु०) नाम डौंगीके हैं । उडुप (न०) भी
 है । स्रोतस् यह एक (पु० न०) नाम आपहीसे पानी झिरे अर्थात्
 झिरनेका है । आतर (पु०), तरपण्य (न०) ये दो नाम नदीकी उत-
 राई देनेके हैं । द्रोणी (स्त्री०) यह नाम काठसे बनी हुई और पानीमें
 बहनेवाली नावका है ॥ ११ ॥ सांयात्रिक, पोतवणिज् (जान्त) ये दो
 (पु०) नाम नावके द्वारा व्यवहार करनेवालोंके हैं । कर्णधार, नाविक ये दो
 (पु०) नाम मलाहके हैं । नियामक, पोतवाह ये दो (पु०) नाम जहाजके
 खिवेयेके हैं । कूपक, गुणवृक्षक ये दो (पु०) नाम रस्ती आदिके मध्य
 आधारस्थित स्तंभ अर्थात् मस्तूलका है ॥ १२ ॥ नौकादंड (पु०),
 क्षेपणी (स्त्री०) ये दो नाम नावको चलानेवाली बल्लीके हैं । अरित्र
 (न०), केनिपातकं (पु०) ये दो नाम सुक्राण अर्थात् पतवारके हैं ।
 अत्रि (स्त्री०), काष्ठकुद्दाल (पु०) ये दो नाम जहाज आदिके मलको
 दूर करनेके लिये काठके कुद्दालके हैं । सेकपात्र, सेचन ये दो (न०) नाम
 घमड़ेके जल फेंकनेके पात्रके हैं ॥ १३ ॥ अर्धनाव यह नाम नावके आधे
 भागका है और (न०) है । अतिनु यह एक नाम नावको जीतकर
 बड़े तेरनेवाले मनुष्य आदिका है और यह शब्द त्रिलिगी है । यहाँसे
 अतलस्पर्शपर्यंत सब शब्द त्रिलिगी हैं । प्रसन्न, अच्छ ये दो नाम निर्मलके
 हैं । कल्प, अनच्छ, आविल ये तीन नाम गदलेके हैं ॥ १४ ॥ निम्न,

आनाय* पुसि जाल स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।
 मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्बडिशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥
 पृथुरोमा क्षपो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डज ।
 विसार शकुली चाथ गडक शकुलार्भक* ॥ १७ ॥
 सहस्रदंष्ट्र पाठीन उलूपी शिशुक* समौ ।
 नलमीनाश्चिलिचिम प्रोष्ठी तु शफरी द्वयो* ॥ १८ ॥
 क्षुद्राण्डमत्स्यसंघात* पोताधानमथो क्षपाः-।
 गोहितो महूर* शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥
 तिर्मिगिलादयश्चाथ यादासि जलजन्तव ।
 तद्रेदाः शिशुमागेद्रशङ्खो मकरादय* ॥ २० ॥

गभीर, गभीर ये तीन नाम गभीर (गहरे) के हैं । उत्तान यह एक नाम गभीरसे विपरीतका है । अगाध, अतलस्पर्श ये दो नाम अत्यन्त गभीर अर्थात् अयाहके हैं । कैवर्त्त, दाश, धीवर ये तीन (पु०) नाम मलाहके हैं ॥ १६ ॥ आनाय (पु०), जाल (न०) ये दो नाम जालके हैं, शणसूत्र, पवित्रक ये दो (न०) नाम शणसूत्र अर्थात् सुतरीके हैं । मत्स्याधानी, कुवेणी ये दो (स्त्री०) नाम मटली बांधनेकी करटिया अर्थात् टोकरीके हैं । बडिश, मत्स्यवेधन ये दो (न०) नाम मटलीवेधन अर्थात् घशीके हैं ॥ १६ ॥ पृथुरोमर (नान्तः), क्षप, मत्स्य, मीन, वैसारिण, अण्डज, विसार, शकुलिक (इयन्त) ये आठ (पु०) नाम मटलीके हैं । गडक, शकुलार्भक ये दो (पु०) नाम गल्फटी मटली वा बच्चेविशेषके हैं ॥ १७ ॥ सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये दो (पु०) नाम बहूत दाँतवाली मटलीविशेषके हैं । उलूपिक (इयन्त), शिशुक ये दो (पु०) नाम शिशु मारने आहारवागी मटलीके हैं । नलमीन, चिलिचिम ये दो (पु०) नाम पानी और छपमें विचरनेवाली मटलीके हैं । प्रोष्ठी (स्त्री०), शफरी (पु०) ये दो नाम सररी मटलीके हैं ॥ १८ ॥ पोताधान यह एक (न०) नाम उगी मटलियोंके समूहका है । अब मत्स्यविजेत कहते हैं । रोहित या एर (पु०) नाम रोहो मटली का है । महूर यह एर (पु०) नाम मोग मटली का है । शाल यह (पु०) नाम शरभिन मटलीका है । राजीव यह (पु०) नाम राया मटलीका है । शकुल यह (पु०) नाम सौग मटलीका है । तिर्मिगि, नेशायर्त्त ये तीन (पु०)

स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मं कमठकच्छगौ ।
 ग्राहोऽवहारो नक्रस्तु कुम्भीरोऽथ महीलता ॥ २१ ॥
 गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोधिका समे ।
 रक्तपा तु जलौकायां स्त्रियां भृम्नि जलौकमः ॥ २२ ॥
 मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुगच्छिगौ ।
 क्षुद्रशंखाः शङ्खनखाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
 भेके मण्डूकवर्षाभूशालूरप्लवदूर्दुराः ।
 शिली गंडूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी डुलिः ॥ २४ ॥
 मट्टस्य प्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हृदः ॥ २५ ॥

नाम तीन तरहकी मछलियोंके हैं। यादम् (सान्त न०), जलजन्तु, (पु०) ये दो नाम प्राणीमें रहनेवाले जीवके हैं। उनके भेद ये हैं। शिशुमार यह (पु०) नाम शिरस मछलीका है। यह उद्र (पु०) नाम हृद-मछलीका है। शंकु यह (पु०) नाम सफू मच्छका है। मकर यह (पु०) नाम मगरमच्छका है। आदिशब्दसे जलहस्ती आदि जानने। ये सब मच्छोंके भेद हैं ॥ २० ॥ कुलीर, कर्कटक ये दो (पु०), नाम कैंकडेके हैं। कूर्म, कमठ, कच्छप ये तीन (पु०) नाम कछुआके हैं। ग्राह, अवहार ये दो (पु०) नाम ग्राहके हैं। नक्र, कुम्भीर ये दो (पु०) नाम नावूके हैं। महीलता (स्त्री०) ॥ २१ ॥ गंडूपद (पु०), किंचुलक (पु०) ये तीन नाम केंचुवाके हैं। निहाका, गोधिका ये दो (स्त्री०) नाम जलगोहके हैं। रक्तपा (स्त्री०), जलौका (स्त्री०), जलौकस् ये तीन नाम जोकके कहे हैं। तहां जलौकस् शब्द नित्य बहुवचनान्त सकारान्त स्त्रीलिंग है ॥ २२ ॥ मुक्तास्फोट (पु०), शुक्ति (स्त्री०) ये दो नाम सीपीके हैं। शंख, कंडु ये दो (पु० न०) नाम शंखके हैं। क्षुद्रशंख, शंखनख ये (पु०) नाम छोटे शंखके हैं। शम्बूक यह (पु० स्त्री०) नाम घोंघेका है ॥ २३ ॥ भेक, मंडूक, वर्षाभू, शालूर, प्लव, दर्दुर ये छः (पु०) नाम मेंढकके हैं। शिली, गंडूपदी ये दो (स्त्री०) नाम छोटे गिडोवा अर्थात् केंचुएके हैं। भेकी, वर्षाभ्वी ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मेंढकजातिके हैं। कमठी, डुलि ये दो (स्त्री०) नाम कछुवोंके हैं ॥ २४ ॥ शृङ्गी (स्त्री०) यह एक नाम

आदावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।
 पुस्त्रेवान्धुः प्राहि कूप उदपान तु पुसि वा ॥ २६ ॥
 नेमिस्त्रिकाऽस्य बीनाहो मुखवन्धनमस्य यत् ।
 पुष्करिण्या तु खातं स्यादखातं देवखातकम् ॥ २७ ॥
 पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 वेशन्त पल्वल चालपसगे वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
 खेय तु परिखाधारस्त्वम्भसा यत्र धारणम् ।
 स्यात्पालवालमावालमावापोऽथ नदी सरित् ॥ २९ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।
 स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥

महूर नामवाले मच्छविशेषकी स्त्रीके है । दुर्नामन (पु०), दीर्घत्रोशिका
 (स्त्री०) ये दो नाम जोंकके आकारवाले जलधरविशेषके है । जलाशय,
 जलाधार ये दो (पु०) नाम तालाव आदिके है । हृद् यह (पु०) नाम
 अगाध पानीवाले जलस्थानका है ॥ २६ ॥ आहाव (पु०), निपान (न०)
 ये दो नाम कुएके पासके गढेके हैं । इसमें भरे पानीको पशु पीते ह । अधु,
 प्राहि, रूप, उदपान ये चार नाम कुएके है । उदपान शब्द (पु० न०) हे
 शेष (पु०) है ॥ २६ ॥ नेमि, त्रिका ये दो (स्त्री०) नाम कुएके चार
 अर्थात् धित्रीके हैं । बीनाह (पु०) यह नाम कुएके पनघटेका है । पुष्क
 रिणी (स्त्री०), खात (न०) ये दो नाम खोदी हुई छोटी तलेयाके है ।
 अखात, देवखातक ये दो (न०) नाम बिना खोदे हुए सरोवर अर्थात्
 युगने तीर्थके है ॥ २७ ॥ पद्माकर (पु०), तडाग (पु० न०), कासार
 (पु०), सरसी (स्त्री०), सरस् (सान्त न०) ये पांच नाम तलावके हैं ।
 वेशन (पु०), पल्वल (पु० न०), अल्पसरस् (सान्त न०) ये तीन नाम
 छोटी तलावके है । वापी, दीर्घिका ये दो (स्त्री०) नाम बावडीके हैं
 ॥ २८ ॥ खेय (न०), परिखा (स्त्री०) ये दो नाम खाईके हैं । आधार
 (पु०) यह नाम बांधका है । आलवाल (न०), आवाल (न०), आवाप
 (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिके थांलेके हैं । नदी, सरित् (तान्त)
 ॥ २९ ॥ तरंगिणी, शैवलिनी, तटिनी, ह्लादिनी, धुनी, स्रोतस्विनी, द्वीप

“ कूलंकषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती । ”

गङ्गा विष्णुपदी जहृतनया सुगनिम्रगा ।

भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥ ३१ ॥

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वमा ।

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥

करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्विपाशा तु विपाद् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥

शोणो हिरण्यवाहः स्यात् कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥

कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ।

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्यां त्रिषु तूत्तरौ ॥ ३५ ॥

वती, स्वती, निम्रगा, आपगा ये बारह (स्त्री०) नाम नदीके हैं ॥ ३० ॥
 “ कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती येभी चार (स्त्री०) नाम
 नदीकेही हैं । ” गंगा, विष्णुपदी, जहृतनया, सुगनिम्रगा, भागीरथी, त्रि-
 पथगा, त्रिस्रोतस् (सान्त), भीष्मसू ये आठ (स्त्री०) नाम गंगाजीके
 हैं ॥ ३१ ॥ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वमू (ऋकारान्त) ये चार
 (स्त्री०) नाम यमुनाजीके हैं । रेवा, नर्मदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका ये
 चार (स्त्री०) नाम नर्मदाके हैं ॥ ३२ ॥ करतोया, सदानीरा ये दो (स्त्री०)
 नाम गौरीके विवाहमें कन्यादानके जलसे उपजी नदीके हैं । बाहुदा, सैत-
 वाहिनी ये दो (स्त्री०) नाम कार्तवीर्यार्जुनने उतारी नदीके हैं । शतद्रु,
 शुतुद्रि ये दो (स्त्री०) नाम सतलज नदीके हैं । विपाशा, विपाश्
 (शान्त) ये दो (स्त्री०) नाम व्यासनदीके हैं ॥ ३३ ॥ शोण, हिर-
 ण्यवाह ये दो (पु०) नाम नदविशेषके हैं अर्थात् शोणा नदीके हैं ।
 कुल्या यह एक (स्त्री०) नाम छोटी और बनाई हुई नहरका है ।
 शरावती, वेत्रवती, चन्द्रभागा, सरस्वती ॥ ३४ ॥ कावेरी ये पांच
 (स्त्री०) नाम पांच नदीविशेषके हैं । और कौशिकी, गंडकी, चम्मल,
 गोदावरी, वेणी आदि अन्यभी नदी हैं । संभेद, सिन्धुसंगम ये दो (पु०)
 नाम नदीसंगमके हैं । प्रणाली यह एक (स्त्री० पु०) नाम पानी निकसनेके

देविकाया सरय्या च भवे दाविकसारवौ ।
 सौगन्धिकं तु कङ्कार हलकं रक्तमध्यकम् ॥ ३६ ॥
 स्याद्दुत्पल कुवलयमथ नीलाम्बुजन्म च ।
 इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सिते कुमुदकैरवे ॥ ३७ ॥
 शालूकमेषा कंदः स्याद्धारिपर्णी तु कुम्भिका ।
 जलनीली तु शैवालं शैवलोऽथ कुमुद्वती ॥ ३८ ॥
 कुमुदिन्या नलिन्या तु विसिनीपाद्मिनीमुखा ।
 वा पुंसि पद्म नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
 सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 पङ्केरुहं तामरस सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
 विसप्रसूनराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
 पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहे ॥ ४१ ॥

मार्गमें मच्छके मुखके समान रूपवालेका है ॥ ३६ ॥ देविकानदीमें जो हो उसे दाविक, सरयूनदीमें हो उसे सारव कहते हैं । ये दोनों शब्द त्रिलिगी हैं । सौगधिक, कङ्कार ये दो (न०) नाम सायफालमें स्थिलनेवाले कमलके हैं । इसीको कुईभी कहते हैं । हलक, रक्तमध्यक ये दो (न०) नाम लालरगवाले पृथक् कमलके हैं ॥ ३६ ॥ उत्पल, कुवलय ये दो (न०) नाम कुमोदिनीके हैं अथवा साधारण कमलके हैं । नीलाम्बुजन्म (नान्त), इन्दीवर ये दो (न०) नाम नीले कमलके हैं । कुमुद, कैरव ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके हैं ॥ ३७ ॥ शालूक यह एव (न०) नाम कमलचन्दका है । धारिपर्णी, कुम्भिका ये दो (स्त्री०) नाम जलकुभीके हैं । जलनीली (स्त्री०), शैवाल (न०), शैवल (पु०) ये तीन नाम शिवालके हैं । कुमुद्वती ॥ ३८ ॥ कुमुदिनी ये दो (स्त्री०) नाम कुमोदिनीके हैं । नलिनी, विसिनी, पाद्मिनी ये तीन (स्त्री०) नाम कमलिनीके हैं । यहाँ मुखशब्दसे सरोजिनी आदि नामभी कमलिनीके हैं । पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, कुशेशय, पङ्केरुह, तामरस, सारस, सरसीरुह ॥ ४० ॥ विसप्रसून, रज्जीव, पुष्कर, सम्भोरुह ये सोलह (न०) नाम कमलके हैं उनमें पद्मशब्द (पु० न०) है । पुण्डरीक, सिताम्भोज ये दो (न०) नाम सुपेद कमलके

रक्तोत्पलं कोकनदं नालो नालमथास्त्रियाम् ।
 मृणालं विममध्जादिकदम्बे खण्डमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
 करहाटः शिफाकन्दः किजलकः केसरोऽस्त्रियाम् ।
 संवर्तिका नवदलं वीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥
 इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

उक्तं स्वर्ध्यामदिकालधीशब्दादि सनाट्यक्रम ।
 पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥
 इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
 स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥
 इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने प्रथमं काण्डम् ॥ १ ॥

हैं । रक्तसरोरुह ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल कोकनद ये तीन (न०) नाम लाल कमलके हैं । नाल (पु०), नाल (न०) ये दो नाम कमलकी दडीके हैं । मृणाल, विस ये दो (पु० न०) नाम कमलकी भेसाके हैं । खंड यह एक (पु० न०) नाम कमल आदिके समूहका है ॥ ४२ ॥ करहाट, शिफाकन्द ये दो (पु०) नाम कमलकी जडके हैं । किजलक (पु०), केसर (पु० न०) ये दो नाम कमलकी केसरके हैं । संवर्तिका (स्त्री०), नवदल (न०) ये दो नाम कमल आदिके नये पत्तोंके हैं । वीजकोश, वराटक ये दो (पु०) नाम कमलगडोंके हैं ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्बर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाट्यवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग ये दश वर्ग कहे ॥ १ ॥ इस प्रकार अमरसिंहकी कृति नाम लिङ्गानुशासनमें स्वरादि शब्दोंका अंग उपांग-सहित प्रथम कांड कहा ॥ २ ॥

इति श्रीदिङ्गीरौहटकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगीडवंशावतंसविविधशास्त्रपरम-
 यंडितश्रीनिवसहायपुराविवेकशास्त्रिराजर्वेद्यविगचितायामागरानगरवास्तव्य-
 ज्योतिर्विद्वालमुकुन्दभट्टसूरिसूनुपं०-रामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरको-
 शार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकाया प्रथमकांडः ॥ १ ॥

द्वितीयं काण्डम् ।

अथ भूमिवर्ग - ॥ १ ॥

वर्गा पृथ्वीपुरक्ष्माभृद्वनौपधिमृगादिभिः ।

नृब्रह्मक्षत्रविद्शूद्रैः सागोपांगैर्भिहोदिताः ॥ १ ॥

भूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वमरा स्थिरा ।

वरा धरित्री धराणिः क्षोणिज्या काश्यपी क्षितिः ॥ २ ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुधरा ।

गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिर्मेदिनी मही ॥ ३ ॥

“ विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा ।

भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥ ”

मृत्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्सा च मृत्तिका ।

उर्वरा सर्वसस्यादद्या स्यादृषः क्षारमृत्तिका ॥ ४ ॥

ऊपवानूपरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ स्थल स्थली ।

समानौ मरुधन्वानौ द्वे खिलाप्रद्वते समे ॥ ५ ॥

अथ भूमिवर्ग । पृथ्वीवर्ग, पुरवर्ग, शैलवर्ग, वनौपधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, नृवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग, शूद्रवर्ग ये वर्ग अंग उपांगसहित इत्यद्वारे कांडमें कहे हैं ॥ १ ॥ भू, भूमि, अचला, अनन्ता, रसा, विश्वमरा, स्थिरा, धरा, धरित्री, धराणि, क्षोणि, ज्या, काश्यपी, क्षिति ॥ २ ॥ सर्वसहा, वसुमती, वसुधा, उर्वी, वसुधरा, गोत्रा, कु, पृथिवी, पृथ्वी, क्ष्मा, अषानि, मेदिनी, मही ये सत्ताईम (स्त्री०) नाम पृथिवीके हैं ॥ ३ ॥ “ विपुला, गह्वरी, धात्री, गो, श्ला, कुम्भिनी, क्षमा, भूतधात्री, रत्नगर्भा, जगती, सागराम्बरा ये ग्यारह नामभी पृथ्वीके हैं । ” मृत् (दांत), मृत्तिका ये दो (स्त्री०) नाम माटीके हैं । मृत्सा, मृत्सा ये दो (स्त्री०) नाम सुदूर माटीके हैं । उर्वरा (स्त्री०) यह एक नाम सम्पूर्ण खेतियोंसे युक्त पृथिवीका है । उप (पु०), क्षारमृत्तिका (स्त्री०) ये दो नाम खारी माटीके हैं ॥ ४ ॥ ऊपवत् (तांत), ऊपर ये दो नाम ग्यारी माटीसे मिले हुएके हैं । ये दोनों शब्द त्रिलिङ्गी हैं । स्थल (न), स्थली (स्त्री०) ये दो नाम लट्टिम स्थानके हैं । मरु, धन्वत् (नांत) ये दो

त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।
 लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६ ॥
 देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ।
 प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥ ७ ॥
 आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्यहिमालयोः ।
 नीवृज्जनपदो देशविषयौ तूपवर्तनम् ॥ ८ ॥
 त्रिष्वागोष्ठान्नडप्राये नड्वान्नडूल इत्यपि ।
 कुमुद्धान्कुमुदप्राये वेतस्वान्वहुवेतसे ॥ ९ ॥
 शाद्वलः शादहरिते सजम्बाले तु पाङ्किलः ।
 जलप्रायमनूपं स्यात्पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥ १० ॥

(पु०) नाम बागड (मारवाड) देशके हैं । खिल, अप्रहत ये दो नाम
 विना बोर्ड हुई पृथ्वीके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥ ६ ॥ जगती (स्त्री०), लोक
 (पु०), विष्टप (न०), भुवन (न०), जगत् (तान्त न०) ये पांच नाम
 जगत्के हैं । जम्बूद्वीपमें वर्तमान लोक भारतवर्षके नामसे प्रसिद्ध हैं ।
 इलावृत्त आदि अन्यभी वर्ष हैं । शरावती नदीकी अवधिसे जो ॥ ६ ॥
 पूर्व दक्षिण देश है वह प्राच्य कहाता है और (पु०) है । और शरावती
 नदीकी अवधिसे जो देश पश्चिम उत्तर है वह उदीच्य कहाता है वह
 (पु०) है । प्रत्यन्त, म्लेच्छदेश ये दो (पु०) नाम म्लेच्छदेशके हैं । जिस
 देशमें चार वर्णोंकी व्यवस्था नहीं हो वह म्लेच्छदेश होता है । मध्यदेश,
 मध्यम ये दो (पु०) नाम मध्यदेशके हैं । हिमालय और विन्ध्याचलके
 मध्य हो कुम्भक्षेत्रसे पूर्व और प्रयागसे पश्चिम हो यह मध्यदेश है ॥ ७ ॥
 आर्यावर्त, पुण्यभूमि ये दो (पु०) नाम आर्यावर्त देशके हैं । यह आर्या-
 वर्त हिमालय और विन्ध्याचलके भीतर है अर्थात् पूर्वके समुद्र और पश्चि-
 मके समुद्रके बीचकी पृथ्वी आर्यावर्तसे प्रसिद्ध है । नीवृत्त (पु० स्त्री०),
 जनपद (पु०) ये दो नाम मगध आदि देशके हैं । देश (पु०),
 विषय (पु०), उपवर्तन (न०) ये तीन नाम देशमात्रके हैं ॥ ८ ॥
 गोष्ठशब्दतक त्रिलिङ्गी हैं । नड्वत्, नडूल ये दो नाम बहुत नरसलवाले
 देशके हैं । कुमुद्वत् यह एक नाम बहुत कमोदनीवाले देशका है ।
 वेतस्वत् (तान्त) यह एक नाम बहुत वेतोंवाले देशका है ॥ ९ ॥ शाद्वल

स्त्री शर्करा शर्कीरलः शर्करा शर्करावति ।
 देश एवादिमावेवमुन्नेया. सिकतावति ॥ ११ ॥
 देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः ।
 स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥ १२ ॥
 सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् ।
 गोष्ठं गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भृतपूर्वकम् ॥ १३ ॥
 पर्यंतभू. परिसर. सेतुराली ध्रिया पुमान् ।
 वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुनपुसकम् ॥ १४ ॥
 अयन वर्त्म मार्गाध्वपन्थान' पदवी सृति. ।
 सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्त्येकपदीति च ॥ १५ ॥

यह एक नाम बालवृणोसे हरे देशका है । पकिल यह एक नाम कीचडवाले देशका है । अनूप यह एक नाम अनूप अर्थात् बहुत जल-वाले देशका है । कच्छ यह एक नाम नदी आदिके समीपदेशका है, और पुंल्लिग है ॥ १० ॥ शर्करा, शर्कीरल ये दो नाम बालूरेतसे युक्त देशके हैं । तहां शर्कराशब्द स्त्रीलिङ्ग है । शर्करा, शर्करावति ये दो नाम ककणोसे युक्त देशके हैं । सिकता, सिकतिल ये दो नाम ककरोसे युक्त हुए देशके हैं । सिकत, सिकतावति ये दो नाम बालूसे युक्त हुए देश आदिके हैं ॥ ११ ॥ नदीमातृक यह नाम नदीके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है । देवमातृक यह नाम वर्षाके पानीसे सम्पन्न हुए व्रीहिवाले देशका है ॥ १२ ॥ राजन्वत् (तान्त) यह एक नाम सुन्दर धर्म धर्मशील राजा जिसमें हो उसका है । राजवत् (तान्त) यह एक नाम साधारण राजा जिस देशमें हो उसका है । गोष्ठ, गोस्थानक ये दो नाम गोवोंके स्थानके हैं यहाँनक त्रिलिगी है । गौष्ठीन (न०) यह जहाँ पहले गौ रहती हों उस स्थानका नाम है ॥ १३ ॥ पर्यंतभू (स्त्री०), परिसर (पु०) ये दो नाम नदी पर्वत आदिके समीपकी पृथ्वीके हैं । सेतु (पु०), आलि ये दो नाम पुलके हैं । तहां सेतुशब्द (पु०) है और आलिशब्द (पु० स्त्री०) है । वामलूर (पु०), नाकु (पु०), वल्मीक (पु० न०) ये तीन नाम साप आदिकी बाँवोंके हैं ॥ १४ ॥ अयन (न०), वर्त्म (नात्त न०), मार्ग (पु०), अचन्द्र

अतिपथ्याः सुपन्थाश्च सत्पथश्चाचिंतेऽध्वनि ।

व्यध्वी दुरध्वी विपथः कदध्वा कापथः समाः ॥ १६ ॥

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये शृंगाटकचतुष्पथे ।

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥ १७ ॥

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।

घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥

“ द्यावापृथिव्यौ रोदसी द्यावाभूमी च रोदसी ।

दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः ॥ ”

इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः ॥ २ ॥

पूरः स्त्री पुरी नगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् ।

स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

(नान्त पु०), पथिन् (नान्त पु०), पदवी, सृति, सरणि, पद्मति, पद्या, वत्तनी, एकपदी ये बारह नाम मार्ग (रस्ते) के हैं । पदवीसे एकपदी-शब्दतक (स्त्री०) हैं ॥१५॥ अतिपथिन्, सुपथिन्, सत्पथ ये तीन (पु०) नाम सुन्दर रस्तेके हैं । व्यध्व, दुरध्व, विपथ, कदध्वन् (नान्त), कापथ ये पांच (पु०) नाम बुरे रस्तेके हैं ॥१६॥ अपथिन् (नान्त पु०), अपथ (न०) ये दो नाम अमार्ग अर्थात् जहां रास्ता न हो उसके हैं । शृंगाटक, चतुष्पथ ये दो (न०) नाम चौराहेके हैं । प्रान्तर (न०) यह एक नाम दूर और शून्य रास्तेका है । कान्तार यह एक (पु० न०) नाम दुर्गम मार्गका है ॥१७॥ गव्यूति यह एक (स्त्री०) नाम दो क्रोशकां है । नल्व यह एक (पु०) नाम चार सौ हाथका है । घंटापथ (पु०), संसरण (न०) ये दो नाम घंटोंसे युत हस्ती आदिके निकलनेके चौड़े अर्थात् मुख्य मार्गके हैं । उपनिष्कर यह एक (न०) नाम जिस राजमार्गसे सेना निकले वा मार्ग साकडा हो उसका है ॥१८॥ “ द्यावा-पृथिवी, रोदसी, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिवी ये पांच (स्त्री) नाम आकाशसहित पृथिवीके हैं । गञ्जा (स्त्री०), रुमा (स्त्री०), लवणाकर (पु०) ये तीन नाम खारी समुद्रके हैं ॥ ” इति भूमिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः । पुर, पुरी, नगरी, पत्तन, पुटभेदन, स्थानीय, निगम

तच्छाखानगरं वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।
 आपणस्तु निपद्याया विपाणिः पण्यवीथिका ॥ २ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखा स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।
 प्राकारो वरण सालः प्राचीन प्रान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥
 भित्तिः स्त्री कुड्यमेहूकं यदन्तन्व्यस्तकीकसम् ।
 गृहं गेहोदवासित वेश्म सन्न निकेतनम् ॥ ४ ॥
 निशान्तपस्त्यसदन भवनागारमन्दिरम् ।
 गृहाः पुंसि च भूम्येव निकार्यनिलयालया ॥ ५ ॥
 वासः कुटी द्वयोः शाला सभा सजवनं त्विदम् ।
 चतुःशाल मुनीना तु पर्णशालोऽखियाम् ॥ ६ ॥

ये सात नाम नगरके हैं । तहाँ पुर, पुरो और नगरीशब्द (स्त्री०) हैं और जब पुर नगर ऐसा बनता है तब (न०) है । निगम (पु०) शेष (न०) है ॥१॥ जो मूलनगरसे अन्य पुर हो वह शाखानगर (न०) कहाता है । वेश यह एक (पु०) नाम वेश्याके निवासस्थानका है । आपण (पु०), निपद्या (स्त्री०) ये दो नाम हाटकके हैं । विपाणि (स्त्री०), पण्यवीथिका (स्त्री०) ये दो नाम दुकानोंकी पत्तिके हैं ॥ २ ॥ रथ्या, प्रतोली, विशिखा ये तीन (स्त्री०) नाम ग्रामकी गल्लीके हैं । चय (पु०), वप्र ये दोनों नाम झोपके हैं । तहाँ वप्रशब्द (पु० न०) है । प्राकार, वरण, साल ये तीन (पु०) नाम बाड करनेके हैं । प्राचीन (न०) यह एक नाम नगर आदिके प्रान्तभागमें वास और काटे आदिके घेष्टनका है ॥३॥ भित्ति (स्त्री०), कुड्य (न०) ये दो नाम भीतके हैं । एहूक यह एक (न०) नाम हाडियोंमहित भौतका है । गृह, गेह, उद्वसित, वेश्मन् (नांत), सन्न (नांत), निकेतन ॥ ४ ॥ निशान्त, पस्त्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, गृह, निकार्य, निलय, आलय ये सोलह नाम घरके हैं । तहाँ गृहशब्द बहुवचनमें (पु०) है । निकार्य, निलय आलय ये तीन (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ५ ॥ वास (पु०), कुटी (स्त्री०), शाला (स्त्री०), सभा (स्त्री०) ये चार नाम सभाघरके हैं । तहाँ कुटीशब्द (स्त्री० पु०) है । सजवन (न०), चतुःशाल (न०) ये दो नाम आपसमें सम्मुखरूप चार शाला अर्थात् चौकके हैं । पर्णशाला (स्त्री०), उज्य ये दो नाम मुनियोंके घरके हैं । तहाँ उज्यशब्द (पु० न०) है ॥ ६ ॥

चैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ।
 आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥
 मठश्छात्रादिनिलयो गञ्जा तु मदिरागृहम् ।
 गर्भागारं वासगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ ८ ॥
 “ कुट्टिमोऽस्त्री निवद्धा भूर्श्रन्द्रशाला शिरोगृहम् । ”
 वातायनं गवाक्षोऽथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 हर्म्यादि धनिनां वासः प्रासादो देवभृशुजाम् ॥ ९ ॥
 सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥ १० ॥
 विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसन्ननाम् ।
 हयगारं भृशुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥ ११ ॥

चैत्य, आयतन ये दो (न०) नाम यज्ञके स्थानभेदके हैं । वाजिशाला, मन्दुरा ये दो (स्त्री०) नाम अश्वशालाके हैं । आवेशन (न०) शिल्पिशाला (स्त्री०) ये दो नाम सुनार आदिकी शालाके हैं । प्रपा, पानीयशालिका ये दो (स्त्री०) नाम प्याऊके हैं ॥७॥ मठ (पु०) यह एक नाम शिष्य संन्यासी आदिकोंके स्थानका है । गंजा (स्त्री०), मदिरागृह (न०) ये दो नाम मदिराघरके हैं । गर्भागार, वासगृह ये दो (न०) नाम गर्भस्थानके हैं । अरिष्ट, सूतिकागृह ये दो (न०) नाम सूतिकाघरके हैं ॥ ८ ॥ “ कुट्टिम यह एक (पु० न०) नाम पत्यर आदिसे बँधी हुई पृथ्वीका है । चन्द्रशाला (स्त्री०), शिरोगृह (न०) ये दो नाम अटारीके हैं । ” वातायन (न०), गवाक्ष (पु०) ये दो नाम झरोखाके हैं । मण्डप (पु० न०), जनाश्रय (पु०) ये दो नाम मण्डपके हैं । हर्म्य यह एक (न०) नाम धनवालोंके स्थानका है । प्रासाद यह एक (पु०) नाम राजघरका है ॥ ९ ॥ सौध (पु० न०), राजसदन, (न०) उपकार्यो (स्त्री०), उपकारिका (स्त्री०) ये चार नाम राजाके स्थानके हैं । स्वस्तिक यह एक (पु० न०) नाम तौरणसहित चारद्वारवाले स्थानका है । सर्वतोभद्र यह एक (पु० न०) नाम ऊपरके घरका है । नन्द्यावर्त यह एक (पु० न०) नाम गोलघरका है । आदिशब्दसे अन्यगृहभी जानने ॥ १० ॥ विच्छन्दक यह एक (पु०) नाम बड़े सुन्दर घरका है ।

शुद्धान्तश्चावरोधश्च स्याददृष्टः क्षीममस्त्रियाम् ।

प्रघाणप्रघणालिन्दा वहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ १२ ॥

गृहावग्रहणी देहल्यंगणं चत्वरोजिरे ।

अधस्ताद्दारुणि शिला नासा दारूपरि स्थितम् ॥ १३ ॥

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।

वलीकनीध्रे पटलप्रान्तेऽथ पटलं छदिः ॥ १४ ॥

गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।

कपोतपालिकाया तु विटकं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥

स्त्री द्वारं प्रतीहारं स्याद्वितीर्दिस्तु वेदिका ।

तोरणोऽस्त्री वहिर्द्वारं पुग्द्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

ये स्वस्तिक आदि राजघरोके भेद है । अन्त पुर (न०), अवरोधन (न०) ॥ ११ ॥ शुद्धान्त (पु०), अवरोध (पु०) ये चार नाम राजाओंके स्त्रीपर (रनिवास) के हैं । अदृष्ट (पु०), क्षीम ये दो नाम इर्म्य आदिके पृष्ठस्थानके हैं । तहां क्षीमशब्द (पु० न०) है । प्रघाण, प्रघण, आलिन्द ये तीन (पु०) नाम घरके बाहरके चौरके हैं ॥ १२ ॥ गृहावग्रहणी, देहली ये दो (स्त्री०) नाम देहलके हैं । अगण, चत्वर, अजिर ये तीन (न०) नाम आंगनके हैं । शिला (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तम्भके नीचे स्थित काठका है । नासा (स्त्री०) यह एक नाम द्वारस्तम्भके ऊपर स्थितका है ॥ १३ ॥ प्रच्छन्न, अन्तर्द्वार ये दो (न०) नाम खिडकीके हैं । पक्षद्वार, पक्षक ये दो (न०) नाम पार्श्वद्वारके हैं । वलीक (पु० न०), नीध्र (न०) ये दो नाम पटलके प्रान्तमें घरके आच्छादनके हैं । पटल (न०), छदि (स्त्री०) ये दो नाम छातके हैं । छदिशब्द सान्तभी पाया जाता है ॥ १४ ॥ गोपानसी, बलभी ये दो (स्त्री०) नाम छादनके लिये टेढ़े काठके हैं । कपोतपालिका (स्त्री०), विटक ये दो नाम काठ आदिसे बने हुए पक्षीपरके हैं । तहां विष्कशब्द (पु० न०) है ॥ १५ ॥ द्वार (स्त्री०), द्वार (न०), प्रतीहार (पु०) ये तीन नाम द्वारके हैं । वितीर्द, वेदिका ये दो (स्त्री०) नाम वेदीके हैं । तोरण (पु० न०), वहिर्द्वार (न०) ये दो नाम तोरणके हैं । पुग्द्वार, गोपुर ये दो (न०)

कूटं पृथ्वीरि यद्धस्तिनखरतरिमन्नथ त्रिपु ।
 कपाटमररं तुल्ये तद्विष्णुस्मोऽर्गलं न ना ॥ १७ ॥
 आरोहणं स्यात्सोपानं निःश्रेणिस्वधिरोहिणी ।
 समार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽवकरस्तथा ॥ १८ ॥
 क्षित्ते सुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणम् ।
 समौ संवसथग्रामौ वेश्मभृवास्तुगस्त्रियाम् ॥ १९ ॥
 ग्रामान्त उपशल्यं स्यात् सीमसीमे स्त्रियामुभे ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात्पक्कणः श्वरालयः ॥ २० ॥
 इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३ ।

महीध्रे शिखरिक्षमाभृदहार्यध्रगर्वताः ।

अद्रिगोत्रगिरिग्रावाचलशैलशिलोच्चयाः ॥ १ ॥

नाम नगरके द्वारके हैं ॥ १६ ॥ हस्तिनख यह एक (पु०) नाम नगरके
 द्वारमें सुखपूर्वक उतरनेके लिये माटीकी सीढीके हैं । कपाट, अरर ये दो
 नाम किवाडके हैं और त्रिलिगी हैं । अर्गल यह एक नाम आगलका है
 और (स्त्री० न०) है ॥ १७ ॥ आरोहण, सोपान ये दो (न०) नाम
 जीने वा सीढीके हैं । निश्रेणि, अधिरोहिणी ये दो (स्त्री०) नाम का-
 ष्टकी बनी सीढीके हैं । समार्जनी, शोधनी ये दो (स्त्री०) नाम बुहा-
 रीके हैं । संकर, अवकर ये दो (पु०) नाम कूडाकरकटके हैं ॥ १८ ॥
 सुख, निःसरण ये दो (न०) नाम घर आदिके प्रवेश वा निकलनेके
 द्वारके हैं । संनिवेश (पु०), निकर्षण (न०) ये दो नाम सम्यक् प्रकारसे
 वासस्थानके हैं । संवसथ, ग्राम ये दो (पु०) नाम गामके हैं । वेश्मभू
 (स्त्री०), वास्तु ये दो नाम घरकी पृथ्वीके हैं । वास्तुशब्द (पु० न०)
 है ॥ १९ ॥ उपशल्य यह एक (न०) नाम ग्रामके समीप प्रदेशका है ।
 सीमन् (नान्त), सीमा यह दो (स्त्री०) नाम सीमाके हैं । घोष (पु०),
 आभीरपल्ली (स्त्री०) ये दो नाम गोपलोगोंके गामके हैं । पक्कण, श्वरालय
 ये दो (पु०) नाम भीलोंके गामके हैं ॥ २० ॥ इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः । महीध्र, शिखरिन् (इन्नन्त), क्षमाभृत्, अहार्य, ध्र,
 गर्वत, अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्रावन् (नान्त), अचल, शैल, शिलोच्चय ये

लोकालोकश्चक्रवालिच्चिकूटच्चिककुत्समौ ।

अस्तस्तु चरमक्षमाभृदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ १ ॥

हिमवान्निपधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रिकः ।

गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥ ३ ॥

पापाणप्रस्तरग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

कूटोऽस्त्री शिखर शृङ्गं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽष्ट्रे स्तुः प्रस्थ सानुरास्त्रियाम् ।

उत्सं प्रस्रवण वारिप्रवाहो निर्झरो झर ॥ ५ ॥

दरी तु कंदरी वा स्त्री देवखातविले गुहा ।

गह्वरं गण्डशैलास्तु च्युता रथूलोपला गिरेः ॥ ६ ॥

तेरह (पु०) नाम पर्वतके है ॥ १ ॥ लोकालोक, चक्रवाल ये दो (पु०) नाम सात द्वीपवाली पृथ्वीके प्राकारभूत पर्वतके है । त्रिकूट, त्रिकूट (दान्त) ये दो (पु०) नाम त्रिकूट पर्वतके है । अस्त, चरमक्षमाभृत् (तात) ये दो (पु०) नाम अस्ताचलके है । उदय, पूर्वपर्वत ये दो (पु०) नाम उदयाचल पर्वतके है ॥ २ ॥ हिमवत् (मत्सन्त), निपध, विन्ध्य, मारय वत् (मत्सन्त), पारियात्रिक, गन्धमादन, हेमकूट, (मलय, चित्रकूट, मन्दराचल) ये सब (पु०) नाम पर्वतभेदवाची है । तहां गन्धमादन शब्द (न०) भी है ॥ ३ ॥ पापाण, प्रस्तर, ग्रावर (नात), उपल, अश्मन् (नात), शिला, दृषद् (दान्त) ये सात नाम पत्थरके है । इनमें शिला और दृषद् (स्त्री०) शेष (पु०) है । कूट (पु० न०), शिखर (न०), शृङ्ग (न०) ये तीन नाम पर्वतके अग्रभागके है । प्रपात, अतट, भृगु ये तीन (पु०) नाम पर्वतसे पतनस्थानके है ॥ ४ ॥ कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्वतके मध्यभागका है । स्तु, प्रस्थ, सानु ये तीन नाम पर्वतके एक देशके है और तीनों शब्द (पु० न०) है । उत्स (पु०), प्रस्रवण (न०) ये दो नाम जहां पानी झिरके बहुत हो जाता है उस स्थानके है । वारि-प्रवाह, निर्झर, झर ये तीन (पु०) नाम झिरनेके है ॥ ५ ॥ दरी (स्त्री०), कन्दर (पु० स्त्री०) ये दो नाम समान बनाई हुई पर्वतकी गुफाके है । देवखात, विल, गुहा, गह्वर ये चार नाम विना बनाई हुई पर्वतकी गुफाके है । गुहाशब्द (स्त्री०) शेष (न०) है । गण्डशैल यह एक (पु०) नाम

“ दन्तकास्तु वहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः । ”

खनिः ख्रियामावरः स्यात् पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।

उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिरूर्ध्वमधित्यका ॥ ७ ॥

धातुर्मनःशिलाद्यद्रेर्गैरिकं तु विशेषतः ।

निकुञ्जकुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ॥ ८ ॥

इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौपधिचर्गः ४ ।

अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।

महारण्यमरण्यानी गृहारास्तास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥

आरामः स्यादुपवनं वृत्रिमं वनमेव यत् ।

अमात्यगणिकागद्दोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुगेचितम् ॥ ३ ॥

पर्वतसे गिरे हुए मोटे पत्थरका है ॥ ६ ॥ “ दंतक यह एक (पु०) नाम पर्वतके तिरछे प्रदेशसे बाहर निकले हुए शूलके आकारवाले पत्थरका हैं । ” खनि (स्त्री०), आकर (पु०) ये दो नाम खानके हैं । पाद, प्रत्यन्तपर्वत ये दो (पु०) नाम पर्वतके समीपमें छोटे पर्वतोंके हैं । उपत्यका (स्त्री०) यह एकनाम पर्वतके नीचेवाली पृथ्वीका है । अधित्यका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके ऊपरकी पृथ्वीका है ॥ ७ ॥ धातु यह एक (पु०) नाम पर्वतकी मनशिल आदिका है । गैरिक यह एक (न०) नाम पर्वतकी धातुविशेष अर्थात् गेरूका है । निकुञ्ज, कुञ्ज ये दो (पु०, न०) नाम लता आदिसे ढके हुए स्थानके हैं ॥ ८ ॥ इति शैलवर्गः ॥ ३ ॥

अथ वनौपधिचर्गः । अटवी, अरण्य, विपिन, गहन, कानन, वन ये छः नाम वनके हैं । तहां अटवीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । महारण्य (न०), अरण्यानी (स्त्री०) ये दो नाम बड़े वनके हैं । गृहारास्तु, निष्कुट ये दो (पु०) नाम घरके समीप बनाये हुए बगीचेके हैं ॥ १ ॥ आराम (पु०), उपवन (न०) ये दो नाम लगाये हुए बगीचेके हैं । वृक्षवाटिका यह एक (स्त्री०) नाम राजमंत्री और वेश्याओंके घरमें लगाये हुए बगीचेके हैं ॥ २ ॥ आक्रीड (पु०), उद्यान (न०) ये दो नाम

वीथ्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी लेखास्तु राजयः ।
 वन्या वनसमूहे स्यादंकुरोऽभिनवोद्भिदि ॥ ४ ॥
 वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः ।
 अनोकहः कुटः शालः पलाशी हुहुमागमा ॥ ५ ॥
 वानस्पत्यः फलेः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पतिः ।
 ओपध्यः फलपाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥ ६ ॥
 वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च फलवान् फलिनः फली ।
 प्रफुल्लोत्फुल्लसफुल्लव्याकोशविकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
 फुल्लश्चैते विकसिते स्युरवन्ध्यादयस्त्रिषु ।
 स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शकुर्ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

राजाके साधारण वगीचेके है। प्रमद्वन (न०) यह एक नाम रानियोंके क्रीडावनका है ॥ ३ ॥ वीथी, आलि, आवलि, पक्ति, श्रेणी ये पांच (स्त्री०) नाम पक्तिके हैं। लेखा, राजि ये दो (स्त्री०) नाम रेखाके हैं। वन्या यह एक (स्त्री०) नाम वनके समूहका है। अकुर यह एक (पु०) नाम नये अकुरका है ॥ ४ ॥ वृक्ष, महीरुह, शाखिन (इन्नन्त), विटपिन (इन्नन्त), पादप, तरु, अनोकह, कुट, शाल, पलाशिन (इन्नन्त), हु, हुमा, अगम ये तेह (पु०) नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फूलसे उपजे फलोंकरके उपलक्षित कुयेको वानस्पत्य कहते हैं यह (पु०) है। जैसे—आम आदि। फूलोंके बिना फलोंसे उपजा वनस्पति कहलाती है। जैसे—गूलर आदि। फलपाकही है अन्त जिन्होंका वे औपधि कहाते हैं। जैसे—शीहि जव आदि। अवध्य, फलेग्रहि ये दो (पु०) नाम जैसा काल हो उसके अनुसार फलधारी वृक्षके हैं ॥ ६ ॥ वध्य, अफल, अवकेशिन (इन्नन्त) ये तीन नाम ऋतुकालमें फलरहित वृक्षके हैं। फण्यत् (मत्वन्त), फलिन, फलिन (इन्नन्त) ये तीन नाम फलवाले वृक्षके हैं। प्रफुल्ल, उत्फुल्ल, सफुल्ल, व्याकोश, विकच, स्फुट, फुल्ल ॥ ७ ॥ ये छठ नाम फूले हुए वृक्षके हैं। अवध्यसे लेके फुल्लपर्यंत शब्द (त्रि०) हैं। स्थाणु (पु० न०), ध्रुव (पु०), शकु (पु०) ये तीन नाम छटि हुए शाखावाले वृक्षके अर्थात् दूटके हैं। क्षुप यह एक (पु०) नाम छोटी

व्यप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मौ वल्ली तु व्रततिर्लता ।

॥ लता प्रतानिनी वीरुहुलिमन्युल्प इत्यपि ॥ ९ ॥

नगाधरोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

अंघ्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्यान्मूलाच्छालावधिस्तरोः ॥ १० ॥

समे शाखालते स्कन्धशाखाशाले शिफाजटे ।

शाखा शिफावरोहः स्यान्मूलास्वाग्रं गता लता ॥ ११ ॥

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना मूलं बुध्नोऽग्निनामकः ।

सारो मज्जा नरि त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥ १२ ॥

काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इधममेधः समिध् स्त्रियाम् ।

निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिर्मज्जारिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

डाली और जड़वाले वृक्षका है ॥ ८ ॥ स्तव, गुल्म ये दो (पु०) नाम प्रकाण्डरहित वृक्षके हैं । वल्ली, व्रतति, लता ये तीन (स्त्री०) नाम वेलिके हैं । वीरु (धान्त स्त्री०), गुलिमनी (स्त्री०), उल्प (पु०) ये तीन नाम फैली हुई वेलिके हैं ॥ ९ ॥ उच्छ्राय, उत्सेध, उच्छ्रय ये तीन (पु०) नाम वृक्ष आदिकी उंचाईके हैं । प्रकाण्ड (पु० न०), स्कन्ध (पु०) ये दो नाम वृक्षके मूलसे शाखापर्यंत भागके हैं ॥ १० ॥ शाखा, लता ये दो (स्त्री०) नाम शाखाके हैं । स्कन्धशाखा, शाला ये दो (स्त्री०), नाम प्रधान शाखाके हैं । शिफा, जटा ये दो (स्त्री०) नाम वृक्षकी जड़के हैं । अवरोह यह एक (पु०) नाम शाखाकी जड़का है । वृक्षके मूलसे अग्रभागपर्यंत चढ़ी हुई बेल गिलोय आदिभी अवरोह कहाती है ॥ ११ ॥ शिखरं यह एक (पु० न०) नाम शिखरे आग्रभागका है । मूल (न०), बुध्न (पु०), अग्निनामक (पु०) ये तीन नाम वृक्ष आदिकी जड़के हैं । सार, मज्जा (नान्त) ये दो (पु०) नाम वृक्षके गुद्देके हैं । त्वच् (चान्त स्त्री०), वल्क, वल्कल ये तीन नाम वृक्षकी छालके हैं । तहां वल्क और वल्कलशब्द (पु० न०) हैं ॥ १२ ॥ काष्ठ (न०), दारु (पु० न०) ये दो नाम काठमात्रके हैं । इधन (न०), एधस् (सान्त न०), इध्म (न०), एध (पु०), समिध् (धान्त स्त्री०) ये पांच नाम सूखे हुए तृण काष्ठ आदिके हैं । निष्कुह (पु०), कोटर (पु० न०) ये दो नाम वृक्षके छिद्रके हैं । वल्लरि, मज्जारि ये दो (स्त्री०) नाम तुलसी

पत्रं पलाशं छदन दल पर्णं छदः पुमान् ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलय विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
 वृक्षादीना फलं सस्य वृन्त प्रसवेवन्धनम् ।
 आम्रे फले शलाटुः स्याच्छुष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
 क्षारको जालक क्लीवे कलिका कोरकः पुमान् ।
 स्याद्दुच्छकस्तु स्तबकः कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 स्त्रिय सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं समम् ।
 मकरन्द पुष्परसः पराग सुमनोरजः ॥ १७ ॥
 टिहीन प्रसवे सर्वे हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
 आश्वत्थवैणवप्लाक्षनैयग्रोधैर्गुदं फले ॥ १८ ॥

आदिकी मजरीके है ॥ १३ ॥ पत्र, पलाश, छदन, दल, पर्ण, छद ये छ-
 नाम पत्तोंके है । तहाँ छदशब्द (पु०) शेष (न०) है । पल्लव, किस-
 लय ये दो (पु० न०) नाम पत्ता आदिसे युत हुए शाखाके पर्वके हैं ।
 यथा 'पुसि क्लीवे च पल्लव' इति तु व्याडि । विटप यह एक (पु० न०)
 नाम शाखापत्तोंके समुदायका है ॥ १४ ॥ सस्य यह एक (न०) नाम
 वृक्ष आदिके फलका है । वृत्त यह एक (न०) नाम फल आदि जिसक-
 रके बांधे जाते है उसका है । शलाटु यह एक नाम कच्चे फलका है । वान
 यह एक नाम सूखे हुए फलका है । शलाटु और वान शब्द त्रिलिङ्गी हैं
 ॥ १५ ॥ क्षारक (पु०), जालक (न०) ये दो नाम नई कलीके है ।
 कलिका (स्त्री०), कोरक (पु०) ये दो नाम कलीके है । गुच्छक, स्त-
 बक ये दो (पु०) नाम कली आदिसे आकीर्ण हुई पत्तोंकी गाँठके हैं ।
 कुड्मल, मुकुल ये दो (पु० न०) नाम थोड़ी खिली हुई कलीके हैं ॥ १६ ॥
 सुमनस् (सान्त), पुष्प, प्रसून, कुसुम ये चार नाम फूलके है । तहाँ सुम-
 नस्शब्द (स्त्री०) शेष (न०) है । मकरन्द, पुष्परस ये दो (पु०) नाम
 फलोंके मधुके हैं । पराग (पु०), सुमनोरजस् (सान्त न०) ये दो नाम
 फलोंकी रणके हैं ॥ १७ ॥ पुष्प, फल, मूल इन्हींमें वर्तमान सय (न०) हैं ।
 और हरीतकी आदि शब्द (स्त्री०) हैं । आश्वत्थ, वैणव, प्लाक्ष, नैयग्रोध,
 रोगुद ये पाँचों (न०) नाम क्रमसे पीपल, बांस, पिलखन, बड, हींगड

बार्हतं च फले जम्बूवा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।
 पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गा ब्रीहयः फले ॥ १९ ॥
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।
 बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥
 अश्वत्थेऽथ कपित्थे स्युर्दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 तस्मिन्दधिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥
 उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञांगो हेमदुग्धकः ।
 कोविदारो चमारिकः कुहालो युगपत्रकः ॥ २२ ॥
 सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।
 आरग्वधे राजवृक्षशम्याकचतुरंगुलाः ॥ २३ ॥
 आरेवतव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
 स्युर्जम्बीरे दन्तशठजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥

इन्हींके फलोंके हैं ॥ १८ ॥ बार्हत यह एक (न०) नाम बड़ी कटेहरीके फलका है । जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये तीन नाम जाम्बुनके फलके हैं । तहाँ जम्बूशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । जातीसे आदि ले पुष्पवाचक शब्द अपने २ लिङ्गवाले हैं और फलवाचक ब्रीहिशब्द अपने २ लिङ्गवाले हैं । किन्तु (न०) नहीं हैं । तहाँ जातीशब्द (स्त्री०) है । ब्रीहिशब्द (पु०) है ॥ १९ ॥ विदारी आदि फलपुष्पवाचक शब्द स्वलिङ्ग हैं । पाटलाशब्द पुष्पवाचक होनेसेभी (न० और स्वलिङ्ग) है । जैसे— ' पाटलायाः पुष्पं पाटलम् ' । बोधिद्रुम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराशन ॥ २० ॥ अश्वत्थ ये पांच (पु०) नाम पीपलवृक्षके हैं । कपित्थ, दधित्थ, ग्राहिन् (इन्नन्त), मन्मथ, दधिफल पुष्पफल, दन्तशठ ये सात (पु०) नाम कैथके हैं ॥ २१ ॥ उदुम्बर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक ये चार (पु०) नाम मूलरके हैं । कोविदार, चमारिक, कुहाल, युगपत्रक ये चार (पु०) कचनारके हैं ॥ २२ ॥ सप्तपर्ण, विशालत्वक् (चात), शारद, विषमच्छद ये चार (पु०) नाम सातविण अर्थात् सात पत्तेवालेके हैं । आरग्वध, राजवृक्ष, शम्याक, चतुरंगुल ॥ २३ ॥ आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक ये आठ (पु०) नाम अमलतासके हैं । जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल ये पांच (पु०) नाम जम्भीर नीबूके हैं ॥ २४ ॥

वरुणो वरणं सेतुस्तिक्तशाखं कुमारकम् ।
 पुंनागे पुरुपरतुंगः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
 पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दार पारिजातकम् ।
 तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्वरातिमुक्तकम् ॥ २६ ॥
 वंजुलश्चित्रकृचाय द्वौ पीतनकपीतनौ ।
 आम्रातके मधूके तु गुडपुष्पमधुद्रुमौ ॥ २७ ॥
 वानप्रस्थमधुष्ठीलौ जलजेऽत्र मधूलकम् ।
 पीलौ गुडफलं स्रसी तस्मिस्तु गिरिभ्रंभवे ॥ २८ ॥
 अक्षोटकन्दरालौ द्वावंकोटे तु निकोचकम् ।
 पलाशे किंशुकं पर्णो वातपोथोऽथ वेतसे ॥ २९ ॥
 रथाभ्रपुष्पविद्वग्शीतवानीरवंजुला ।
 द्वौ परिव्याधविदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥
 सौभाञ्जने शिश्रुतीक्ष्णगन्धकाक्षीवमीचका ।
 रक्तोऽमौ मधुशिश्रु स्यादरिष्टं फेनिलः समौ ॥ ३१ ॥

वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाख, कुमारक ये पांच (पु०) नाम वरुणाके हैं । पुंनाग, पुरुष, तुंग, केसर, देववल्लभ ये पांच (पु०) नाम केसरके हैं ॥२५॥ पारिभद्र, निम्बतरु, मन्दार, पारिजातक ये चार (पु०) नाम नीबु-विशेष वृक्षके हैं । तिनिश, स्यन्दन, नेमि, रथद्व, अतिमुक्तक ॥२६॥ वंजुल, चित्रकृत् (तान्त) ये सात (पु०) नाम तिनस (तदुए) के हैं । पीतन, कपीतन, आम्रातक ये तीन (पु०) नाम आमलेके हैं । मधूक, गुडपुष्प, मधुद्रुम ॥२७॥ वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये पांच (पु०) नाम मधुवेके हैं । मधूलक यह एक (पु०) नाम जलमधुवेका है । पीलु, गुडफल, स्रसिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम पीलुवृक्षके हैं ॥२८॥ अक्षोट, कन्दराल ये दो (पु०) नाम पर्णतपीलु अर्थात् अखरोटके हैं । अकोट, निकोचक ये दो (पु०), नाम पिशतेके हैं । पलाश, किंशुक, पर्ण, वातपोथ ये चार (पु०) नाम टाकके हैं । वेतस ॥ २९ ॥ रथ, अभ्रपुष्प, विद्वग्, शीत, वानीर, वंजुल ये सात (पु०) नाम वेतके हैं । परिव्याध, विदुल, नादेयी, चाम्बुवेतस ये चार (पु०) नाम जलवेतके हैं ॥ ३० ॥ सौभाञ्जन, शिश्रु, तीक्ष्णगन्धक,

विल्वे शाण्डिल्यशैलूषौ मालूश्रीफलावपि ।
 प्लक्षी जटी पर्कटी स्थान्न्यग्रोधो बहुपाद्दः ॥ ३२ ॥
 गालवः शावरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्वमार्जनौ ।
 आम्रश्रूतो रसालोऽसौ सहकारोऽतिसौरभः ॥ ३३ ॥
 कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।
 शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बाहुवारकः ॥ ३४ ॥
 राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्दुर्धनुःपटः ।
 गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥
 श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ।
 कर्कधूर्वदरी कोलिः कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥
 सौवीरं बदरं घोण्टाप्यथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।
 विकंकतः सुवानृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ॥ ३७ ॥

अक्षीब, मोचक ये पांच (पु०) नाम सहजनेके हैं । मधुशिष्ट यह एक
 (पु०) नाम लाल फूलवाले सहजनेका है । अरिष्ट, फेनिल ये दो (पु०)
 नाम रीठेके हैं ॥ ३१ ॥ विल्व, शाण्डिल्य, शैलूष, मालू, श्रीफल ये पांच
 (पु०) नाम बेलवृक्षके हैं । प्लक्ष, जटिन्, पर्कटिन् ये तीन (पु०) नाम
 पिलखनके हैं । न्यग्रोध, बहुपाद् (दान्त), वट ये तीन (पु०) नाम बड-
 वृक्षके हैं ॥ ३२ ॥ गालव, शावर, लोध्र, तिरीट, तिल्व, मार्जन ये छः
 (पु०) नाम लोधके हैं । आम्र, चूत, रसाल, ये तीन (पु०) नाम आंवके
 हैं । सहकार यह एक (पु०) नाम अत्यन्त सुगन्धवाले आंवका है ॥ ३३ ॥
 कुम्भ, उलूखल, कौशिक, गुग्गुलु, पुर ये पांच नाम गूर्गलके हैं । तहां कुम्भ-
 उलूखलक (न०) शेष (पु०) हैं । शेलु, श्लेष्मातक, शीत, उद्दाल, बहुवा-
 रक ये पांच (पु०) नाम लहसोडेके हैं ॥ ३४ ॥ राजादन, प्रियाल, सन्न-
 कद्दु, धनुःपट ये चार (पु०) नाम चिरोंजीके हैं । राजादन क्लीबभी है ।
 गंभारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥ श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, काश्मर्य
 ये सात नाम कंभारीके हैं । काश्मर्य (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । कर्कधूर्व,
 बदरी, कोलि ये तीन (पु० स्त्री०) नाम बडबेरीके हैं । कोल, कुवल, फेनिल
 ॥ ३६ ॥ सौवीर, बदर, घोंटा ये छः नाम बेरके हैं । घोंटा (स्त्री०) शेष
 (न०) हैं । स्वादुकण्टक, विकंकत, सुवानृक्ष, ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद् (दान्तः)

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।
 तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ३८ ॥
 काकैन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।
 गोलीढो झाटलो घटापाटलिर्मोक्षमुष्करौ ॥ ३९ ॥
 तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समौ पिचुलझावुकौ ।
 श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैटर्यकट्फलौ ॥ ४० ॥
 ऋमुकः पट्टिकारख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
 तूदस्तु यूपः ऋमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१ ॥
 तूल च नीपमियककदम्बास्तु हरिप्रियः ।
 वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिपु ॥ ४२ ॥
 गर्दभाण्डे कदरालकपीतनसुपार्श्वकाः ।
 पुष्पश्च तिनित्डी विंचाम्लिकाथो पीतसारके ॥ ४३ ॥

ये पांच (पु०) नाम वेहली (शमी) वृक्षके हैं ॥ ३७ ॥ ऐरावत, नागरग,
 नादेयी, भूमिजम्बुका ये चार नाम नारगीके हैं । प्रथम दो नाम (पु०)
 शोप (स्त्री०) हैं । तिन्दुक, स्फूर्जक, कालस्कन्ध, शितिसारक ये चार नाम
 टंभुरनी (छोटे तेंदुए) के हैं ॥ ३८ ॥ काकैन्दु, कुलक, काकतिन्दुक, का
 कपीलुक ये चार (पु०) नाम काकतेंदू अर्थात् कुचलेके हैं । गोलीढ,
 झाटल, घटापाटलि, मोक्ष, मुष्कर ये पांच (पु०) नाम घटापाटलि (का
 ली पांढरी) के हैं । घटापाटलि (स्त्री०) भी है ॥ ३९ ॥ तिलक, क्षुरक,
 श्रीमत् (मत्तन्त) ये तीन (पु०) नाम फिरांस (तालमग्याने) के हैं ।
 पिचुल, झावुक ये दो (पु०) नाम झाऊके हैं । श्रीपर्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी, कैटर्य, कट्फल ये पांच नाम कायफलके हैं । श्रीपर्णिका, कुमुदिका,
 कुम्भी (स्त्री०) शोप (पु०) हैं ॥ ४० ॥ ऋमुक, पट्टिकारख्य, पट्टिन
 (इन्नन्त), लाक्षाप्रसादन ये चार (पु०) नाम लाल रौधके हैं । तूद,
 यूप, ऋमुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल ये छ नाम पारस पीपलके हैं । ब्रह्म
 दारु और तूल (न०) शोप (पु०) हैं ॥ ४१ ॥ नीप, प्रियक, कदप,
 हरिप्रिय ये चार (पु०) नाम कदवके हैं । वीरवृक्ष (पु०), अरुष्कर
 (पु०), अग्निमुखी (स्त्री०), भल्लातकी ये चार नाम भिल्लावेके हैं । तर्ही
 भल्लातक शब्द त्रिलिङ्गी है ॥ ४२ ॥ गर्दभाण्ड, वन्दराल, कपीतन, सुपार्श्वक,

सर्जकासनबन्धूकपुष्पाप्रियकजीवकाः ।
 साले तु सर्जकाश्याश्वकर्णकाः सस्यसंवरः ॥ ४४ ॥
 नदीसर्जो वीरतरुर्इन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।
 राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामथ द्वयोः ॥ ४५ ॥
 इंगुदी तापसतरुर्भूर्जे चर्मिमृदुत्वचौ ।
 पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ॥ ४६ ॥
 पिच्छा तु शाल्मली वेष्टे रोचनः कूटशाल्मलिः ।
 चिरिविल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥ ४७ ॥
 प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतिकः कलिमारकः ।
 करंजभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥ ४८ ॥
 रोही रोहितकः प्लीहशश्टुर्दाडिमपुष्पकः ।
 गायत्री बालतनयः खादिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥

पृष्ठ ये पांच (पु०) नाम लाखी पीपलके हैं । तित्तिडी, चिंचा, अम्लिका
 ये तीन (स्त्री०) नाम इमलीके हैं । पीतसारक ॥ ४३ ॥ सर्जक, असन,
 बंधूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये छः (पु०) नाम आसनाके हैं । साल, सर्ज,
 काश्य, अश्वकर्णक, सस्यसंवर ये पांच (पु०) नाम सालवृक्षके हैं ॥ ४४ ॥
 नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्रु, ककुभ, अर्जुन ये पांच (पु०) नाम कोह (अ-
 र्जुन) वृक्षके हैं । राजादन (पु० न०), फलाध्यक्ष (पु०), क्षीरिका
 (स्त्री०) ये तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इंगुदी (स्त्री० पु०) है । (पु०)
 में इंगुद होता है । तापसतरु (पु०) ये दो नाम हिगनवेट (गोंदी) के
 हैं । भूर्जे, चर्मिन् (इन्नन्तः), मृदुत्वच् (चान्त) ये तीन (पु०) नाम
 भोजपत्रके हैं । पिच्छिला (स्त्री०), पूरणी (स्त्री०), मोचा (स्त्री०),
 स्थिरायु (पु०), शाल्मलि (पु० न०) ये पांच नाम शंभलके हैं ॥ ४६ ॥
 पिच्छा यह एक (स्त्री०) नाम शंभलके गोंदका है । रोचन (पु०),
 कूटशाल्मलि (पु० स्त्री०) ये दो नाम काली शंभलके हैं । चिरिविल्व,
 नक्तमाल, करज, करंजक ये चार (पु०) नाम करंजुवाके हैं ॥ ४७ ॥
 प्रकीर्य, पूतिकरज, पूतिक, कलिमारक ये चार (पु०) नाम कांटेदार करं-
 जुके हैं । षड्ग्रन्थ (पु०), मर्कटी (स्त्री०), अंगारवल्लरी (स्त्री०) ये
 तीन करंजुके भेद हैं ॥ ४८ ॥ रोहिन् (इन्नन्त), रोहितक, प्लीहशश्टु,

अरिमेदो विद्वस्वादिरे कदर' खदिरे सिते ।
 सोमवल्कोऽप्यथ व्याघ्रपुच्छगधर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
 एरण्ड उरुवृकश्च रुचकश्चित्रकश्च स' ।
 चक्षु पश्चागुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बका' ॥ ५१ ॥
 अल्पा शमी शमीर' स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ।
 पिण्डीतको मरुवक. श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
 शल्यश्च मदने शक्रपाटप' पारिभद्रकः ।
 भद्रदारु द्रुक्किलिर्म पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
 पूतिकाष्ठ च सप्त स्युर्देवदारुण्यथ द्वयोः ।
 पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा ॥ ५४ ॥
 कृष्णवृन्ता कुवेराक्षी श्यामा तु महिलाह्वया ।
 लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियंगु' फलिनी फली ॥ ५५ ॥
 विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा ।
 मण्डूकपर्णपत्रोर्णनटकद्वृद्धदुण्डुका' ॥ ५६ ॥

दाडिमपुष्पक ये चार (पु०) नाम लाल रोहिडा (करज) के हैं । गा
 यत्री, वालतनय, खदिर, दत्तधावन ये चार नाम खैरके हैं । गायत्री
 (स्त्री०) शोष (पु०) हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद, विद्वस्वादिरे ये दो (पु०)
 नाम दुर्गंधवाले खैरके हैं । कदर, सोमवल्क ये दो (पु०) नाम सुपेद
 खैरके हैं । व्याघ्रपुच्छक, गधर्वहस्तक ॥ ५० ॥ एरण्ड, उरुवृक, रुचक, चि
 त्रक, चक्षु, पश्चागुल, मड, वर्धमान, व्यडम्बक ये ग्यारह (पु०) नाम अ
 र्दकके हैं ॥ ५१ ॥ शमीर यह एक (पु०) नाम स्वल्प आकारवाली श
 मीका है । शमी, शक्तुफला, शिवा ये तीन (स्त्री०) नाम शमीके हैं ।
 पिण्डीतक, मरुवक, श्वसन, करहाटक ॥ ५२ ॥ शल्य, मदन ये छ (पु०)
 नाम मैनफलके हैं । शक्रपाटप (पु०), पारिभद्रक (पु०) भद्रदारु
 (पु० न०), द्रुक्किलिम (न०), पीतदारु (न०), दारु (न०) ॥ ५३ ॥
 पूतिकाष्ठ (न०) ये सात नाम देवदारुके हैं । पाटलि, पाटला, मोघा,
 काचस्थाली, फलेरुहा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृन्ता, कुवेराक्षी ये सात (स्त्री०)
 नाम पाटलके हैं । तहाँ पाटलिशब्द (पु०) भी है । श्यामा, महिला,
 लता, गोवन्दिनी, गुन्द्रा, प्रियंगु, फलिनी, फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना, गंध

स्योनाकशुकनासर्क्षदीर्घवृन्तकुटन्नटाः ।

शोणकश्चारलौ तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥

अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ।

नाक्षस्तूपः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः ॥ ५८ ॥

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनामृता ।

हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं चाथ द्रुमोत्पलः ।

कर्णिकारः परिव्याधो लकुचो लिक्कुचो डहुः ॥ ६० ॥

पनसः कण्टकिफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।

काकोदुम्बारिका फल्गुर्मलयूर्जवनेफला ॥ ६१ ॥

अरिष्टः सर्वतोभद्रहिंशुनिर्यासमालकाः ।

पिचुमंदश्च लिम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ॥ ६२ ॥

फली, कारंभा, प्रियक ये बारह नाम मेहदीके हैं । तहां प्रियकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । मंडूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटंग, टुंडुक ॥६६॥ स्योनाक, शुकनास, ऋक्ष, दीर्घवृत्, कुटन्नट, शोणक, अरल ये बारह (पु०) नाम शोनापाठके हैं । तिष्यफला (स्त्री०), आमलकी ॥ ५७॥ अमृता (स्त्री०) वयस्था (स्त्री०) ये चार नाम आंवल्लेके हैं । तहां आमलकी शब्द त्रिलिङ्गी है । विभीतक, अक्ष, तुप, कर्षफल, भूतावास, कलिद्रुम ये छः नाम बहेडके हैं । तहां विभीतकशब्द त्रिलिङ्गी है, अक्षशब्द आदि (पु०) हैं ॥ ५८ ॥ अभया, अव्यथा, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हरीतकी, हैमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा ये ग्यारह (स्त्री०) नाम हरडके हैं ॥ ५९ ॥ पीतद्रु (पु०), सरल (पु०), पूतिकाष्ठ (न०) ये तीन नाम देवदारविशेषके हैं । द्रुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये तीन (पु०) नाम कर्णिकार वृक्षके हैं । लकुच, लिक्कुच, डहु ये तीन (पु०) नाम औठ (बडहल) वृक्षके हैं ॥ ६० ॥ पनस, कण्टकिफल ये दो (पु०) नाम पनसके हैं । निचुल, हिज्जल, अंबुज ये तीन (पु०) नाम जलवेतके भेद हैं । काकोदुम्बारिका, फल्गु, मलयूर्ज, जघनेफला ये चार (स्त्री०) नाम काली गलरके हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिंशुनिर्यास, मालका,

कापिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ।
 भण्डलोऽप्यथ चाम्पेयश्चपको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
 एतस्य कालिका गन्धफली स्यादथ केसरो ।
 वक्रुलो वज्जुलोऽशोके समौ करकदाडिमौ ॥ ६४ ॥
 चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वय ।
 जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
 श्रीपर्णमाग्निमन्थ स्यात्काणिका गणिकारिका ।
 जयोऽथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥
 एतस्यैव कलिगेन्द्रयवभद्रयव फले ।
 कृष्णपाकफलाविग्रसुषेणाः करमर्दके ॥ ६७ ॥
 कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽप्यथ सिन्दुके ।
 सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्टीद्राणिकेऽपि ॥ ६८ ॥

पिचुमन्द, निव ये छ पुँल्लिग नाम नीबके हे । पिच्छिला, अगुरुशिशपा
 ॥ ६२ ॥ कापिला, भस्मगर्भा ये चार (स्त्री०) नाम शिशमके हैं । शि
 रीष, कपीतन, भण्डल ये तीन (पु०) नाम शिरसके हे । चाम्पेय, चपक,
 हेमपुष्पक ये तीन (पु०) नाम सुनहरी चमेलीके ह ॥ ६३ ॥ गन्धफली
 यह एक (स्त्री०) नाम पूर्वोक्त चमेलीकी कलीका है । केसर, वक्रुल ये
 दो (पु०) नाम ओबलवृक्ष अर्थात् वरुलके हे । वज्जुल, अशोक ये दो
 (पु०) नाम अशोकवृक्षके हे । करक, दाडिम ये दो (पु०) नाम अ
 नारके हैं ॥ ६४ ॥ चाम्पेय, केसर, नागकेसर, काञ्चनाह्वय ये चार (पु०)
 नाम नागकेसरके हे । जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयन्तिका ये पाँच
 (स्त्री०) नाम अरुनीके हैं ॥ ६५ ॥ श्रीपर्ण (न०), आग्निमन्थ (पु०)
 काणिका (स्त्री०), गणिकारिका (स्त्री०), जय (पु०) ये पाँच
 नाम नखेलके हे । कुटज, शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका ये चार नाम
 करैआके हे । गिरिमल्लिका (स्त्री०) शेष (पु०) हे ॥ ६६ ॥ कलिग,
 इन्द्रयव, भद्रयव ये तीन (त्रि०) नाम इन्द्रजम्बके हे । कृष्णपाकफल,
 आविग्र, सुषेण, करमर्दक ये चार (पु०) नाम करैदेके हे ॥ ६७ ॥ काल-
 स्कन्ध, तमाल, तापिच्छ ये तीन (पु०) नाम तमालके ह । सिन्दुक (पु०)
 सिन्दुवार (पु०), इन्द्रसुग्म (पु०), निर्गुण्टी (स्त्री०), इन्द्राणिना

वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।
 श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मल्लिका ॥ ६९ ॥
 भृपदी शीतभीरुश्च सैवास्फोटा वनोद्भवा ।
 शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
 सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यथ मागधी ।
 गणिका यूथिकाऽम्बुष्ठा सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
 अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।
 सुमना मालती जातिः सप्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥
 माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।
 सहा कुमारी तरणिरम्लानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
 तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ।
 नीली झिण्टी द्वयोर्वाणा दासी चार्तगलश्च सा ॥ ७४ ॥

(स्त्री०) ये पांच नाम संभालूके हैं ॥ ६८ ॥ वेणी, गरा, गरी, देवताड, जीमूत ये पांच नाम देवदालीके हैं । देवताड और जीमूत (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । श्रीहस्तिनी, भूरुण्डी ये दो (स्त्री०) नाम अरबीशाकके हैं । तृणशून्य (न०), मल्लिका (स्त्री०) ॥ ६९ ॥ भृपदी (स्त्री०) शीतभीरु (पु०) ये चार नाम मोगरेके हैं । आस्फोटा यह एक (स्त्री०) नाम वनमोगरेका है । शेफालिका, सुवहा, निर्गुण्डी, नीलिका ये चार (स्त्री०) नाम रानासंभालूके हैं ॥ ७० ॥ श्वेतसुरसा, भूतवेशी ये दो (स्त्री०) नाम सपेदसंभालूके हैं । मागधी, गणिका, यूथिका, अम्बुष्ठा ये चार (स्त्री०) नाम जुईके हैं । हेमपुष्पिका यह एक (स्त्री०) नाम पीली जुईका है ॥ ७१ ॥ अतिमुक्त (पु०), पुण्ड्रक (पु०), वासन्ती (स्त्री०) माधवीलता (स्त्री०) ये चार नाम कुन्दके भेदके हैं । सुमना, मालती, जाति ये तीन (स्त्री०) नाम चमेलीके हैं । सप्तला, नवमालिका ये दो (स्त्री०) नाम वेलमोगराके हैं ॥ ७२ ॥ माध्य, कुन्द ये दो (पु० न०) नाम कुन्दके हैं । रक्तक, बंधूक, बंधुजीवक ये तीन (पु०) नाम दुपहरियाके हैं । सहा, कुमारी, तरणि ये तीन (स्त्री०) नाम सेवतीगुलाबके हैं । अम्लान (पु०), महासहा (स्त्री०) ये दो नाम आबोली (कांटेदार सेवती) के हैं ॥ ७३ ॥ कुरवक यह एक (पु०) नाम लाल कुरंटेका है । कुरण्टक यह एक (पु०) नाम पीले

सैरेयकस्तु क्षिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।
 पीता कुरण्टको क्षिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः ॥ ७५ ॥
 ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।
 प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥
 करवीरे करी रे तु क्रकरप्रन्थिलानुभौ ।
 उन्मत्तं कितवो धूर्तो धत्तू कनकाहय ॥ ७७ ॥
 मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलपुत्रक ।
 फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलङ्गके ॥ ७८ ॥
 समीरणी मरुवक प्रस्थपुष्प फणिञ्जक ।
 जम्बीगेऽप्यथ पर्णासे कठिञ्जरकुटेरकौ ॥ ७९ ॥
 नितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको वदिसङ्गकः ।
 अर्जाद्वसुजाऽऽस्फोटगणरूपविकीर्णता ॥ ८० ॥

उग्रा अर्थात् पीले पियावासेना है । वाणा (स्त्री० पु०), दासी (स्त्री०),
 आर्त्तंगल (पु०) ये तीन नाम नीली क्षिण्टीके हैं ॥७५॥ सैरेयक (पु०),
 क्षिण्टी (स्त्री०) ये दो नाम कुरटके हैं । कुरवक यह एक (पु०) नाम
 रक्तवर्ण कुरटका है । कुरटक यह एक (पु०) नाम पीले कुरटका है ।
 सहचरी यह भी कुरटका नाम है तहाँ सहचरशब्द (पु० स्त्री०) है ॥७६॥
 ओण्ड्रपुष्प, जपापुष्प ये दो (न०) नाम जास्वद (गुडहल) के हैं । वज्र
 पुष्प यह एक (न०) नाम तिगेके फलका है । प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात,
 हयमारक ॥ ७६ ॥ करवार ये पाँच (पु०) नाम कनेरके हैं । करार,
 करर, प्रन्थिल ये तीन (पु०) नाम करीलके हैं । उन्मत्त, कितव, धूर्त,
 धत्तू, कनकाहय ॥ ७७ ॥ मातुल, मदन ये सात (पु०) नाम धतूरेके
 हैं । मातुलपुत्रक यह एक (पु०) नाम धतूरेके फलका है । फलपूर,
 बीजपूर, रुचक, मातुलगक ये चार (पु०) नाम विजोरेके हैं ॥ ७८ ॥
 समीरण, मरुवक, प्रस्थपुष्प, फणिञ्जक, जवीर ये पाँच नाम सुपेद मरुवाके
 हैं । पर्णास, कठिञ्जर, कुटेरक ये तीन (पु०) नाम पर्णासके भेटके हैं
 ॥ ७९ ॥ अनर यह एक (पु०) नाम सुकेद पर्णामका है । पाठिक
 (इन्द्र), चित्रक, वदिसङ्गक ये तीन (पु०) नाम अनरेके हैं । अर्जाद,

मन्दारश्चार्कपर्णोऽत्र शुक्लेऽर्कप्रतापसौ ।
 शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥ ८१ ॥
 वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।
 वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता ॥ ८२ ॥
 जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।
 मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रुवा ॥ ८३ ॥
 मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।
 पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥
 एकाष्ठीला पापवेली प्राचीना वनतिक्तिका ।
 कटुः कटम्भराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
 मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।
 आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥
 ऋष्यप्रोक्ता शूकशिखिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥

वसुक, आस्फोट, गणरूप, विकीरण ॥ ८० ॥ मन्दार, अर्कपर्ण ये सात
 (पु०) नाम आकके है । अर्क, प्रतापस ये दो (पु०) नाम सुपेद आ-
 कके हैं । शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील, बुक, वसु ये पांच नाम आकके
 भेदके हैं । शिवमल्ली (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ ८१ ॥ आगेके मूषक-
 पर्णांतक सब शब्द (स्त्री०) हैं । वन्दा, वृक्षादनी, वृक्षरुहा जीवन्तिका
 ये चार नाम अमरवैलके हैं । वत्सादनी, छिन्नरुहा, गुडूची, तंत्रिका, अमृता
 ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका, सोमवल्ली, विशल्या, मधुपर्णी ये नव नाम गिलोयके
 हैं । मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरटा, तेजनी, स्रुवा ॥ ८३ ॥ मधूलिका, मधु-
 श्रेणी, गोकर्णी, पीलुपर्णी ये दश नाम मरोरफलके हैं । पाठा, अम्बष्ठा,
 विद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला, पापवेली, प्रा-
 चीना, वनतिक्तिका ये दश नाम पाठाके हैं । कटु, कटम्भरा, अशोकरो-
 हिणी, कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यपित्ता, कृष्णभेदी, चक्राङ्गी, शकुलादनी
 ये आठ नाम कुटकीके हैं । आत्मगुप्ता, अजहा, अव्यण्डा, कण्डुरा, प्रावृ-
 षायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिखि, कपिकच्छु, मर्कटी ये नव नाम

प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूपिकपर्ण्यपि ।
 अपामार्ग. शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ८८ ॥
 प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किण्णिही खरमञ्जरी ।
 हज्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली बालेयशाकवर्वरवर्धकाः ।
 मज्जिष्ठा विकसा जिङ्गी ममङ्गा कालमेपिका ॥ ९० ॥
 मण्डूक्पर्णी मण्डीगी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥
 रोदनी कच्छुगानन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
 पृथ्विपर्णी पृथक्पर्णी चित्रपर्ण्यत्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥
 क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
 निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
 प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।
 नीली काला लीतत्रिका ग्रामीणा मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥

कौचके हे । चित्रा, उपचित्रा, न्यग्रोधी, द्रवती, शम्बरी, वृषा ॥ ८७ ॥
 प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, मूपिकपर्णी ये दश नाम मूषापर्णिके हे ।
 यहाँतक (स्त्री०) हे । अपामार्ग (पु०), शैखरिक (पु०), धामार्गव
 (पु०), मयूरक (पु०) ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पर्णी (स्त्री०), केशपर्णी
 (स्त्री०), किण्णिही (स्त्री०), खरमञ्जरी (स्त्री०) ये आठ नाम
 ओंगाके हे । हज्जिका, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
 अङ्गारवल्ली, बालेयशाक, बचर, वर्धक ये नव नाम भार्गीके हे । बालेय
 शाक आदि तीन (पु०) हे शेष (स्त्री०) हे । मज्जिष्ठा, विकसा, जिङ्गी,
 समगा, कालमेपिका ॥ ९० ॥ मण्डूक्पर्णी, मटीरी, भडी योजनवल्ली ये
 नव (स्त्री०) नाम मज्जिठके हे । यास, यवास दुःस्पर्श, धन्वयास, कुना
 शक ये (पु०) हे ॥ ९१ ॥ रोदनी, कच्छुग, अनन्ता, समुद्रान्ता, दुरा
 लभा ये पाँच (स्त्री०) ये दश नाम धमासेके हे । पृथ्विपर्णी, पृथक्पर्णी
 चित्रपर्णी, अत्रिवल्लिका ॥ ९२ ॥ क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी,
 गुहा ये नव (स्त्री०) नाम पिठनके हे । निदिग्धिका, स्पृशी, व्याघ्री,
 बृहती, कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी, कुली, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा, राष्ट्रिका

रजनी श्रीफली तुत्या द्रोणी दोला च नीलिनी ।
 अवलगुजः सोमराजी सुवलिः सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥
 कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफलपि ।
 कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
 उपणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ।
 कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ॥ ९७ ॥
 चव्यं तु चविका काकचिञ्चीगुञ्जे तु कृष्णला ।
 पलंकषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥
 गोकण्टको गोकुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।
 विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥
 शृङ्गी महौषधं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
 शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥

ये दश (स्त्री०) नाम कटेलीके हैं । नीली, काला, छीतकिका, ग्रामीणा,
 मधुपर्णिका ॥ ९४ ॥ रजनी, श्रीफली, तुत्या, द्रोणी, दोला, नीलिनी
 ये ग्यारह (स्त्री०) नाम नीलके हैं । अवलगुज (पु०), सोमराजी,
 सुवलि, सोमवल्लिका ॥ ९५ ॥ कालमेषी, कृष्णफला, बाकुची, पूतिफली
 ये (स्त्री०) कुल आठ नाम बावचीके हैं । कृष्णा, उपकुल्या, वैदेही, मागधी,
 चपला, कणा ॥ ९६ ॥ उपणा, पिप्पली, शौण्डी, कोला ये दश (स्त्री०)
 नाम पीपलके हैं । करिपिप्पली, कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर ये
 पांच नाम गजपीपलके हैं । तहां वशिरशब्द (पु०) है शेष (स्त्री०) हैं
 ॥ ९७ ॥ चव्य (न०), चविका (स्त्री०) ये दो नाम चव्य (पीपलकी
 लकडी) के हैं । काकचिञ्ची, गुञ्जा, कृष्णला ये तीन (स्त्री०) नाम चिर-
 मिटीके हैं । पलंकषा (स्त्री०), इक्षुगन्धा (स्त्री०) श्वदंष्ट्रा (स्त्री०),
 स्वादुकण्टक (पु०) ॥ ९८ ॥ गोकण्टक (पु०), गोकुरक (पु०),
 वनशृङ्गाट (पु०) ये सात नाम गोखरूके हैं । विश्वा, विषा, प्रतिविषा,
 अतिविषा, उपविषा, अरुणा ॥ ९९ ॥ शृङ्गी, महौषध ये आठ नाम अती-
 सके हैं । महौषध (न०) शेष (स्त्री०) हैं । क्षीरावी, दुग्धिका ये दो
 (स्त्री०) नाम दूधीके हैं । शतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी, वरी

ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।
 अहेरुय पीतद्रुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥
 दार्वी पचंपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।
 वचोग्रगन्धा पद्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ॥ १०२ ॥
 शुक्ल हैमवनी वैद्यमातृसिंहयो तु वाशिका ।
 वृषोऽरूप. सिंहास्यो वासको वाजिदन्तक. ॥ १०३ ॥
 आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुकान्ताऽपराजिता ।
 इक्षुगन्धा तु काण्डेशुकोकिलाक्षेशुरशुरा ॥ १०४ ॥
 शालेय स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसि ।
 मिश्रेयाप्यथ सीहुण्डो वज्र स्नुक स्त्री स्नुही गुडा ॥ १०५ ॥
 समन्तदुग्धाऽथो वेष्टममोवा चित्रतण्डुला ।
 तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्ग पुनपुसकम् ॥ १०६ ॥

॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये दस (स्त्री०) नाम शतावरीके है । पीतद्रु, कालीयक, हरिद्र ये तीन नाम (पु०) हैं ॥ १०१ ॥ दार्वी, पचपचा, दासुहरिद्रा, पर्जनी ये चार (स्त्री०) कुल सात नाम दासुहर्दीके हैं । वचा, उग्रगधा, पद्ग्रथा, गोलोमी, शतपर्विका ये पांच (स्त्री०) नाम वचके है ॥ १०२ ॥ हैमवती यह एक (स्त्री०) नाम सुपेद वचका है । वैद्यमातृ, सिंही, वाशिका ये तीन नाम (स्त्री०) हैं । वृष, अरूप, सिंहास्य, वासक, वाजिदन्तक ये पांच (पु०) हैं ये आठ नाम वासके है ॥ १०३ ॥ आस्फोटा, गिरिकर्णी, विष्णुकान्ता, अपराजिता ये चार (स्त्री०) नाम विष्णुकान्ताके है । इक्षुगधा, कांडेशु, कोकिलाक्ष, इक्षुर, शुर ये पांच नाम तालमखानेके हैं । तहां इक्षुगधा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ॥ १०४ ॥ शालेय (पु०), शीताशिव (पु०), छत्रा (स्त्री०), मधुरिका (स्त्री०) मिसि (स्त्री०), मिश्रेया (स्त्री०) ये छ नाम साफके है । सीहुण्ड (पु०), वज्र (पु०) स्नुक (हकारान्त स्त्री०), स्नुही (स्त्री०), गुडा (स्त्री०), समतदुग्धा (स्त्री०) ये छ नाम थूहरके हैं ॥ १०५ ॥ वेष्ट (पु० न०), अमोवा (स्त्री०), चित्रतण्डुला (स्त्री०), तण्डुल (पु०), कृमिघ्न (पु०), विडङ्ग (पु० न०) ये छ नाम घायविडङ्गके हैं ॥ १०६ ॥

बला वाट्यालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।
 मृद्धीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाही मधुरसेति च ॥ १०७ ॥
 सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।
 त्रिभण्डी रोचनी श्यामापालिन्द्यो तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥
 काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेपिका ।
 मधुकं क्लीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥
 विदारी क्षीरशुक्लेशुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।
 अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ ११० ॥
 लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।
 खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः ॥ १११ ॥
 गोपी श्यामा सारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।
 योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याद्वया इमे ॥ ११२ ॥

बला, वाट्यालका ये दो (स्त्री०) नाम खरैहटके हैं । घंटाखा, शणपु-
 ष्पिका ये दो (स्त्री०) नाम शणपुष्पीके हैं । मृद्धीका, गोस्तनी, द्राक्षा,
 स्वाही, मधुरसा ये पांच (स्त्री०) नाम मुनक्का दाखके हैं ॥ १०७ ॥
 सर्वानुभूति, सरला, त्रिपुटा, त्रिवृता, त्रिवृत्, त्रिभंडी, रोचनी ये सात
 (स्त्री०) नाम निसोतके हैं । श्यामा, पालिन्दी, सुषेणिका ॥ १०८ ॥
 काला, मसूरविदला, अर्धचन्द्रा, कालमेपिका ये सात (स्त्री०) नाम काली
 निसोतके हैं । मधुक (न०), क्लीतक (न०), यष्टिमधुक (न०), मधु-
 यष्टिका (स्त्री०) ये चार नाम मुलहठीके हैं ॥ १०९ ॥ विदारी, क्षीर-
 शुक्ला, इक्षुगंधा, क्रोष्ट्री ये चार (स्त्री०) नाम सुषेद भूमिकोहलेके हैं ।
 क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगंधिका ये तीन (स्त्री०) नाम काले भूमिको-
 हलेके हैं ॥ ११० ॥ लांगली, शारदी, तोयपिप्पली, शकुलादनी ये चार
 (स्त्री०) नाम जलपीपलके हैं । खराश्वा (स्त्री०), कारवी (स्त्री०),
 दीप्य (पु०), मयूर (पु०), लोचमस्तक (पु०) ये पांच नाम मोरशिखा
 (अजमोदी) के हैं ॥ १११ ॥ गोपी, श्यामा, सारिवा, अनन्ता, उत्पलशा-
 रिवा ये पांच (स्त्री०) नाम सरयाईके हैं । योग्य, ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी
 ये चार नाम ऋद्धि औपधीके हैं । योग्य (न०) शेष (स्त्री०) हैं । और

कदली वारणवुसा रम्भा मोचाशुमत्फला ।
 काष्ठीला मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥ ११३ ॥
 वार्ताकी हिंगुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रवर्षिणी ।
 नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥
 नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।
 विदारिगन्धाऽशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥ ११५ ॥
 तुडिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरोति च ।
 भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृष ॥ ११६ ॥
 गाङ्गेरुकी नागबला झपा ह्रस्वगवेधुका ।
 धामार्गवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥
 ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ।
 स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥

येही नाम वृद्धि औपधीकेभी हे ॥ ११२ ॥ कदली, वारणवुसा, रभा, मोचा, अशुमत्फला, काष्ठीला ये छ (स्त्री०) नाम केलाके हे । मुद्गपर्णी, काक मुद्गा, सहा ये तीन (स्त्री०) नाम रानी मूगके हे ॥ ११३ ॥ वार्ताकी, हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रवर्षिणी ये पांच (स्त्री०) नाम बडी कटेलीके हे । नाकुली, सुरसा, रास्ना, सुगन्धा, गन्धनाकुली ॥ ११४ ॥ नकुलेष्टा, भुजगाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये नव (स्त्री०) नाम रास्नाके हे । विदारि गन्धा, अशुमती, सालपर्णी, स्थिरा, ध्रुवा ये पांच (स्त्री०) नाम सालवनके हैं ॥ ११५ ॥ तुडिकेरी, समुद्रान्ता, कार्पासी, बदरा ये चार (स्त्री०) नाम कपासके हे । कार्पास (पु०) हे । भारद्वाजी यह एक (स्त्री०) नाम रानी वनकपासका है । शृङ्गिन्, ऋषभ, वृष ये तीन (पु०) नाम ऋषभक औपधी (काकडासिगी) के हे ॥ ११६ ॥ गाङ्गेरुकी, नागबला, झपा, ह्रस्वगवेधुका ये चार (स्त्री०) नाम बडी खरैहटीके हैं । धामार्गव, घोषक ये दो (पु०) नाम कदली तोरईके हैं । महाजाली यह एक (स्त्री०) नाम पीले पर्णकी तोरईका है ॥ ११७ ॥ ज्योत्स्नी, पटोलिका, जाली ये तीन (स्त्री०) नाम परलके हैं । नादेयी, भूमिजम्बुका ये दो (स्त्री०) नाम भूमिजामनके हैं । अग्निशिखा, अग्निशिखा ये दो (स्त्री०) नाम कलहारीके हैं । काकाङ्गी, काकनासिका ये दो (स्त्री०) नाम मकोहविशेषके हैं ॥ ११८ ॥

गोधापदी तु सुवहा मुसली तालमूलिका ।
 अजशृङ्गी विषाणी स्याद्रोजिह्वादार्विके समे ॥ ११९ ॥
 ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लयप्यथ द्विजा ।
 हरेणु रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
 एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
 बालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुरु ॥ १२१ ॥
 बालं ह्रीवेरबर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।
 कालानुसार्यवृद्धाश्मपुष्पशीतशिवानि तु ॥ १२२ ॥
 शैलेयं तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
 गन्धिनी गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
 महेरुणा कुन्दुरुकी सलकी ह्लादिनीति च ।
 अग्निज्वालासुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 पृथ्वीका चन्द्रवालैला निष्कुटिर्वहुलाऽथ सा ।
 सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्या कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः ॥ १२५ ॥

गोधापदी, सुवहा ये दो (स्त्री०) नाम लाल लज्जावंतीके हैं । मुसली, तालमूलिका ये दो (स्त्री०) नाम मुसलीके हैं । अजशृङ्गी, विषाणी ये दो (स्त्री०) नाम मेढासोंगीके हैं । गोजिह्वा, दार्विका ये दो (स्त्री०) नाम गाभेशिकाके हैं ॥ ११९ ॥ ताम्बूलवल्ली, ताम्बूली, नागवल्ली ये तीन (स्त्री०) नाम नागरपानकी वेलिके हैं । द्विजा, हरेणु, रेणुका, कौन्ती, कपिला, भस्मगन्धिनी ये छः (स्त्री०) नाम रेणुकबीजके हैं ॥ १२० ॥ एलावालुक, ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, बालुक ये पांच (न०) नाम अतरके हैं । पालकी (स्त्री०), मुकुन्द (पु०), कुन्द (पु०), कुन्दुरु (पु० स्त्री०) ये चार नाम पालकशाकके हैं ॥ १२१ ॥ बाल, ह्रीवेर; बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशाम्बुनाम ये पांच (न०) नाम नेत्रवालाके हैं । कालानुसार्य, वृद्ध, अश्मपुष्प, शीतशिव ॥ १२२ ॥ शैलेय ये पांच (न०) नाम शिलाजीतके हैं । तालपर्णी, दैत्या, गन्धकुटी, मुरा, गन्धिनी ये पांच (स्त्री०) नाम तालीसपत्रके हैं । गजभक्ष्या, सुवहा, सुरभी, रसा ॥ १२३ ॥ महेरुणा, कुन्दुरुकी, सलकी, ह्लादिनी ये आठ (स्त्री०) नाम सालर्याके हैं । अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातुपुष्पिका ये चार (स्त्री०) नाम धायके हैं ॥ १२४ ॥ पृथ्वीका,

व्याधिः कुष्ठ पारिभाष्य वाप्य पाकलमुत्पलम् ।
 शङ्खिनी चौरपुष्पी स्यात्कोशिन्यय वितुन्नकं ॥ १२६ ॥
 झटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।
 प्रपौण्डरीक पौण्डर्यमथ तुन्न कुबेरक ॥ १२७ ॥
 कुणि' कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षोऽथ राक्षसी ।
 चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥
 व्याडायुध व्याघ्रनख करज चक्रकारकम् ।
 सुषिग विद्रुमलता कपोताघ्रिर्नदी नली ॥ १२९ ॥
 धमन्यञ्जनकेशी च हनुर्दृष्टविलासिनी ।
 शुक्ति' शङ्ख' खुर कोलदलं नखमथाढकी ॥ १३० ॥
 काशी मृत्सना तुषारिका मृत्तालङ्गुलाष्टमे ।
 कुटन्नट टाशपुत्र वानेयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥

चन्द्रवाला, एला, निष्कृष्टी, बहुला ये पांच (स्त्री०) नाम इलायचीके
 हैं । उपरुचिका, तुत्या, कौरगी, त्रिपुटा, झुटि ये पांच (स्त्री०) नाम
 छोटी इलायचीके हैं ॥ १२६ ॥ व्याधि, कुष्ठ, पारिभाष्य, वाप्य, पाकल,
 उत्पल ये छ नाम कूटके हैं । व्याधिशब्द (पु०) शेष (न०) हैं ।
 शङ्खिनी, चौरपुष्पी, कोशिनी ये तीन नाम चोरखेलके हैं । वितुन्नक
 ॥ १२६ ॥ झटामला, अज्झटा, ताली, शिवा, तामलकी ये छ नाम
 भूमिखिलके हैं । वितुन्नकशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) है । प्रपौण्डरीक,
 पौण्डर्य ये दो (न०) नाम स्थलजमलके हैं । तुन्न, कुबेरक ॥ १२७ ॥
 कुणि, कच्छ, कान्तलक, नन्दिवृक्ष ये छ (पु०) नाम नान्दिवृक्षीके हैं ।
 राक्षसी (स्त्री०), चण्डा (स्त्री०), धनहरी (स्त्री०) क्षेम (पु०),
 दुष्पत्र (पु०), गणहासक (पु०), ये छ नाम किरमाणी अजमायनके
 हैं ॥ १२८ ॥ व्याडायुध, व्याघ्रनख, करज, चक्रकारक ये चार (न०)
 नाम व्याघ्रनगके हैं । सुषिग, विद्रुमलता, कपोताघ्रि, नदी, नली ॥ १२९ ॥
 धमनी, अजननेशी ये सात (स्त्री०) नाम पवारीके हैं । हनु (स्त्री०),
 दृष्टविलासिनी (स्त्री०), शुक्ति (स्त्री०), शङ्ख (पु०), खुर (पु०),
 कोलदल (न०), नख (न०) ये सात नाम नखलाके हैं । आढकी (स्त्री०)
 ॥ १३० ॥ काशी (स्त्री०), मृत्सना (स्त्री०), तुषारिका (स्त्री०), मृत्तालङ्गु

अजमोदा तूग्रगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।

मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥

अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यापि ॥ १४६ ॥

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्दुघ्नश्चक्रमर्दकः ।

पद्माट उरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥

लतार्कदुद्रुमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ।

लशुनं गृञ्जनारिष्टमहाकन्दरसोनकाः ॥ १४८ ॥

पुनर्नवा तु शोथघ्नी वितुन्नं सुनिषण्णकम् ।

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यापि ॥ १४९ ॥

पारावताग्निः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥ १५० ॥

स्वाहुरसा, वयस्था ये तीन (स्त्री०) नाम काकोलीके हैं । मकूलक (पु०)
निकुम्भ (पु०), दन्तिका (स्त्री०), प्रत्यक्श्रेणी (स्त्री०), उदुम्बरपर्णी
(स्त्री०) ये पांच नाम जमालगोटके जडके हैं ॥ १४४ ॥ अजमोदा,
उग्रगन्धा ये दो (स्त्री०) नाम अजमोदके हैं । ब्रह्मदर्भा, यवानिका ये
दो (स्त्री०) नाम अजवानके हैं । पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र ये तीन (न०)
नाम पौष्करमूलके हैं ॥ १४५ ॥ अव्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचा-
रिणी ये पांच (स्त्री०) नाम स्थलकमलिनिके हे । काम्पिल्य, कर्कश, चन्द्र,
रक्तांग, रोचनी ये पांच नाम रोचना (कबीला) के हैं । रोचनी (स्त्री०)
शेष (पु०) हैं ॥ १४६ ॥ प्रपुन्नाड, एडगज, दद्दुघ्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उरणा-
ख्य ये छः (पु०) नाम पंवाडके हैं । पलाण्डु, सुकन्दक ये दो (पु०) नाम
प्याजके हैं ॥ १४७ ॥ लतार्क, दुद्रुम ये दो (पु०) नाम हरी प्याजके हैं ।
महौषध, लशुन, गृञ्जन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये छः नाम लहशुनके
हैं । महौषध, गृञ्जन शब्द (न०) शेष (पु०) हैं ॥ १४८ ॥ पुनर्नवा, शो-
थघ्नी ये दो (स्त्री०) नाम सांठीके हैं । वितुन्न, सुनिषण्णक ये दो (न०)
नाम कुरडूके हैं । वातक (पु०), शीतल (पु०), अपराजिता (स्त्री०),
शणपर्णी (स्त्री०) ये चार नाम गोकर्णिके हैं ॥ १४९ ॥ पारावताग्नि,
कठभी, पण्या, ज्योतिष्मती, लता ये पांच (स्त्री०) नाम मालकांगनी

विष्वक्सेनाप्रिया गृध्विवाही बदरेत्यपि ।

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्काकमार्ची तु वायसी ॥ १५१ ॥

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसि ।

अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥

तस्या कटभरा राजवला भद्रवलेत्यपि ।

जनी जतुका रजनी जतुकृचक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥

सस्पर्शाऽथ शटी गन्धमूली पद्मग्रन्थिकेत्यपि ।

कर्चुरोऽपि पलाशोऽथ कारवेलः कठिलक ॥ १५४ ॥

सुपवी चाथ कुलकं पटोलस्तित्तकं पटु ।

कृष्माण्डकस्तु कर्कारुर्स्वारु कर्कटी स्त्रियौ ॥ १५५ ॥

इक्ष्वाकु कटुतुम्बी स्यात्तुम्ब्यलावूरुमे समे ।

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥

हैं । वाषिक, त्राणमाणा, त्रायती, बलभाद्रिहा ये चार नाम जाग्यगण नि
 रायतके फलके हैं । तहाँ वाषिकशब्द (न०) ओप (स्त्री०) है ॥ १५० ॥
 विष्वक्सेनाप्रिया, गृधि, वाराही, बदरा ये चार (स्त्री०) नाम वाराही
 (बिलाई) कन्दके हैं । मार्कव, भृगराज ये दो (पु०) नाम भांगरेके हैं ।
 काकमार्ची, वायसी ये दो (स्त्री०) नाम मकोहके हैं ॥ १५१ ॥ शतपुष्पा,
 सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसी, अवाक्पुष्पी, कारवी ये सात
 (स्त्री०) नाम सौंफके हैं । सरणा, प्रसारिणी ॥ १५२ ॥ कटभरा, राजवला,
 भद्रवला ये पाँच (स्त्री०) नाम रडीप नामक औषधिके हैं । जनी, जतुका,
 रजनी, जतुकृत्, चक्रवर्तिनी ॥ १५३ ॥ सस्पर्शा ये छ (स्त्री०) नाम
 चाकवत शाकके हैं । शटी (स्त्री०), गन्धमूली (स्त्री०), पद्मग्रन्थि
 (स्त्री०), कर्चूर (पु०), पलाश (पु०) ये पाँच नाम कपूरकचरीके
 हैं । कारवेल (पु०), कठिलक (पु०) ॥ १५४ ॥ सुपवी (स्त्री०) ये
 तीन नाम करेलेके हैं । कुलक (न०), पटोल, तित्तक, पटु (तीन पु०),
 ये चार नाम कटवी परवलेके हैं । कृष्माण्डक, कर्कारु ये दो (पु०) नाम
 कोहलेके हैं । स्वारु, कर्कटी ये दो (स्त्री०) नाम उडलीके हैं ॥ १५५ ॥
 इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये दो (स्त्री०) नाम कटवी तुर्बिके हैं तुबी, अलावू
 ये दो (स्त्री०) नाम काली तुर्बिके हैं । चित्रा, गवाक्षी, गोडुम्बा ये तीन

अर्शाघ्नः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समाष्टिला ।
 कलम्बुपुोदिका स्त्री तु चूलकं हिलमोचिका ॥ १५७ ॥
 वास्तुकं शाकभेदाः स्युर्दूर्वा तु शतपर्विका ।
 सहस्रवीर्याभार्गव्यौ रुहाऽनन्ताऽय सासिता ॥ १५८ ॥
 गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षका ।
 कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमध्रियाम् ॥ १५९ ॥
 स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा चूडाला चक्रलोच्चटा ।
 वंशे त्वक्सारकर्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
 शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।
 वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥

(स्त्री०) नाम जेठऊ ककरीके ह । विशाला, इन्द्रवारुणी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रवारुणीके हैं ॥ १५६ ॥ अर्शाघ्न, सूरण, कन्द ये तीन (पु०) नाम जमीकन्दके हैं । गंडीर (पु०), समाष्टिला (स्त्री०) ये दो नाम कडुये जमीकन्दके हैं । कलंबी यह एक (स्त्री०) नाम बांसकी आकृति-वाले शाकका है । उपोदिका यह एक (स्त्री०) नाम पुदीना शाकका है । मूलक यह एक (न०) नाम मूलीशाकका है । हिलमोचिका यह एक (स्त्री०) नाम हलहंची शाकका है ॥ १५७ ॥ वास्तुक यह एक (न०) नाम बथुआ शाकका है । ये शाकोंके भेद हैं । दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भार्गवी, रुहा, अनन्ता ये छः (स्त्री०) नाम दूबके हैं ॥ १५८ ॥ गोलोमी, शतवीर्या, गण्डाली, शकुलाक्षका ये चार (स्त्री०) नाम सुपेद दूबके हैं । कुरुविन्द, मेघनामन् (नान्त) (दो पु०), मुस्ता (स्त्री०), मुस्तक (पु० न०) ये चार नाम नागरमोथेके हैं । मेघनामा याने मेघके नाम इसकेभी वाचक होते हैं ॥ १५९ ॥ भद्रमुस्तक (पु०), गुन्द्रा (स्त्री०) ये दो नाम भद्रमोथाके हैं । चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये तीन (स्त्री०) नामभी मोथाविशेषके हैं । वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज ॥ १६० ॥ शतपर्बन् (नान्त), यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये दश (पु०) नाम बांसके हैं । कीचक यह एक (पु०) नाम कीडोंसे किये हुए छिद्रोंमें होकर गये हुए पवनके झकोरोंसे शब्दवाले बांसका है ॥ १६१ ॥

ग्रन्थिर्ना पर्वपरुपी गुन्द्रस्तेजनकः शर' ।
 नडस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमस्त्रियाम् ॥ १६२ ॥
 इक्षुगन्धा पोटगल' पुसि मून्नि तु बल्वजा' ।
 रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तागकादय' ॥ १६३ ॥
 स्याद्गीरण वीग्नतर मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
 अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥
 लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।
 नडादयस्तृण गर्मुच्छचामाफ्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥
 अस्त्री कुशं कुथो दर्भं पवित्रमथ कत्तृणम् ।
 पौरसौगन्धिकध्यामदेवजग्धकतौहिपम् ॥ १६६ ॥
 उत्रातिच्छत्रपालघ्नौ मालातृणकभृस्तृणे ।
 शर्पं बालतृण घातो चवत्तं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥

ग्रथि, पर्वर (नात), पस्त् ये तीन नाम वास आदिकी गाठके हे । तहा
 ग्रथिजब्द (पु०) शेष (न०) हे । गुन्द्र, तेजनक, शर ये तीन (पु०) नाम
 अगके हे । नट, धमन, पोटगल ये तीन (पु०) नाम नरसलके हे । काश
 (पु० न०) ॥ १६२ ॥ इक्षुगन्धा (स्त्री०), पोटगल (पु०) ये तीन
 नाम काशके हे । बल्वज यह एक नाम रवाका बहुवचनमे (पु०) हे ।
 रसाल, इक्ष ये दो (पु०) नाम ईरके हे । पुण्ड्र, कान्तागक ये दो (पु०)
 नाम ईरके भेद (पाडा) के हे ॥ १६३ ॥ वीग्न, वीग्नतर ये दो (न०)
 नाम तृणभेदके हे । उशीर, अभय, नलद, सेव्य, अमृणाल, जलाशय
 ॥ १६४ ॥ लामज्जक, लघुलय, अमडाह, इष्टकापथ ये दस नाम वीग्नतर
 क्षत्री जट अर्थात् रसके हे । तहाँ उशीरजब्द (पु० न०) शेष (न०)
 हे । नट आदि शब्द तृण जातिके वाचक हे । गर्मुत् (पु०), रयामात्र
 (पु०) इत्यादि शब्दभी तृणजातिवाचक हे । यहाँ प्रमुग्जजब्दसे कुश
 आदि नागनीका दूध आदिना ग्रहण हे ॥ १६५ ॥ कुश (पु० न०)
 कृथ (पु०), दभ (पु०), पवित्र (न०) ये चार नाम टाभके हे । कत्तृण,
 पौर, सौगन्धिक, ध्याम, देवजग्धक, गौहिप ये च (न०) नाम गौहिप
 तृणके हे ॥ १६६ ॥ छत्रा (स्त्री०), अतिच्छत्र (पु०), पालत्र (पु०),
 मग्नानृण (न०), भूमृण (न०) ये पाँच नाम उत्रतृणके हे । शर्प, बाल

नृणानां संहतिस्तृण्या नड्या तु नडसंहतिः ।
 तृणराजाद्वयस्तालो नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥
 वोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु ।
 फलमुद्गेगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥
 खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः ५ ।

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी हरिः ।

“ कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिमृगाशनः ।

पुण्डरीकः पञ्चनखचित्रकायमृगद्विपः ॥ ”

शार्दूलद्वीपिनौ व्याघ्रे तरक्षुस्तु मृगादनः ॥ १ ॥

तृण ये दो (न०) नाम कोमल तिनकेके हैं । घास (पु०), यवस (न०)
 ये दो नाम गौ आदिके चरने योग्य तृणके हैं । तृण, अर्जुन ये दो (न०)
 नाम तृणमात्रके हैं ॥ १६७ ॥ तृण्या यह एक (स्त्री०) नाम तृणोंके
 समूहका है । नड्या यह एक (स्त्री०) नाम नडोंके समूहका है । तृणरा-
 जाद्वय, ताल ये दो (पु०) नाम ताडके हैं । नालिकेर (पु०), लांगली
 (स्त्री०) ये दो नाम नारियलके हैं ॥ १६८ ॥ घोंटा, पूग, क्रमुक, गुवाक,
 खपुर ये पांच नाम सुपारीके हैं । घोंटा (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । उद्गेग यह
 एक नाम सुपारीके फलका है । और ताल, नारिकेर और पूग इन तीनोंके
 सहित हिन्तालशब्द तालभेदका वाचीभी है ॥ १६९ ॥ खर्जूर यह एक (पु०)
 नाम खजूरवृक्षका है । केतकी यह एक (स्त्री०) नाम केतकीका है । ताली
 यह एक (स्त्री०) नाम ताडके भेदका है । खर्जूरी यह एक (स्त्री०) नाम
 खजूरके भेदका है । ये तृणवृक्ष हैं ॥ इति वनौषधिवर्गः ॥ ४ ॥

अथ सिंहादिवर्गः । सिंह, मृगेन्द्र, पञ्चास्य, हर्यक्ष, केसरिन् (इन्नन्त),
 हरि ये छः नाम और “ कंठीरव, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगाशन, पुण्डरीक,
 पञ्चनख, चित्रकाय, मृगद्विप् (पान्त) ये आठ सब चौदह (पु०) नाम
 सिंहके हैं । ” शार्दूल, द्वीपिन् (इन्नन्त), व्याघ्र ये तीन (पु०) नाम
 बघेराके हैं । तरक्षु, मृगादन ये दो (पु०) नाम चीतेके हैं ॥ १ ॥

वराहः सूक्तो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटि ।
 दष्टी घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥ २ ॥
 कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः ।
 मर्कटो वानरः कीशो वनौका अथ भल्लुके ॥ ३ ॥
 ऋक्षाञ्छभल्लभल्लूका गण्डके खड्गखड्गिनौ ।
 लुलायो महिषो वाहद्विपत्कासरसैरिभा ॥ ४ ॥
 छिया शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्तका ।
 शृगालवश्रुकक्रोष्टुफेरुफेरवजम्बुका ॥ ५ ॥
 ओतुर्विडालो मार्जागे वृषदशक आरुभुक् ।
 त्रयो गौधेरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥
 श्वावित्तु शरपस्तलोन्नि शरु शरुल शलम ।
 वातप्रमीर्वातमृग कौकस्त्वोहामृगो वृक ॥ ७ ॥

'वराह, सूक्त, घृष्टि, कोल, पोत्रिन् (इन्त), किरि, किटि, दष्टिन्
 (इन्त), घोणिन् (इन्त), स्तब्धरोमन् (नान्त), क्रोड, भूदार ये वराह
 (पु०) नाम शूकरके हैं ॥ २ ॥ कपि, प्लवग, प्लवग, शाखा, मृग, वली, मुख,
 मर्कट, वानर, कीश, वनौकस् (सान्त) ये नव (पु०) नाम वानरके हैं ।
 भल्लुक ॥ ३ ॥ ऋक्ष, अञ्छभल्ल, भल्लूक ये चार (पु०) नाम रीछके
 हैं । गण्डक, खड्ग, खड्गिन् (इन्त) ये तीन (पु०) नाम गैडेके हैं ।
 लुलाय, महिष, वाहद्विपत् (तान्त), कासर, सैरिभ ये पाँच (पु०) नाम
 भैंसेके हैं ॥ ४ ॥ शिवा, भूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्तक, शृगाल, वश्रुक,
 क्रोष्टु, फेरु, फेरव, जवुक ये दश नाम गीदडके हैं । शिवाशब्द (छी०)
 शेष (पु०) है ॥ ५ ॥ ओतु, विटाल, मार्जार, वृषदशक, आरुभुक्
 (जान्त) ये पाँच (पु०) नाम बिलावके हैं । गौधेर, गौधार, गौधेय ये
 तीन (पु०) नाम गुहेरा (चदनगोह) के हैं । यह काले सर्पसे गोहमें
 पैदा होता है ॥ ६ ॥ श्वावित्तु (धान्त), शरु ये दो (पु०) नाम शेरके
 हैं । शरु (छी०), शरु (न०), शरु (न०) ये तीन नाम शेरके
 रोमके हैं । वातप्रमी, वातमृग ये दो (पु०) नाम वातमृगके हैं । कौक,
 ओहामृग, वृक ये तीन (पु०) नाम नेदियेके हैं ॥ ७ ॥

मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।

ऐण्यमेण्याश्चर्माद्यमेणस्यैणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥

कदली कन्दली चीनश्चमूरुप्रियकावपि ।

समूरुश्चेति हरिणा अमा अजिनयोनयः ॥ ९ ॥

कृष्णसाररुहन्यंकुरंकुशम्बररौहिषाः ।

गोकर्णपृपतैणश्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।

इत्यादयो मृगेन्द्राद्या नवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

“ अधोगन्ता तु खनको वृकः पुंघ्वज उन्दुरः । ”

उन्दुरुर्मृषिकोऽप्याखुर्गिरिका बालमृषिका ।

सरटः कृकलासः स्यान्मुसली गृहगोधिका ॥ १२ ॥

लूता स्त्रीतन्तुवायोर्णनाभमर्कटकाः समाः ।

नीलंगुस्तु कृमिः कर्णजलौकाः शतपद्भुभे ॥ १३ ॥

मृग, कुरंग, वातायु, हरिण, अजिनयोनि ये पांच (पु०) नाम मृगके हैं । ऐण्य यह एक नाम हरिणीके चाम तथा मांसका है । हरिणका चाम तथा मांस आदि ऐण कहाता है ये दोनों शब्द त्रिलिगी हैं ॥ ८ ॥ कदली (स्त्री०), कन्दली (स्त्री०), चीन (पु०), चमूरु (पु०), प्रियक (पु०) समूरु (पु०) ये छः हरिणके भेद और कृष्णसार आदि अजिनयोनि कहाते हैं ॥ ९ ॥ कृष्णसार, रुरु, न्यंकु, रकु, शंबर, रौहिण, गोकर्ण, पृपत, ऐण, ऋश्य, रोहित, चमर ये बारह (पु०) नाम मृगोंके भेदके हैं ॥ १० ॥ गधवे, शरभ, राम, सृमर, गवय, शश, सिंह आदि और गौ आदि ये सब (पु०) नाम पशुजातिके हैं ॥ ११ ॥ “ अधोगतृ (ऋकारान्त), खनक, वृक, पुंघ्वज, उदुर ये पांच (पु०) नाम क्षेपक श्लोकके अनुसार ” और उदुरु, मृपक, आखु ये तीन (पु०) कुल आठ नाम मूसेके हैं । गिरिका, बालमृषिका ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मूसीके हैं । सरट, कृकलास ये दो (पु०) नाम गिरगटके हैं । मुसली, गृहगोधिका ये दो (स्त्री०) नाम छिपकलीके हैं ॥ १२ ॥ लूता, तंतुवाय, उर्णनाभ, मर्कटक ये चार नाम मकड़ीके हैं । तहां लूताशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं । नीलंगु, कृमि ये दो (पु०) नाम छोटे कीड़ेके हैं । कर्णजलौकम् (सकारान्त), शतपदी

वृश्चिक शूककीटः स्यादलिद्रोणौ तु वृश्चिके । -
 पारावतः कलरवः कपातोऽथ शशादनः ॥ १४ ॥
 पत्री श्येन उलूकस्तु वायसारातिपेचकौ । -
 “ दिवान्धः कौशिको घृको दिवाभीतो निशाटनः । ”
 व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः खज्जरीटस्तु खज्जन ॥ १५ ॥
 लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यादथ चापः किक्कीदिविः ।
 कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अथ स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥
 दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ।
 कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥ १७ ॥
 चटकः कलविकः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।
 पुमपत्ये चाटकैरः ह्यपत्ये चटकैव सा ॥ १८ ॥
 कर्करेटुः करेटुः स्यात्कृकणकृकगौ समौ ।
 वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिकः इत्यपि ॥ १९ ॥

ये दो (स्त्री०) नाम कानखजूरेके ह ॥ १३ ॥ आगेके कलावकशब्दतक
 (पु०) है । वृश्चिक, शूककीट ये दो नाम उनके सानेवाले कौडेके है ।
 अलि, द्रोण, वृश्चिक ये तीन नाम वीरुके है । पारावत, कलरव, कपात ये
 तीन नाम कनूतरके है । शशादन ॥ १४ ॥ पत्री (इन्नन्त), श्येन ये तीन
 नाम शिकरा (बाज) के है । उलूक, वायसाराति, पेचक ये तीन नाम उलूके
 है । “ दिवान्ध, कौशिक, घृक, दिवाभीत, निशाटन ये पांच नामभी उलूके
 है । ” व्याघ्राट, भरद्वाज ये दो नाम लवाविशेषके ह । खजरीट, खजन ये
 दो नाम सज्जन पक्षीके है ॥ १५ ॥ लोहपृष्ठ, कङ्क ये दो नाम ककक्षीके है ।
 चाप, किक्कीदिवि ये दो नाम नीलकण्ठ पक्षीके है । कलिङ्ग, भृङ्ग, धूम्याट ये
 तीन नाम मस्तकचूड पक्षीके है । शतपत्रक ॥ १६ ॥ दार्वाघाट ये दो
 नाम गुटतडई वा कठफोगके है । सारङ्ग, तोकक, चातक ये तीन नाम
 पपैयाके है । कृकवाकु, ताम्रचूड, कुक्कुट, चरणायुध ये चार नाम मुरगेके
 है ॥ १७ ॥ चटक, कलविक य दो नाम चिडोटेके है । यहाँतक (पु०) है ।
 चटका यह एक (स्त्री०) नाम चिडोका है । चाटकैर यह एक (पु०)
 नाम इनके पुरुपरूप वच्चेका है । और चीकली हो तो चटका इस (स्त्री०)
 नामसे प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥ कर्करेटु, करेटु ये दो (पु०) नाम कर्करेक

काके तु करटारिष्टवल्लिपुष्टसकृत्प्रजाः ।
 ध्वाङ्गात्मघोषपरभृद्भलिभुग्वायसा अपि ॥ २० ॥
 “ स एव च चिरंजीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः । ”
 द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्ठकः ।
 आतापिचिल्लौ दाक्षाय्यगृध्रौ कीरशुकौ समौ ॥ २१ ॥
 कुञ्जः क्रीञ्चोऽथ वकः कह्वः पुष्कराह्वस्तु सारसः ।
 कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥ २२ ॥
 कादम्बः कलहंसः स्यादुत्क्रोशकुररौ समौ ।
 हंसास्तु श्वेतगरुतश्चकाङ्गा मानसौकमः ॥ २३ ॥
 राजहंसास्तु ते चञ्चुवरणलंहितैः सिताः ।
 मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतैः ॥ २४ ॥

पक्षीके हैं । कृकण, क्रकर ये दो (पु०) नाम करेटु (तीतरावेश) के हैं ।
 आगेके शब्द धार्तराष्ट्रक (पु०) है । वनप्रिय, परभृत्, कोकिल, पिक ये
 चार नाम कोयलके हैं ॥ १९ ॥ काक, करट, अरिष्ट, वलिपुष्ट, सकृत्प्रज,
 ध्वाक्ष, आत्मघोष, परभृत् (तांत), वलिभुज (जान्त), वायस ये दश
 नाम काकके हैं ॥ २० ॥ “ चिरञ्जीविन् (इन्नत), एकदृष्टि, मौकुलि ये
 तीन नामभी काकके हैं । ” द्रोणकाक, काकोल ये दो नाम काले काकके
 हैं । दात्यूह, कालकण्ठक ये दो नाम जलकाकके हैं । आतापिन् (इन्नत),
 चिल्ल ये दो नाम चील्हके हैं । दाक्षाय्य, गृध्र ये दो नाम गोधके हैं । कीर,
 शुक ये दो नाम तोतेके हैं ॥ २१ ॥ कुञ्च (चान्त), क्रीञ्च ये दो नाम कुञ्जके
 हैं । वक, कह्व ये दो नाम बगलेके हैं । पुष्कराह्व, सारस ये दो नाम सार-
 सके हैं । कोक, चक्र, चक्रवाक, रथांग ये चार नाम चक्रवाकके हैं ॥ २२ ॥
 कादम्ब, कलहंस ये दो नाम मधुर बोलनेवाले हंसके हैं । उत्क्रोश, कुरर
 ये दो नाम कुसीके हैं । हंस, श्वेतगरुत् (तान्त), चक्रांग, मानसौकस्
 (सांत) ये चार नाम हंसके हैं ॥ २३ ॥ जिन्होंका शरीर सुपेद हो चोंच और
 पैर लाल हों वे राजहंस कहाते हैं । कुछ धूम्ररंग चोंच और पैरोंवाले हंस
 मल्लिकाक्ष कहाते हैं । काले रंगकी चोंच और पैरोंवाले हंस धार्तराष्ट्र क-

शरारिगाटिआडिश्च बलाका विसकण्ठिका ।
 हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥ २५ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैलपायिका ।
 वर्षणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ॥ २६ ॥
 पतङ्गिका पुत्तिका स्यादशस्तु वनमक्षिका ।
 दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्दन्वोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥
 भृङ्गारी शीरुका चीरी क्षिल्लिका च समा इमाः ।
 समौ पतङ्गशलमौ खद्योतो ज्योतिरिङ्गण ॥ २८ ॥
 मधुव्रतो मधुसरो मधुलिण्मधुपालिनः- ।
 द्विरेफपुष्पलिङ्गभृङ्गपद्मदभ्रमरालय ॥ २९ ॥
 मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गमुक् ।
 शिखावल शिखी केकी मेवनादानुलास्यपि ॥ ३० ॥

हाते हे । यहाँतक (पु०) हे ॥ २४ ॥ शरारि, आटि, आडि ये तीन (स्त्री०) नाम अडोपक्षीके है । बलाका, विसकण्ठिका ये दो (स्त्री०) नाम बगलेके भेदके है । वरटा यह एक (स्त्री०) नाम हंसकी स्त्रीका है । लक्ष्मणा यह एक (स्त्री०) नाम सारसकी स्त्रीका है ॥ २५ ॥ जतुका, अजिनपत्रा ये दो (स्त्री०) नाम चामचिरी (चिमगादर) के है । परोष्णी, तैलपायिका ये दो (स्त्री०) नाम तेलदुजा (गीदुड) के है । वर्षणा, मक्षिका, नीला ये तीन (स्त्री०) नाम मक्खीके है । सरघा, मधुमक्षिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुकी मक्खीके है ॥ २६ ॥ पतङ्गिका, पुत्तिका ये दो (स्त्री०) नाम मधुमक्खीके भेदके है । दश (पु०), वनमक्षिका (स्त्री०) ये दो नाम डंसके हैं । दंशी यह एक (स्त्री०) नाम उन टाँसोंकी छोटी जातिका है । गधोली (स्त्री०), वरटा (पु० स्त्री०) ये दो नाम गांधीणी (वर्ममक्खी) के है ॥ २७ ॥ भृङ्गारी, शीरुका, चीरी, क्षिल्लिका ये चार (स्त्री०) नाम चिल्ल (शीगुर) के है । पतङ्ग, शरलम ये दो (पु०) नाम पतङ्गके हैं । खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ये दो (पु०) नाम पटङ्गजनके हैं ॥ २८ ॥ मधुव्रत, मधुसर, मधुलिङ्ग (हान्त), मधुप, अलिङ्ग (इन्त), द्विरेफ, पुष्पलिङ्ग (हान्त), भृङ्ग, पद्मद, भ्रमर, अलि ये ग्यारह (पु०) नाम भौरेके है ॥ २९ ॥ मयूर, बर्हिण, बर्हिन (इन्त),

केका वाणी मयूरस्य समौ चन्द्रकमेचकौ ।
 शिखा चूडा शिखण्डस्तु पिच्छवर्हं नपुंसके ॥ ३१ ॥
 खगे विहंगविहगविहंगमविहायसः ।
 शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ॥ ३२ ॥
 पतत्रिपत्रिपतगपतत्पत्ररथाण्डजाः ।
 नगौकोवाजिविकिरविविष्करपतत्रयः ॥ ३३ ॥
 नीडोद्भवा गरुमन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ।
 तेषां विशेषा हारीतो महुः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवजीवश्चकोरकः ।
 कोयष्टिकाष्टिभ्रको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥

नीलकण्ठ, भुजंगभुज् (जान्त), शिखावल, शिखिन् (इन्नन्त), केकिन्
 (इन्नन्त), मेघनादानुलासिन् (इन्नन्त) ये नव (पु०) नाम मोरके हैं
 ॥ ३० ॥ केका यह एक (स्त्री०) नाम मोरकी वाणीका है । चन्द्रक,
 मेचक ये दो (पु०) नाम मोरकी चन्द्राके हैं । शिखा, चूडा ये दो
 (स्त्री०) नाम मोरकी शिखाके हैं । शिखण्ड (पु०), पिच्छ (न०),
 वर्ह (न०) ये तीन नाम मोरके पांखके हैं ॥ ३१ ॥ खग, विहग, विहग-
 विहगम, विहायम् (सान्त), शकुन्ति, पक्षिन् (इन्नन्त), शकुनि, शकुत,
 शकुन, द्विज ॥ ३२ ॥ पतात्रिन् (इन्नन्त), पत्रिन् (इन्नन्त), पतग, पतत्
 (तान्त), पत्ररथ, अण्डज, नगौकम् (सान्त), वाजिन् (इन्नन्त),
 विकिर, वि, विष्कर, पतत्रि ॥ ३३ ॥ नीडोद्भव, गरुमन्त (तान्त),
 पित्सन्त (तान्त), नभसंगम ये सत्ताईस (पु०) नाम पक्षिनात्रके हैं ।
 पक्षियोंके विषयमें विशेष कहते हैं । हारीत यह एक (पु०) नाम तिलगरू
 पक्षीका है । महु यह एक (पु०) नाम जलकाकका है । कारण्डव यह
 एक (पु०) नाम करडुवा (बतकविशेष) का है । प्लव यह एक (पु०)
 नाम पाणकाकका है ॥ ३४ ॥ तित्तिरि यह एक (पु०) नाम तीतरका
 है । कुक्कुभ यह एक (पु०) नाम वनके मुर्गेका है । लाव यह एक (पु०)
 नाम बड़ेपक्षीका है । जीवजीव यह एक (पु०) नाम मोरके पांखोंके
 समान पखोंवाले पक्षीका है । चकोरक यह एक (पु०) नाम चकोरका
 है । कोयष्टिक, टिट्टिभक ये दो (पु०) नाम ट्टीहरी पक्षीके हैं । बत्तक

गन्तपक्षच्छदा पत्र पतत्र च तनूरुहम् ।
 स्त्री पक्षति पक्षमूल चतुष्टोत्रिभे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
 प्रडीनोटीनमडीनान्येता खगगतिक्रिया ।
 पेशी कोशो द्विहीनेऽण्ड कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
 पोतः पाकोऽर्भको डिम्बः पृथुकः शावकः शिशुः ।
 स्त्रीपुमौ मिथुन द्वन्द्व युग्म तु युगुल युगम् ॥ ३८ ॥
 समूहो निवहव्यूहसदोहविसरत्रजाः ।
 स्तोमौघनिकरघ्रातवारसंघातसचयाः ॥ ३९ ॥
 समुदायः समुदय समवायश्चयो गण ॥
 स्त्रिया तु सहतिवृन्द निकुरम्ब कदम्बकम् ॥ ४० ॥
 वृन्दमेदाः समैर्वर्ग संघसार्थौ तु जन्तुभिः ।
 सजातीयैः कुल यूथ तिरश्चा पुनपुसकम् ॥ ४१ ॥

यह एक (पु०) नाम वतकका है । वार्त्तिका, साग्गिना, कपिजला ये तीनों
 एक (स्त्री०) नाम वतत्रविशेषके हैं ॥ ३६ ॥ गस्त (तान्त पु०), पक्ष
 (पु०), छद (पु० न०), पत्र (न०), पतत्र (न०) तनूरुह (न०)
 ये छ नाम पक्षके हैं । पक्षति यह एक (स्त्री०) नाम पक्षके मूलका है ।
 चतु, त्रोटि ये दो (स्त्री०) नाम पक्षीकी चोंचके हैं ॥ ३६ ॥ प्रडीन,
 उटीन, सडीन ये तीनों (न०) नाम पक्षियोंके गमनविशेषके हैं । पेशी
 (स्त्री०), कोश (पु० न०), अट (न०) ये तीन नाम अटके हैं ।
 कुलाय (पु०), नीड (पु० न०) ये दो नाम पक्षियोंके घरके हैं ॥ ३७ ॥
 पोत, पाक, अर्भक, डिम्ब, पृथुक, शावक, शिशु ये छ (पु०) नाम छोटे
 बालकके हैं । स्त्रीपुस (पु०), मिथुन, द्वन्द्व (दो न०) ये तीन नाम स्त्री-
 पुसके जोड़ेके हैं । युग्म, युगुल, युग ये तीन (न०) नाम युग्म अर्थात्
 जोड़के हैं ॥ ३८ ॥ समूह, निवह, व्यूह, सन्दोह, विसर, व्रज, स्तोम,
 औघ, निकर, घ्रात, वार, सघात, सचय ॥ ३९ ॥ समुदाय, समुदय,
 समवाय, चय, गण, सहति, वृन्द, निकुरम्ब, कदम्बक ये चाईस नाम
 समूहके हैं । तहां सहतिशब्द (स्त्री०) समूहसे गणतक (पु०) शेष
 (न०) है ॥ ४० ॥ वृन्दमेद अर्थात् समुदायविशेष कहते हैं । वर्ग यह
 एक (पु०) नाम सजातीय प्राणी स्वयंवा अप्राणियोंके समूहका है ।

पशूनां समजोऽन्येषां समाजोऽथ सधर्मिणाम् ।
 स्यान्निकायः पुञ्जराशी वृत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥ ४२ ॥
 कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्रणे ।
 गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते ॥ ४३ ॥
 इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ६ ।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।
 स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
 स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः ।
 प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥ २ ॥

जैसे मनुष्यवर्ग, शैलवर्ग ये हैं । संघ, सार्थ ये दो (पु०) नाम सजातीय और विजातीय प्राणियोंके समूहके हैं । जैसे पशुसंघ है । वणिक्सार्थ है । कुल यह एक (न०) नाम सजातीय प्राणियोंके समूहका है । जैसे विप्रकुल है । यूथ यह एक (पु० न०) नाम सजातीय तिरछे जन्तुओंके समूहका है । जैसे मृगयूथ है ॥ ४१ ॥ समज यह एक (पु०) नाम पशुओंके समूहका है । पशुसे अन्योका समूह समाज (पु०) कहाता है । निकाय यह एक (पु०) नाम समानधर्मवालोंके समूहका है । पुञ्ज (पु०), राशि (पु० स्त्री०), उत्कर (पु०), कूट (पु० न०) ये चार नाम अन्न आदिकी राशिके हैं ॥ ४२ ॥ कापोत यह एक (न०) नाम कबूतरोंके समूहका है । शौक यह एक (न०) नाम तोतोंके समूहका है । मायूर यह एक (न०) नाम मोरोंके समूहका है । तैत्तिर यह एक (न०) नाम तीतरोंके समूहका है । आदिशब्दसे काक यह एक (न०) नाम काकोंके समूहका है । घरके विषे पीजरे आदिमें स्थापित किये पक्षी और मृग इनको छेक और गृह्यक कहते हैं । ये दोनों शब्द (पु०) हैं ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यवर्गः । मनुष्य, मानुप, मर्त्य, मनुज, मानव, नर, पुंस् (सकारान्त), पञ्चजन, पुरुष, पूरुप, नृ (ऋकारान्त) ये ग्यारह (पु०) नाम मनुष्योंके हैं । आगेके स्त्रीशब्दसे उद्वया शब्दतक सब (स्त्री०) हैं ॥ १ ॥ स्त्री, योषित् (तान्त), अबला, योषा, नारी, सीमन्तिनी, वधू, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला ये ग्यारह नाम स्त्रीके हैं ॥ २ ॥

विशेषास्त्वङ्गना भीरु' कामिनी वामलोचना ।
 प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी ॥ ३ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी ।
 वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥
 कृताभिषेका महिषी भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रिय ।
 पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
 भार्या जायाथ पुभूम्नि दारा. स्यात् कुटुम्बिनी ।
 पुग्ध्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥ ६ ॥
 कृतसापत्निवाध्यूढाधिविज्ञाय स्वयवरा ।
 पतिवरा च वर्याथ कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७ ॥

अगना यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर अगोंवाली स्त्रीका है। भीरु यह एक नाम डरपोक स्त्रीका है। कामिनी यह एक नाम कामदेवसे युत हुई स्त्रीका है। वामलोचना यह एक नाम सुन्दर नेत्रोंवाली स्त्रीका है। प्रमदा यह एक नाम बहुत कामके वेगवाली स्त्रीका है। मानिनी यह एक नाम नम्र तापुषेक कोपवाली स्त्रीका है। कान्ता यह एक नाम मनके हरनेवाली स्त्रीका है। ललना यह एक नाम चंचला स्त्रीका है। नितम्बिनी यह एक नाम सुन्दर कटिप्रान्तवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी यह एक नाम सुन्दर अगोंवाली स्त्रीका है। रमणी यह एक नाम रमण करनेवाली स्त्रीका है। रामा यह एक नाम सुन्दर स्त्रीका है। कोपना, भामिनी ये दो नाम कोपवाली स्त्रियोंके हैं। वरारोहा, मत्तकाशिनी, उत्तमा, वरवर्णिनी ये चार नाम बहुत गुणोंवाली स्त्रियोंके हैं ॥ ४ ॥ महिषी यह एक नाम अभिषेक हुई मनीका है। भोगिनी यह एक नाम राजाकी अथ रानियोंका है। पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी ॥ ५ ॥ भार्या, जाया, दार ये सात नाम भिन्नही हुई स्त्रियोंके हैं। तहां दारशब्द (पु०) बहुवचनान्त है। कुटुम्बिनी, पुग्ध्री ये दो नाम कुटुम्बवाली स्त्रियोंके हैं। सुचरित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये चार नाम पतिव्रता स्त्रियोंके हैं ॥ ६ ॥ कृतसापत्निवा, अध्यूढा, अधिविज्ञा ये तीन नाम अनेक भिन्नानाले पुण्यपत्नी पहली भिन्नवाही स्त्रियोंके हैं। स्वयवरा, पतिवरा, वर्या ये तीन नाम स्वयवर करनेवाली स्त्रियोंके हैं। कुलस्त्री, कुलपालिका ये दो नाम कुलवाली स्त्रियोंके हैं ॥ ७ ॥

कन्या कुमारी गौरी तु नम्रिकाऽनागतान्वा ।
 स्यान्मध्यमा दृष्टरजास्तरुणी युवतिः समे ॥ ८ ॥
 समाः स्नुपाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ।
 इच्छावती कामुका स्याद्वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
 कान्तार्थिनी तु या याति संकेन साऽभिसारिका ।
 पुंश्र्वली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलदेवरी ॥ १० ॥
 स्वैरिणी पांसुला च स्यादशिश्वी शिशुना विना ।
 अवीरा निष्पतिमुता विश्वस्ताविधवे समे ॥ ११ ॥
 आलिः सखी वयस्याऽथ पतिवती सभर्तृका ।
 वृद्धा पलिक्री प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ १२ ॥
 शूद्री शूद्रस्य भार्या स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
 आभीरी तु महाशूद्री जातिपुंयोगयोः समा ॥ १३ ॥

कन्या कुमारी ये दो नाम कुंवारी स्त्रीके हैं । गौरी, नम्रिका, अनागता-
 न्वा ये तीन नाम नहीं दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । मध्यमा दृष्टरजसू
 (सान्त) ये दो नाम प्रथम दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं । तरुणी, युवति
 ये दो नाम मध्यम अवस्थावाली (जवान) स्त्रीके हैं ॥ ८ ॥ स्नुपा, जनी,
 वधू ये तीन नाम पुत्र आदिके स्त्रीके हैं । चिरिटी, सुवासिनी ये दो नाम
 थोड़े उठे यौवनवाली विवाही स्त्रीके हैं । इच्छावती, कामुका ये दो नाम
 कामदेवकी इच्छावाली स्त्रीके हैं । वृषस्यन्ती, कामुकी ये दो नाम वृष और
 अश्वकी तरह भोगकी इच्छावाली स्त्रीके हैं ॥ ९ ॥ अभिसारिका यह एक
 नाम पतिकी इच्छासे संकेतस्थानको जानेवाली स्त्रीका है । पुंश्र्वली,
 धर्षिणी, बंधकी, असती, कुलटा, इत्वरि ॥ १० ॥ स्वैरिणी, पांसुला ये आठ
 नाम जारिणी स्त्रीके हैं । अशिश्वी यह एक नाम विना बालकवाली स्त्रीका
 है । अवीरा यह एक नाम पतिपुत्रसे रहित स्त्रीका है । विश्वस्ता, विधवा
 ये दो नाम विधवा अर्थात् रंडा स्त्रीके हैं ॥ ११ ॥ आलि, सखी, वयस्या
 ये तीन नाम सखीके हैं । पतिवती, सभर्तृका ये दो नाम सुहागिन स्त्रीके
 हैं । वृद्धा, पलिक्री ये दो नाम बूढ़ी स्त्रीके हैं । प्राज्ञी, प्रज्ञा ये दो नाम
 थोड़ी समझवाली स्त्रीके हैं । प्राज्ञा, धीमती ये दो नाम बुद्धिवाली स्त्रीके
 हैं ॥ १२ ॥ शूद्री यह एक नाम शूद्रकी स्त्रीका है । शूद्रा यह एक नाम

अर्याणी स्वयमर्या स्यात्क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।
 उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥ १४ ॥
 आचार्यानी तु पुंयोगे स्यादर्या क्षत्रियो तथा ।
 उपाध्यायान्युपाध्यायी षोडशौ पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसू ।
 जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १६ ॥
 स्त्री नग्निका कोटवी स्याद्वृत्तिसचारिके समे ।
 कात्यायन्यर्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा ॥ १७ ॥
 सैन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।
 असिक्री स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन पुञ्चारिणी ॥ १८ ॥
 वारस्त्री गणिका वैश्या रूपाजीवाऽथ सा जनैः ।
 सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्भली समे ॥ १९ ॥

शूद्रकी शूद्रजातिवाली स्त्रीका है । आभीरी, महाशूद्री ये दो नाम गोपालिका स्त्रीके है । जातिमें और पुयोगमें महाशूद्री ऐसाही रूप बनता है ॥ १३ ॥ अर्याणी, अर्या ये दो नाम वनेनीके है । क्षत्रिया, क्षत्रियाणी ये दो नाम क्षत्रिय जातिसे उत्पन्न हुई स्त्रीके है । उपाध्याया, उपाध्यायी ये दो नाम पढितानी स्त्रीके है । आचार्या यह नाम अपने आप भर्त्सका अर्थ कहनेवालीका है ॥ १४ ॥ आचार्यानी यह एक नाम आचार्यकी स्त्रीका है । अर्या यह एक नाम वैश्यकी स्त्रीका है । क्षत्रियो यह एक नाम क्षत्रियस्त्रीका है । उपाध्यायानी, उपाध्यायी ये दो नाम पढानेवालेकी स्त्रीके है । षोडश यह एक नाम पुरुषके लक्षणवाली स्त्रीका है ॥ १५ ॥ वीरपत्नी, वीरभार्या ये दो नाम वीरपुरुषकी स्त्रीके है । वीरमातृ (ऋकारान्त), वीरसू ये दो नाम वीरपुरुषकी माताके हैं । जातापत्या, प्रजाता, प्रसूता, प्रसूतिका ये चार नाम प्रसूता स्त्रीके है ॥ १६ ॥ कोटवी यह एक नाम नगी स्त्रीका है । दृती, सचारिका ये दो नाम दृतीके है । आधी बूढ़ी हंगे हए कपटवाली और पतिसे गहित हुई इन तीन विशेषणवाली स्त्री का त्यागनी कहाती है ॥ १७ ॥ सैन्ध्री यह एक काम दूसरे कामनाजमें रहने वाली स्वतंत्र और बालोंका गूथना आदि कर्म करनेवाली स्त्रीका है । जो बूढ़ी न हो आज्ञावर्तिनी हो और भीतरके स्थानमें रहनेवाली हो वह स्त्री असिक्री कहाती है ॥ १८ ॥ वारस्त्री, गणिका, वैश्या, रूपाजीवा ये चार

विप्रश्रिका त्वीक्षणिका दैवज्ञाऽथ रजस्वला ।
 स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यापि ॥ २० ॥
 ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।
 श्रद्धालुर्दोहदवती निष्कला विगतार्तवा ॥ २१ ॥
 आपन्नसत्त्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी ।
 गणिकादेस्तु गाणिक्यं गाभिणं यौवतं गणे ॥ २२ ॥
 पुनर्भूर्दीधिषूरूढा द्विस्तस्या दिधिषुः पतिः ।
 स तु द्विजोऽग्रेदिधिषूः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥
 कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽथ सुभगासुतः ।
 सौभागिनेयः स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥ २४ ॥

नाम वेश्याके हैं । वारमुख्या यह एक नाम पुरुषोसे सत्कार करी गई वेश्याका है । कुट्टनी, शम्भली ये दो नाम कुटनी स्त्रीके हैं ॥ १९ ॥ विप्रश्रिका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ये तीन नाम शुभ अशुभ निरूपण करनेवाली स्त्रीके हैं । रजस्वला, स्त्रीधर्मिणी, अवि, आत्रेयी, मलिनी, पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋतुमती, उदक्या ये आठ नाम रजस्वला स्त्रीके हैं । यहांतक (स्त्री०) हैं । रजस् (सांत), पुष्प, आर्तव ये तीन (न०) नाम स्त्रीके रजके हैं । श्रद्धालु, दोहदवती ये दो (स्त्री०) नाम गर्भके वशसे अन्न आदि विशेषको चाहनेवाली स्त्रीके हैं । निष्कला, विगतार्तवा ये दो (स्त्री०) नाम मासिक धर्मसे रहित हुई स्त्रीके हैं ॥ २१ ॥ आपन्नसत्त्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी गर्भिणी ये चार (स्त्री०) नाम गर्भवती स्त्रीके हैं । गाणिक्य यह एक (न०) नाम वेश्याओंके समूहका है । गाभिण यह एक (न०) नाम गर्भवतियोंके समूहका है । यौवत यह एक (न०) नाम युवतियोंके समूहका है ॥ २२ ॥ पुनर्भू, दिधिषू ये दो (स्त्री०) नाम दोवार विवाही स्त्रीके हैं । दिधिषु यह एक (पु०) नाम दो वार विवाही स्त्रीके पतिका है । अग्रेदिधिषू यह एक (पु०) नाम दोवार विवाही स्त्रीके पति द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो सकता है ॥ २३ ॥ कानीन यह एक (पु०) नाम कन्याके उत्पन्न हुए पुत्रका है । सुभगासुत, सौभागिनेय ये दो (पु०) नाम सुभगाके पुत्रके हैं । पारस्त्रैणेय यह एक (पु०) नाम दूसरेकी स्त्रीसे उत्पन्न हुए

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्त्रीयश्च पितृष्वसुः ।
 सुतो मातृष्वसुश्चैव वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
 अथ बान्धाकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः ।
 कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
 तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
 आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः स्त्रिया त्वमी ॥ २७ ॥
 आहुर्दुहितर मर्वेऽपत्यं तोकं तयोः मग्ने ।
 स्वजाते त्वौरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥ २८ ॥
 जनयित्री प्रसूमाता जननी भगिनी स्वसा ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
 भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
 प्रजावती भ्रातृजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥

पुत्रका हे ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेय, पैतृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम भुआके
 पुत्रके हे । मातृष्वसेय, मातृष्वस्त्रीय ये दो (पु०) नाम माताकी बहनके
 पुत्रके हे । वैमात्रेय यह एक (पु०) नाम पिताकी दूसरी स्त्रीके पुत्रका
 हे ॥ २५ ॥ बान्धाकिनेय, बंधुल, असतीसुत, कौलटेर, कौलटेय ये पांच (पु०)
 नाम कुलया स्त्रीके पुत्रके हे ॥ २६ ॥ भिक्षुके लिये कुलोंमें विचरनेवाली
 सती स्त्री हो उसका पुत्र कौलटिनेय, कौलटेय इन दो (पु०) नामोंसे
 प्रसिद्ध है । आत्मज, तनय, सूनु, सुत, पुत्र ये पांच (पु०) नाम पुत्रके
 हे । आत्मजा, तनया, सूनु, सुता, पुत्री ॥ २७ ॥ दुहिता ये छ (स्त्री०)
 नाम पुनीके हे । अपत्य, तोक ये दो (पु०) नाम सतानके हे । औरस,
 उरस्य ये दो (पु०) नाम अपनी जातिकी विवाही हुई स्त्रीमें अपने सजा
 शसे उपजे पुत्रके हैं । तात, जनक, पितृ (ऋकारान्त) ये तीन (पु०)
 नाम पिताके हे ॥ २८ ॥ जनयित्री, प्रसू, मातृ (ऋकारान्त), जननी
 ये चार (स्त्री०) नाम माताके हे । भगिनी, स्वसृ (ऋकारान्त) ये दो
 (स्त्री०) नाम बहनके हे । ननान्द (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०)
 नाम पतिकी बहन (ननन्द) का है । नप्त्री, पौत्री, सुतात्मजा ये तीन
 (स्त्री०) नाम पोतीके हे ॥ २९ ॥ यातृ (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री०)
 नाम आपसमें दिवराणी जिठानीका है । प्रजावती, भ्रातृजाया ये दो

पतिपत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः श्वशुरस्तु पिता तयोः ।
 पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यान्मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
 श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ ।
 स्वस्त्रीयो भागिनेयः स्याज्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ।
 मातुर्मातामहाद्यैवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ।
 सगोत्रवान्धवज्ञातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
 ज्ञातेर्यं बन्धुता तेषां क्रमाद्भावसमूहयोः ।
 धवः प्रियः पतिर्भर्ता जारस्तूपपतिः समौ ॥ ३५ ॥

(स्त्री०) नाम भाईकी स्त्री (भौजाई) के हैं । मातुलानी, मातुली ये दो (स्त्री०) नाम मामाकी स्त्री (मामी) के हैं ॥ ३० ॥ श्वश्रू यह एक (स्त्री०) नाम पति और स्त्रीकी माता (सास) का है । श्वशुर यह एक (पु०) नाम पति और स्त्रीके पिता (ससुर) का है । पितृव्य यह एक (पु०) नाम पिताके भाई (चचा) का है । मातुल यह एक (पु०) नाम माताके भाई (मामा) का है ॥ ३१ ॥ श्याल यह एक (पु०) नाम अपनी स्त्रीके भाई (साले) का है । देवृ (ऋकारान्त), देवर ये दो (पु०) नाम देवर अर्थात् पतिके छोटे भाईके हैं । स्वस्त्रीय, भागिनेय ये दो (पु०) नाम बहनके पुत्र अर्थात् भानजेके हैं । जामातृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम पुत्रीके पति (जमाई) का है ॥ ३२ ॥ पितामह, पितृपितृ (ऋकारान्त) ये दो (पु०) नाम दादाके हैं । प्रपितामह यह एक (पु०) नाम पितामहके पिता (परदादा) का है । मातामह यह एक (पु०) नाम माताके पिता (नाना) का है । प्रमातामह यह एक (पु०) नाम मातामहके पिता (परनाना) का है । सपिण्ड, सनाभि ये दो (पु०) नाम सात पुरुष अवाधि कुलके हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य, सोदर्य, सगर्भ्य, सहज ये चार (पु०) नाम एक मातासे उत्पन्न सगे भाईके हैं । सगोत्र, वांधव, ज्ञाति, बंधु, स्व, स्वजन ये छः (पु०) नाम अपने गोत्रवालेके हैं ॥ ३४ ॥ ज्ञातेय यह एक (न०) नाम ज्ञातियोंके समूहका है । बंधुता यह एक (स्त्री०) नाम बंधुओंके समूहका है । धव, प्रिय, पति,

अमृते जारज कुण्डो मृते भर्तारि गोलक ।

भ्रात्रीयो भ्रातृजो भ्रातृभगिन्यौ भ्रातरातुभौ ॥ ३६ ॥

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितरौ । -

श्वश्रुश्वशुरौ श्वशुरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥

दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ । -

गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्ब च कल्लोज्झियाम् ॥ ३८ ॥

सूतिमासो वैजननो गर्भो भ्रूण इमौ ममौ ।

तृतीयाप्रकृतिः पण्ड हीव पण्डो नपुसके ॥ ३९ ॥

शिशुत्वं शैशवं बाल्य तारुण्य यौवन समे ।

स्यात्स्थानिर तु वृद्धत्व वृद्धमंशेऽपि धार्यम ॥ ४० ॥

भर्तृ (ऋकारान्त) ये चार (पु०) नाम पतिके ह । जाग, उपपत्ति ये दा (पु०) नाम जारपतिके हे ॥ ३५ ॥ कुण्ड यह एक (पु०) नाम पतिके विना मग्नेपर जागसे उत्पन्न पुत्रका है । गोलक यह एक (पु०) नाम पतिके मरने बाद जारसे उपजे पुत्रका है । भ्रात्रीय, भ्रातृन ये दो (पु०) नाम भाईके पुत्र (भतीजे) के हैं । भ्रातरौ यह एक (पु०) नाम भाई बहनका है । यहाँ भगिनीशब्दका एकांश समास हा रहा है ॥ ३६ ॥ मातापितरौ, पितरौ, मातरपितरौ, प्रसूजनयितरौ ये चार (पु०) नाम माना पिता दोनोंके हैं । श्वश्रुश्वशुरौ, श्वशुरौ ये दो (पु०) नाम सासु और ससुर दोनोंके हैं । पुत्रौ यह एक (पु०) नाम पुत्रीपुत्रका है । यहाँ एकांश समास है ॥ ३७ ॥ दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चार (पु०) नाम स्त्रीपतिके हैं । गर्भाशय (पु०), जरायु (पु०), उत्पन्न (न०) ये तीन नाम जेकरे ह । कल्ल (पु० न०) यह एक नाम बोये और रक्तके समूहका है ॥ ३८ ॥ सूतिमास, वैजनन ये दो (पु०) नाम प्रसवमासके ह । गर्भ, भ्रूण ये दो (पु०) नाम गर्भके ह । तृतीयाप्रकृति (स्त्री०), पण्ड (पु०), हीव, पण्ड (पु०), नपुमक ये पाँच नाम हिजडेके हैं । तहाँ हीव और नपुमक ये दोनों शब्द (पु० न०) हैं ॥ ३९ ॥ शिशुत्वं, शैशवं, बाल्य ये तीन (न०) नाम बालक चक्रमाते हैं । तारुण्य, यौवन ये दो (न०) नाम युवा चक्रमाते हैं । स्थाणिर, वृद्धत्व, वृद्धक ये तीन (न०) नाम उदात्तमाते ह ॥ ४० ॥

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ विस्त्रसा जरा ।
 स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥
 बालरतु स्यान्माणवको वयस्यस्तरुणो युवा ।
 प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि ॥ ४२ ॥
 वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।
 जघन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥
 अमांसो दुर्बलश्छातो बलवान्मांसलोऽसलः ।
 तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः ॥ ४४ ॥
 अवटीटोऽवनाटश्चाऽवभ्रटो नतनासिके ।
 केशवः केशिकः केशी बलिनो बलिभः समौ ॥ ४५ ॥
 विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।
 खरणाः स्यात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥

पलित यह एक (न०) नाम बालआदिमें बुढापेसे सुपेदपनेका है । विस्त्रसा, जरा ये दो (स्त्री०) नाम बुढापेके हैं । उत्तानशया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनंधयी ये चार (स्त्री०) नाम चूँचीसे दूध पीनेवाले बच्चेके हैं ॥ ४१ ॥ आगे तिलकालक शब्दतक सब शब्द (पु०) हैं । बाल, माणवक ये दो नाम बालकके हैं । वयस्य, तरुण, युवन् (नांत) ये तीन नाम युवाके हैं । प्रवयम् (सान्त), स्थविर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरत् (तान्त) ये छः नाम बूढेके हैं ॥ ४२ ॥ वर्षीयस् (सान्त), दशमिन् (इन्नन्त), ज्यायस् (सांत) ये तीन नाम अत्यन्त बूढेके हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रज ये तीन नाम बड़े भाईके हैं । जघन्यज, कनिष्ठ, यवीयस् (सान्त); अवरज, अनुज ये पांच नाम छोटे भाईके हैं ॥ ४३ ॥ अमांस, दुर्बल, छांत ये तीन नाम दुर्बलके हैं । बलवत् (तान्त), मांसल, अंसल ये तीन नाम बलवानके हैं । तुन्दिल, तुन्दिभ, तुन्दिन् (इन्नन्त), बृहत्कुक्षि, पिचण्डिल ये पांच नाम बड़े पेटवालेके हैं ॥ ४४ ॥ अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये चार नाम चपटी नाकवालेके हैं । केशव, केशिक, केशिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम सुन्दर बालवालेके हैं । बलिन, बलिभ ये दो नाम बुढापेसे ढीली हुई चामवालेके हैं ॥ ४५ ॥ विकलांग, अपोगण्ड ये दो नाम आदिसेही कम अंगोंवालेके हैं । खर्व, ह्रस्व, वामन ये तीन नाम बौनेके हैं । खरणस् (सान्त), खरणस ये दो

खुरणा' स्यात्खुरणस' प्रञ्जु' प्रगतजानुकः ।
 ऊर्ध्वञ्जुर्ऊर्ध्वजानुः स्यात्सञ्जु' सहतजानुकः ॥ ४७ ॥
 स्यादेडे बधिरः कुञ्जे गडुल' कुकुरे कुणि ।
 पृश्निरल्पतनौ श्रोण' पङ्गौ मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥
 वालिर केकरे खोडे खञ्जस्त्रिषु जरावरा' ।
 जडुल' कालक' पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥
 अनामय स्यादारोग्य किञ्चित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।
 भेषजौषधभेषज्यान्वयगदो जायुरित्यापि ॥ ५० ॥
 स्त्री रुग्न्ना चोपतापरोगव्याधिगदामया' ।
 क्षय शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनस ॥ ५१ ॥

नाम तीक्ष्ण (सरल) नासि हावालेके हे । विग्र, गतनासिक ये दो नाम नक-
 टेने ह ॥ ४६ ॥ खुरणस् (सान्त), खुरणस ये दो नाम खुरकी तरह नाक-
 वालेके हे । प्रञ्जु, प्रगतजानुक ये दो नाम गोडोमे बहुत अतरवालेके हे ।
 ऊर्ध्वञ्जु, ऊर्ध्वजानु ये दो नाम ठहरनेसे गोडे ऊपरको रहे उसके ह । सञ्जु,
 सहतजानुक ये दो नाम मिले हुए गोडोवालेके हे ॥ ४७ ॥ एट, बधिर ये
 दो नाम बहरेके हे । कुञ्ज, गडुल ये दो नाम कूबडेके हे । कुकर, कुणि
 ये दो नाम रोग आदिसे दूषित हुए हाथोवालेके ह । पृश्नि, अल्पतनु ये
 दो नाम छोटे शरीरवालेके हे । श्रोण, पगु ये दो नाम पगूके ह । मुड,
 मुण्डित ये दो नाम शिग मुडे हुके हे ॥ ४८ ॥ वालिर, केकर ये दो नाम
 कायरा (एंचेताने) के हे । खोडे खज ये दो नाम लगडेके हैं । उत्तान
 शय शब्दसे आदि ले सजशब्दपर्यंत शब्द वाच्यलिगी अर्थात् तीनों लिगी
 हैं । जडुल, कालक, पिप्लु ये तीन नाम शरीरमें काले लहसनावलेके हे ।
 तिलक, तिलकालक ये दो नाम शरीरमें उपजे तिलके हे यहाँतक (पु०)
 हे ॥ ४९ ॥ अनामय, आरोग्य ये दो (न०) नाम आरोग्यके हैं । कि-
 चित्सा, रुक्प्रतिक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम रोगके इलाजके हैं । भेषज
 (न०), औषध (न०), भेषय (न०), अगद (पु०), जायु (पु०)
 ये पाँच नाम औषधके हैं ॥ ५० ॥ रुज् (जान्त), रुजा, उपताप, रोग,
 व्याधि, गद, आमय ये सात नाम रोगके हे । रुज् और रुजा (स्त्री०)
 शोष (पु०) हे । क्षय, शोष, यक्ष्मन् (नांत) ये तीन (पु०) नाम क्षयी

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।
 शोफस्तु श्वयथुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
 किलाससिध्मे कच्छ्रां तु पामपामे विचर्चिका ।
 कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥ ५३ ॥
 व्रणोऽस्त्रियामीर्मरुः क्लीबे नाडीव्रणः पुमान् ।
 कोठो मण्डलकं कुष्ठश्चित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
 आनाहस्तु निबन्धः स्याद् ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।
 प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥ ५५ ॥
 व्याधिभेदा विद्राधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः ।
 “ श्लैपदं पादवलमीकं केशप्रस्तिवन्द्रलुप्तकः । ”
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ ५६ ॥

रोगके हैं। प्रतिश्याय, पीनस ये दो (पु०) नाम पीनसरोगके हैं ॥ ५१ ॥
 क्षुत् (तान्त स्त्री०) क्षुत (न०), क्षव (पु०) ये तीन नाम छीकके हैं।
 कास, क्षवथु ये दो (पु०) नाम खांसीके हैं। शोफ, श्वयथु, शोथ ये तीन
 (पु०) नाम सूजनके हैं। पादस्फोट (पु०), विपादिका (स्त्री०)
 ये दो नाम पादस्फोट (विवाई) के हैं ॥ ५२ ॥ किलास, सिध्मन्
 (नान्त) ये दो (न०) नाम सींपरोगके हैं। कच्छ्र, पामन् (नान्त),
 पामा, विचर्चिका ये चार नाम खाजके हैं। तहां पामन्शब्द
 (पु०) शेष (स्त्री०) हैं। कण्डू, खर्जू, कण्डूया ये तीन (स्त्री०)
 नाम खुजलीके हैं। विस्फोट (पु०), पिटक (पु० स्त्री०) ये दो नाम फो-
 डेके हैं। (स्त्री०) में पिटका (फूसी) ऐसा होता है ॥ ५३ ॥ व्रण,
 ईर्म, अस्सु ये तीन नाम घावके हैं। तहां व्रणशब्द (पु० न०) शेष शब्द
 (न०) हैं। नाडीव्रण यह एक (पु०) नाम नाडीव्रण (नसूर) का है।
 कोठ (पु०), मण्डलक (न०) ये दो नाम गजकर्ण (कुष्ठ) के हैं।
 कुष्ठ, चित्र ये दो (न०) नाम श्वेतकुष्ठके हैं। दुर्नामक, अर्शस् (सान्त)
 ये दो (न०) नाम बवासारके हैं ॥ ५४ ॥ आनाह, निबन्ध ये दो (पु०)
 नाम मल मूत्र रुकने अर्थात् कब्जके हैं। ग्रहणीरुक् (जान्त), प्रवाहिका
 ये दो (स्त्री०) नाम सग्रहणीके हैं। प्रच्छर्दिका (स्त्री०), वमि (स्त्री०)
 वमथु (पु०) ये तीन नाम छर्दिके हैं ॥ ५५ ॥ विद्राधि यह एक (स्त्री०)

रोगहार्यगदंकारो भिषग्वैद्यो चिकित्सके ।

वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

ग्लानग्लास्तू आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।

आतुरोऽभ्यामितोऽभ्यान्त समौ पामनकच्छुरो ॥ ५८ ॥

ददृणो ददुरोगी स्यादर्शोरागयुतोऽर्शस* ।

वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥

स्यु. क्लिन्नाक्षे चुल्लचिल्लपिल्ला. क्लिन्नेऽक्षिण चाप्यमी ।

उन्मत्त उन्मादवति श्लेष्मल श्लेष्मणः कफी ॥ ६० ॥

न्युब्जो भुमे रुजा वृद्धनाभौ तुन्दिलतुन्दिभौ ।

किलासी सिध्मलोऽन्त्रोऽहृद् मूर्च्छाले मूर्त्तमूर्च्छितौ ॥ ६१ ॥

नाम विद्रधिरोगका है । ज्वर यह एक (पु०) नाम ज्वरका है । मेह यह एक (पु०) नाम प्रमहका है । भगदर यह एक (पु०) नाम भगदरका है । “ श्लोपद, पादवल्मीक ये दो (न०) नाम श्लोपदके है । केशत्र, इन्द्रलुप्तक ये दो (पु०) नाम इन्द्रलुप्तके है । ” अश्मरी (स्त्री०) यह एक नाम पथरीरोगका है । मूत्रकृच्छ्र यह एक (न०) नाम मूत्रकृच्छ्ररोगका है । शुक्राब्दसे पूर्व याने मूर्च्छितपर्यंत शब्द वाच्यलिंगो (त्रिलिंगी) है ॥५६॥ रोगहारित्र, अगदकार, भिषज् (जान्त), वैद्य, चिकित्सक ये पांच नाम वैद्यके है । वार्त्त, निरामय, कल्य ये तीन नाम रोगसे रहित हुए मनुष्यके हैं । उल्लाघ यह एक नाम रोगसे मुक्त हुए मनुष्यका है ॥५७॥ ग्लान, ग्लास्तु ये दो नाम रोग आदिके वशकरके आनन्दरहितका है । आमयावित्र (इन्नन्त), विकृत, व्याधित, अपटु, आतुर, अभ्यामित, अभ्यात ये सात नाम रोगीके है । पामन, कच्छुर ये दो नाम पामरोगीके है ॥ ५८ ॥ ददृण, ददुरोगित्र (इन्नन्त) ये दो नाम दादुरोगीके है । अर्शस यह एक नाम बवासीर रोगीका है । वातकित्र (इन्नन्त), वातरोगित्र (इन्नन्त) ये दो नाम वातरोगीके है । सातिसार, अतिसारकित्र ये दो नाम अतिसार रोगीके है ॥ ५९ ॥ क्लिन्नाक्ष, चुल्ल, चिल्ल, पिल्ल ये चार नाम चिपडी (चुदी) आँखोंवालेके है । उन्मत्त, उन्मादवत् (मत्त्वन्त) ये दो नाम उन्मादरोगीके है । श्लेष्मल, श्लेष्मण, कफित्र (इन्नन्त) ये तीन नाम कफरोगीके है ॥ ६० ॥ न्युब्ज यह एक नाम रोगकरके अधोमुख हुए

शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च ।

मायुः पित्तं कफः श्लेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

पिशितं तरसं मांसं पललं ऋव्यंमामिषम् ।

उत्तमं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृग्लोहितास्त्ररक्तक्षतजशोणितम् ।

बुक्काग्रमांसं हृदयं हन्मेदस्तु वपा वसा ॥ ६४ ॥

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या नाडी तु धमनिः शिरा ।

तिलकं क्लोम मस्तिष्कं गोर्दं किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु प्लीहा पुंस्यथ वस्रसा ।

स्नायुः स्त्रियां कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

कुबडेका है । वृद्धनाभि, तुंदिल, तुंदिभ ये तीन नाम वात आदिसे उंची हुई नाभिवालेके हैं । किलासिन (इन्नन्त), सिध्मल ये दो नाम स्त्रीपरी-
गीके हैं । अंध, अदृश (शान्त) ये दो नाम अधेके हैं । मृच्छाल, मूर्त्त,
मूर्च्छित ये तीन नाम मृच्छावालेके हैं ॥ ६१ ॥ शुक्र, तेजस् (सान्त),
रेतस् (सान्त) बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये छः (न०) नाम वीरजके हैं ।
मायु (पु०), पित्त (न०) ये दो नाम पित्तके हैं । कफ, श्लेष्मन्
(नान्त) ये दो (पु०) नाम कफके हैं । त्वच् (चान्त), असृग्धरा ये दो
(स्त्री०) नाम खालके हैं ॥ ६२ ॥ पिशित, तरस, मांस, पलल, ऋव्य, आमिष
ये छः (न०) नाम मांसके हैं । उत्तम (न०), शुष्कमांस (न०), वल्लूर
(त्रि०) ये तीन नाम सूखे मांसके हैं ॥ ६३ ॥ रुधिर, असृज्, लोहित, अस्त्र;
रक्त, क्षतज, शोणित ये सात (न०) नाम रक्तके हैं । बुक्का (त्रि०), अग्रमांस
(न०) ये दो नाम हृदयके भीतर कमलके आकारवाले मांसभेदके हैं । हृदय,
हृत् ये दो (न०) नाम हृदयके हैं । मेदम् (न०), वपा (स्त्री०), वसा
(स्त्री०) ये तीन नाम मांसके उपजे स्नेह (चर्बी) के हैं ॥ ६४ ॥ मन्या
यह एक (स्त्री०) नाम नाडके पिछले भागका है । नाडी, धमनी, शिरा
ये तीन (स्त्री०) नाम नाडीके हैं । तिलक, क्लोमन् (नान्त) ये दो (न०)
नाम मांसके पिडविशेषके हैं । मस्तिष्क, गोर्दं ये दो (न०) नाम मस्तकमें
उपजे घृतके आकारवाले चिकनाहटके हैं । किट्ट (न०), मल (पु० न०) ये
दो नाम मलके हैं ॥ ६५ ॥ अंत्र (न०), पुरीतत् (पु० न०) ये दो

सृणिका स्यन्दिनी लाला दूपिका नेत्रयोर्मलम् ।
 " नासामलं तु सिद्धानं पिञ्जूपं कर्णयोर्मलम् । "
 मूत्र प्रस्राव उच्चारवस्करौ शमल शकृत् ॥ ६७ ॥
 पुरीष गूथवर्चस्कमस्त्री विष्टाविशौ स्त्रियौ ।
 स्यात्कर्परं कपालोऽस्त्री कीकसं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥
 म्याच्छरीरास्थिन कङ्कालं पृष्ठास्थिन तु कशेरुका ।
 शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री पार्श्वस्थनि तु पर्शुका ॥ ६९ ॥
 अङ्ग प्रतीकोऽवयवोऽपघनोऽय क्लेश्वरम् ।
 गात्रं त्रयु सहनन शरीरं वर्ष्म विग्रह ॥ ७० ॥
 कायो देह स्त्रीवपुसोः स्त्रिया मूर्तिस्तनुस्तनू ।
 पादात्र प्रपद पाद पदत्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥

नाम आंतके है। गुल्म, प्लीहन् (नान्त) ये दो (पु०) नाम घाई को
 खमें स्थित मांसपिंड अर्थात् तिल्लीके हैं। उन्मसा, स्त्रायु ये दो (स्त्री०)
 नाम अग प्रत्यग सधि इन्होंके बन्धनरूप नसके है। कालखट, यकृत् ये
 दो (न०) नाम दाहिनी कोरके मांसके पिंडके हैं ॥ ६६ ॥ सृणिका,
 स्यन्दिनी, लाला ये तीन (स्त्री०) नाम रागके हैं। दूपिका यह एक
 (स्त्री०) नाम नेत्रोंकी गीडका है। " सिद्धान यह एक (न०) नाम नात्रके
 मलका है। पिञ्जूप यह एक (न०) नाम कानोंके मलका है। मूत्र (न०)
 प्रस्राव (पु०) ये दो नाम पिसाबके है। उच्चार (पु०), अवस्कर
 (पु०), शमल (न०), शकृत् (न०) ॥ ६७ ॥ पुरीष (न०) गय,
 वर्चस्क, विष्टा विश ये नय नाम विष्टाके ह। तहां गूथ और वर्चस्कशब्द
 (पु० न०), विष्टा और विशशब्द (स्त्री०) हैं। कर्पर (पु०), कपाल ये
 दो नाम सोपडीके ह। यहा कपालशब्द (पु० न०) है। कीकस, कुल्य,
 अस्थि ये तीन (न०) नाम हड्डीके है ॥ ६८ ॥ कपाल यह एक (पु०)
 नाम शरीरकी हड्डियोंके पित्रकेका है। कशेरुका यह एक (स्त्री०) नाम
 पीठकी हड्डीका है। करोटि यह एक (स्त्री०) नाम शिखी हड्डीका है।
 पर्शुका यह एक (स्त्री०) नाम पसलीकी हड्डीका है ॥ ६९ ॥ अग, प्रतीक,
 अवयव, अपघन ये चार नाम अंगोंके हैं। अगशब्द (न०) शेष (पु०) ह।
 क्लेश्वर, गात्र, त्रयु (सात), सहनन, शरीर, वर्ष्मन् (नान्त), विग्रह ॥ ७० ॥
 काय, देह, मृत, तनु, तनू ये चार नाम शरीरके हैं। तहां क्लेश्वरमे वर्ष्म

तद्ग्रन्थी घुटिके, गुल्फौ पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः ।
 जंघा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदस्त्रियाम् ॥ ७२ ॥
 सक्थि क्लीबे पुमानूरुस्तत्संधिः पुंसि वङ्गणः ।
 गुदं त्वपानं पायुर्ना वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥
 कटो ना श्रोणिफलकं कटिः श्रोणिः ककुब्जती ।
 पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः क्लीबे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
 कूपकौ तु नितंबस्यौ द्वयद्दीने कुकुन्दरे ।
 स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथावुपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
 भगं योनिर्द्वयोः शिश्रो मेद्रो मेहनशेफसी ।
 मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥

वृशब्दतक (न०) हैं। विग्रह और काय (पु०) हैं, देहशब्द (पु० न०)
 है, मूर्ति, तनु, तनू ये तीनों शब्द (स्त्री०) हैं। पादाग्र, प्रपद् ये दो (न०)
 नाम पैरके अग्रभागके हैं। पाद, पत्, अघ्रि, चरण ये चार नाम पैरके हैं।
 तहां चरणशब्द (पु० न०) शेष (पु०) हैं ॥ ७१ ॥ घुटिका (स्त्री०), गुल्फ
 (पु० न०) ये दो नाम टकनेके हैं। पार्ष्णि यह एक (पु०) नाम एडी-
 का है। जंघा, प्रसृता ये दो (स्त्री०) नाम जांघके हैं। जानु, ऊरुपर्वर
 (नांत), अष्ठीवत् (मस्वंत) ये तीन (पु० न०) नाम गोडाकी संधि
 (घुटने) के हैं ॥ ७२ ॥ सक्थि (न०), ऊरु (पु०) ये दो नाम गोडाके
 ऊपर भागके हैं। वङ्गण यह एक (पु०) नाम ऊरुकी संधिका है। गुद
 (न०), अपान (न०), पाय (पु०) ये तीन नाम गुदाके हैं। वस्ति
 यह एक (पु० स्त्री०) नाम नाभिके नीचे स्थानका है ॥ ७३ ॥ कट यह
 एक (पु०) नाम कटिके फलकका है। कटि, श्रोणि, ककुब्जती ये तीन
 (स्त्री०) नाम कटिके हैं। नितम्ब यह एक (पु०) नाम स्त्रीकी कटिके
 पश्चाद्भागका है। जघन यह एक (न०) नाम स्त्रीकी कटिके अग्रभागका
 है ॥ ७४ ॥ कुकुन्दर यह एक (न०) नाम पृष्ठवंशसे अधोभागमें विद्य-
 मान गत्तीका है। स्फिच् (स्त्री०), कटिप्रोथ (पु०) ये दो नाम कटिमें
 स्थित मांसके पिंडों अथात् कूलोंके हैं। उपस्थ यह एक (पु०) नाम
 योनि और लिगका है ॥ ७५ ॥ भग (न०), योनि (पु० स्त्री०) ये दो
 नाम स्त्रियोंकी योनिके हैं। शिश्र (पु०), मेद्र (पु० न०), मेहन (न०),

पिचण्डकुक्षी जठरोदर तुन्द्र स्तनौ कुचौ ।

चूचुकं तु कुचाग्रं स्यान्न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

उरो वत्स च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ।

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री सन्धी तस्यैव जन्तुणी ॥ ७८ ॥

बाहुमूले उभे कक्षी पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।

मध्यम चावलग्र च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥

भुजबाहु प्रवेष्टो दो. स्यात्कफोणिस्तु कूर्पर ।

अस्योपरि प्रगण्ड. स्यात्प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

मणिवन्धादाकनिष्ठं कारस्य करमो षड्भिः ।

पञ्चशाखं शय. पाणिस्तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

शेफस् (न०) ये चार नाम लिगके है । मुष्क, अटकोश, वृषण ये तीन (पु०) नाम अडकोशके हैं । त्रिष यह एक (न०) नाम पीठके वशके नीचे तीन हृदयोंकरके घटित स्थानका है ॥ ७६ ॥ पिचण्ड (पु०), कुक्षि (पु०) जठर (पु० न०), उदर (न०), तुद्र (न०) ये पांच नाम पेटके है । स्तन, कुच ये दो (पु०) नाम चूचियोंके हैं । चूचुक (पु० न०), कुचाग्र (न०) ये दो नाम चूचियोंके अग्रभागके हैं । क्रोड, भुजान्तर ॥ ७७ ॥ उरस् (सान्त), वत्स, वक्षस् (सान्त) ये पांच नाम छातीके है । तर्जा क्रोडशब्द (स्त्री० न०) शेष (न०) हैं । पृष्ठ यह एक (न०) नाम शरीरकी पीठका है । स्कन्ध (पु०), भुजशिरस् (सान्त न०), अस (पु० न०) ये तीन नाम कंधेके है । जन्तु यह एक (न०) नाम कर्धोंकी सधि अर्थात् जोतीका है ॥ ७८ ॥ बाहुमूल (न०), वक्ष (पु०) ये दो नाम कोरके है । पार्श्व यह एक (पु० न०) नाम दोनों कर्धोंके नीचेकी जगहका है । मध्यम, अवलग्र, मध्य ये तीन (पु० न०) नाम कंधरके है । भुज बाहु शब्द (स्त्री० पु०) है ॥ ७९ ॥ भुज (भुजा), बाहु, प्रवेष्ट, दोस् (सान्त) ये चार नाम भुजाके है । भुज बाहु शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) है । कफोणि, कूर्पर ये दो (पु० स्त्री०) नाम कुहनीके है । प्रगण्ड यह एक (पु०) नाम कुहनीके उपरले स्थानका है । प्रकोष्ठ यह एक (पु०) नाम कुहनीके नीचे भागका है ॥ ८० ॥ मणिवध यह एक (पु०) नाम हाथ नीर प्रकोष्ठकी सधिका

अंगुलयः करशाखाः स्युः पुस्यंगुष्ठः प्रदेशिनी ।

मध्यमानामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः क्रमात् ॥ ८२ ॥

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।

प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

अंगुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशांगुलः ।

पाणौ चपेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृतांगुलौ ॥ ८४ ॥

द्वौ संहतौ संहतलप्रतलौ त्रामदक्षिणौ ।

पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिस्तौ युतावज्जलिः पुमान् ॥ ८५ ॥

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुष्ट्या तु बद्धया ।

स रत्निः स्यादरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन मुष्टिना ॥ ८६ ॥

हे । करम यह एक (पु०) नाम मणिबंधसे लेके कनिष्ठिका अंगुलीपर्यंत हाथके बाहरले भागका है । पञ्चशाख, शय, पाणि ये तीन (पु०) नाम हाथके हैं । तर्जनी, प्रदेशिनी ये दो (स्त्री०) नाम अंगूठेके समीपकी अंगुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंगुली, करशाखा ये दो (स्त्री०) नाम अंगुली-मात्रके हैं । अंगुष्ठ यह एक (पु०) नाम अंगूठेका है । प्रदेशिनी (तर्जनी) यह एक (स्त्री०) नाम अंगूठेके पासकी अंगुलीका है । मध्यमा यह एक (स्त्री०) नाम बीचकी अंगुलीका है । अनामिका यह एक (स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीके समीपवाली अंगुलीका है । कनिष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम छोटी अंगुलीका है । ये अंगुली क्रमसे जाननी चाहिये ॥ ८२ ॥ पुनर्भव (पु०), कररुह (पु०), नख (पु० न०), नखर (पु० न०) ये चार नखके हैं । प्रादेश यह एक (पु०) नाम तर्जनी अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारका है । ताल यह एक (पु०) नाम मध्यमा अंगुलीसे अंगूठेपर्यंतका है । गोकर्ण यह एक (पु०) नाम अनामिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारका है ॥ ८३ ॥ वितस्ति (पु० स्त्री०), द्वादशांगुल (पु०) ये दो नाम कनिष्ठिका अंगुलीसे अंगूठेपर्यंत विस्तारके हैं । चपेट, प्रतल, हस्त ये तीन (पु०) नाम विस्तृत हुई अंगुलियोंवाले हाथके हैं ॥ ८४ ॥ संहतल, प्रतल ये दो (पु०) नाम दोनों हाथोंके मिलनेका है । प्रसृति यह एक (पु०) नाम पस्तेका है । दो प्रसृतियोंकी अंजलि होती है । तहां अंजलिशब्द (पु०) है ॥ ८५ ॥ हस्त यह एक (पु०) नाम अंगुलीके अग्रभागसे कुहनीपर्यंत

व्यामो वाहोः सकरयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।
 ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषः त्रिषु ॥ ८७ ॥
 कण्ठो गलोऽथ ग्रीवाया शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा साऽवटुर्घाटा कृकाटिका ॥ ८८ ॥
 वक्रास्ये वदन तुण्डमानन लपन मुखम् ।
 क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
 ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।
 अधस्ताच्चिबुक गण्डौ कपोलौ तत्परा हनुः ॥ ९० ॥
 रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् ।
 रसज्ञा रसना जिह्वा प्रान्तावोष्ठस्य सृक्किणी ॥ ९१ ॥

लम्बे हाथका है । रलि यह एक (पु० स्त्री०) नाम बधी हुई मुट्टीसाहित
 हाथका है । अरलि यह एक (पु० स्त्री०) नाम छोटी अगुलीसे वर्जित
 हुए मुट्टीसाहित हाथका है ॥ ८६ ॥ व्याम यह एक (पु०) नाम हाथों
 साहित बाहुओंके मध्यका है । पौरुष यह एक नाम ऊपरको लम्बे हाथ
 किये मनुष्यके प्रमाणका है और त्रिलिगी है ॥ ८७ ॥ कठ, गल ये दो
 (पु०) नाम कठके हैं । कठशब्द (त्रि०) भी है । ग्रीवा, शिरोधि,
 कधरा ये तीन (स्त्री०) नाम नाटके हैं । कम्बुग्रीवा यह एक (स्त्री०)
 नाम तीन रेखाओंसे युत हुई नाडका है । अवटु (पु० स्त्री०), घाञ्ज
 (स्त्री०), कृकाटिका (स्त्री०) ये तीन नाम नाड और शिरकी सधिके
 पश्चाद्भागके हैं ॥ ८८ ॥ वक्र, आस्य, वदन, तुण्ड, आनन, लपन, मुख ये
 सात (न०) नाम मुखके हैं । घ्राण, गन्धवहा, घोणा, नासा, नासिका
 ये पांच नाम नासिकाके हैं । घ्राणशब्द (न०) शेष (स्त्री०) है ॥ ८९ ॥
 ओष्ठ (पु०), अधर (पु०), रदनच्छद (पु०), दशनवासस् (सान्त
 न०) ये चार नाम ओठके हैं । चिबुक यह एक (न०) नाम ओठके
 नीचे भागका है । गड, कपोल ये दो (पु०) नाम गालके हैं । हनु यह
 एक (पु० स्त्री०) नाम ठोड़ीका है ॥ ९० ॥ रदन, दशन, दन्त, रद ये
 चार (पु०) नाम दाँतोंके हैं । दशनशब्द (न०) भी है । तालु, काकुद
 ये दो (न०) नाम तालुबाने हैं । रसज्ञा, रसना, जिह्वा ये तीन (स्त्री०)
 नाम जीभके हैं । सृक्किणी यह एक (स्त्री०) नाम दोन, ओठोंके प्रान्त

ललाटमलिकं गोधिरुर्ध्वं दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ ।

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षणः कनीनिका ॥ ९२ ॥

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी ।

दृग्दृष्टी चास्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥ ९३ ॥

अपाङ्गी नेत्रयोस्तौ कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्ध्ना ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यमलकाशूर्णकुन्तलाः ।

ते ललाटे भ्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशोऽथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।

शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सदा जटा ॥ ९७ ॥

भागका है ॥ ९१ ॥ ललाट (न०), आलिक (न०), गोधि (पु०) ये तीन नाम माथेके हैं । भ्रु यह एक (स्त्री०) नाम भ्रुकुटिका है । कूर्च यह एक (पु० न०) नाम भ्रुकुटियोंके मध्यभागका है । तारका यह एक (स्त्री०) नाम आँखके तारेका है ॥ ९२ ॥ लोचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षुस्, अक्षि, दृश् (शान्त), दृष्टि ये आठ नाम नेत्रके हैं । तहाँ दृश्, दृष्टिशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं । अस्रु, नेत्राम्बु, रोदन, अस्र, अश्रु ये पाँच (न०) नाम आँसुके हैं ॥ ९३ ॥ अपाङ्ग यह एक (पु०) नाम नेत्रोंके अंतका है । कटाक्ष यह एक (पु०) नाम अपाङ्गसे देखने और चेष्टा करनेका है । कर्ण (पु०), शब्दग्रह (पु०) श्रोत्र (न०), श्रुति (स्त्री०), श्रवण (पु० न०), श्रवस् (सान्त न०), ये छः नाम कानके हैं ॥ ९४ ॥ उत्तमाङ्ग, शिरस् (सान्त), शीर्ष, मूर्ध्नि, मस्तक ये पाँच नाम शिरके हैं । तहाँ मूर्ध्निशब्द (पु०) है मस्तकशब्द (पु० न०) है शेष (न०) हैं । चिकुर, कुन्तल, बाल, कच, केश, शिरोरुह ये छः (पु०) नाम बालोंके हैं ॥ ९५ ॥ कैशिक, कैश्य ये दो (न०) नाम बालोंके समूहके हैं । अलक, शूर्णकुन्तल ये दो (पु०) नाम टेढे बालोंके हैं । भ्रमरक यह एक (पु०) नाम ललाटपर झुके बालोंका है । काकपक्ष, शिखण्डक ये दो (पु०) नाम जुलफोंके हैं ॥ ९६ ॥ कवरी (स्त्री०), केशवेश (पु०)

वेणि० प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विशदे कचे ।
 पाश० पक्षश्च दस्तश्च कलापार्या कचात्परे ॥ ९८ ॥
 तनूरुह रोम लोम तद्दृष्टौ श्मश्रु पुमुखे ।
 आकल्पवेपौ नेपथ्य प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥
 दशैते त्रिष्वलकर्ताऽलकरिष्णुश्च मण्डित० ।
 प्रसाधितोऽलकृतश्च भूपितश्च परिष्कृत० ॥ १०० ॥
 विभ्राद् भ्राजिष्णुरोचिष्णू भूपणं स्यादलंक्रिया ।
 अलंकारस्वाभरणं परिष्कारो विभूपणम् ॥ १०१ ॥
 मण्डन चाथ मुकुट किरीट पुनपुसकम् ।
 चूडामणि० शिरोरत्न तरलो हारमध्यग० ॥ १०२ ॥

ये दो नाम बाल बांधनेकी रचनाके हे । धम्मिल्ल यह एक (पु०) नाम मोती आदिसे गुथे हुए बालोंके समूहका है । शिखा, चूटा, केशपाशी ये तीन (स्त्री०) नाम चौटीके हे । सदा, जटा ये दो (स्त्री०) नाम जटाके हे ॥ ९७ ॥ वेणि, प्रवेणी ये दो (स्त्री०) नाम बालोंकी मीठीके हे । शीर्षण्य, शिरस्य ये दो (पु०) नाम सुन्दर बालोंके हैं । कचपाश, केशपाश, केशपक्ष, कुन्तलहस्त ये चार (पु०) नाम केशसमूहके वाचक है ॥ ९८ ॥ तनूरुह, रोमन् (नान्त), लोमन् (नान्त) ये तीन (न०) नाम रोमके हैं । तनूरुहशब्द (पु०) भी है । श्मश्रु (नात) यह एक (न०) नाम पुस्पकी ढाढीका है । आकल्प (पु०), वेप (पु०), नेपथ्य (न०), प्रतिकर्मन् (न०), प्रसाधन (न०) ये पांच नाम अलकृतकी शोभाके हैं ॥ ९९ ॥ आगेके अलकर्त्ता आदि वक्ष्यमाण दश शब्द वाच्यलिंगी हैं । अलकर्त्त, अलकरिष्णु ये दो नाम अलकर्त्ताके हे । मण्डित, प्रसाधित, अलकृत, भूपित, परिष्कृत ये पांच नाम अलकृतके हैं ॥ १०० ॥ विभ्राज्, भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये तीन नाम अस्यत शोभावालेके हे । भूपण (न०), अलक्रिया (स्त्री०) ये दो नाम भूषणक्रियाके हे । अलंकार (पु०) आभरण (न०), परिष्कार (पु०), विभूपण ॥ १०१ ॥ मण्डन (दो न०) ये पांच नाम गहनेके हैं । मुकुट (न०), किरीट (पु० न०) ये दो नाम मुकुटके हैं । चूडामणि (पु०), शिरोरत्न (न०) ये दो नाम शिरकी मणिके हैं । तरल यह एक (पु०) नाम हारके मध्यगत नायनमणिका हे

वालपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या ललाटिका ।

कर्णिका तालपत्रं स्यात्कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

त्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥

हारो मुक्तावली देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

हारभेदा यष्टिभेदाद्गुच्छगुच्छार्द्धगोस्तनाः ॥ १०५ ॥

अर्द्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।

सैव नत्रक्षमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥

आवापकः पारिहार्यः कटकौ वलयोऽस्त्रियाम् ।

केयूरमङ्गदं तुल्ये अंगुलीयकमूर्मिका ॥ १०७ ॥

॥१०२॥ वालपाश्या, पारितथ्या ये दो (स्त्री०) नाम सीमंतभूषणके हैं । पत्रपाश्या, ललाटिका ये दो (स्त्री०) नाम मथके भूषण अर्थात् वनेके हैं । कर्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानके भूषणका है । तालपत्र यह एक (न०) नाम कानोंमें पहरनेके सुवर्णके पत्तोंका है । कुंडल, कर्णवेष्टन ये दो (न०) नाम कानोंके कुंडलके हैं ॥१०३॥ त्रैवेयक (न०), कंठभूषा (स्त्री०) ये दो नाम कंठके भूषणके हैं । लंबन (न०), ललन्तिका (स्त्री०) ये दो नाम कंठके हैं । प्रालम्बिका यह एक (स्त्री०) नाम सोनेके कंठीका है । उरःसूत्रिका यह एक (स्त्री०) नाम मोतियोंकी कंठीका है ॥१०४॥ हार (पु०), मुक्तावली (स्त्री०) ये दो नाम मोतियोंके हारका हैं । देवच्छन्द यह एक (पु०) नाम सौ लडोंवाले मोतियोंके हारका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम लताके भेदसे बत्तीस लडोंके हारका है । गुच्छार्द्ध यह एक (पु०) नाम चौबीस लडोंवाले हारका है । गोस्तन यह एक (पु०) नाम चौसठ लडोंवाले हारका है ॥ १०५ ॥ अर्द्धहार यह एक (पु०) नाम बारह लडोंवाले अर्द्धहारका है । माणवक यह एक (पु०) नाम तीस लडोंवाले हारका है । एकावली यह एक (स्त्री०) नाम एक लडवाले हारका है । नक्षत्रमाला यह एक (स्त्री०) नाम सत्ताईस मोतियोंसे बनाये गये उसी एकावली हारके हैं ॥ १०६ ॥ आवापक (पु०), पारिहार्य (पु०), कटक (पु० न०), वलय (पु० न०) ये चार नाम पहुँचीके हैं । केयूर, अंगद ये दो (पु० न०) नाम बानूवन्दके हैं । अंगुलीयक (पु० न०), ऊर्मिका (स्त्री०) ये दो नाम

साक्षरागुलिमुद्रा स्यात्ककणं करभूषणम् ।

स्त्रीकट्या मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥

स्त्रीवे सारसन चाथ पुस्कट्या शृङ्खल त्रिषु ।

पादागुद तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽश्रियाम् ॥ १०९ ॥

हसकं, पादकटकं, किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।

त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्दश त्रिषु ॥ ११० ॥

वाल्कं क्षौमादि फाल तु कार्पासं वादरं च तत् ।

कौशेयं कृमिकोशोत्थं राङ्गवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥

अनाहत निष्प्रवाणि तन्त्रक च नवाम्बरम् ।

तत्स्यादुद्रमनीय यद्भौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥

पत्रोर्णं धौतकौशेयं बहुमूल्य महाधनम् ।

क्षौम दुकूल स्याद्दे तु निवीत प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥

अगूठी और छल्लेके है ॥ १०७ ॥ अगुलिमुद्रा यह एक (स्त्री) नाम राम आदिके नामसे जड़ी हुई अगुठीका है । ककण (पु० न०), कर भूषण (न०) ये दो नाम हाथोंके कड्डोंके है । मेखला, काञ्ची, सप्तकी, रशना ॥ १०८ ॥ सारसन ये पाँच नाम स्त्रियोंकी तागडीके है । सारसन शब्द (न०) शेष (स्त्री०) है । शृङ्खल यह एक नाम पुरखकी तागटीका है । तहाँ शृङ्खलशब्द त्रिलिगी है । पादागुद (न०), तुलाकोटि (स्त्री०), मञ्जीर (पु० न०), नूपुर (पु० न०) ॥ १०९ ॥ हसक (पु०), पादकटक (पु०) ये छ' नाम पेलरा झाङ्गणा वा पाजेबके है । किङ्किणी, क्षुद्रघण्टिका ये दो (स्त्री०) नाम घुघरूजाली तागडीके है । त्वक्, फल, कृमि, रोम ये चारों वस्त्रोंकी योनि हैं । कालसे निष्प्रवाणिपर्यंत दश शब्द त्रिलिगी हैं ॥ ११० ॥ वाल्क अर्थात् घल्कलसे बना यह एक नाम कड्डलके वस्त्रका है । क्षौम अर्थात् अतसी आदिसे बना वस्त्र जानना । फाल, कार्पास, वादर ये तीन नाम रूई आदिके रस्ते है । कौशेय यह एक नाम कृमियोंके कोशमे उपजे वस्त्रका है । राङ्गव यह एक नाम मृग आदिके रोमसे बने हुए वस्त्रका है ॥ १११ ॥ अनाहत, निष्प्रवाणि, तन्त्रक, नवाम्बर ये चार नाम नये वस्त्रके हैं । उद्रमनीय यह एक (न०) नाम धोये हुए दो वस्त्रोंके जोड़ेका है ॥ ११२ ॥ पत्रोर्ण यह एक (न०) नाम धोये हुए कौशेय

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्त्रयोर्द्वयोः ।

दैर्घ्यमायाम आरोहः परिणाहो विशालता ॥ ११४ ॥

पटञ्चरं जीर्णवस्त्रं समौ नक्तककर्पटौ ।

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ॥ ११५ ॥

सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्वराशिः स्थूलशाटकः ।

निचोलः प्रच्छदपटः समौ रल्लककम्बलौ ॥ ११६ ॥

अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ।

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥

संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

वस्त्रका हे । महाधन यह एक (न०) नाम बहुत मोलके वस्त्र अर्थात् दुशा-
लेका है । क्षौम, दुकूल ये दो (न०) नाम पाटके वस्त्रके हैं । निवीत,
प्रावृत ये दो नाम प्रावृत्त (ढके) हुए वस्त्रके हैं और त्रिलिङ्गी हैं ॥११३॥
दशा यह एक नाम वस्त्रके दोनों किनारोंका है । तहाँ दशाशब्द बहुवचनांत
(स्त्री०) है । दैर्घ्य (न०), आयाम (पु०), आरोह (पु०) ये तीन
नाम वस्त्रकी लम्बाईके हैं । परिणाह (पु०), विशालता (स्त्री०) ये दो
नाम वस्त्रके विस्तारके हैं ॥ ११४ ॥ पटञ्चर, जीर्ण वस्त्र ये दो (न०) नाम
पुराने वस्त्रके हैं । नक्तक, कर्पट ये दो (पु०) नाम पुराने वस्त्रके टुकड़ेके हैं ।
वस्त्र, आच्छादन, वासस् (सान्त), चैल, वसन, अशुक ये छः (न०) नाम
वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक (पु०), पट (पु० न०) ये दो नाम शो-
भन वस्त्रके हैं । वराशि (पु०), स्थूलशाटक (त्रि०) ये दो नाम मोटे
वस्त्रके हैं । निचोल (त्रि०), प्रच्छदपट (पु०) ये दो नाम वीणा आदिके
ढकनेके वस्त्रके हैं । रल्लक, कंबल ये दो (पु०) नाम कंबलके हैं ॥११६॥
अंतरीय, उपसंव्यान, परिधान, अधोऽशुक ये चार (न०) नाम शरीरके
नीचे भागके वस्त्र पाजामा आदिके हैं । प्रावार (पु०), उत्तरासंग (पु०),
बृहतिका (स्त्री०) ॥ ११७ ॥ संव्यान (न०), उत्तरीय (न०) ये
पाँच नाम दुपट्टेके हैं । चोल (पु०), कूर्पासक (पु० न०) ये दो नाम
आंगीके हैं । नीशार यह एक (पु०) नाम शीत और वायुको निवारण

अर्धोरुक वरस्त्रीणा स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।
 स्यात्त्रिष्व्वाप्रपदीन तत्प्राप्नोत्याप्रपद् हि यत् ॥ ११९ ॥
 अस्त्री वितानशुद्धोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।
 प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्कारिणी च सा ॥ १२० ॥
 परिकर्मागसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।
 उद्धर्तनोत्सादने द्वे समे आप्लाव आप्लवः ॥ १२१ ॥
 स्नान चर्चा तु चार्चिक्य स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ।
 अनुबोध. पत्रलेखा पत्राङ्गुलिभिरे समे ॥ १२२ ॥
 तमालपत्रतिलकचित्रकाणि विशेषकम् ।
 द्वितीयं च तुरीय च न द्वियामय कुक्कुमम् ॥ १२३ ॥
 काश्मीरजन्माग्निशिख वर वाह्लीकपीतने ।
 रक्तसकोचपिशुन धीर लोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

करनेपाले ओढनेके वस्त्रका है ॥ ११८ ॥ चडातरु यह एक (पु० न०)
 नाम स्त्रियोंके लहंगेका है । आप्रपदीन यह एक (त्रि०) नाम जो वस्त्र
 पैरके अग्रभागपर्यंत हो उसका है ॥ ११९ ॥ वितान (पु० न०), उद्धोच
 (पु०) ये दो नाम चदोवा वस्त्रके हैं । दूष्य (न०), पट्फुटो (स्त्री०)
 ये दो नाम डेरा तम्बूके हैं । प्रतिसीरा, जवनिका, तिरस्कारिणी ये तीन
 (स्त्री०) नाम पडदा (कनात) के हैं ॥ १२० ॥ परिकर्मर (नान्त न०),
 अगसस्कार (पु०) ये दो नाम केशर आदिकरके शरीरमें सस्कारमात्रके
 हैं । मार्ष्टि, मार्जना, मृजा ये तीन (स्त्री०) नाम प्रोक्षण आदिकरके
 देहको निर्मल करने अर्थात् पौछनेके हैं । उद्धर्तन, उत्सादन ये दो (न०)
 नाम उबटने मलनेके हैं । आप्लाव (पु०), आप्लव (पु०) ॥ १२१ ॥
 स्नान (न०) ये तीन नाम स्नानके हैं । चर्चा (स्त्री०), चार्चिक्य (न०),
 स्थासक (पु०) ये तीन नाम चन्दन आदिमें देहपर लेप करनेके हैं ।
 प्रबोधन (न०), अनुबोध (पु०) ये दो नाम गत हुए गधके हैं । पत्र
 लेखा, पत्राङ्गुलि ये दो (स्त्री०) नाम कस्तूरी केसर आदिकरके कपोल
 आदिपर रची हुई पत्रके समान रेखाके हैं ॥ १२२ ॥ तमालपत्र (न०),
 तिलक (पु० न०), चित्रक (न०), विशेषक (पु० न०) ये चार नाम
 माथेमें कस्तूरी आदिसे किये हुए तिलकके हैं । कुक्कुम ॥ १२३ ॥ काश्मी

लाक्षा राक्षा जतु क्लीवे यावोऽलक्तो हुमामयः ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम् ॥ १२५ ॥
 कालीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम् ।
 वंशकागुरुराजार्हलोहं कृमिजजोङ्गकम् ॥ १२६ ॥
 कालागुर्वगुरु स्यात्तु मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत् ।
 यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसावपि ॥ १२७ ॥
 बहुरूपोऽप्यथ वृकधूपकृत्रिमधूपकौ ।
 तुरुष्कः पिण्डकः सिहो यावनोऽप्यथ पायसः ॥ १२८ ॥
 श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीविष्टसरलद्रवौ ।
 भृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम् ॥ १२९ ॥
 कङ्गोलकं कोशफलमथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।
 घनसारश्चद्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका ॥ १३० ॥

रजन्मन् (नान्त), अग्निशिख, वर, बाह्यीक, पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन,
 वीर, लोहितचन्दन ये ग्यारह (न०) नाम केशरके हैं ॥ १२४ ॥ लाक्षा
 (स्त्री०), राक्षा (स्त्री०), जतु (न०), याव (पु०), अलक्त (पु०),
 हुमामय (पु०) ये छः नाम लाखके हैं । लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ ये
 तीन (न०) नाम लोंगके हैं । जायक ॥ १२५ ॥ कालीयक, कालानु-
 सार्य ये तीन (न०) नाम पीले चन्दनके हैं । समार्थक, वंशिक, अगरु,
 राजार्ह, लोह, कृमिज, जोंगक ये सात (न०) नाम अगरके हैं । अगरु-
 शब्द (पु० न०) है ॥ १२६ ॥ कालागुरु, अगरु ये दो (न०) नाम
 काले अगरके हैं । मंगल्या यह एक (स्त्री०) नाम मल्लिके समान गंधवाले
 अगरका है । यक्षधूप, सर्जरस, राल, सर्वरस ॥ १२७ ॥ बहुरूप ये पांच
 (पु०) नाम रालके हैं । वृकधूप, कृत्रिमधूपक ये दो (पु०) नाम अनेक
 पदार्थोंसे बनाये गये धूपके हैं । तुरुष्क, पिण्डक, सिह, यावन ये चार
 (पु०) नाम लोवानके हैं । पायस ॥ १२८ ॥ श्रीवास, वृकधूप, श्रीविष्ट,
 सरलद्रव ये पांच (पु०) नाम देवदारुके द्रवके हैं । भृगनाभि (पु०),
 भृगमद (पु०), कस्तूरी (स्त्री०) ये तीन नाम कस्तूरीके हैं । कोलक
 ॥ १२९ ॥ कंकोलक, कोशफल ये तीन (न०) नाम कंकोलके हैं । कर्पूर
 (पु० न०), घनसार (पु०), चन्द्रसंज्ञ (पु०), सिताभ्र (पु०), हिम-

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।
 तैलपर्णिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥
 तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जन रक्तचन्दनम् ।
 कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले ममे ॥ १३२ ॥
 कर्पूरागरुकस्तूरीकङ्कोलैर्यक्षकर्दमः ।
 गात्रानुलेपनी वर्तिवर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥
 चूर्णानि वासयोगा स्युर्भाषित वासित त्रिषु ।
 सस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यं स्यात्तदधिवासनम् ॥ १३४ ॥
 माल्य मालास्रजौ मूर्ध्नि केशमध्ये तु गर्भकः ।
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुगे न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

चालुका (स्त्री०) ये पाच नाम कपूरके हे ॥ १३० ॥ गधसार (पु०), मलयज (पु०), भद्रश्री (स्त्री०), चन्दन (पु० न०) ये चार नाम मलयागिर चन्दनके हे । तैलपर्णिक यह एक (न०) नाम सुषेद शीतल चन्दनका हे । गोशीर्ष यह एक (न०) नाम सुषेद कमलके समान गन्ध वाले चन्दनका हे । हरिचन्दन यह एक (पु० न०) नाम कपिल वर्णवाले चन्दनका हे ॥ १३१ ॥ तिलपर्णी, पत्राङ्ग, रञ्जन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये पाँच नाम लाल चन्दनके हे । तिलपर्णीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हे । जातीकोश, जातीफल ये दो (न०) नाम जायफलके हे ॥ १३२ ॥ यक्ष कर्दम यह एक (पु०) नाम कर्पूर, अगर, कस्तूरी, ककोल इन्हींको पीसकर किये हुए लेपका हे । गात्रानुलेपनी (स्त्री०), वर्ति (स्त्री०), वर्णक (पु० न०), विलेपन (न०) ये चार नाम सुगन्धि द्रव्योंके उवटनेके हे ॥ १३३ ॥ चूर्ण (न०), वासयोग (पु०) ये दो नाम चूर्णमात्रके हे । भाषित, वासित ये दो (त्रि०) नाम गन्धद्रव्यकरके वासित करी वस्तुके हे । अधिवासन यह एक (न०) नाम गन्ध और माल्य आदिकरके जो सस्कार किया जावे उसका हे ॥ १३४ ॥ माल्य (न०), माला (स्त्री०), स्रज (स्त्री०) ये तीन नाम फूलोंकी मालाके ह । गर्भक यह एक (पु०) नाम बालोंपर धारण करी मालाका हे । प्रभ्रष्टक यह एक (न०) नाम चौथी पर्यंत लम्बी मालाका हे । ललामक यह एक (न०) नाम मस्तरूपर्यंत

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात् कण्ठाद्वैकक्षिकं तु तत् ।
 यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीडशेखरौ ॥ १३६ ॥
 रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता ।
 उपधानं तूपवर्हः शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७ ॥
 शयनं मञ्चपर्यङ्कपल्यङ्गा खट्वा समाः ।
 गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८ ॥
 समुद्रकः संपुटकः प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।
 प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पट्वासकः ॥ १३९ ॥
 दर्पणे मुकुरादर्शौ व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

धारण करी मालाका है ॥ १३५ ॥ प्रालम्ब यह एक (न०) नाम कंठसे
 सीधी और लम्बी मालाका है । वैकक्षिक यह एक (न०) नाम छातीपर
 तिरछी मालाका है । आपीड, शेखर ये दो (पु०) नाम चौटीमें गूथी
 हुई मालाके हैं ॥ १३६ ॥ रचना (स्त्री०), परिस्यन्द (पु०) ये दो
 नाम माला आदिकी रचनाके हैं । आभोग (पु०), परिपूर्णता (स्त्री०)
 ये दो नाम सब उपचारवालोंकी परिपूर्णताके हैं । उपधान (न०), उपवर्ह
 (पु०) ये दो नाम तकियेके हैं । शय्या (स्त्री०), शयनीय (न०)
 ॥ १३७ ॥ शयन (न०) ये तीन नाम शय्याके हैं । मञ्च, पर्यङ्क, पल्यङ्क,
 खट्वा ये चार नाम खाटके हैं । खट्वाशब्द (स्त्री०) शेष (पु०) हैं ।
 गेन्दुक, कन्दुक ये दो (पु०) नाम छोटे तकिये वा गेदके हैं । दीप,
 प्रदीप ये दो (पु०) नाम -दीपकके हैं । पीठ, आसन ये दो (न०)
 नाम आसनके हैं ॥ १३८ ॥ समुद्रक, संपुटक ये दो (पु०) नाम संपुट
 अर्थात् डिब्बेके हैं । प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ये दो (पु०) नाम पीकदानीके
 हैं । प्रसाधनी, कङ्कतिका ये दो (स्त्री०) नाम कंघीके हैं । पिष्टात,
 पट्वासक ये दो (पु०) नाम बुकनीके हैं ॥ १३९ ॥ दर्पण (पु० न०),
 मुकुर (पु०), आदर्श (पु०) ये तीन नाम शीशेके हैं । व्यजन,
 तालवृन्तक ये दो (न०) नाम ताडके पत्तोंसे बने हुए पंखेके हैं ॥

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्ग ७ ।

संततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।

वशोऽन्ववाय* सतानो वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

विप्रक्षत्रियविद्भूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।

राजबीजी राजवश्यो बीज्यस्तु कुलमभव* ॥ २ ॥

महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधव ।

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥

आश्रमोऽस्त्री द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

विप्रश्च ब्राह्मणोऽभौ पट्कर्म यागादिभिर्वृत* ॥ ४ ॥

विद्वान् विपश्चिदोपज्ञ सन्सुधी कोविदो बुध* ।

वीरो मनीषी ज्ञ प्राज्ञः मख्यावान् पण्डित कवि ॥ ५ ॥

धीमान्स्मरि कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षण ।

दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियश्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्ग । सतति, गोत्र, जनन, कुल, अभिजन, अन्वय, वश, अन्ववाय, सतान ये नव नाम वशके हे । तहा सततिशब्द (स्त्री०), गोत्र, जनन, कुल (न०) शेष (पु०) हे । ब्राह्मण आदि वर्ण हे ॥ १ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, विशूद्र ये चागे वर्ण चातुर्वर्ण्य कहाते हे । आगेके अग्निचित्तशब्दतक (पु०) हे और आश्रमशब्द (पु० न०) हे । राज बीजिन, राजवश्य ये दो नाम राजवश्ये उत्पन्न हुअके हे । बीज्य, कुलस भव ये दो नाम कुलमात्रमे उत्पन्न हुअके हे ॥ २ ॥ महाकुल, कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये छ नाम सज्जनके हे । ब्रह्मचारिन, गृहिन, वानप्रस्थ, भिक्षु ये चार आश्रम है । तहां ब्रह्मचारिन गृहिन शब्द (इन्नन्त पु०) हे ॥ ३ ॥ आश्रम यह एक (पु० न०) नाम आश्रमका है । द्विजाति, अग्रजन्मन् (नान्त), भूदेव, वाडव, विप्र, ब्राह्मण ये छ नाम ब्राह्मणके हे । पट्कर्मन् यह एक (नान्त पु०) नाम यज्ञ आदिसे युक्त नाह्मणका है ॥ ४ ॥ विद्वन् (वस्यन्त), विपश्चित्, दोपज्ञ, सत् (तान्त), सुधी, कोविद्, बुध, धीर, मनीषिन (इन्नन्त), ज्ञ, प्राज्ञ, मख्यावत् (मत्स्यन्त), पण्डित, कवि ॥ ५ ॥ धीमत् (मत्स्यन्त), स्मरि, कृतिन् (इन्नन्त), कृष्टि, लब्धवर्ण, विचक्षण, दूरदर्शिन (इन्नन्त,) दीर्घ अमरकोश ९

“ मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।
 वैशेषिके स्यादौलूक्यः सौगतः शून्यवादिनि ॥
 नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः ।
 चार्वाकलौकायतिकौ सत्कार्ये सांख्यकापिलौ ॥ ”
 उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्नियेकादिकृद्गुरुः ।
 मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
 यद्य च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः ।
 इज्याशीलो यायजूको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
 स गीष्पतीष्ट्यः स्थपतिः सोमपीथी तु सोमपाः ।
 सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

दर्शित (इन्नन्त) ये वाईस नाम पंडितके हैं । श्रोत्रिय, छान्दस ये दो नाम वेदपाठीके हैं ॥ ६ ॥ “ मीमांसक, जैमिनीय ये दो (पु०) नाम मीमांसा शास्त्रको जाननेवालेके हैं । वेदान्तिन्, ब्रह्मवादिन् ये दो (इन्नन्त पु०) नाम वेदान्तीके हैं । वैशेषिक, औलूक्य ये दो (पु०) नाम सात पदार्थवादीके हैं । सौगत, शून्यवादिन् (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम शून्यवादीके हैं । नैयायिक, अक्षपाद ये दो (पु०) नाम न्यायशास्त्रको जाननेवालेके हैं । स्याद्वादिक, आर्हक ये दो (पु०) नाम मोक्ष है अथवा नहीं है ऐसे कहनेवालेके हैं । चार्वाक लौकायतिक ये दो (पु०) नाम देहात्मवादी बौद्धके हैं । सांख्य, कापिल ये दो (पु०) नाम सांख्यको जाननेवालेके हैं । उपाध्याय, अध्यापक ये दो (पु०) नाम पढानेवालेके हैं । गुरु यह एक (पु०) नाम गर्भाधान आदि कर्मोंके करानेवाले पिता आदिका है । आचार्य यह एक (पु०) नाम वेदकी व्याख्या करनेवालेका है । यज्ञविशेषमें ऋत्विजोंका आदेष्टा व्रतिन् (इन्नन्त) कहाता है ॥ ७ ॥ यष्ट (ऋकारान्त), यजमान ये तीन (पु०) नाम यजमानके हैं । दीक्षित यह एक (पु०) नाम सोमयज्ञमें आदेष्टा यजमानका है । इज्याशील, यायजूक ये दो (पु०) नाम यजनशीलके हैं । यज्वन् (नान्त) यह एक (पु०) नाम विधिसे यज्ञ करनेवालेका है ॥ ८ ॥ स्थपति यह एक (पु०) नाम बृहस्पतिके कहे विधिकरके यज्ञ करनेवालेका है । सोमपीथिन्, सोमपा ये दो (पु०) नाम सोमयज्ञ करनेवालेके हैं । सर्ववेदस

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु य ।
 लब्धानुज्ञ समावृत्त सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
 छात्रान्नेवासिनौ शिष्ये शैक्षाः प्राथमकालिका ।
 एकत्रह्यत्रताचारा मित्यः सत्रह्यचारिणः ॥ ११ ॥
 सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवश्चिनवानग्निमग्निचित् ।
 पारम्पर्यापदेशे स्यादैतित्यमिनिहाव्ययम् ॥ १२ ॥
 उपना ज्ञानमाद्य स्याज्जात्वारम्भ उपक्रमः ।
 यज्ञ सप्तोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मसः ऋतु ॥ १३ ॥
 पाठो ह्यमश्वातिथीना मपर्या तर्पण बलि ।
 पते पञ्च मशयज्ञा ब्रह्मपनादिनामका ॥ १४ ॥

(सान्) यह एक (पु०) नाम सर्वस्व दक्षिणावाले निधञित् नामक
 यज्ञ करनेवाले का है ॥ ९ ॥ अनूचान यह एक (पु०) नाम शिक्षा
 आदि अर्गोसे युक्त वेद अथवा करनेवाले का है । समावृत्त यह एक (पु०)
 नाम गुरुमे गृहस्थ आदि आश्रमकी प्रातिक्रिये अनुत्ता पानेवाले का
 है । सुत्वर (नान्) यह एक (पु०) नाम अभिषव स्नान क्रिये हुए का
 है ॥ १० ॥ छात्र, अनेकामित्र (इन्द्र), शिष्य ये तीन (पु०) नाम
 चलेके हैं । शैक्ष, प्राथमकालिक ये दो (पु०) नाम नये पढ़नेवालेके हैं ।
 मन्त्रचारिण (इन्द्र) यह एक (पु०) नाम आपसमें समान वेदत्रय
 अर्चोवालेका है ॥ ११ ॥ सती ये यह एक (पु०) नाम गुरु का
 पढ़नेवाले का है । अग्निचित् यह एक (पु०) नाम अग्नि की रखनेवाले
 का है । ऐतिहा (७०), इतिहा ये दो नाम लोकप्रसिद्धके उपदेशके हैं ।
 तर्पा इतिहा यह अव्यय है ॥ १२ ॥ उपना यह एक (पु०) नाम पढ़ने
 जानना है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम जाननेवाला क्रिया हुआ
 है । या, मा, अध्वर, याग, सप्ततनु, मस, ऋतु ये सात (पु०) नाम
 यज्ञके हैं ॥ १३ ॥ पाठो इतिहा आदिना पढ़ना ब्रह्मपना कहाता है ।
 पते इतिहा मशय देवता कहाता है । पते आये अम्यागना को अत्र
 आदि मशय प्रमत्त पत्ता अनुपपत्ता कहाता है । पितृगता अथवा उ
 आदिमे इतिहा मशय देवता है । तदि रत्ना भूयः । तद ता
 १, १ ये पाँच कहाते हैं ॥ १४ ॥

समज्या परिपद्रोष्ठी सभासामितिसंमदः ।
 आस्थानी स्त्रीवमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥
 प्राग्बंजः प्राग्घविर्गेहात्सदस्या विधिदर्शिनः ।
 सभासदः सभास्तारः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
 अध्वर्युद्गात्रहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ।
 आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
 वेदिः परिष्कृता भूमिः ममे स्थाण्डिलचत्वरे ।
 चपालो यूपकटकः कुंवा सुगहना वृत्तिः ॥ १८ ॥
 यूपग्रं तर्म निर्मन्थ्यदारुणि त्वग्णिर्द्ध्योः ।
 दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥

समज्या, परिपत्, गोष्ठी, सभा, समिति, ससद्, आस्थानी, आस्थान, सदस् (सांत) ये नव नाम सभाके हैं। तहां आस्थानशब्द (न०) हैं, सदस् शब्द (स्त्री० न०), शेष (स्त्री०) है ॥ १५ ॥ प्राग्बंज यह एक (पु०) नाम हविके गेहसे पूर्वदेशमें सदस्य आदियोंके घरका है। सदस्य यह एक (पु०) नाम वेदोक्त क्रियाकलापको देखनेवालेका है। सभासद्, सभास्तार, सभ्य, सामाजिक ये चार (पु०) नाम सभ्योंके हैं ॥ १६ ॥ अध्वर्यु यह एक (पु०) नाम यजुर्वेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। उद्गात्र (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम सामवेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। होतृ (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम ऋग्वेदके जाननेवाले ऋत्विज्का है। ऋत्विज् (जान्त), याजक ये दो (पु०) नाम यजमानने धन आदि देके जिन्होंको बरे उन्हींके हैं ॥ १७ ॥ वेदि यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञके लिये डमरुके आकारकी बनाई पृथ्वीका है। स्थाण्डिल, चत्वर ये दो (न०) नाम यज्ञके लिये संस्कार किये हुए पृथ्वीके भाग अर्थात् चौतरेके हैं। चपाल, यूपकटक ये दो (पु०) नाम यज्ञखंभके शिरमें बल्यके आकारवाले काठविशेषके हैं। कुंवा यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञभूमिमें नीचजातिकी दृष्टिके निवारणके लिये बहुत वेषण (आवरण) करनेका है ॥ १८ ॥ यूपग्र, तर्मन् (नांत) ये दो (न०) नाम यज्ञखंभके अग्रभागके हैं। अरणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम अग्नि निकालनेकी लकड़ियोंका है। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीन (पु०)

अग्नित्रयमिदं त्रेता प्रणीत. सस्कृतोऽनल. ।
 समूहः परिचार्योपचार्यावग्नौ प्रयोगिण. ॥ २० ॥
 यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निं प्रणीयते ।
 तस्मिन्नानाम्योऽथाग्रायी स्वाहा च हुतभुक्तिप्रया ॥ २१ ॥
 ऋक् सामिधेनी धार्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
 गायत्रीप्रमुख छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
 आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्वियोगतः ।
 धवित्र व्यजन तद्यद्गचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
 पृषदाज्य सदध्याजे परमान्न तु पायसम् ।
 हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥
 ध्रुवोपभृज्जुहर्ना तु सुवो भेदा. मुचः स्त्रियः ।
 उपाकृतं पशुरसौ योऽग्निमन्स्य क्रतौ इत ॥ २५ ॥

नाम यज्ञकी अग्निके हे ॥ १९ ॥ त्रेता यह एक (स्त्री०) नाम इन तीनों अग्नियोंका है । प्रणीत यह एक (पु०) नाम मंत्र आदिसे सस्कार किये हुए अग्निका है । समूह, परिचार्य, उपचार्य ये तीन (पु०) नाम यज्ञकी अग्निके स्थलविशेषके हे ॥ २० ॥ आनाय्य यह एक (पु०) नाम गार्हपत्य अग्निसे ग्रहण कर जो दक्षिणाग्नि स्थापित कराया जावे उसका है । अग्रायी, स्वाहा, हुतभुक्तिप्रया ये तीन (स्त्री०) नाम अग्निकी स्त्रीके हे ॥ २१ ॥ सामिधेनी, धार्या ये दो (स्त्री०) नाम अग्निको प्रज्वलित करनेमें जो ऋचा पढी जावे उसके है । छन्दस् (सात न०) यह एक नाम गायत्री उष्णिष् आदि छन्दोंका है । चरु यह एक (पु०) नाम अग्निविषै ह्यमान अन्न आदिका है ॥ २२ ॥ आमिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम पकाये हुए गरम दूधमें दहीके योगसे उत्पन्न विकृतिका है । धवित्र यह एक (न०) नाम मृगछालासे रचे पखेका है ॥ २३ ॥ पृषदाज्य यह एक (न०) नाम दहीसे मिले घृतका है । परमान्न (न०), पायस (पु० न०) ये दो नाम दूधकी खीरके है । हव्य यह एक (न०) नाम देवताओंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । कव्य यह एक (न०) नाम पित्तोंके अर्थ दिये जानेवाले अन्नका है । पात्र यह एक (न०) नाम सुव, चमसा आदिका है ॥ २४ ॥ टना, उपभृत्, जुहू (तीन स्त्री०) सुव (पु०) ये

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।
 वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
 सात्राच्यं हविरशौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
 दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे तत्कर्माहं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥
 त्रिष्वध ऋतुकर्मघं पूर्तं खातादि कर्म यत् ।
 अमृतं विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
 त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
 विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
 प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
 मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥
 पितृदानं निवापः स्याच्छ्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।
 अन्वाहार्यं मासिकेऽशोऽष्टमोऽङ्गः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥

चार नाम स्रुचके भेदके हैं । उपाकृत यह एक (पु०) नाम अभिमंत्रित
 कर यज्ञमें हत किये जानेवाले पशुका है ॥ २६ ॥ परम्पराक, शमन, प्रोक्षण
 ये तीन (न०) नाम वधके अर्थ यज्ञसम्बन्धीय पशु मारनेके हैं । प्रमीत,
 उपसम्पन्न, प्रोक्षित ये तीन नाम यज्ञके अर्थ हत हुए पशुमात्रके हैं और
 वाच्यलिङ्गी हैं । सात्राच्य यह एक (न०) नाम हविर्विशेषका है । वषट्-
 कृत यह एक नाम अग्निविषे होमे हुए याज्य आदिका है और वाच्यलिङ्गी
 है ॥ २६ ॥ अवभृथ यह एक (पु०) नाम यज्ञमें दीक्षाके अंतमें स्नान-
 विशेषका है । यज्ञिय यह एक (त्रि०) नाम यज्ञकर्मके योग्य वस्तुका है
 ॥ २७ ॥ इष्ट यह एक (न०) नाम यज्ञके कर्मका है । पूर्तं यह एक
 (न०) नाम वावडी कुआ आदि खातका है । अमृत यह एक (न०)
 नाम यज्ञशेष पुरोडाश आदिका है । विघस यह एक (पु०) नाम देव
 और पितृ आदिके भुक्तशेषका है ॥ २८ ॥ त्याग, विहापित, दान, उत्स-
 र्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन ॥ २९ ॥ प्रादेशन,
 निर्वपण, अपवर्जन, अहति ये तेरह नाम दानके हैं । त्यागशब्द (पु०)
 अंहति (स्त्री०) शेष (न०) हैं । और्ध्वदेहिक यह एक नाम मरणादिनसे
 आरंभ कर दश दिनपर्यंत पिडदान आदिका है और त्रिलिङ्गी है ॥ ३० ॥
 पितृदान (न०), निवाप (पु०) ये दो नाम पितरोंका उद्देश कर जो

पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेषणा च गवेषणा ।
मनिस्त्वद्येषणा याच्ञाऽभिशास्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
पद् तु त्रिष्वर्ध्यमर्थायै पाद्यं पादाय वागिणि ।
क्रमादातिथ्यातियेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
स्युगवंशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।
प्राघूर्णिक प्राघुणकश्चाभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ ३४ ॥
पूजा नमस्याऽपचितिः सर्पयार्चार्हणाः समाः ।
वरिषस्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ॥ ३५ ॥
ब्रज्याऽटाट्या पर्यटन चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ।
उपस्पर्शस्त्वाचमनमथ मौनमभाषणम् ॥ ३६ ॥

दान किया जावे उसके है । श्राद्ध यह (न०) नाम शास्त्रसे पितृसवर्ध
कर्मका है । अन्वाहार्य्य यह एक (न०) नाम मासिक अमावास्या
श्राद्धका है । कुत्तप यह एक नाम दिनके आठवें भागका है और
(पु० न०) है ॥ ३१ ॥ पर्येषणा, परीष्टि ये दो (स्त्री०) नाम
श्राद्धमें ब्राह्मणके भोजनकी टहल वा भक्तिके है । अन्वेषणा, गवेषणा
ये दो (स्त्री०) नाम धर्म आदिजो टूटनेके ह । सनि, अत्येषणा ये दो
(स्त्री०) नाम गुरु आदिसे प्रार्थनापूर्वक विनतीके है । याच्ञा, अभि
शास्ति, याचना, अर्थना ये चार (स्त्री०) नाम याचनाके है ॥ ३० ॥
अर्ध्य, पाद्य, आतिथ्य, आतियेय, आवेशिक, आगत ये छ शब्द वाच्य
लिंगी है । अर्ध्य यह एक नाम अतिथिकी पूजाके उपचारके अर्थ पानीका
है । पाद्य यह एक पौरोके अर्थ जो पानी हो उसका है । आतिथ्य यह
एक नाम अतिथिके अर्थ अन्न आदिजा है । आतियेय यह एक नाम
अतिथिमें जो साधु हो उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक, आगत, अतिथि,
गृहागत ये चार (पु०) नाम धर्ममें आये हुए अतिथिके है । प्राघूर्णिक,
प्राघुणक ये दो (पु०) नाम अभ्यागतके ह । अभ्युत्थान, गौरव ये दो
(न०) नाम उत्थानपूर्वक सस्कारके है ॥ ३४ ॥ पूजा, नमस्या, अप
चिति, सपर्या, अर्चा, अर्हणा ये छ (स्त्री०) नाम पूजाके है । वरिषस्या,
शुश्रूषा, परिचर्या, उपासना ये चार (स्त्री०) नाम उपासनाके है ॥ ३५ ॥
ब्रज्या, अटा, अट्या, पर्यटन ये चार नाम चलनेके ह । पयटनशब्द (न०)

“ प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः ।
 वाल्मीकश्चाथ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः ॥
 व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः । ”
 आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः ।
 पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥
 नियमो व्रतगस्त्री तच्चोपवामादि पुण्यकम् ।
 औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८ ॥
 स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिरथाञ्जलिः ।
 पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विप्रश्चो ब्रह्मविन्दुः ॥ ३९ ॥
 ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमौ ।
 मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥ ४० ॥

शेष (स्त्री०) हैं । चर्या यह एक (स्त्री०) नाम ध्यान मौन आदि मार्गमें स्थित होनेवालेका है । उपस्पर्श (पु०), आचमन (न०) ये दो नाम आचमनके हैं । मौन, अभाषण ये दो (न०) नाम नहीं बोलनेके हैं ॥ ३६ ॥ “ प्राचेतस् (सान्त), आदिकवि, मैत्रावरुणि, वाल्मीक ये चार (पु०) नाम वाल्मीक मुनिके हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक ये तीन (पु०) नाम विश्वामित्रके हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्यवतीसुत ये चार (पु०) नाम वेदव्यासके हैं । ” आनुपूर्वी, आवृत्, परिपाटी, अनुक्रम, पर्याय ये पांच नाम अनुक्रमके हैं । अनुक्रम, पर्याय (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । अतिपात, पर्यय, उपात्यय ये तीन (पु०) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम (पु०), व्रत (पु० न०) ये दो नाम व्रतके हैं । पुण्यक यह एक (न०) नाम उपवास चान्द्रायण व्रत आदिका है । औपवस्त (न०), उपवास (पु०) ये दो नाम उपवासके हैं । विवेक यह एक (पु०) नाम पृथक् स्वरूपपनेका है ॥ ३८ ॥ ब्रह्मवर्चस यह एक (न०) नाम सदाचार पालन और वेदका अभ्यास इन दोनोंकी संपत्तिका है । ब्रह्माञ्जलि यह एक (पु०) नाम वेदके पाठकी आदिमें हाथोंकी उर्ध्वकारके उच्चारणपूर्वक अञ्जलिका है । ब्रह्मविन्दु यह एक (पु०) नाम वेदके पाठमें मुखसे निकसे हुए जलके किनकोंका है ॥ ३९ ॥ ब्रह्मासन यह एक (न०) नाम ध्यान और योगके आसनका है । कल्प, विधि,

सस्कारपूर्व ग्रहण स्यादुपाकरणं श्रुते ।
 समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥
 भिक्षु परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ।
 तपस्वी तापस. पारीक्षाक्षी वाचयमो मुनि ॥ ४२ ॥
 तपः क्लेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिण ।
 ऋषय. सत्यवचस. स्नातकस्त्वाष्ट्रव्रती ॥ ४३ ॥
 ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यनिनो यतयश्च ते ।
 य स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाख्यसौ ॥ ४४ ॥
 स्थाण्डिलश्चाय विरजस्तमस' स्युर्द्रव्यातिगा. ।
 पवित्रः प्रयत' पृत पाखण्डा सर्वलिङ्गिनः ॥ ४५ ॥

क्रम ये तीन (पु०) नाम नियोगशास्त्रके है । मुख्य यह एक (पु०) नाम आद्यविधिका है । अनुकल्प यह एक (पु०) नाम मुरयसे नीचे गौणका है ॥ ४० ॥ उपाकरण यह एक (न०) नाम सस्कारपूर्वक वेदके ग्रहण करनेका है । पादग्रहण, अभिवादन ये दो (१०) नाम गोत्रमथनपूर्वक नमस्कारविशेषके हैं ॥ ४१ ॥ भिक्षु, परिव्राट् (जान्त), कर्मादिन् (इन्द्रन्), पाराशरिन्, मस्करिन् (इन्द्रन्) ये पाच (पु०) नाम सन्धासीके हैं । तपस्विन् (इन्द्रन्), तापस, पारिकाक्षिन् (इन्द्रन्) ये तीन (पु०) नाम तप करनेवालेके हैं । वाचयम, मुनि ये दो (पु०) नाम परिमित बोलनेवालेके हैं ॥ ४२ ॥ दान यह एग (पु०) नाम तपके हे शके सहनेवालेका है । वर्णिन् (इन्द्रन्), ब्रह्मचारिन् (इन्द्रन्) ये दो (पु०) नाम ब्रह्मचारीके हैं । ऋषि, सत्यवचस् ये दो (पु०) नाम ऋषिके हैं । स्नातक, आष्ट्रव्रतिन् (इन्द्रन्) ये दो (पु०) नाम वेदव्रती होके समावर्त्तन किये हुएके हैं ॥ ४३ ॥ यतिन् (इन्द्रन्), यति ये दो (पु०) नाम इन्द्रियो को जीतनेवालेके हैं । स्थण्डिलशाख्यिन् (इन्द्रन्), स्थण्डिल ये दो (पु०) नाम नियमके पूजक पृथ्वी विशेषण सोनेवालेके हैं ॥ ४४ ॥ विरजस्तमस् (सान्त), द्रव्यातिग ये दो (पु०) नाम सत्त्वमें एग निष्ठावाले व्यास आदिकोंके हैं । पवित्र, प्रयत, पृत ये तीन (पु०) नाम पवित्रक है । पाखण्ड, सर्वलिङ्गिन् (इन्द्रन्) ये दो (पु०) नाम बौद्ध क्षपण आदि टुष्ट शास्त्रवांतकोंके हैं ॥ ४५ ॥

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ।
 अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनां सासनं वृषी ॥ ४६ ॥
 अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ।
 स्वाध्यायः स्याज्जपः सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥
 सर्वैः सामपध्वांसि जप्यं त्रिष्वधमर्षणम् ।
 दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥
 शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।
 नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥
 “ क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु । ”
 उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ।
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बिनम् ॥ ५० ॥

आषाढ यह एक (पु०) नाम ब्रह्मचारीके पलाशसंबन्धी दण्डका है । राम्भ यह एक (पु०) नाम वांसके दण्डका है । कमण्डलु (पु० न०), कुण्डी (स्त्री०) ये दो नाम व्रतियोंके जलपात्रके हैं । वृषी यह एक (स्त्री०) नाम व्रतियोंके आसनका है ॥ ४६ ॥ अजिन (न०), चर्म (नांत न०), कृत्ति (स्त्री०) ये तीन नाम मृगचर्म आदिके हैं । भैक्ष्य यह एक (न०) नाम भिक्षाके समूहका है । स्वाध्याय, जप ये दो (पु०) नाम वेदके अभ्यासके हैं । सुत्या (स्त्री०), अभिषव (पु०), सवन (न०) ये तीन नाम सोमाभिषवके हैं ॥ ४७ ॥ अवमर्षण यह एक नाम सब पापोंको नाश करनेवाले जापका है और त्रिलिगी है । दर्श यह एक (पु०) नाम कृष्णपक्षके अन्तमें होनेवाले यज्ञका है । पौर्णमास यह एक (पु०) नाम पौर्णमासीमें होनेवाले यज्ञका है ॥ ४८ ॥ यम यह एक (पु०) नाम शरीरमात्रकरके साधनके योग्य नित्यकर्मका है । नियम यह एक (पु०) नाम माटी और जल आदिसे साध्य कर्म अर्थात् नित्यप्रति कृत्रिम कर्मका है ॥ ४९ ॥ ‘ क्षौर (न०), भद्राकरण (न०), मुण्डन (न०), वपन (त्रि०) ये चार नाम क्षौरके हैं ॥ १७ उपवीत यह एक (न०) नाम दहिने हाथको ऊपर करके जनेऊ धारण किये जानेका है । प्राचीनावीत यह एक (न०) नाम वाम हाथ ऊपरको करके जनेऊ धारण किये जानेका है । निवीत यह एक

अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैव स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ।
 मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्यो' पित्र्य मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मणम् ॥ ५१ ॥
 स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मन्व ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।
 देवमृयादिकं तद्वत्कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥
 संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ।
 नष्टाग्निः कुहना लोभान्मिथ्येर्थापथकल्पना ॥ ५३ ॥
 व्रात्य. सस्कारहीन. स्यादस्वाध्यायो निराकृति ।
 धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णा क्षतव्रत ॥ ५४ ॥
 सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।
 अशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥

(न०) नाम कठमें ललित किये जनेऊका है ॥ ५० ॥ दैव यह एक
 (न०) नाम अगुलियोंके अग्रभागमें दैवतीर्थका है । काय यह एक (न०)
 नाम कनिष्ठिका कौर अनामिका अगुलियोंके मूलमें कायतीर्थका है ।
 पित्र्य यह एक (न०) नाम अगूठा और तर्जनी अगुलीके मध्यमें पितृ
 तीर्थका है । ब्राह्म यह एक (न०) नाम अगूठेकी मूलमें ब्राह्मतीर्थका
 है ॥ ५१ ॥ ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्मसायुज्य ये तीन (न०) नाम ब्रह्मभा
 वके हैं । देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये तीन (न०) नाम देवभावके हैं ।
 कृच्छ्र यह एक (न०) नाम सातपन आदिका है ॥ ५२ ॥ प्राय यह
 एक (पु०) नाम संन्यासपूर्वक भोजनके त्यागनेका है । वीरहर (नका
 रान्त), नष्टाग्नि ये दो (पु०) नाम नष्ट हुए अग्निवालेके हैं । कुहना
 यह एक (स्त्री०) नाम लोभसे छल कपटकरके ध्यान मौनका है ॥ ५३ ॥
 व्रात्य यह एक (पु०) नाम सस्कारसे हीन हुका है । अन्वाध्याय यह
 एक (पु०) नाम अपनी शाराके अनुसार अध्ययनसे शून्य हुका है ।
 धर्मध्वजिन् (इन्द्रत), लिङ्गवृत्ति ये दो (पु०) नाम जाँविकाके अर्थ
 जटा आदिको धारण करनेवालेके हैं । अवकीर्णिन् (इन्द्रन्त), क्षतव्रत ये
 दो (पु०) नाम नष्ट हुए ब्रह्मचर्यवालेके हैं ॥ ५४ ॥ अभिनिर्मुक्त यह
 एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य अस्त हो जावे उसका है । अभ्यु
 दित यह एक (पु०) नाम जिसके सोते हुए सूर्य उदय हो जावे उसका

परिवेत्ताऽनुजोऽनूडे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ।

परिवित्तिरतु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समौ ॥ ५६ ॥

तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ।

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥

त्रिवर्गो धर्मकामार्थेषुतुर्वर्गः समोक्षकैः ।

सवलैस्तेश्चतुर्भद्रं जन्याः स्त्रिग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८ ।

मूर्धाभिपिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।

राजा राट् पार्थिवक्षमाभृत्पृषूपमहीक्षितः ॥ १ ॥

राजा तु प्रमताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

हे ॥ ५६ ॥ परिवेत्तु (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम वडे भाईका विवाह नहीं हो और छोटा भाई कर ले उसका हे । परिवित्ति यह एक (पु०) नाम उस परिवेत्ताके वडे भाईका हे ॥ ५६ ॥ विवाह, उपयम, परिणय, उद्वाह, उपयाम, पाणिपीडन ये छः नाम विवाहके हैं । पाणिपीडनशब्द (न०) शेष (पु०) हैं । व्यवाय (पु०), ग्राम्यधर्म (पु०), मैथुन (न०), निधुवन (न०), रत (न०) ये पांच नाम छत्ति भोगके हैं ॥ ५७ ॥ त्रिवर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म अर्थ काम इनके समूहका है । चतुर्वर्ग यह एक (पु०) नाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्हींके समूहका है । चतुर्भद्र यह एक (न०) नाम बलसहित धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका है । जन्य यह एक (पु०) नाम वरके समान अवस्थावाले और प्रियजनोका है ॥ ५८ ॥ इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः । मूर्धाभिपिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, विराट् ये पांच (पु०) नाम क्षत्रियके हैं । राजन् (नान्त), राज् (जान्त), पार्थिव, क्षमाभृत्, नृप, भूप, महीक्षित ये सात (पु०) नाम राजाके हैं ॥ १ ॥ अधीश्वर यह एक (पु०) नाम सब देशोंके राजा जिसको प्रणाम करते हैं उस राजाका है । चक्रवर्तिन् (इन्नन्त), सार्वभौम ये दो (पु०) नाम समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके पतिके हैं । मण्डलेश्वर यह एक (पु०) नाम थोड़ी

येनेष्ट राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च य ।
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स मन्त्राटय राजकम् ॥ ३ ॥
राजयक च नृपतिक्षत्रियाणा गणे ऋमात् ।
मन्त्री वीसचिवोऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवारणतः ॥ ४ ॥
महामात्राः प्रधानानि पुरोवास्तु पुरोहितः ।
द्रष्टारि व्यवहागणा प्राड्विवाकाक्षदर्शनाः ॥ ५ ॥
प्रतीहारो द्वारपालश्च स्थडा स्थितदर्शनाः ।
रक्षिवर्गस्त्वर्गोऽस्थोऽथाऽध्यक्षाधिकृतौ नमौ ॥ ६ ॥
स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे गोपो ग्रामेषु भूरिपु ।
भौरिक कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किः ॥ ७ ॥
अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वेशिको जन ।
सौविदल्ला कश्चुकिन म्यापत्याः शीविदाश्च ते ॥ ८ ॥

पृथ्वीके पतिने ह ॥ २ ॥ सम्राज् (जान्त) यह एक (पु०) नाम जि
सने राजसूय यज्ञ किया हो और बारह मण्डलोंका स्वामी हो और जो
अपनी आज्ञासे सन राजाओंको शिक्षा करता हो उसका है । राजक यह
एक (न०) नाम राजाओंके समूहका है ॥ ३ ॥ राजन्यक यह एक (न०)
नाम क्षत्रियोंके समूहका है । मन्त्रिन् (इन्नन्त), धीसचिव, अमात्य ये तीन
(पु०) नाम मन्त्रिके ह । कमसचिव यह एक (पु०) नाम कार्योंमें
योजित किये मन्त्रियोंका है ॥ ४ ॥ महामात्र (पु०), प्रधान (पु० न)
ये दो नाम मुख्यरूप राजसहायकोंके है । आगे शत्रुशब्दतक (पु०) है ।
पुरोधस्(सान्त), पुरोहित ये दो नाम ऋण आदि व्यवहारोंके विषयमें वादी
और प्रतिवादीसे निर्मित किये विवादोंके निर्णय करनेवालेके है । प्राड-
विवाक, अक्षदर्शक ये दो नाम न्याय करनेवाले हाकिमके ह ॥ ५ ॥
प्रतीहार, द्वारपाल, द्वा स्थ, द्वा स्थित, दर्शक ये पांच नाम द्वारपालके है ।
रक्षिवर्ग, अनिकम्य ये दो नाम राजाकी रक्षा करनेवाले समूहके है । अ
ध्यक्ष, अधिकृत ये दो नाम अधिकारिके है ॥ ६ ॥ स्थायुक यह एक नाम
ग्रामके अध्यक्षका है । गोप यह एक नाम बहुतसे गामोंके अध्यक्षका है ।
भौरिक, कनकाध्यक्ष ये दो नाम सुवर्णके अधिकारिके है । रूप्याध्यक्ष,
नैष्किक ये दो नाम चांदीके अधिकारिके है ॥ ७ ॥ अतवेशिक यह

पृष्ठो वर्षवरस्तुल्यौ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

विषयानन्तरो राजा शत्रुभिन्नमतः परस् ॥ ९ ॥

उदासीनः परतरः पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

रिपौ वैरिनपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥

द्विद्विषक्षाहितामित्रदरयुशात्रवशत्रवः ।

अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥

वयस्यः स्त्रिग्वः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥

यथार्हवर्णः प्रणिधिपसर्पश्चरः स्पशः ।

चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

एक नाम भीतरके महलमें अधिकृत पुरुषका है । सौविद्वल्ल, कचुकिच, स्थापत्य, सौविद् ये चार नाम राजाके समीपमें बैठको धारण करनेवाले पुरुषोंके हैं ॥ ८ ॥ पंड, वर्षवर ये दो नाम राजाके रनवासमें रहनेवाले हीजडोंके हैं । सेवक, अर्थिच (इन्नन्त), अनुजीविच (इन्नन्त) ये तीन नाम सेवकके हैं । शत्रु यह एक नाम अपने देशके पास रहनेवाले राजाका है । यहाँतक (पु०) हैं । मित्र यह एक (न०) नाम अपने देशसे दूर रहनेवाले राजाका है ॥ ९ ॥ उदासीन यह एक (पु०) नाम शत्रु और मित्रसे भिन्न राजाका है । पार्ष्णिग्राह यह एक (पु०) नाम राजाके पृष्ठभागमें रहनेवाले राजाका है । रिपु, वैरिच, सपत्न, अरि, द्विष, द्वेषण, दुर्हृद ॥ १० ॥ द्विष् (पांत), विषक्ष, अहित, अमित्र, दस्यु, शात्रव, शत्रु, अभिघातिच (इन्नन्त), पर, अराति, प्रत्यर्थिच (इन्नन्त), परिपन्थिच (इन्नन्त) ये उन्नीस नाम वैरोंके हैं । अमित्रशब्द (न०) शेष (पु०) हैं ॥ ११ ॥ वयस्य, स्त्रिग्व, सवयस् (सांत) ये तीन (पु०) नाम प्यारेके हैं । मित्र, सखि, सुहृद् (दान्त) ये तीन नाम मित्रके हैं । मित्र (न०) शेष (पु०) है । सख्य, साप्तपदीन ये दो (न०) नाम मैत्रोंके हैं । अनुरोध (पु०), अनुवर्तन (न०) ये दो नाम अनुकूलताके हैं ॥ १२ ॥ यथार्हवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प, चर, स्पश, चार, गूढपुरुष ये सात (पु०) नाम गुप्तपुरुषके हैं । आप्त, प्रत्ययित ये दो नाम विशेष विश्वासीके

सावत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
 स्युर्मौहूर्तिकमौहूर्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
 तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्त' सत्री गृहपति' समौ ।
 लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥
 लिखिताक्षरसस्थाने लिपिर्लिविरुभे द्वियौ ।
 स्यात्सदेशहरो दूतो दूत्य तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
 अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वय पान्थ' पथिक इत्यपि ।
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गवलानि च ॥ १७ ॥
 गज्याङ्गानि प्रकृतय पैगणा श्रेणयोऽपि च ।
 संविर्ना विग्रहो यानमासन द्वैधमाश्रय ॥ १८ ॥

ह और त्रिलिगी है ॥ १३ ॥ सावत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, गणक, मौहूर्तिक, मौहूर्त, ज्ञानिक (इन्द्रत), आर्तान्तिक ये आठ (पु०) नाम ज्योतिषिके ह ॥ १४ ॥ तान्त्रिक, ज्ञातसिद्धान्त ये दो (पु०) नाम शास्त्रको जाननेवालेके ह । सत्रिक (इन्द्रत), गृहपति ये दो (पु०) नाम घरके पति अर्थात् सत्र कालमें अन्न आदिजो दान करनेवालेके हे । लिपिकर, अक्षरचण, अक्षरचुञ्चु, लेखक ये चार (पु०) नाम लिखनेवालेके हे ॥ १५ ॥ लिखित (न०), अक्षरसस्थान (न०), लिपि (स्त्री०), लिखि (स्त्री०) ये चार नाम लिखे हुए अक्षरोंके हे । सन्देशहर, दत्त ये दो (पु०) नाम दूतकेहे । दूत्य यह एक (न०) नाम उत्त दूतके भाव और कर्मका हे ॥ १६ ॥ अध्वनीन, अध्वग, अध्वय, पथ, पथिक ये पाँच (पु०) नाम मार्ग चलनेवालेके ह । स्वामिक अर्थात् राजा, जमात्य अर्थात् मंत्री, सुहृत् अर्थात् मित्र, कोश अर्थात् खजाना, राष्ट्र अर्थात् देशकी पृथ्वी, किला, सेना ॥ १७ ॥ ये सात राज्यके अंग हैं और प्रकृति कहते हे । अगशब्द (न०) है और पुग्मे रहनेवालोंके समूहकोभी प्रकृति कहते ह । प्रकृतिशब्द (स्त्री०) है । सुवण आदि देकर शत्रुओंसे प्रीति उपजानेकी सधि कहते ह और सधिशब्द (पु०) है । विग्रह यह एक (पु०) नाम दूरके राज्यमें जग्गि लगाने और दूरभाग करनेका है । यान यह एक (न०) नाम शत्रुके प्रति जातनेकी इच्छामें गमन करनेका है । आसन यह एक (न०) नाम अपनी शक्तिके रुझने

पद्गुणाः शक्तयस्त्रिभुजः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥
 स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः क्रोशदण्डजम् ।
 सामदाने भेददण्डापित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥
 साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समौ ।
 भेदोपजापातुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥
 पञ्च त्रिष्वपडक्षीणो यरतृतीयाद्यगोचरः ।
 विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
 रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
 समौ विश्रम्भविश्वासौ श्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

पर किला वनाकर रहनेका है। द्वैध यह एक (न०) नाम बलवान्के साथ
 सांघि अर्थात् मिलाप और निर्बलके साथ विग्रह करनेका है। आश्रय
 यह एक (पु०) नाम शत्रुसे पीडित हुए राजाको बलवान् राजाके आश्र-
 य लेनेका है ॥ १८ ॥ आगेके ये सांघि आदि छः गुण हैं। प्रभाव, उत्साह,
 मंत्र इन्हींसे उपजी तीन शक्ति हैं। क्षय (पु०), स्थान (न०), वृद्धि
 (स्त्री०) यह नीति जाननेवालोंके त्रिवर्ग हैं ॥ १९ ॥ प्रताप, प्रभाव ये
 दो (पु०) नाम खजाना और सेनासे उपजे तेजका है। उपाय यह एक
 (पु०) नाम साम अर्थात् प्रिय वचन आदि, दान अर्थात् धन आदिका
 देना, भेद अर्थात् इकट्ठे मिले हुए शत्रुओंको भेदकर नष्ट करना और
 दण्ड इनका है ॥ २० ॥ साहस (न०), दम (पु०), दण्ड (पु०) ये
 तीन नाम दण्डके हैं। सामन् (नांत्), सान्त्व ये दो (न०) नाम मि-
 लापके हैं। भेद, उपजाप ये दो (पु०) नाम फूटके हैं। उपधा यह एक
 (स्त्री०) नाम धर्म, अर्थ, काम और भय करके मंत्री आदिकी परीक्षा
 करनेका है ॥ २१ ॥ अपडक्षीणसे आदि ले निःशलाका शब्दपर्यंत पांच
 शब्द (त्रि०) हैं। अपडक्षीण यह एक नाम तीसरे मनुष्यादिसे नहीं
 जाना जावे किंतु दो जनोंहीसे किया जाय उस सम्मतिका है। विविक्त,
 विजन, छन्न, निःशलाक, रहस् (सान्त न०) ॥ २२ ॥ रहस्, उपांशु ये
 सात नाम एकान्तके हैं। तहां रहस् और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं।
 रहस्य यह एक (त्रि०) नाम एकान्तमें होनेवालेका है। विश्रम्भ, विश्वास

अभ्रेपन्यायकलपारस्तु देशरूप समञ्जसम् ।
 युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
 न्याय्यं च त्रिषु पद संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
 अववादरह्ण निर्देशो निर्देशः शासन च स ॥ २५ ॥
 शिष्टिश्चाज्ञा च सस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।
 आगोऽपराधो मन्तुश्च समे तुद्धानबन्धने ॥ २६ ॥
 द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बलिः ।
 घटादिदेय शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
 उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।
 यौतकादि तु यद्देय सुदायो हरण च तत् ॥ २८ ॥
 तत्कालम्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।
 सादृष्टिक फलं मद्य उदकः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

ये दो (पु०) नाम विश्वासके हे । भ्रेप यह एक (पु०) नाम यथोचित स्वरूपसे गिरनेका है ॥ २३ ॥ अभ्रेप (पु०), न्याय (पु०), कल्प (पु०), देशरूप (न०), समजस (न०) ये पाँच नाम नीतिके ह । युक्त, औपयिक, लभ्य, भजमान, अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य ये छ नाम न्यायसे युक्त द्रव्य आदिके हे और छहो शब्द (त्रि०) हैं । संप्रधारणा (स्त्री०), समर्थन (न०) ये दो नाम युक्त और अयुक्त परीक्षाके हैं । अपवाद (पु०) निर्देश (पु०), निर्देश (पु०), शासन (न०) ॥ २५ ॥ शिष्टि (स्त्री०), आज्ञा (स्त्री०) ये छ नाम आज्ञाके हे । सस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये चार (स्त्री०) नाम न्यायमार्गकी स्थितिके हे । आगस् (मान्त न०), अपराध (पु०), मत्तु (पु०) ये तीन नाम अपराधके हैं । उद्धान, बधन ये दो (न०) नाम बधनके ह ॥ २६ ॥ द्विपाद्य यह एक (पु०) नाम दुगुने दंडका है । भागधेय, करो, बलि ये तीन (पु०) नाम राजग्राह्य भागके हे । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम घाट आदिमें ले जाने और लानेमें राजग्राह्य भाग अर्थात् महसूयका है । प्राभृत, प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन, उपग्राह्य, उपहार, उपदा ये छ नाम भेटके हैं । उपदा (स्त्री०) उपहार (पु०) भ्रेप (न०) हैं । सुदाय (पु०), हरण (न०) ये दो नाम कत्यादा विषे तथा उदकधरों जो विष्णु जाये उतरते हैं ॥ २८ ॥ नरका

अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
 महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
 प्रक्रिया त्वाधिकारः स्याच्चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
 नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
 छत्रं छात्रं त्वातपत्रं राजस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
 निवेशः शिविरं षण्ढे सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
 दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।
 मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

(पु०), तदात्व (न०) ये दो नाम वर्तमान कालके हैं । आयति यह एक (स्त्री०) नाम आनेवाले कालका है । सांख्यिक यह एक (न०) नाम तात्कालिक फलका है । उदर्क यह एक (पु०) नाम भाषि (होनेवाले) फलका है ॥ २९ ॥ अदृष्ट यह एक (न०) नाम अग्निके उत्पात और अत्यंत जलवृष्टिसे उत्पन्न भयका है । दृष्ट यह एक (न०) नाम स्वदेश और परदेशसे उत्पन्न चौर आदिके भयका है । अहिभय यह एक (न०) नाम राजाओंको अपने सहायकसे उपजे भयका है ॥ ३० ॥ प्रक्रिया (स्त्री०), अधिकार (पु०) ये दो नाम व्यवस्था स्थापनके हैं । चामर, प्रकीर्णक ये दो (न०) नाम चँवरके हैं । नृपासन, भद्रासन ये दो (न०) नाम मणि आदिते बने हुए राजाके आसनके हैं । सिंहासन यह एक (न०) नाम सुवर्णसे रचे हुए आसनका है ॥ ३१ ॥ छत्र, आतपत्र ये दो (न०) नाम छत्रके हैं । नृपलक्ष्मन् (नान्त) यह एक (न०) नाम राजाके छत्रका है । भद्रकुम्भ, पूर्णकुम्भ ये दो (पु०) नाम प्ररित कलशके हैं । भृङ्गार (पु०), कनकालुका (स्त्री०) ये दो नाम सोनेसे बने हुए पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ निवेश (पु०), शिविर (न०) ये दो नाम सेनाके निवासस्थानके हैं । सज्जन, उपरक्षण ये दो (न०) नाम पहरा (गस्त) के हैं । हस्ती, घोडा, रथ, प्यादा ये चार सेनाके अंग हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् (इन्नन्त), दन्तावल, हस्तिन् (इन्नन्त), द्विरद्, अनेकप, द्विप, मतंगज, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, करिन् (इन्नन्त) ॥ ३४ ॥

इभं स्तम्बेरमं पद्मी यूथनायस्तु यूथपः ।
 मदोत्कटो मदकलः कलम. करिशावकः ॥ ३५ ॥
 प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः समा उद्धान्तनिर्मदौ ।
 हास्तिक गजता वृन्दे करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥
 गण्डः कटो मदो दानं वमथुः कशीकर. ।
 कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
 अवग्रहो ललाट स्यादीपिका त्वक्षिभ्रुकम् ।
 अपाङ्गदेशो निर्याण कर्णमूल तु चूलिका ॥ ३८ ॥
 अथ कुम्भस्य बाह्वित्य प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
 आसनं स्कन्धदेशं स्यात्पद्मकं विन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥

इभ, स्तम्बेरम, पद्मिन् (इन्नन्त) ये पन्द्रह (पु०) नाम हाथीके हैं । यूथ
 नाथ, यूथप ये दो (पु०) नाम हाथियोंके समूहमें सुरप हाथीके हैं । मदो
 त्कट, मदकल ये दो (पु०) नाम मदसे उन्मत्त हुए हाथीके हैं । कलम,
 करिशावक ये दो (पु०) नाम हाथीके चञ्चेके हैं ॥ ३५ ॥ प्रभिन्न, गर्जित,
 मत्त ये तीन (पु०) नाम शिरसे हुए मदनाले हाथीके हैं । उद्धान्त, निर्मद
 ये दो (पु०) नाम मदमे रहित हाथीके हैं । हास्तिक (न०), गजता
 (स्त्री०) ये दो नाम हाथियोंके समूहके हैं । करिणी, धेनुका, वशा ये तीन
 (स्त्री०) नाम हाथीनीके हैं ॥ ३६ ॥ गड, कट ये दो (पु०) नाम हाथीके
 कपोलके हैं । मद (पु०), दान (न०) ये दो नाम हाथीके मदके पानीके
 हैं । वमथु, कशीकर ये दो (पु०) नाम हाथीकी सूडसे निरसे हुए पा
 नीके किन्तोंके हैं । कुम्भ यह एक (पु०) नाम हाथीके शिरके पिण्डोंका
 है । विदु यह एक (पु०) नाम दोनों उभोंके मध्यके आकाशस्थानका है ।
 ॥ ३७ ॥ अवग्रह (पु०) यह एक नाम हाथीके मन्त्रका है । ईपिका
 (स्त्री०), अक्षिभ्रुक (न०) ये दो नाम हस्तीके नेत्रगोलके हैं । निर्याण
 यह एक (न०) नाम हाथीके त्र्यक्षदेशका है । चूलिका यह एक (स्त्री०)
 नाम हाथीके कर्णमूलका है ॥ ३८ ॥ बाह्वित्य यह एक (न०) नाम
 हाथीके उभयें अधोभागका है । प्रतिमान यह एक (न०) नाम बाहि
 र्यके नीचे दोनोंके मध्यका है । आसन यह एक (न०) नाम हाथीके
 रंध्रेका है । पद्मक यह एक (न०) नाम हाथीके विदुओंके समूहका

पार्श्वभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।

द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥

तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽथ शृङ्खले ।

अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।

प्रवेण्यास्तगणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी ।

घोटके वीतितुंगतुरङ्गाश्चतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥

वाजिवाहार्वागन्धर्वहयसैन्धवमत्तयः ।

आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाल्लिका हयाः ।

यद्यश्चोऽश्वमेधीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

हे ॥ ३९ ॥ पक्षभाग यह एक (पु०) नाम हाथीके पार्श्वभागका है । दन्त-
भाग यह एक (पु०) नाम हाथीके अग्रभागका है । गात्र यह एक (न०)
नाम हाथीके पूर्व जंघा आदि देशका है । अवर - यह एक (न०) नाम
हाथीके जघा आदि पश्चाद्भागका है ॥ ४० ॥ तोत्र, वेणुक ये दो (न०)
नाम चावकके हैं । आलान यह एक (न०) नाम बंधनके आधारस्तंभ
(खूंटे) का है । शृंखल (त्रि०), अंदुक (पु०), निगड (पु० न०)
ये तीन नाम सांकलके हैं । अंकुश (पु० न०), सृणि (स्त्री०) ये दो नाम
अंकुशके हैं ॥ ४१ ॥ दूष्या, कक्ष्या, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम कम-
रबंधनके उपयोगी चर्मकी रस्सीके हैं । कल्पना, सज्जना ये दो (स्त्री०)
नाम मालिकको बैठानेके लिये हस्तीको सज्जी करनेके हैं । प्रवेणी (स्त्री०),
आस्तरण (न०), वर्ण (पु०), परिस्तोम (पु०), कुथ (पु० स्त्री०)
ये पांच नाम हस्तीकी पालखी वा झूलके हैं ॥ ४२ ॥ वीत यह एक (पु०)
नाम युद्ध आदिको नहीं सहनेवाले हाथी घोड़ेका है । वारी यह एक
(स्त्री०) नाम हाथी बंधनकी पृथ्वीका है । घोटक, वीति, तुरग, तुरंग,
अश्व, तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन (इन्नन्त), वाह, अर्बन् (नान्त), गंधर्व,
हय, सैन्धव, सप्ति ये तेरह (पु०) नाम घोड़ेके हैं । आजानेय यह एक
(पु०) नाम सुन्दर जातीमें उत्पन्न हुए घोड़ेका है । विनीत यह एक (पु०)
नाम सुन्दर सीखे हुए घोड़ेका है ॥ ४४ ॥ वनायुज यह एक (पु०)

पृष्ठ्य. स्थौरी सितः कर्को रथ्यो वोढा रथस्य य' ।
 बालः किशोरो वाम्यश्वा वडवा वाडव गणे ॥ ४६ ॥
 त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
 कश्यं तु मध्यमश्वाना हेपा हेरा च निस्वन' ॥ ४७ ॥
 निगालस्तु गलोदेशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्वत् ।
 आस्कन्दित धौरितक रोचित वरिगत प्लुतम् ॥ ४८ ॥
 गतयोऽभू' पश्च धारा घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।
 कविका तु खलीनोऽस्त्री शकं क्लीवे खु' पुमान् ॥ ४९ ॥

नाम वनायुदेशमें उत्पन्न होनेवाले घोडोंका है । पारसीक यह एक (पु०) नाम पारसदेशमें उत्पन्न हुए घोडेका है । कांजोज, वाहिक ये दो (पु०) नाम घोडोंके भेदोंके हैं । ययु यह एक (पु०) नाम अश्वमेध यज्ञके हित घोडेका है । जवन यह एक (पु०) नाम बहुत वेगवाले घोडेका है ॥ ४६ ॥ पृष्ठ्य, स्थौरिन् (इवन्त) ये दो (पु०) नाम जल आदिमें बोझको ले जानेवाले घोडोंके हैं । कर्क यह एक (पु०) नाम सुपेद घोडेका है । रथ्य यह एक (पु०) नाम रथमें जुलनेवाले घोडेका है । किशोर यह एक (पु०) नाम घोडेके बच्चेका है । वामी, अघा, वडवा ये तीन (स्त्री०) नाम घोडोंके हैं । वाडव यह एक (न०) नाम घोडियोंके समूहका है ॥ ४६ ॥ आश्वीन यह एक (त्रि०) नाम घोडा एक दिनमें जितना चले उस मार्गका है । कश्य यह एक (न०) नाम घोडोंके मध्यभागका है । हेपा, हेरा ये दो (स्त्री०) नाम घोडेके शब्द (हिनहिनाने) के हैं ॥ ४७ ॥ निगाल यह एक (पु०) नाम घोडेके जोतेकी साधिका है । अश्वीय, आश्व ये दो (न०) नाम घोडोंके समूहके हैं । आस्कन्दित यह एक (न०) नाम जहाँ वेगसे पीडित हुआ घोडा न सुने और न देते उस गतिकका है । धौरितक यह एक (न०) नाम घोडेकी चतुराईसे सरल गतिकका है । रोचित यह एक (न०) नाम घोडेकी दुलकी चालका है । वरिगत यह एक (न०) नाम घोडेकी टेढ़ी चालका है । प्लुत यह एक (न०) नाम घोडेकी चौकड़ी चालका है ॥ ४८ ॥ ये पाँच गति धारा (स्त्री०) कहलाती है । प्रोथ यह एक (पु० न०) नाम घोडेकी नासिकाका है । कविका (स्त्री०), खलीन (पु० न०) ये दो नाम घोडेकी लगामके हैं । शक (न०), सुर (पु०) ये दो नाम सुमके

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले वालहस्तश्च वालधिः ।
 त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥
 याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
 कर्णरिथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।
 क्लीवेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्गन्त्री कम्बलिवाहकम् ॥ ५२ ॥
 शिविका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेक्षादिका स्त्रियाम् ।
 उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥
 पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
 रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥
 त्रिषु द्वैपादयो रथ्या रथकट्या रथत्रजे ।
 धुः स्त्री क्लीवे यानमुखं स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥

हैं ॥ ४९ ॥ पुच्छ (पु० न०), लूम (न०), लांगूल (न०) ये तीन नाम
 पूंछके हैं । वालहस्त, वालधि ये दो (पु०) नाम वालोंके समूहसे युक्त
 पूंछके अग्रभागके हैं । उपावृत्त, लुठित ये दो (त्रि०) नाम घोड़ेके लो-
 टनेके हैं ॥ ५० ॥ शताङ्ग, स्यन्दन, रथ ये तीन (पु०) नाम युद्धके अर्थ
 बने हुए रथके हैं । पुष्परथ यह एक (पु०) नाम युद्धको छोड़ क्रीडाके
 लिये बनाये हुए रथका है ॥ ५१ ॥ कर्णरिथ (पु०), प्रवहण (न०);
 डयन (न०) ये तीन नाम वहलके हैं । अनस (सान्त न०), शकट (पु०
 न०) ये दो नाम गाड़ेके हैं । गन्त्री यह एक (स्त्री०) नाम बैलोंसे जुत-
 नेवाले रथका है ॥ ५२ ॥ शिविका (स्त्री०), याप्ययान (न०) ये दो
 नाम पालकीके हैं । दोला, प्रेक्षा ये दो (स्त्री०) नाम हिंडोलेके हैं । आगे
 (त्रि०) हैं । द्वैप, वैयाघ्र ये दो नाम सिंहकी चामडेसे मढे हुए रथके
 हैं ॥ ५३ ॥ पांडुकवलिन् (इन्द्रन्त) यह एक नाम सुपेद कंबलसे मढे
 हुए रथका है । कांबल यह एक नाम कंबलसे मढे हुए रथका है । वास्त्र
 यह एक नाम वस्त्रसे मढे हुए रथका है । आदिशब्दसे चार्म यह नाम चा-
 मसे मढे हुए रथका है ॥ ५४ ॥ द्वैप आदि शब्द (त्रि०) हैं । रथ्या,
 रथकट्या ये दो (स्त्री०) नाम रथोंके समूहके हैं । धुर (स्त्री०), यानमुख
 (न०) ये दो नाम रथ आदिकी धुरीके हैं । रथांग (न०), अपस्कर

चक्रं रथाङ्गं नस्यान्ते नेमि' स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
 पिण्डिका नाभिरक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणि' ॥ ५६ ॥
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरस्तु युगंधर ।
 अनुकर्षो दार्वध'स्थं प्रासङ्गो ना युगाद्युग । ॥ ५७ ॥
 सर्वं स्याद्वाहनं यान युग्य पत्रं च धोरणम् ।
 परम्परावाहन यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिन' ।
 नियन्ता प्राजिता यन्ता सूत' क्षत्ता च सारथिः ॥ ५९ ॥
 सव्येष्टदक्षिणस्थौ च सज्ञा रथकुटुम्बिन ।
 रथिन' स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिन' ॥ ६० ॥
 भटा योधाश्च योद्धार' सेनारक्षास्तु सैनिका ।
 सेनाया समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥

(पु०) ये दो नाम रथके अवयवमात्रके अर्थात् तागेके है ॥ ५५ ॥ चक्र, रथांग ये दो (न०) नाम रथके पहियोंके है । नेमि (स्त्री०), प्रधि (पु०) ये दो नाम रथके पहियोंकी नेमिके है । पिण्डिका, नाभि ये दो (स्त्री०) नाम पहियोंके मध्यभागके है । आणि यह एक (पु० स्त्री०) नाम रथकी लहोदर (कुलावे) का है ॥ ५६ ॥ रथगुप्ति (स्त्री०), वरुथ (पु०) ये दो नाम रथके लोहे आदिसे बनाये हुए आच्छादन अर्थात् छत्रीके है । कूबर, युगंधर ये दो (पु०) नाम रथकी डडीके है । अनुकर्ष यह एक (पु०) नाम रथके नीचेके भागके काठका है । प्रासग यह एक (पु०) नाम रथ आदिके जुआका है ॥ ५७ ॥ यान, युग्य, पत्र, धोरण ये चार (न०) नाम हस्ती घोडा आदि वाहनके है । वैनीतिक यह एक (पु० न०) नाम परंपराकी पालकी आदि वाहनका है ॥ ५८ ॥ आधोरण, हस्तिपक, हस्त्यारोह, निषादिन (इन्नन्त) ये चार (पु०) नाम हाथीघातके है । नियन्त (ऋकारान्त), प्राजित (ऋकारान्त), यत् (ऋकारान्त), सूत, क्षत्त (ऋकारान्त), सारथि ॥ ५९ ॥ सव्येष्ट, दक्षिणस्थ ये आठ (पु०) नाम सारथिके है । रथिन, स्यन्दनारोह ये दो (पु०) नाम रथमें बैठ युद्ध करनेवालेके है । अश्वारोह, सादिन (इन्नन्त) ये दो (पु०) अश्वपर बैठ युद्ध करनेवालेके है ॥ ६० ॥ भट, योध,

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
 परिधिरथः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
 कञ्चुको वारवाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये मकञ्चुकाः ।
 बध्नाते तत्सारसनमधिकाङ्गोऽय शीर्षकम् ॥ ६३ ॥
 शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽय तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
 उरश्छदः कंकटकौ जगरः करचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥
 आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च गिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
 संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकंकटः ॥ ६५ ॥
 त्रिष्वामुक्तादयो वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
 पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥
 पद्मश्च पदिकश्चाऽय पादातं पतिसंहतिः ।
 शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥

योधु (ऋ मरान्त) ये तीन (पु०) नाम युद्ध करनेवालेके हैं । सेनारक्ष, सैनिक ये दो (पु०) नाम पहिरेसे सेनाकी रक्षा करनेवालोंके हैं । सैन्य, सैनिक ये दो (पु०) नाम सेनामें संपूर्ण एकत्रित हुआंके हैं ॥ ६१ ॥ साहस्र, सहस्रिण (इन्नन्त) ये दो (न०) नाम हजार सेनावालोंके हैं । परिधिरथ, परिचर ये दो (पु०) नाम फौजके चारों ओर घूमनेवालोंके हैं । सेनानी, वाहिनीपति ये दो (पु०) नाम सेनाके पतिके हैं ॥ ६२ ॥ कञ्चुक, वारवाण ये दो (पु० न०) नाम वलतरके हैं । सरित्तन (न०), अधिकांग (पु०) ये दो नाम कमरपट्टीके हैं । शीर्षक ॥ ६३ ॥ शीर्षण्य, शिरस्त्र ये तीन (न०) नाम टोपके हैं । तनुत्र (न०), वर्मव (नान्त न०), दशन (न०), उरश्छद (पु०), कंकटक (पु०), जगर (पु०), कवच (पु० न०) ये सात नाम कवचके हैं ॥ ६४ ॥ आमुक्त, प्रतिमुक्त, पिनद्ध, अपिनद्ध ये चार (त्रि०) नाम कञ्चुकको धारण करनेवालेके हैं । संनद्ध, वर्मित, सज्ज, दंशित, व्यूढकंकट ये पांच (त्रि०) नाम कवचको धारण करनेवालेके हैं ॥ ६५ ॥ कावचिक यह एक (न०) नाम कवचको धारण करनेवालोंके समूहका है । पदाति, पत्ति, पदग, पादातिग, पदाति ॥ ६६ ॥ पद्म, पदिक ये सात (पु०) नाम प्यादेके हैं । पादात यह एक

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिख. कृतपुंखत् ।
 अपराद्धपृष्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्रुतसायकः ॥ ६८ ॥
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्मो निपङ्गयस्त्री धनुर्धर* ।
 स्यात्काण्डवास्तु काण्डीर* शाक्तीक शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥
 याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ।
 नैस्त्रिशिकोऽभिहेतिः स्यात्समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥
 चर्मी फलकपाणि. स्यात्पताकी वीजयन्तिक. ।
 अनुप्लव* सहायश्चाऽनुचरोऽभिचरः समा. ॥ ७१ ॥
 पुरोगाम्रेसरप्रष्ठाग्रत. सरपुरःसरा. ।
 पुरोगमः पुरोगामी मन्दगामी तु मन्थर. ॥ ७२ ॥
 जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यो जङ्घाकरिकजाह्निकौ ।
 तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जव* ॥ ७३ ॥

(न०) नाम प्यादोके समूहका है । आगेके सायुगीन शब्दतक (त्रि०)
 है । शस्त्राजीव, कांडपृष्ठ, आयुधीय, आयुधक ये चार नाम शस्त्रसे जीविका
 करनेवालेके है ॥ ६७ ॥ कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुख ये तीन नाम
 शरके फेंकनेमें कुशल अर्थात् तारदाजके है । अपराद्धपृष्क यह एक नाम
 निशानसे चुकनेवालेका है ॥ ६८ ॥ धन्विन् (इन्नन्त), धनुष्मत् (मत्त्वन्त),
 धानुष्क, निपगिन्, अस्त्रिन्, धनुर्धर ये छ नाम धनुषधारीके है । कांड
 षत् (मत्त्वन्त), कांडीर ये दो नाम शरको धारण करनेवालेके हैं ।
 शाक्तीक, शक्तिहेतिक ये दो नाम बरछी को धारण करनेवालेके हैं ॥ ६९ ॥
 याष्टीक यह एक नाम लाठीवालेका है । पारश्वधिक यह एक नाम फरसा
 वालेका है । नैस्त्रिशिक यह एक नाम तरवारवालेका है । प्रासिक, कौन्तिक
 ये दो नाम भालेसे लड़नेवालेके ह ॥ ७० ॥ चर्मिन् (इन्नन्त), फलक
 पाणि ये दो नाम ढालको धारण करनेवालेके हैं । पताकिन् (इन्नन्त),
 वीजयतिक ये दो नाम ध्वजा (निशान) को धारण करनेवालेके हैं । अ
 नुप्लव, सहाय, अनुचर, अभिचर ये चार नाम सेवकके हैं ॥ ७१ ॥ पुरोग,
 अग्रेसर, प्रष्ठ, अग्रत सर, पुर सर, पुरोगम, पुरोगामिन् (इन्नन्त) ये
 सात नाम आगे चलनेवालेके हैं । मन्दगामिन् (इन्नन्त), मन्थर ये दो
 नाम हौले २ चलनेवालेके ड ॥ ७२ ॥ जवाल, अतिजन ये दो नाम अ

जय्यो यः शक्यते जेतुं जैयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विपतः प्राति ॥ ७४ ॥
 सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रियोऽप्यभ्यमित्रिण इत्यपि ।
 ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
 स्यादुगस्वानुरसिलो रथिनो रथिको रथी ।
 कामगाम्यनुकामीनो ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तो जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।
 सांयुगीनो रणे माधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
 ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।
 वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमास्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
 व्यूहस्तु बलविन्यामो भेदा दण्डादयो युधि ।
 प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिणः सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥

त्यंत वेगसे चलनेवालेके हैं । जंघाकरिक, जांचिक ये दो नाम जंघाके बलसे जीनेवालेके हैं । तरस्वित्र (इन्नन्त), त्वरित, वेगित्र (इन्नन्त), प्रजवित्र (इन्नन्त) जवन, जव ये छः नाम शीघ्र चलनेवालेके हैं ॥ ७३ ॥ जय्य यह एक नाम जो शीघ्र जीतनेको शक्य हो उसका है । जैय यह एक नाम जीतनेके योग्यका है । जैत्र, जेतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जीतनेवालोंके हैं ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्रिय, अभ्यमित्रिण ये तीन नाम शत्रुओंके सन्मुख अपनी सामर्थ्यसे गमन करनेवालेके हैं । ऊर्जस्वल, ऊर्जास्वित्र (इन्नन्त) ये दो नाम अत्यंत पराक्रमीके हैं ॥ ७५ ॥ उरस्वत् (मत्वन्त), उरसिल ये दो नाम सुन्दर छातीवालेके हैं । रथिन, रथिक, रथित्र (इन्नन्त) ये तीन नाम रथके स्वामीके हैं । अनुकामीन यह एक नाम यथेच्छ गमनशीलका है । अत्यन्तीन यह एक नाम अत्यंत गमनशीलका है ॥ ७६ ॥ शूर, वीर, विक्रान्त ये तीन नाम शूरवीरके हैं । जेतृ (ऋकारान्त), जिष्णु, जित्वर ये तीन नाम जयशीलके हैं । सांयुगीन यह एक नाम युद्धकुशलका है । शस्त्राजीव आदि शब्द (त्रि०) हैं ॥ ७७ ॥ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना पृतना, अनीकिनी, चमू, वरूथिनी (ये स्त्री०), बल, सैन्य, चक्र (ये न०), अनीक (पु० न०) ये ग्यारह नाम सेनाके हैं ॥ ७८ ॥ व्यूह यह एक (पु०) नाम सेनाके युद्धके लिये रचना विशेषकरके स्थापन क-

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
 पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादारूपा यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमू ।
 अनीकिनी दशानीकिन्यक्षौहिण्यय सपदि ॥ ८१ ॥
 संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च विपत्त्या विपदापदी ।
 आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥
 धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
 इष्वासोऽप्यय कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥
 कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुनपुसकौ ।
 कोटिरस्याटनी गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥

रनेका है । मुखभागमें रथ हों पृष्ठभागमें घोड़े हो घोड़ोंके पीछे प्यादे हों और दोनों पार्श्वोंमें हाथी हो वह व्यूह कहाता है । व्यूहके दृढ मडल आदि भेदविशेष युद्धमें हैं । प्रत्यासार, व्यूहपाष्णि ये दो (पु०) नाम व्यूहके पृष्ठभागके हैं । प्रतिग्रह यह एक (पु०) नाम सेनाके पृष्ठभागका है ॥ ७९ ॥ जहां एक हाथी हो एक रथ हो तीन घोड़े और पाँच प्यादे हों वह पत्ति कहाती है । पत्तिके अवयवोंको तीन गुनाकरके उत्तरोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि होते हैं ॥ ८० ॥ तीन पत्तियोंका सेना-मुख होता है । तीन सेनामुखोंका गुल्म होता है । तीन गुल्मोंका गण होता है । तीन गणोंकी वाहिनी होती है । तीन वाहिनियोंकी पृतना होती है । तीन पृतनाओंकी चमू होती है । तीन चमूओंकी अनीकिनी होती है । तीन अनीकिनियोंकी दशानीकिनी और तीन दशानीकिनियोंकी एक अक्षौहिणी होती है । सेनामुख (न०), गुल्म (पु० न०), गण (पु०) और शेष (स्त्री०) है । सपत्ति ॥ ८१ ॥ सपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये चार (स्त्री०) नाम सपत्तिके हैं । विपत्ति, विपद्, आपद् ये तीन (स्त्री०) नाम विपत्तिके हैं । आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये चार (न०) नाम हथियारके हैं ॥ ८२ ॥ धनुस् (सान्त पु० न०), चाप (पु० न०), धन्वत्र (सान्त न०), शरासन (न०), कोदण्ड (न०), कार्मुक (न०), इष्वास (पु०) ये सात नाम धनुषके हैं । कालपृष्ठ यह एक (न०) नाम कर्णके धनुषका है ॥ ८३ ॥ गाण्डीव, गाण्डिव ये दो नाम अर्जुनके धनुषके हैं

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
 स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥
 लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च शराभ्यास उपासनम् ।
 पृषत्कवाणविशिखा अजिह्वगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥
 कलस्वमार्गणशराः पत्री रोप इष्टुर्द्रयोः ।
 प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः पक्षो वाजस्त्रिपूत्तरे ॥ ८७ ॥
 निरस्तः प्रहिते वाणे विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।
 तूणोपासङ्गूणीरानिषङ्गा इष्टुधिर्द्रयोः ॥ ८८ ॥
 तूण्यां खङ्गे तु निश्चिश्चन्द्रहासासिरिष्टयः ।
 कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥

और दोनों शब्द (पु० न०) हैं । कौटि, अटनी ये दो (स्त्री०) नाम धनुषके प्रान्तके हैं । गोधा (स्त्री०), तला (स्त्री० न०) ये दो नाम धनुषकी डोरीके शब्दको दूर करनेके लिये चमडके बंधविशेषके हैं ॥ ८४ ॥ लस्तक यह एक (पु०) नाम धनुषके मध्यभागका है । मौर्वी, ज्या, शिञ्जिनी, गुण ये चार नाम धनुषकी डोरीके हैं । गुणशब्द (पु०) शेष (स्त्री०) हैं । प्रत्यालीढ, आलीढ, समपद, वैशाख, मंडल ये पांच भेद धनुषको धारण करनेवालोंकी स्थितिके हैं । वैशाखशब्द (पु०) शेष (न०) हैं ॥ ८५ ॥ लक्ष, लक्ष्य, शरव्य ये तीन (न०) नाम बंधके हैं । शराभ्यास (पु०), उपासन (न०) ये दो नाम शर फेंकनेके अभ्यासके हैं । पृषत्क, वाण, विशिख, अजिह्वग, खग, आशुग ॥ ८६ ॥ कलस्व, मार्गण, शर, पत्रिद (इच्चन्त) , रोप, इष्टु ये बारह (पु०) नाम वाणके हैं । तहां इष्टुशब्द (पु० स्त्री०) है । प्रक्ष्वेडन नाराच ये दो (पु०) नाम लोहेसे बने हुए वाणके हैं । पक्ष, वाज ये दो (पु०) नाम ककपक्षी आदिके पंखके हैं । निरस्तशब्दसे आदि लेकर लिप्तक शब्दपर्यंत (त्रि०) हैं ॥ ८७ ॥ निरस्त यह एक नाम छोड़े हुए वाणका है । विषाक्त, दिग्ध, लिप्तक ये तीन नाम विषसे युक्त किये वाणके हैं । तूण, उपासङ्ग, नूणीर, निमग, इष्टुधि, तूणी ये छः नाम वाणके घर (तरकस) के हैं । तहां इष्टुधिशब्द (पु० स्त्री०), तूणीशब्द (स्त्री०), शेष (पु०) हैं ॥ ८८ ॥ खङ्ग, निश्चिश्, चन्द्रहास, असिरिष्टि, कौक्षेयक, मंडलाग्र, करवाल, कृपाण

त्सरु* खड्गादिमुष्टौ स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।
 फलकोऽर्धो फलं चर्म सग्राहो मुष्टिस्य यः ॥ ९० ॥
 हुघणो मुद्गरघनी स्यादीली कर्वालिका ।
 मिन्दपालः सृगस्तुल्यौ पण्डि* परिघातिनः ॥ ९१ ॥
 द्वयोः कुठारः स्वाधिति* परशुश्च परश्वध* ।
 स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च शुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥
 वा पुसि शल्प शंकुर्ना सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।
 प्रासस्तु कुन्त* कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोट्य* ॥ ९३ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वमन्त्रनार्यक* ।
 लोहाभिमारोऽध्वभृता राज्ञा नीगजनाविधे ॥ ९४ ॥

ये नव (पु०) नाम तलवारके हैं ॥ ८९ ॥ त्सरु यह एक (पु०) नाम तलवारके आदिनी मूठका है । मेखला यह एक (स्त्री०) नाम तलवारके म्यानका है । फलक (पु० न०), फल (न०), चर्मन (नाम०) ये तीन नाम डालक हैं । सग्राह यह एक (पु०) नाम डालकी ठका है ॥ ९० ॥ हुघण, मुद्गर, घन ये तीन (पु०) नाम मुद्गरके हैं । ईली, कर्वालिका ये दो (स्त्री०) नाम साँडेके हैं । मिन्दपाल, सृग दो (पु०) नाम गोफियाके हैं । परिघ, परिघातिन ये दो (पु०) नाम लोहेसे बंधे हुए हाथके प्रमाण टडके हैं ॥ ९१ ॥ कुठार स्वाधिति, परशु, परश्वध ये चार नाम कुल्हाड़ेके हैं । तहाँ मुट शब्द (पु० स्त्री०) शेष (पु०) है । शस्त्रो, असिपुत्री, शुरिका, आसिधेनुका ये चार (स्त्री०) नाम छुरीके हैं ॥ ९२ ॥ शल्प (पु० न०) शर (पु०) ये दो नाम बाणके अग्रभागके हैं । सर्वग (स्त्री०), तोमर (पु० न०) ये दो नाम गुरगुंजशरके हैं । प्रास, कुन्त ये दो (पु०) नाम भाँडेके हैं । कोण, पाल्य, श्रिकोट्य ये चार नाम तलवार आदि अग्रभागके हैं । कोणऽट्ट (पु०), शेष (स्त्री०) है ॥ ९३ ॥ सर्वाभिसार (पु०), सर्वौघ (पु०), सर्वमन्त्रन (न०) ये तीन नाम कुरुसैनके जमादके हैं । लोहाभिसार यह एक (पु०) नाम शस्त्रों को धरनेवाली राजालों को पहनानीके दिन तारा-मन्त्रायमे शर आदिनी-

यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।
 यात्रा ब्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
 स्यादासारः प्रसरणं प्रचक्रं चलितार्थकम् ।
 अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥
 वैतालिका बोधकराश्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।
 स्युर्मागधास्तु मगधा वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥
 संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।
 रेणुर्द्रयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥
 चूर्णे क्षौद्रः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।
 पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
 सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।
 अहं पूर्वमहं पूर्वामेत्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥

नर्पण लक्षणवाली विधिका है ॥ ९४ ॥ अभिषेणन यह एक (न०) नाम शत्रुके समीप सेनासहित सन्मुख गमनका है । यात्रा (स्त्री०), ब्रज्या (स्त्री०), अभिनिर्याण (न०), प्रस्थान (न०), गमन (न०), गम (पु०) ये छः नाम गमनके हैं ॥ ९५ ॥ आसार (पु०), प्रसरण (न०) ये दो नाम सेनाकी सब ओरकी व्याप्तिके हैं । प्रचक्र, चलित ये दो (न०) नाम चलती हुई सेनाके हैं । अभिक्रम यह एक (पु०) नाम युद्धमें शत्रुओंके प्रति भयरहित शूरवीरके गमनका है ॥ ९६ ॥ वैतालिक, बोधकर ये दो (पु०) नाम राजाओंको स्तुतिकरके प्रभातमें उठानेवालोंके हैं । चाक्रिक, घाण्टिक ये दो (पु०) नाम वन्दिनिवेशके हैं । मागध, मगध, वन्दिन (इन्नन्त), स्तुतिपाठक ये चार (पु०) नाम राजाकी स्तुति करनेवालेके हैं ॥ ९७ ॥ संशप्तक यह एक (पु०) नाम सौगदसे युद्धमेंसे नही मुख मोडनेवालेका है । रेणु, धूलि, पांसु, रजस् ये चार नाम धूलके हैं । तहां रेणुशब्द (पु० स्त्री०) है, धूलिशब्द (स्त्री०), पांसुशब्द (पु०) है, रजस्शब्द (सकारान्त न०) है ॥ ९८ ॥ चूर्ण (पु० न०), क्षौद्र (पु०) ये दो नाम पीसे हुए रजके हैं । समुत्पिञ्ज, पिञ्जल ये दो (पु०) नाम अत्यन्त आकुल हुई सेना आदिके हैं । पताका (स्त्री०), वैजयन्ती (स्त्री०), केतन (न०), ध्वज (पु० न०) ये चार नाम ध्वजाके हैं ॥ ९९ ॥ वीराशंसन

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सभावनात्मनि ।

अहमहमिका तु सा स्यात्परस्पर यो भवत्यद्दकारः ॥ १०१ ॥

द्रविणं तर. सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।

शक्ति. पराक्रम. प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥

वीरपान तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

युद्धमायोधनं जन्य प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥

मृधमास्कन्दनं सरुय समीकं सापरायिकम् ।

अस्त्रिया समरानीकरणा कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥

सप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसयुगा ।

अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवा. ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रिय. सयत्समित्याजिसमित्युध ।

नियुद्ध बाहुयुद्धेऽथ तुमुलं रणसकुले ॥ १०६ ॥

यह एक (न०) नाम अत्यंत भय देनेवाली युद्धभूमिका है ।
 अहपूर्विका यह एक (स्त्री०) नाम मे पहले मे पहले ऐसा आग्र
 हपूर्वक युद्धादि करनेका है ॥ १०० ॥ आहोपुरुषिका यह एक (स्त्री०)
 नाम गर्वसे अपने विषे सामर्थ्य प्रकट करनेका है । अहमहमिका यह एक
 (स्त्री०) नाम आपसमे अहकारका है ॥ १०१ ॥ द्रविण, तरस् (सान्त),
 सहस्, बल, शौर्य स्थामन्, शुष्म, शक्ति, पराक्रम, प्राण ये दश नाम परा
 क्रमके हैं । तहा शक्ति (स्त्री०), पराक्रम, प्राण (पु०), शेष (न०) ह ।
 विक्रम (पु०), अतिशक्तिता (स्त्री०) ये दो नाम अत्यंत शक्तिके
 ह ॥ १०२ ॥ वीरपान यह एक (पु०) नाम वर्तमान युद्धमे परिश्रमकी
 शान्तिके लिये तथा होनेवाले युद्धमे उत्साह बढ़ानेके लिये मदिरा पीनेका
 है । युद्ध आयोधन, जन्य, प्रधन, प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध, आस्कन्दन,
 सरुय, समीक, सापरायिक (यहातरु न० हैं), समर, अनीक, रण ये
 तीन (पु० न०), कलह, विग्रह ॥ १०४ ॥ सप्रहार, अभिसंपात, कलि,
 संस्फोट, सयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहवा ॥ १०५ ॥
 समुदाय यहातरु (पु०) ह, सयत् (पु०स्त्री०), समिति, आजि, समित,
 युध ये चार नाम (स्त्री०) ह । इस प्रकार ये इकतीस नाम युद्धके ह ।
 नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये दो (न०) नाम बाहुयुद्धके ह । तुमुल यह एक (न०)

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्कारिणां घटना घटा ।
 क्रन्दनं योधसंरावो वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥
 विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरी समौ ।
 प्रसभं तु वलात्कारो हठोऽथ स्वलितं छलम् ॥ १०८ ॥
 अजन्यं ह्रीवमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।
 मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं विजयो जयः ।
 वैरशुद्धिः प्रतीकागे वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
 प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
 अपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥

नाम युद्धके विषे आपसमें बहुत पीडाका है ॥ १०६ ॥ क्ष्वेडा (स्त्री०), सिंहनाद (पु०) ये दो नाम वीरोंके सिंहशब्दके समान शब्दविशेषके हैं । घटा यह एक (स्त्री०) नाम हस्तियोंके युद्धमें संघटनका है । क्रन्दन यह एक (न०) नाम योद्धाओंके आक्रोशपूर्वक शब्दका है । वृंहित यह एक (न०) नाम हस्तियोंके गर्जनेका है ॥ १०७ ॥ विस्फार यह एक (पु०) नाम धनुषके शब्दका है । पटह, आडंबर ये दो (पु०) नाम संग्रामकी ध्वनि अर्थात् जुझाऊ नगाडेके हैं । प्रसभ (न०), वलात्कार (पु०), हठ (पु०) ये तीन नाम हठके हैं । स्वलित, छल ये दो (न०) नाम युद्धमें धोखा देनेके हैं ॥ १०८ ॥ अजन्य (न०), उत्पात (पु०), उपसर्ग (पु०) ये तीन नाम उत्पातके हैं । मूर्च्छा (स्त्री०), कश्मल (न०), मोह (पु०) ये तीन नाम मूर्च्छाके हैं । अवमर्द (पु०) पीडन (न०) ये दो नाम खेती आदिसे संपन्न हुए देशको परचक्रसे पीडा होनेके हैं ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये दो (न०) नाम शत्रुके सन्मुख जानेके अथवा शस्त्रोंसे उसकी हिम्मत तोड़ देनेके हैं । विजय, जय ये दो (पु०) नाम जयके हैं । वैरशुद्धि (स्त्री०), प्रतीकार (पु०), वैरनिर्यातन (न०) ये तीन नाम वैरको दूर करनेके हैं ॥ ११० ॥ प्रद्राव, उद्राव, संद्राव, सदाव, विद्रव, द्रव, अपक्रम, अपयान ये अठ नाम भागनेके हैं । तहां अपयान (न०), शेष (पु०) हैं । पराजय यह एक (पु०) नाम रणमें भंगका है ॥ १११ ॥ पराजित, पराभूत ये दो नाम

पराजितपराभूतौ त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।
 प्रमापणं निवर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥
 प्रवासनं परासनं निपृदनं निहिंसनम् ।
 निर्वासनं सज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥
 निस्तरहणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
 निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
 उद्घासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।
 आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥
 स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
 अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११६ ॥
 परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिता ।
 मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चित्ता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
 कवन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।
 उमशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥

निर्जित (हारे हुए) के हैं । नष्ट, तिरोहित ये दो नाम छिपे हुएके हैं
 और पराजित आदि चारों शब्द (त्रि०) हैं । प्रमापण, निवर्हण, निष्का
 रण, विशारण ॥ ११२ ॥ प्रवासन, परासन, निपृदन, निहिंसन, निर्वासन,
 सज्ञपन, निर्ग्रन्थन, अपासन ॥ ११३ ॥ निस्तरहण, निहनन, क्षणन, परिव
 र्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिघातन ॥ ११४ ॥ उद्घासन, प्रमथन,
 क्रथन, उद्घासन यहाँतक (न०) और आगेके (पु०) हैं । आलम्भ,
 पिञ्ज, विशर, घात, उन्माथ, वधा ये तीस नाम मारनेके हैं ॥ ११५ ॥
 पञ्चता, कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाश, मृत्यु, मरण, निधन
 ये दश नाम मरणके हैं । तहाँ निधनशब्द (पु० न०) पञ्चता (स्त्री०)
 मृत्यु (स्त्री० पु०) मरण (न०) और शेष (पु०) हैं ॥ ११६ ॥
 परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत, प्रमीत ये सात नाम मरे
 हुएके हैं और (त्रि०) हैं । चित्ता, चित्या, चितिये तीन (स्त्री०) नाम
 चित्ताके हैं ॥ ११७ ॥ कवन्ध यह एक (पु० न०) नाम गिरसे रहित
 युद्ध करते हुए धटका है । उमशान, पितृवन ये दो (न०) नाम प्रेतभूमिके
 हैं । कुणप (पु०), शव (पु० न०) ये दो नाम मुदके हैं ॥ ११८ ॥

प्रग्रहोपग्रहौ बन्धां कारा स्याद्बन्धनालये ।

पुंसि भूमन्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥

आयुर्जीवितकालो ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः ९ ।

ऊरव्य ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।

सेवा श्वृत्तिः नृत्नं कृषिरुञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

द्वे याचितायाचितयोर्ग्रथासंख्यं मृतमृते ।

सत्यानृतं वणिग्भावं स्याद्वर्णं पर्युद्भवन्म् ॥ ३ ॥

प्रग्रह (पु०), उपग्रह (पु०), बन्दी (स्त्री०) ये तीन नाम कैदके हैं । कारा यह एक (स्त्री०) नाम जेलखानेका है । असु, प्राण ये दो (पु०) नाम प्राणके हैं । तहां प्राणशब्द बहुवचनांत है । असुशब्द विकल्पकरके बहुवचनांत है । जीव (पु०), असुधारण (न०) ये दो नाम प्राणधारणके हैं ॥ ११९ ॥ आयुस् यह एक (न०) नाम उमरका है । जीवातु यह एक (पु०) नाम जीवनकी औषधका है । इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैश्यवर्गः । ऊरव्य, ऊरुज, अर्य, वैश्य, भूमिस्पृश ये छः (पु०) नाम वैश्यके हैं । आजीव (पु०), जीविका (स्त्री०), वार्ता (स्त्री०), वृत्ति (स्त्री०), वर्तन (न०), जीवन (न०) ये छः नाम जीविका-भात्रके हैं ॥ १ ॥ कृषि (स्त्री०) अर्थात् खेती करना, पाशुपाल्य (न०) अर्थात् गौ आदिकी रक्षा करना, वाणिज्य (न०) अर्थात् खरीदना बेचना ये तीन वृत्ति वैश्यकी हैं । सेवा, श्वृत्ति अर्थात् कुत्तेकी वृत्ति ये दो (स्त्री०) नाम सेवाके हैं यह निन्दनीय है । अनृत (न०), कृषि (स्त्री०) ये दो नाम खेती करनेके हैं । और जीवोंकी हिंसा होनेसे खेतीभी निन्दनीय है । उञ्छ यह एक (पु०) नाम दुकान आदिमें पड़े हुए दानोंको इकट्ठे करनेका है । शिल यह एक (न०) नाम खेत आदिके स्वामीके त्यागे हुए अन्नके दानोंको ग्रहण करनेका है । ये दोनों ऋत (न०) कहलाते हैं ॥ २ ॥ मृत यह एक (न०) नाम मांगनेवालेको अन्न दिये जानेका

उद्धारोऽर्धप्रयोगस्तु कुसीद वृद्धिजीविका ।
 याञ्जयात्त याचितकं नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥
 उग्रमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोऽस्तुप्राहकौ क्रमात् ।
 कुसीदको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥
 क्षेत्राजीव' कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः ।
 क्षेत्र त्रैहेयशालेय त्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥ ६ ॥
 यव्य यवक्य पष्टिक्यं यवादिभवन हि यत् ।
 तिल्यं तैलीनवन्मापोमाणुमङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥
 मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवक्षमम् ।
 " शाकक्षेत्रादिके शाकशाकट शाकशाकिनम् । "
 बीजाकृतं तूमकृष्टे सित्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

हे । अमृत यह एक (न०) नाम विना मांगनेवाले को अन्न आदि देनेका है । सत्यावृत यह एक (न०) नाम खरीदना बेचना आदि वाणिज्यका है । कर्षोक्ति इत्तमे कुष्ठ सत्य और कुष्ठ झूठ चोखना पढता है । ऋण (न०) पर्युद्धचन (न०) ॥ ३ ॥ उद्धार (पु०) ये तीन नाम कजेके है । अर्धप्रयोग (पु०), कुसीद (न०), वृद्धिजीविका (स्त्री०) ये तीन नाम व्याजके है । याचितक यह एक (न०) नाम मांगनेसे प्राप्त हुएका है आपमित्यक यह एक (न०) नाम नियमसे प्राप्त हुएका है ॥ ४ ॥ उत्तमर्ण यह एक (पु०) नाम नाहजारना है । अधमर्ण यह एक (पु०) नाम कजदारका है । कुसीद, वार्धुषिक, वृद्ध्याजीव, वार्धुषि ये चार (पु०) नाम व्याजपारके है ॥ ५ ॥ क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषिक, कृषीवल ये चार (पु०) नाम खेती करनेवालेके है । आंगरे शब्द (त्रि०) है । त्रैहेय यह एक नाम त्रीहि अन्न उपजनेके खेतना है । शालेय यह एक नाम शालिखेत उपजनेके खेतना है ॥ ६ ॥ यव्य यह एक नाम जव उपजनेके खेतना है । यवक्य यह एक नाम अन्यजव उपजनेके खेतना है । पष्टिक्य यह एक नाम माठी अर्थात् माठ रातियोंमें जो पके उस धानके खेतना है । तिल्य, तैलीन ये दो नाम तिल उपजनेके खेतके है । माप्य, मापीण ये दो नाम उठके उपजनेके खेतके है । उग्र, अधीन ये दो नाम अलसी उपजनेके खेतके है । अन्ध, अणवीन ये दो नाम अण अणधिशव उपजनेके खेतके है । भाग्य, भागीन ये दो नाम भाग उपजनेके खेतके है ॥ ७ ॥ मौद्गीन यह एक नाम मृग

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥

द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।

खारीवापस्तु खारीक उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।

कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥

लोष्ठानि लेष्टवः पुंसि कोटिशो लोष्टभेदनः ।

प्राजनं तोदनं तोत्रं खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥

उपजनेके खेतका है । कौद्रवीण यह एक नाम कोदू उपजनेके खेतका है । चाणकीन यह एक नाम चने उपजनेके खेतका है । गौधूमीन यह एक नाम गेहूं उपजनेके खेतका है । ऐसे अन्यभी जानने । “ शाकशाकट, शाक-शाकिन ये दो नाम शाक उपजनेके खेतके हैं । ” बीजाकृत यह एक नाम पहले बोया पीछे जोते ऐसे खेतका है । सीत्य, कृष्ट, हल्य ये तीन नाम जुते हुए खेतके हैं ॥८॥ त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहल्य, त्रिसीत्य ये चार नाम तीन वार जोते हुए खेतके हैं । द्विगुणाकृत, द्वितीयाकृत, द्विहल्य, द्विसीत्य, शंबाकृत ये पांच नाम दो वार जुते हुए खेतके हैं ॥ ९ ॥ द्रोण आदि परिमित अन्नके बोये जाने आदिमें द्रौणादिक होते हैं । जैसे-द्रौणिक यह एक नाम जिसमें द्रोणभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । आढकिक यह एक नाम आढकभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । प्रास्थिक यह एक नाम प्रस्थभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । आदि शब्दसे द्रौणिक आदि परिमित अन्न जिस कटावमें पक सके उसकेभी हैं । खारीक यह एक नाम खारीभर अन्न जिसमें बोया जाय उस खेतका है । उत्तमर्णसे आदि ले खारीकशब्दपर्यंत (त्रि०) हैं ॥ १० ॥ वप्र (पु० न०), केदार (पु०), क्षेत्र (न०) ये तीन नाम खेतके हैं । कैदारक, कैदार्य, क्षेत्र, कैदारिक ये चार (न०) नाम खेतके समूहके हैं ॥ ११ ॥ लोष्ट (पु० न०), लेष्टु- (पु०) ये दो नाम माटीके टुकडेके हैं । कोटिश, लोष्टभेदन ये दो (पु०) नाम माटीके डेले फोडनेकी मोगरीके हैं । प्राजन, तोदन, तोत्र ये तीन (न०) नाम चावक तथा सांटेके हैं । खनित्र, अवदारण ये दो (न०) नाम कुदार या कसीके हैं ॥ १२ ॥

दात्र लवित्रमावन्वो योत्रं योक्त्रमथो फलम् ।
 निरीश कुट्टक फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
 गोदारणं च सीरोऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
 ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
 पुसि मेघिः खलेदारु न्यस्त यत्पशुबन्धने ।
 आशुर्वीहि पाटलः स्याच्छितशक्यवै समौ ॥ १५ ॥
 तोक्मस्तु तत्र हरिते कलायस्तु सतीनकः ।
 हरेणुण्णुकी चास्मिन्कोरदृपस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
 मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्टकी ।
 वनमुद्गे सर्षपे तु द्वौ तन्तुमकटम्बकौ ॥ १७ ॥
 सिद्धार्थस्त्वेष धवलो गोधूमः सुमनः समौ ।
 स्याद्यावकस्तु कुल्मापश्रृणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥

दात्र, लवित्र ये दो (न०) नाम दरांतीके हैं । आवध (पु०), योत्र (न०), योक्त्र (न०) ये तीन नाम जोतेके रस्तीके हैं । फ०, निरीश, कुट्टक, फाल (पु० न०), कृषक (पु०) ये पाच नाम जोतनेके हलकी कुशके समीप जो काठ है उसके हैं । लांगल, हल ॥ १३ ॥ गोदारण, सीरि ये चार नाम हलके हैं । सीरिशब्द (पु०) शेष (न०) हैं । शम्या (स्त्री०), युगकीलक (पु०) ये दो नाम कीलके हैं । ईषा (स्त्री०), लांगलदण्ड (पु०) ये दो नाम हरिशके हैं । सीता यह एक (स्त्री०) नाम हलकी रेसाका है ॥ १४ ॥ मोघि (पु०), खलेदारु (न०) ये दो नाम बेल आदि बांधनेके काष्ठखडके हैं । आशु, वीहि, पाटल ये तीन (पु०) नाम धोहिके ह । शितशक, यन ये दो (पु०) नाम जनोंके हैं ॥ १५ ॥ तोक्म यह एक (पु०) नाम हरे जत्रका है । कलाय, सतीनक, हरेणु, रेणुगा ये चार (पु०) नाम मटरके हैं । कोरदृप, कोद्रव ये दो (पु०) नाम कोद्रके हैं ॥ १६ ॥ मंगल्यक, मसूर ये दो (पु०) नाम मसूरके हैं । मकुष्टक, मयुष्टक, वनमुद्ग ये तीन (पु०) नाम मोठके हैं । मर्षप, तन्तुम, कटम्बक ये तीन (पु०) नाम सरसोंके हैं ॥ १७ ॥ सिद्धार्थ यह एक (पु०) नाम सुपेद सरसोंका है । गोधूम, सुमन ये दो (पु०) नाम गेहूके हैं । यावक, कुल्माप ये दो (पु०) नाम आधे पत्रे हुए जत्र आदि

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

स्त्रियौ कंगुप्रियंगू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

मातुलानी तु भङ्गायां व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्काणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छरतृणादिनः ॥ २१ ॥

नाडी नालं च काण्डोऽस्य पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

कडङ्गरो बुसं ह्रीवे धान्यत्वाचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे शमी शिम्बा त्रिषूत्तरे ।

ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥

वा कुलथीके है । चणक, हरिमंयक ये दो (पु०) नाम चनोंके हैं ॥ १८ ॥ तिलपेज, तिलपिंज ये दो (पु०) नाम फलरहित तिल अर्थात् रानतिलके हैं । क्षव (पु०), क्षुताभिजनन (पु०), राजिका (स्त्री०), कृष्णिका (स्त्री०), आसुरी (स्त्री०) ये पांच नाम राईके है ॥ १९ ॥ कंगु, प्रियंगु ये दो (स्त्री०) नाम कांगनीके है । अतसी, उमा, क्षुमा ये तीन (स्त्री०) नाम अलसीके हैं । मातुलानी, भंगा ये दो (स्त्री०) नाम सनके हैं । अणु यह एक (पु०) नाम व्रीहिके भेदका है ॥ २० ॥ किंशारु यह एक (पु०) नाम किशारी अन्नका है । इसका अग्रभाग सुईके समान होता है । काणिश यह एक (पु० न०) नाम खेतीके नये शिर अथवा बालका है । धान्य (न०), व्रीहि (पु०), स्तंबकरि (पु०) ये तीन नाम व्रीहि जव आदिके हैं । स्तंब यह एक (पु०) नाम तृण जव आदिके गुच्छेका है ॥ २१ ॥ नाडी (स्त्री०), नाल (न०) ये दो नाम इस गुच्छेके कांडके हैं । पलाल यह एक (पु० न०) नाम फलरहित कांडका है । कडंगर (पु०), बुस (न०) ये दो नाम भूसके हैं । तुष यह एक (पु०) नाम अन्नके छिलके (भूसी) का है ॥ २२ ॥ शूक यह एक (पु० न०) नाम महीन चिकना तीक्ष्ण और पैना ऐसे अग्रभागवाले जव आदिका है । शमी, शिम्बा ये दो (स्त्री०) नाम संगरीके हैं । आगे ऋद्धा आदि चारों शब्द वाच्यलिंगी हैं । ऋद्ध, आवसित ये दो नाम तृणसे अलग किये अन्नके हैं । पूत, बहुलीकृत ये दो नाम छाज आदिसे शुद्ध किये

मापादयः शमीधान्ये शकधान्ये यवादयः ।
 शालयः कलमाद्याश्च पष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥
 तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।
 अयोत्र मुसलोऽस्त्री स्यादुद्वलमुल्लखलम् ॥ २५ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री चालनी तितउः पुमान् ।
 स्यूतप्रसेवौ कण्डोलपिटा कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥
 समानी रसवत्या तु पाकस्थानमहानसे ।
 पौरोगवस्तदध्यक्ष' सूपकागस्तु वह्यवाः ॥ २७ ॥
 आरालिका जान्धसिका' सूटा औदनिका गुणा' ।
 आपूपिका कान्दविको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
 अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ।
 अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकट्यपि ह्यमन्त्यपि ॥ २९ ॥

अन्नके है । यहाँ तक (त्रि०) है ॥ २३ ॥ उद्व, मूग आदि शमीधान्य
 कहाते है । जप गेहू आदि शकधान्य कहाते है । बली नालपाला और
 बहुत पानीसे उपजा ऐसा व्रीहिविशेष मूग कहालाता है । कलम आदि
 और साठ रात्रिमें पकनेवाले ये सब चावल शाकि कहाते हैं । ये मय
 माप आदिशब्द (पु०) है ॥ २४ ॥ नीवार, श्यामाक आदि (पु०) नाम
 तृणधान्यके है । गवेधु, गवेधुका ये दो (स्त्री०) नाम मुनिजनोंके अन्न
 है । अयोत्र (न०), मुसल (पु० न०) ये दो नाम मूसलके है । उद्वल,
 उल्लखल ये दो (न०) नाम ओगलीक ह ॥ २५ ॥ प्रस्फोटन (न०), शूर्प
 (पु० न०) ये दो नाम छाजके ह । चालनी (स्त्री०), तितउ (पु०) ये दो
 नाम चालनीके है । स्यूत, प्रसेव ये दो (पु०) नाम चोरेक ह । कण्डोल,
 पिटा ये दो (पु०) नाम पिठारीके ह । कट, किलिञ्जक ये दो (पु०) नाम
 छबडेके ह ॥ २६ ॥ रसवती (स्त्री०), पाकस्थान (न०), महानस (पु०
 न०) ये तीन नाम पाकशालाके ह । पौरोगव यह एक नाम पाकशाला
 मारिका है । सूपकार, वह्य ॥ २७ ॥ आरालिक, आधसिक, सूटा, औद
 निक, गुण ये सात (पु०) नाम रमादयेके है । आपूपिक, कान्दविक,
 भक्ष्यकार ये तीन नाम पक्वान बनानेवालेके है । तहाँ पौरोगव आदि और
 भक्ष्यकारपर्यंत शब्द (त्रि०) है ॥ २८ ॥ अश्मन्त (न०), उद्धान (न०),

हसन्यप्यथ न स्त्री स्याद्झारोऽलातमुल्मुकम् ।

ह्रीवेऽम्बरीपं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी द्वियाम् ॥ ३० ॥

अलञ्जरः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलन्तिका ।

पिठरः स्थाल्पुत्रा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

घटः कुटनिपावस्त्री शरावो वर्धमानकः ।

ऋजीपं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥

कुतुः कृत्तेः स्नेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥

दर्विः कम्बिः खजाका च स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।

अस्त्री शाकं हरितकं शिशुस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥

अधिश्रयणी (स्त्री०), चुल्लि (स्त्री०), अंतिका (स्त्री०) ये पांच नाम
 चूल्हेके हैं । अंगारधानिका, अंगारशकटी, हसंती ॥ २९ ॥ हसनी ये
 चार (स्त्री०) नाम अंगीठीके हैं । अंगार, अलात, उल्मुक ये तीन नाम
 अंगारेके हैं । तहां अंगार शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । अंबरीप,
 भ्राष्ट्र ये दो नाम चने आदिके भूननेके पात्रके हैं । तहां अंबरीप शब्द
 (न०) और भ्राष्ट्रशब्द (पु०) है । कन्दु (पु० स्त्री०), स्वेदनी (स्त्री०) ये
 दो नाम मदिरा आदिके भट्टीके हैं ॥ ३० ॥ अलंजर, मणिक ये दो (पु०)
 नाम बड़े मटकेके हैं । कर्करी, आलु, गलतिका ये तीन (स्त्री०) नाम
 झारीके हैं । पिठर (पु०), स्थाली (स्त्री०), उखा (स्त्री०), कुंड
 (न०) ये चार नाम नैकनीके हैं । कलश ॥ ३१ ॥ घट, कुट, निप ये
 चार नाम कलशके हैं । तहां कलशशब्द (त्रि०) है । घटशब्द (पु०
 स्त्री०) शेष (पु०) हैं । शराव (पु० न०), वर्धमानक (पु०) ये दो
 नाम सकोरेके हैं । ऋजीप, पिष्टपचन ये दो (न०) नाम तवा कढाईके
 हैं । कंस (पु० न०), पानभाजन (न०) ये दो नाम दूध आदि पीनेके
 पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ कुतु यह एक (स्त्री०) नाम चामसे बने तेल आदिकी
 कुप्पीका है । कुतुप यह एक (पु०) नाम छोटी कुप्पीका है । ये सर्व
 पूर्वोक्त पात्र आवपन आदि संज्ञक हैं । आवपन, भांड, पात्र, अमत्र, भाजन
 ये पांच (न०) नाम वर्तनके हैं । पात्रशब्द (पु०) भी पाया जाता है
 ॥ ३३ ॥ दर्वि, कंबि, खजाका ये तीन (स्त्री०) नाम कडलीके हैं । तर्दू-

कलम्बश्च कडम्बश्च वेपवार उपस्करः ।

तित्तिडीक च चुक्र च वृक्षाम्लमथ वेल्जम् ॥ ३५ ॥

मरीच कोलक कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

सुपवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका ।

आर्द्रक शृङ्गवेर स्यादथ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥

कुस्तुम्बरु च धान्याकमथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुसकयोर्विश्व नागर विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आरनालकसौवीरकुल्मापाभिषुनानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि जतुक बाह्लीक हिंगु रामठम् ।

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥

(पु०), दासहस्तक (पु०) ये दो नाम काठकी कडलीके है । शाक (पु० न०), हरितक (न०), शिशु (पु०) ये तीन नाम बयुवा आदि शाकके है ॥ ३४ ॥ कलब, कडब ये दो (पु०) नाम शाककी नालके है । वेपवार, उपस्कर ये दो (पु०) नाम मसालके है । तित्तिडीक(न०), चुक्र (पु० न०), वृक्षाम्ल (न०) ये तीन नाम खटाईके है । वेल्ज ॥ ३५ ॥ मरीच, कोलक, कृष्ण, उपण, धर्मपत्तन ये च (न०) नाम मिरचके है । जीरक (पु०), जरण (पु०), अजाजी (स्त्री०), कणा (स्त्री०) ये चार नाम जीरके है ॥ ३६ ॥ सुपवी, कारवी, पृथ्वी, पृथु, काला, उपकुञ्चिका ये छ (स्त्री०) नाम काले जीरके है । आर्द्रक, शृङ्गवेर ये दो (न०) नाम अदरखके है । छत्रा (स्त्री०), वितुन्नक (न०) ॥ ३७ ॥ कुस्तुवरु (न०), धान्याक (न०) ये चार नाम धनियेके है । शुण्ठी (स्त्री०), महौषध (न०), विश्व (स्त्री० न०), नागर (न०), विश्वभेषज (न०) ये पांच नाम साँठके है ॥ ३८ ॥ आरनालक, सौवीर, कुल्मापाभिषुत, अवन्तिसोम, धान्याम्ल, कुञ्जल, काञ्जिक ये सात (न०) नाम कांजीके है ॥ ३९ ॥ सहस्रवेधि, जतुक, बाह्लीक, हिंगु, रामठ ये पांच (न०) नाम हींगके है । हिंगुशब्द (पु०) भी है । कारवी, पृथ्वी, वाष्पिका, कवरी, पृथु ये पांच (स्त्री०) नाम हींगुपत्रीके है ॥ ४० ॥

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।
 सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥
 सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
 रौमकं वसुकं पाक्यं विडं च कृनके द्वयम् ॥ ४२ ॥
 सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ।
 मत्स्यंडी फाणितं खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
 कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।
 स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
 शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।
 प्रणीतमुपसंपन्नं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

निशा, काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी ये पांच (स्त्री०) नाम हलदीके
 हैं । अक्षीव, वशिर ये दो (न०) नाम सामुद्रनमकके हैं ॥ ४१ ॥ सैन्धवः,
 शीतशिव, माणिमन्थ, सिन्धुज ये चार नाम सैन्धे नमकके हैं । तहां सैन्धव-
 शब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं । रौमक, वसुक ये दो (न०) नाम
 सांभर नमकके हैं । पाक्य, विड ये दो (न०) नाम खारी नमकके हैं
 ॥ ४२ ॥ सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये तीन (न०) नाम मधुर नमकके हैं ।
 तिलक यह एक (न०) नाम काले नमकका है । मत्स्यण्डी (स्त्री०),
 फाणित (न०) ये दो नाम रावके हैं । शर्करा, सिता ये दो (स्त्री०)
 नाम खांड और मिश्रीके हैं ॥ ४३ ॥ कूर्चिका यह एक (स्त्री०) नाम
 दही आदिसे बनी दूधकी विकृतिका है । रसाला, मार्जिता ये दो (स्त्री०)
 नाम दही, शहद, खांड, मिरच और अदरख आदिसे बनाये शिखरनका
 हैं । तेमन, निष्ठान ये दो (न०) नाम दही आदि व्यञ्जन (कढीविशेष)
 के हैं । इससे आगे वासितपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं ॥ ४४ ॥ शूला-
 कृत, भटित्र, शूल्य ये तीन नाम शूलकरके पकाये हुए मांस आदिके हैं ।
 उख्य, पैठर ये दो नाम टोकनीमें पकाये अन्न आदिके हैं । प्रणीत, उपसं-
 म्पन्न ये दो नाम रस आदिसे सम्पन्न किये व्यञ्जन आदिके हैं । प्रयस्त,
 सुसंस्कृत ये दो नाम जतन करके घृतमें पकाये पकवानके हैं ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छलं तु विजिल संमृष्ट शोधितं समे ।
 चिक्रणं मसृण स्निग्ध तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥
 आपकं पौलिरभ्यूषो लाजा पुंभूम्नि चाक्षताः ।
 पृथुकः स्याच्चिपिटको धाना भ्रष्टयवे स्त्रिय ॥ ४७ ॥
 पूषोऽपूपः पिष्टकः स्यात्करम्मो दधिसक्तवः ।
 भिःसा स्त्री मक्तमन्धोऽन्नमोदनोऽस्त्री स दीदिवि ॥ ४८ ॥
 भिस्तटा दग्धिका सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।
 मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥
 यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ।
 “ म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं कृमरस्तु तिलौदन । ”
 गव्य त्रिषु गवा सर्व गोविद् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥

पिच्छल, विजिल ये दो नाम मण्डसे युत हुई दही आदि अर्थात् मट्टाके
 है । समृष्ट, शोधित ये दो नाम विने हुए अन्न आदिके है । चिक्रण,
 मसृण, स्निग्ध ये तीन नाम चिकनेके है । भावित, वासित ये दो नाम
 जीरे आदिसे अधिवासित (छोके हुए) के है । यहातरु (त्रि०) ह
 ॥ ४६ ॥ आपक (न०), पौलि (पु०), अभ्यूष (पु०) ये तीन
 नाम पूरी आदिके है । लाज यह एक नाम धानकी सीलका है । अतत
 यह एक नाम गीले जव चावल इन दोनोंका है । ये दोनों शब्द बहुवच
 तात (पु०) है । पृथुक, चिपिटक ये दो (पु०) नाम चावलोके सुरसु
 रीके है । धाना यह एक नाम जवकी धानीका है और बहुवचनान्त तथा
 (स्त्री०) है ॥ ४७ ॥ पूष, अपूप, पिष्टक ये तीन (पु०) नाम मालपु
 वेके है । करम्म यह एक (पु०) नाम दहीसे युत हुए सत्तुओंका है ।
 भि सा (स्त्री०), मक्त (न०), अन्धस् (न०), अन्न (न०), ओदन
 (पु० न०), दीदिवि (पु०) ये छ नाम अन्नके है ॥ ४८ ॥ भि सटा,
 दग्धिका ये दो (स्त्री०) नाम जले हुए अन्नके है । मण्ड यह एक (पु०
 न०) नाम सब द्रव्योंके द्रव अर्थात् झोलका है । मासर, आचाम, निस्त्राव
 ये तीन (पु०) नाम चावल आदिके मांडके है ॥ ४९ ॥ यवागू, उष्णिका,
 श्राण, विलेपी, तरला ये पांच (स्त्री०) नाम गुडयानी और पतला भात
 (लपसी आदि) के है । “ म्रक्षण, अभ्यजन ये दो (न०) नाम तेलके

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।
 पयस्यमाज्यदध्यादि द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥ ५१ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतम् ।
 तत्तु हैयंगवीनं यद्धचोगोदोहोद्धवं घृतम् ॥ ५२ ॥
 दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः ।
 तक्रं हुद्श्विन्मथितं पादाम्बुधाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
 मण्डं दधिभवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ।
 अशनाया बुभुक्षा क्षुद् ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
 सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 उदन्या तु पिपासा तृद् तर्षा जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥

हैं । कृसर यह एक (पु०) नाम तिलोंसहित चांवलोंका है । ” गव्य
 यह एक (त्रि०) नाम गौके दूध आदिका है । गोविश (शान्त), गो-
 मय ये दो (पु० न०) नाम गोबरके हैं ॥ ५० ॥ करीष यह एक (पु०
 न०) नाम अरने उपलेका है । दुग्ध, क्षीर, पयसु (सान्त) ये तीन (न०)
 नाम दूधके हैं । पयस्य यह एक (न०) नाम दूधके विकार दही आदिका
 है । द्रप्स यह एक (न०) नाम पतले दहीका है ॥ ५१ ॥ घृत, आज्य,
 हविस् (सान्त), सर्पिः (सान्त) ये चार (न०) नाम घृतके हैं । नव-
 नीत, नवोद्धृत ये दो (न०) नाम नौनी (मक्खन) के हैं । हैयंगवीन
 यह एक (न०) नाम पहले दिनके दूधसे निकासे हुए नौनी घृतका है
 ॥ ५२ ॥ दण्डाहत, कालशेय, अरिष्ट, गोरस ये चार नाम रवाईसे विलोये
 गये गोरसके हैं । तहां गोरस (पु०) और शेष (न०) हैं । तक्र यह
 एक (न०) नाम चौथाई भाग पानी मिलाकर रवाईसे मथित किये मठका
 है । उद्श्वित् यह एक (न०) नाम आधा पानी मिलाकर रवाईसे विलोये
 गयेका है । मथित यह एक (न०) नाम पानी नहीं मिलाया जावे और
 रवाईसे मथित किये जानेवालेका है ॥ ५३ ॥ मस्तु यह एक (न०) नाम
 दहीके पानीका है । पीयूष यह एक (पु०) नाम नवीन व्याई हुई गौके
 सात दिन भीतरके दूधका है । अशनाया, बुभुक्षा, क्षुद् ये तीन (स्त्री०)
 नाम भूखके हैं । ग्रास, कवल ये दो (पु०) नाम ग्रासके हैं ॥ ५४ ॥
 सपीति (स्त्री०), तुल्यपान (न०) ये दो नाम सहपानके हैं । सग्धि (स्त्री०),

जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
 सौहित्यं तर्पणं वृत्तिं फेला भुक्तसमुद्भितम् ॥ ५६ ॥
 कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
 गोपे गोपालगोसरय्यगोधुगामीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥
 गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं द्वौ गवीश्वरे ।
 गोमान्गोमी गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवा व्रजे ॥ ५८ ॥
 त्रिष्वशितगवीनं तद्रावो यत्राशिता पुरा ।
 उक्षा भद्रो वलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
 अनङ्गान्सौरभेयो गौरुक्षणा संहतिरौक्षकम् ।
 गव्या गोत्रा गवा वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥

सहभोजन (न०) ये दो नाम सहभोजनके हैं । उदन्या, पिपासा, तृप् (पान्त), तर्प ये चार नाम तृपाके हैं । तहां तर्पशब्द (पु०) और शेष (स्त्री०) हैं । जग्धि (स्त्री०) भोजन (न०) ॥ ५६ ॥ जेमन (न०), लेह (पु०), आहार (पु०), निघास (पु०), न्याद (पु०) ये सात नाम भोजनके हैं । सौहित्य (न०), तर्पण (न०), वृत्ति (स्त्री०) ये तीन नाम वृत्तिके हैं । फेला यह एक (स्त्री०) नाम पहले खाके पीछे छोडेका है ॥ ५६ ॥ काम, प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट, यथेप्सित ये छ नाम यथेप्सित (चाह) के हैं और सब क्रियाविशेषण हैं और क्रियाविशेषण सर्वदा (न०) द्वितीयाके एक वचनमें रहता है । गोप, गोपाल, गोसरय्य, गोधु, आभीर, बल्लव ये छ (पु०) नाम गोपालके हैं ॥ ५७ ॥ पादबन्धन यह एक (न०) नाम गौ भेसे आदिका है । गोमत् (मत्वन्त), गोमित्र (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम गायिके मालिकके हैं । गोकुल, गोधन ये दो (न०) नाम गायिके समूहके हैं ॥ ५८ ॥ आशितगवीन यह एक नाम जहां गौ पहले चरती ही उस स्थानका है यह शब्द (त्रि०) है । उक्षत्र, भद्र, वलीवर्द ऋषभ, वृषभ, वृष ॥ ५९ ॥ अनङ्ग (हान्न), सौरभेय, गो ये नत्र (पु०) नाम बेलके हैं । तहां अक्षत्रशब्द नकारान्त (पु०) है । औक्षक यह एक नाम बेलके समूहका है । गव्या, गोत्रा ये दो (स्त्री०) नाम गायिके समूहके हैं । वात्सक यह एक (न०) नाम बल्लवके समूहका है । धैनुक यह एक (न०) नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥

वृषो महान्महोक्षः स्याद्बृद्धोक्षस्तु जरद्भवः ।
 उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥
 शकृत्कारिस्तु वत्सः स्याद्दम्यवत्सतरौ समौ ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपतिर्गिद्वरः ॥ ६२ ॥
 स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्त्रा तु गलकम्बलः ।
 स्यान्नस्तिनस्तु नस्योतः प्रष्टगाह युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
 युगादीनां तु बोहारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
 खनाति तेन तद्वोदाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥
 धूर्वेह धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः ।
 उभावेकधुगीणैकधुरावेकधुगवहे ॥ ६५ ॥
 स तु सर्वधुगीणः स्याद्यो वै सर्वधुगवहः ।
 माहेयी सौरभेयी गौरुस्त्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥

महोक्ष यह एक (पु०) नाम बड़े बैलका है । बृद्धोक्ष, जरद्भव ये दो (पु०) नाम बड़े बैलके हैं । जातोक्ष यह एक (पु०) नाम बैलभावको प्राप्त हुए बछड़ेका है । तर्णक यह एक (पु०) नाम तत्काल उपजे बछड़ेका है ॥ ६१ ॥ शकृत्कारि, वत्स ये दो (पु०) नाम बछड़ेके हैं । दम्य, वत्सतर ये दो (पु०) नाम जवान बछड़ेके हैं । आर्षभ्य यह एक (पु०) नाम गोपतिपनेके योग्य बैलका है । षण्ड, गोपति, गिद्वर ये तीन (पु०) नाम सांडके हैं ॥ ६२ ॥ वह यह एक (पु०) नाम बैलके कंधेका है । सास्त्रा (स्त्री०), गलकम्बल (पु०) ये दो नाम गौके कठमें लबी चामके हैं । नस्तिन, नस्योत ये दो (पु०) नाम नये हुए बैलके हैं । प्रष्टगाह, युगपार्श्वग ये दो (पु०) नाम बैलको ढीला करनेके लिये कंधेपर बंधे हुए काठवाले बैलके हैं ॥ ६३ ॥ युग्य यह एक (पु०) नाम जोड़ीमें जानेवाले बैलका है । प्रासङ्ग्य यह एक (पु०) नाम जुएके ले जानेवाले बैलका है । शाकट यह एक (पु०) नाम गाडीको ले जानेवाले बैलका है । हालिक, सैरिक ये दो (पु०) नाम हलके खोदनेवाले बैलके हैं ॥ ६४ ॥ धूर्वेह, धुर्य, धौरेय, धुरीण, धुरंधर ये पाँच (पु०) नाम धुरमें वहनेवाले (जोत) बैलके हैं । एकधुरीण, एकधुर, एकधुरावह ये तीन (पु०) नाम एक धुरको ले जानेवाले बैलके हैं ॥ ६५ ॥ सर्वधुरीण यह एक (पु०) नाम सब धुरोंको ले जानेवाले बैलका है ।

अर्जुन्यया रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी ।
वर्णादिभेदात्सज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
द्विहायनी द्विवर्षा गौरिकाब्दा त्वेकहायनी ।
चतुरब्दा चतुर्हायण्येव त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥
वशा बन्ध्याऽवतोका तु ऋवद्गर्भाऽथ सधिनी ।
आक्रान्ता वृषभेणाय वेदद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥
काल्योपसर्षा प्रजने प्रष्टौही बालगर्भिणी ।
स्यादचण्डी तु सुकरा बहुसृतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥
चिरप्रसूता बष्कयणी धेनु स्यान्नवसूतिका ।
सुवता सुखसंदोह्या पीनोन्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥

आगेके शब्द समासमीनातक (स्त्री०) है । माहेयी, सौरभेयी, गो, उन्ना, मातृ, शृद्धिणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी, अद्या, रोहिणी ये नव नाम गौके हैं । नैचिकी यह एक नाम उत्तम गौका है । वर्णके अवयव आदि भेदसे शबली धवला आदि सज्ञा है । चित्रवर्णवाली शबली होती है । सुपेदवर्णवाली धवला होती है । ऐसे लम्बकर्णा आदिभी जाननी ॥ ६७ ॥ द्विहायनी यह एक नाम दो वर्षकी उमरवाली बछियाका है । एकहायनी यह एक नाम एक वर्षकी उमरवाली बछियाका है । चतुर्हायणी यह एक नाम चार वर्षकी उमरवाली गौका है । त्रिहायणी यह एक नाम तीन वर्षकी उमरवाली गौका है ॥ ६८ ॥ वशा, बन्ध्या ये दो नाम वाइके है । अवतोका, ऋवद्गर्भा ये दो नाम अरुस्मात् पतिन हुए गर्भवालीके है । सधिनी यह एक नाम बेलके सग मैथुनके अर्थ जानेवाली गौका है । वेदत यह एक नाम बेलके सग मैथुन करनेसे गर्भको नाशनेवाली गौका है ॥ ६९ ॥ काल्या, उपसर्षा ये दो नाम गर्भको ग्रहण करनेमें प्राप्त समयवाली गौका है । प्रष्टौही यह एक नाम बालाही गर्भवाली हो जाय उस गौका है । अचण्डी, सुकरा ये दो नाम सीधी गौके है । बहुसृति, परेष्टुका ये दो नाम बहुतवार व्याई हुई गौके है ॥ ७० ॥ चिरप्रसूता, बष्कयणी ये दो नाम बहुतकालसे व्यानेवाली गौके है । धेनु, नवसूतिका ये दो नाम नवीन व्याई हुई गौके है । सुवता, सुखसंदोह्या ये दो नाम सुन्दरशील स्वभाववाली गौके है । पीनोन्नी, पीवरस्तनी ये दो नाम मोटे थनोवाली गौके है ॥ ७१ ॥

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
 समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
 ऊधस्तु ह्रीवमापीनं समौ शिवककीलकौ ।
 न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥
 वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।
 कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
 उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करभः शिशुः ।
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥
 अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।
 मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
 उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ठकौरभ्रकाजकम् ।
 चक्रीबन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा ये दो नाम द्रोण अर्थात् एक हजार चौबीस तोले
 दूध देनेवाली गौके हैं । धेनुष्या यह एक नाम गिरवां रखी हुई गौका है ।
 समांसमीना यह एक नाम प्रतिवर्ष व्यानेवाली गौका है । यहाँतक (स्त्री०)
 हैं ॥ ७२ ॥ ऊधस् (सान्त), आपीन ये दो (न०) नाम गौके थनके
 हैं । शिवक, कीलक ये दो (पु०) नाम खूंटके हैं । दामन (नान्त स्त्री०
 न०), संदान (न०) ये दो नाम बांधनेकी रज्जूके हैं । दामनी यह एक
 (स्त्री०) नाम जिससे बैल आदि पशु बंधे उस रज्जूका है ॥ ७३ ॥ वैशाख,
 मन्थ, मन्थान, मथिन, (नान्त), मथदण्डक ये पांच (पु०) नाम मन्थ-
 नदण्ड अर्थात् रईके हैं । कुठर, दण्डविष्कम्भ ये दो (पु०) नाम जि-
 समें रई बांधी जावे उस खंभेके हैं । मन्थनी, गर्गरी ये दो (स्त्री०) नाम
 वही मथनेके पात्रके हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र, क्रमेलक, मय, महांग ये चार (पु०)
 नाम ऊंटके हैं । करभ यह एक (पु०) नाम ऊंटके बच्चेका है । शृंखल
 यह एक (पु०) नाम काठसे बंधे हुए ऊंटके बच्चेका है ॥ ७५ ॥ अजा,
 छागी ये दो (स्त्री०) नाम बकरेके हैं । शुभ, छाग, वस्त, छागलक,
 अज ये पांच (पु०) नाम बकरेके हैं । मेढ्र, उरभ्र, उरण, उर्णायु, मेष,
 वृष्णि, एडक ये सात (पु०) नाम भेडके हैं । आवि यहभी नाम भेडका
 है ॥ ७६ ॥ औष्ठक यह एक (न०) नाम ऊंटके समूहका है । औरभ्रक

वैदेहक सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।

पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च स ॥ ७८ ॥

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः क्रयिकः क्रयिकौ समौ ।

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्तोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥

नीवी परिपणो मूलधनं लाभोऽधिकं फलम् ।

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥

पुमानुपनिषिन्यासः प्रतिदानं तदर्पणम् ।

क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥

विक्रेयं पाणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ।

स्त्रीषु सत्यापनं सत्यकारं सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥

यह एक (न०) नाम भेड़ोंके समूहका है । आजकल यह एक (न०) नाम बकरियोंके समूहका है । चन्वीवत, चालेय, रासभ, गर्दभ, खर ये पाँच (पु०) नाम गधेके हैं ॥ ७७ ॥ वैदेहक, सार्थवाह, नैगम, वाणिज, वणिज् (जान्त), पण्याजीव, आपणिक, क्रयविक्रयिक ये आठ (पु०) नाम क्रयविक्रय करनेवाले साहूकारके हैं ॥ ७८ ॥ विक्रेतु (क्रयारान्त), विक्रयिक ये दो (पु०) नाम बेचनेवालेके हैं । क्रयिक, क्रयिक ये दो (पु०) नाम खरीदनेवालेके हैं । वाणिज्य (न०), वणिज्या (स्त्री०) ये दो नाम व्यवहारके हैं । मृत्य (न०), वस्त (पु०), अवक्रय (पु०) ये तीन नाम मोलके हैं ॥ ७९ ॥ नीवी (स्त्री०), परिपण (पु० न०), मूलधन (न०) ये तीन नाम क्रयविक्रय आदि व्यवहारमें मूलधनके हैं । लाभ यह एक (पु०) नाम नफेका है । परिदान (न०), परीवर्त्त (पु०), नैमेय (पु०), निमय (पु०) ये चार नाम परिवर्त्तन अर्थात् लैनदेनेके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि, न्यास ये दो (पु०) नाम धरोहरके हैं । प्रतिदान यह एक (न०) धरोहर फेर देनेका है । क्रय्य यह एक नाम दुकानमें फैलाये हुए द्रव्यका है । क्रय्य यह एक नाम क्रेतव्य मात्र (खरीदनेके योग्य) का है ॥ ८१ ॥ विक्रेय, पाणितव्य, पण्य ये तीन (त्रि०) नाम बेचनेके योग्य वस्तुके हैं । सत्यापन (न०), सत्यकार (पु०), सत्याकृति (स्त्री०) ये तीन नाम निश्चय मुझे खरीदना है इस प्रकार सत्य करने अर्थात् बयाना देनेके हैं ॥ ८२ ॥

विपणो विक्रयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।
 विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥
 संख्यार्थं द्विवहुत्वे स्तस्तापु चानवतेः द्वियः ।
 पंक्तेः शतसहस्रादि ऋषादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥
 यौनवं द्रुवयं पाठ्यमिति यानार्थकं त्रयम् ।
 मानं तुलांगुलिप्रस्थैर्गुञ्जाः पञ्चाद्यमापकः ॥ ८५ ॥
 ते षोडशाक्षः कर्पाऽस्त्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।
 सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
 तुला स्त्रिषां पलशतं भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
 आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

विपण, विक्रय ये दो (पु०) नाम विकनेके हैं । एक शब्दसे लेके अष्टादश शब्दपर्यंत संख्याशब्द संख्येयमें वर्तमान हुए (त्रि०) हैं । जैसे—‘एका शाटी, एकः पटः, एक वस्त्रम्, दश द्वियः, दश पुरुषाः, दश कुलानि’ ऐसे जानना । विंशतिसे आरभ कर परार्द्धपर्यन्त सब संख्या सब कालमें संख्येय और संख्यामें एकवचनांत होती है । जैसे ‘एकोनविंशतिः पटः’ ॥ ८३ ॥ संख्यार्थमें वर्तमान विंशति आदि संख्याका द्विवचन बहुवचन होता है । जैसे—‘ द्वे विंशती ’ यह पद है । विंशतिशब्दसे लेके नवतिशब्दपर्यंत संख्यावाचकशब्द (स्त्री०) हैं । पक्ति अर्थात् दश संख्यासे लेकर दशगुनी संख्याके क्रमसे शत सहस्र आदि होते हैं । जैसे—एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुदं, अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि, अन्त्य, मध्य, परार्द्ध ऐसे दशगुणोत्तर संज्ञा हैं ॥ ८४ ॥ यौतव, द्रुवय, पाठ्य ये तीन (न०) शब्द परिमाणवाचक हैं । तुलामान, अगुलिमान, प्रस्थमान इन्हींकरके उसकी नाप तोल होंती है । पांच चिरमिटियोंका आद्यमापक होता है । यह (पु०) है ॥ ८५ ॥ सोलह मापककी अक्ष (पु०) और कर्ष होता है । तहां कर्षशब्द (पु० न०) है । चार कर्षोंका पल होता है । यह शब्द (न०) है । सुवर्ण, विरत ये दो (पु० न०) नाम अस्सी रत्तीभर सोनेके हैं । सोनेका दो पल कुरुविस्त कहाता है । यह शब्द (पु०) है ॥ ८६ ॥ तुलाशब्द (स्त्री०) है । सौ पलोंकी तुला होती है । भार यह एक (पु०) नाम बीस तुलाओंके भारका

कार्पापण. कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पण. ।
 अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चक ॥ ८८ ॥
 कुडव. प्रस्थ इत्याद्या. परिमाणार्थका. पृथक् ।
 पादस्तुरीयो भाग' स्यादशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
 द्रव्य वित्तं स्वापतेय रिक्थमृथ्य धनं वसु ।
 हिरण्यं द्रविण शुभ्रमर्थैरविमवा अपि ॥ ९० ॥
 स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते ।
 ताभ्या यदन्यत्तत्कृष्य रूप्य तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥
 गारुत्मत मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणि. ।
 शोणरत्न लोहितक. पद्मरागोऽथ मीत्तिकम् ॥ ९२ ॥

हे । आचित यह एक (पु० न०) नाम दश भारीका है । गाटेमे चल सकनेवालाभी भार आचित कहाता है ॥ ८७ ॥ कार्पापण, कार्पापण ये दो (पु०) नाम रूप्यके हे । पण यह एक (पु०) नाम ताम्रिके कणप्रमाण पैसेका है । आढक (पु० न०), द्रोण (पु० न०), खारी (स्त्री०), वाह (पु०), निकुञ्चक (पु०) ॥ ८८ ॥ कुटव (पु०), प्रथ (पु०) आदि शब्द अलग २ परिमाणके वाचक ह । नही चार पलका कुटव, चार कुटवोंका प्रस्थ, चार प्रस्थोंका आढक, चार आढकोंका द्रोण, दो द्रोणोंका शूर्प, डेढ शूर्पकी खारी और दो शूर्पोंकी द्रोणी इसीको भाग कहते हैं । और चार भारका वाह इस प्रकार तोल है । पाद यह एक (पु०) नाम रूप्ये आदिके चौथाई भागका है । अश, भागवत्तये तीन (पु०) नाम भागमात्रके हे ॥ ८९ ॥ द्रव्य, वित्त, स्वापतेय, रिक्थ, मृथ्य, धन, वसु हिरण्य, द्रविण, शुभ्र यर्हानक (न०) हे, अर्थ (पु०), रै (पु०), निमः (पु०) ये तेह नाम धनके हे ॥ ९० ॥ कोश (पु०), हिण्य (न०) ये दो नाम घटे और अनघटे हुए सोने चाँदीके ह । रूप्य यह एक (न०) नाम घटे तथा अनघटे हुए सोने आदिका है । रूप्य यह एक (न०) नाम तामा चाँदा भिगके बने हुएका है ॥ ९१ ॥ गारुत्मत (न०), मरकत (न०), अश्मगर्भ (पु०), हरिन्मणि (पु०) ये चार नाम पत्थरके हे । शोणरत्न (न०), लोहितक (पु०), पद्मराग (पु०) ये तीन नाम मार्फ

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुंनपुंसकम् ।
 रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥
 स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
 तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥
 चामीकरं जातरूपं महारजतकाश्वने ।
 रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
 अलंकारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।
 दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
 रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ताम्रकम् ।
 शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवर्गिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
 लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
 अश्मसारोऽथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
 सर्वं च तेजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।
 क्षारः काचोऽथ चषलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥

कके हैं । मौक्तिक (न०) ॥ ९२ ॥ मुक्ता (स्त्री०) ये दो नाम मोतीके हैं । विद्रुम (पु०), प्रवाल (पु० न०) ये दो नाम मूंगेके हैं । रत्न (न०), मणि (पु० स्त्री०) ये दो नाम मरकत आदि मणिके हैं । और येही दो नाम मोती और मूंगेके हैं ॥ ९३ ॥ स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेमन् (नान्त), हाटक, तपनीय, शातकुंभ, गांगेय, भर्मन् (नान्त), कर्बुर ॥ ९४ ॥ चामीकर, जातरूप, महारजत, कांचन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद ये उन्नीस नाम सोनेके हैं । तहां अष्टापदशब्द (पु० न०) शेष (न०) हैं ॥ ९५ ॥ शृंगीकनक यह एक (पु० न०) नाम सोनेके गहनेका है । दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर, श्वेत ये पांच (न०) नाम चांदीके हैं ॥ ९६ ॥ रीति (स्त्री०), आरकूट (पु० न०) ये दो नाम पित्तलके हैं । ताम्रक, शुल्व, म्लेच्छमुख, द्व्यष्ट, वरिष्ठ, उदुम्बर ये छः (न०) नाम तांबेके हैं ॥ ९७ ॥ लोह, शस्त्रक, तीक्ष्ण, पिण्ड, कालायस, अयस्, अश्मसार ये सात नाम लोहेके हैं । लोहशब्द (पु० न०), अश्मसार (पु०), शेष (न०) हैं । मंडूर (पु० न०), सिंहाण (न०) ये दो नाम लोहके मैलके हैं ॥ ९८ ॥ लोह यह एक (न०) नाम सोने चांदी

गवलं माहिष शृङ्गमभ्रक गिरिजामले ।
 स्रोतोञ्जन तु सौवीर कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
 तुत्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।
 कर्परी दार्विकाकाथोद्भव तुत्य रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥
 रसगर्म तार्क्ष्यशैल गन्वाश्मनि तु गन्धिकः ।
 सौगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
 रीतिपुष्प पुष्पकेतु पुष्पक कुसुमाञ्जनम् ।
 पिञ्जर पीतन तालमाल च हरितालके ॥ १०३ ॥
 गैरेयमथर्यं गिरिजमश्मज च शिलाजतु ।
 बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
 डिण्डीरोऽब्धिकफ फेन सिन्दूरं नागसंभवम् ।
 नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिष्टम् ॥ १०५ ॥

आदिका है। कुशी यह एक (स्त्री०) नाम लोहेके विकारका है। क्षार, काच ये दो (पु०) नाम काचके हैं। चपल (पु०), रस (पु०), सूत (पु० न०), पारद (पु० न०) ये चार नाम पारेके हैं ॥ ९९ ॥ गवल यह एक (न०) नाम भैसेके सींगका है। अभ्रक, गिरिजामल ये दो (न०) नाम भोडलके हैं। स्रोतोञ्जन, सौवीर, कापोताञ्जन, यामुन ये चार (न०) नाम सुमेके हैं ॥ १०० ॥ तुत्याञ्जन, शिखिग्रीव, वितुन्नक, मयूरक, कर्परी (स्त्री०) ये पाँच (न०) नाम नीलेथोथेके हैं। दारुहृत्दीके छायामें समान भाग चक्रीका दूध मिलाकर सस्कार करनेसे तुत्याञ्जन रसाञ्जन (दोनों न०) आदिक होता है ॥ १०१ ॥ रसगर्म, तार्क्ष्यशैल ये भी दो (न०) नाम रसाञ्जनके हैं। गधाश्मन् (नान्त), गधिक, सौगधिक ये तीन (पु०) नाम गधकके हैं। चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका ये तीन (स्त्री०) नाम नीले सुमेके हैं ॥ १०२ ॥ रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पुष्पक, कुसुमाञ्जन ये चार (न०) नाम जस्तके फूलके हैं। पिञ्जर, पीतन, ताल, आल, हरिताल ये पाँच (न०) नाम हरतालके हैं ॥ १०३ ॥ गैरेय, अथर्य, गिरिज, अश्मज शिलाजतु ये पाँच (न०) नाम शिलाजीतके हैं। बोल, गधरस, प्राण, पिण्ड, गोपरस ये पाँच (पु०) नाम गधरसके हैं ॥ १०४ ॥ डिण्डीर, अब्धिकफ, फेन ये तीन (पु०) नाम समुद्रजागके हैं। सिन्दूर, नागसंभव ये दो (न०) नाम सिन्दूरके हैं। नाग, सीसक, योगेष्ट, वप ये

रङ्गवङ्गे अथ पिचुस्तूलोऽथ कमलोत्तरम् ।

स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥

मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्णं शशलोमनि ।

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥

पाकयोऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

सौवर्चलं स्याद्गुचकं त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥

शिशुजं श्वेतमरिचं मोरटं मूलमैक्षवम् ।

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटिकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥

गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

त्रिकटु व्यूषणं व्योषं त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥

इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

खार (न०) नाम सीसेके हैं । त्रपु, पिचुट ॥ १०६ ॥ रंग, वंग ये चार (न०) नाम रांगके हैं । पिचु, तूल ये दो (पु०) नाम कपासके हैं । कमलोत्तर, कुसुम्भ, वह्निशिख, महारजन ये चार (न०) नाम कसूमके हैं ॥ १०६ ॥ मेषकंवल, ऊर्णायु ये दो (पु०) नाम कंबलके हैं । शशोर्ण, शशलोमन् (नान्त) ये दो (न०) नाम शशाके रोमके हैं । मधु, क्षौद्र, माक्षिक ये तीन (न०) नाम शहदके हैं । मधूच्छिष्ट, सिक्थक ये दो (न०) नाम मोमके हैं ॥ १०७ ॥ मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका ये चार- (स्त्री०) नाम मनशिलके हैं । नैपाली, कुनटी, गोला ये तीन (स्त्री०) नाम नहपाली मनशिलके हैं । यवक्षार, यवाग्रज ॥ १०८ ॥ पाक्य ये तीन (पु०) नाम जवाखारके हैं । सर्जिकाक्षार, कापोत, सुखवर्चक ये तीन (पु०) नाम सजीखारके हैं । सौवर्चल, रुचक ये दो (न०) नाम खारके भेदके हैं । त्वक्क्षीरी, वंशरोचना ये दो (स्त्री०) नाम वंशलोचनके हैं ॥ १०९ ॥ शिशुज, श्वेतमरिच ये दो (न०) नाम सहींजनेके बीज अथवा श्वेत मिरचके हैं । मोरट यह एक (न०) नाम ईखकी जडका है । ग्रन्थिक, पिप्पलीमूल, चटिकाशिरस् (सान्त) ये तीन (न०) नाम पीपला-मूलके हैं ॥ ११० ॥ गोलोमी (स्त्री०), भूतकेश (पु०) यह दो नाम

अथ शूद्रवर्गः १० ।

शूद्राश्रावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजा ।

आ चण्डालानु संकीर्णा अम्बुषुकाणादय ॥ १ ॥

शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बुषु वैश्याद्विजन्मनोः ।

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो मागव क्षत्रियाविशो ॥ २ ॥

माहिपोऽर्याक्षत्रिययोः क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

ब्राह्मण्या क्षत्रियात्सूतस्तस्या वैदेहको विजः । ३ ॥

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्या यस्य सभव ।

म्याचण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्या वृषलेन यः ॥ ४ ॥

जगमासीके हैं । पत्राग, रक्तचन्दन ये दो (न०) नाम पतंगके हैं । शि-
कटु, श्यूपण, व्योष ये तीन (न०) नाम त्रिकुटाके हैं । त्रिफला (स्त्री०),
फलत्रिक (न०) ये दो नाम त्रिफलाके हैं ॥ १११ ॥ इति वैश्यवर्ग ॥ १ ॥

अथ शूद्रवर्ग । शूद्र, अवरवर्ण, वृषल, जघन्यज ये चार (पु०) नाम
शूद्रके हैं । चण्डालपर्यन्त अनष्टकरण आदि कहते हैं ॥ १ ॥ और ये
शब्द (पु०) हैं । शूद्रका स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र करण कहाता है ।
वह स्थिरनेसे आजीविकावाला होता है । वैश्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपजा
पुत्र अघष्ठ कहाता है । वह चिकित्सासे आजीविका करनेवाला होता है ।
शूद्रकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा पुत्र उग्र कहाता है । वह शस्त्र वृत्तिवाला
है । क्षत्रियकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजा मागव कहाता है । वह राजा आदिकी
स्तुति करनेवाला होता है ॥ २ ॥ वैश्यकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा माहिष
कहाता है । वह ज्योतिष, शाकुन, स्वशास्त्र इन्होंसे वृत्ति करनेवाला होता
है । क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा क्षत्तु कहाता है । वह सेना करता है ।
ब्राह्मणकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा सूत कहाता है । उसकी हाथी बांधना,
घोड़ा फेरना, सारथीपना ये आजीविका हैं । ब्राह्मणकी स्त्रीमें वैश्यसे
उपजा वैदेहक कहाता है । उसका चौमठ कलाकर्मकी शिक्षा करना
आजीविका है ॥ ३ ॥ शूद्रका स्त्रीमें वैश्यसे उपजा पुत्रिमें वैश्यकी स्त्री और
क्षत्रियसे उपजे पुत्रसे उत्पन्न हुआ पुत्र रथकार कहाता है । उसका रथ
रथ बनाना और इधन बँचना आदि हैं । ब्राह्मणकी स्त्रीमें शूद्रसे उपजा
पुत्र चण्डाल कहाता है । उसकी आजीविका मरे हुएके कब्र लेना है ।

कारुः शिल्पी संहतैस्त्रैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।
 कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
 कुम्भकारः कुलालः स्यात्पलगण्डस्तु लेपकः ।
 तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
 रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 पादुकृच्चर्मकारः स्याद्द्वयोकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
 नार्डीधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।
 स्याच्छांखिकः काम्बविकः शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
 क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितांतावसायिनः ।
 निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

प्रोक्तेके शब्द (पु०) हैं और क्षत्तृशब्द ऋकारान्त है ॥४॥ कारु, शिल्पिन्
 (इन्नन्त) ये दो (पु०) नाम चित्रकार आदिके हैं। खाती, जुलाहा,
 नाई, धोबी, चमार ये पांच कारुशिल्पी हैं। श्रेणि यह एक (पु० स्त्री०)
 नाम सजातीय समूहका है। आगेके शब्द देवलतक (पु०) हैं। कुलक,
 कुलश्रेष्ठिन् (इन्नन्त) ये दो नाम शिल्पिकुलप्रधानके हैं। मालाकार,
 मालिक ये दो नाम मालीके हैं ॥ ५ ॥ कुम्भकार, कुलाल ये दो नाम
 कुम्हारके हैं। पलगण्ड, लेपक ये दो नाम लेपकारके हैं। तन्तुवाय,
 कुविन्द ये दो नाम जुलाहेके हैं। तुन्नवाय, सौचिक ये दो नाम छीपीके हैं ॥ ६ ॥
 रंगाजीव, चित्रकर ये दो नाम लीलगरके हैं। शस्त्रमार्ज, असिधावक ये
 दो नाम शिकलीगरके हैं। पादुकृत, चर्मकार ये दो नाम चमारके हैं।
 व्योकार, लोहकारक ये दो नाम लुहारके हैं ॥ ७ ॥ नार्डीधम, स्वर्णकार,
 कलाद, रुक्मकारक ये चार नाम सुनारके हैं। शांखिक, काम्बविक ये दो
 नाम शंखके चूडे आदि बनानेवालेके हैं। शौल्विक, ताम्रकुट्टक ये दो
 नाम तांबेके पात्र बनानेवालेके हैं ॥ ८ ॥ तक्षन् (नान्त), वर्धकि, त्वष्टृ
 (ऋकारान्त), रथकार, काष्ठतक्ष ये पांच नाम खातीके हैं। ग्रामतक्ष यह
 एक नाम गामके खातीका है। कौटतक्ष यह एक नाम अपने आधीन
 खातीका है ॥ ९ ॥ क्षुरिन् (इन्नन्त), मुण्डिन् (इन्नन्त), दिवाकीर्ति,

जाचालः स्यादजादीवो देवाजीवस्तु देवल' ।

स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारक' ॥ ११ ॥

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवा कृशाश्विन' ।

भरता इत्यपि नटाश्वरणास्तु कुशीलवा ॥ १२ ॥

मार्दङ्गिका मौरजिका' पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

वेणुध्माः स्युर्वेणविका वीणावादास्तु वैणिका ॥ १३ ॥

जीवान्तक शाकुनिको द्वौ वागुरिकजालिकौ ।

वैतसिक' कौटिकश्च मासिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥

भृतको भृतिभुक् कर्मरुो वैतनिकोऽपि स' ।

वार्तावहो वैवधिको भारवाहस्तु भारिक' ॥ १५ ॥

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।

निहीनोऽपसदो जाल्म भुल्लकश्चेतरश्च स' ॥ १६ ॥

नापिन, अतावसायिन् (इन्नन्त) ये पाँच नाम नाईके हैं । निणेनर, रजक ये दो नाम घोषाके हैं । शौडिक, मटहारक ये दो नाम कलालके हैं ॥ १० ॥ जाचाल, अजाजीव ये दो नाम चररी पालनेवालेके हैं । देवाजीव, देवल ये दो नाम देवताकी सेवासे जीविका करनेवालेके हैं । यहातरक (पु०) हैं । माया, शाम्बरी ये दो (स्त्री०) नाम इन्द्रजालके हैं । आगेके शब्द विश्वकद्रुतरक (पु०) हैं । मायाकार, प्रतिहारक ये दो नाम मायावीके हैं ॥ ११ ॥ शैलालिन् (इन्नन्त), शैलूष, जायाजीव, कृशाश्विन् (इन्नन्त), भरत, नट ये छ नाम नटके हैं । चारण, कुशीलव ये दो नाम कर्त्यवीके हैं ॥ १२ ॥ मार्दङ्गिक, मौरजिक ये दो नाम मृदङ्ग बजानेवालेके हैं । पाणिवाद, पाणिय ये दो नाम हाथसे ताल बजानेवालेके हैं । वेणुध्म, वैणविक ये दो नाम बांसुरी बजानेवालेके हैं । वीणावाद, वैणिक ये दो नाम वीणा बजानेवालेके हैं ॥ १३ ॥ जीवान्तक, शाकुनिक ये दो नाम पारधीके हैं । वागुरिक, जालिक ये दो नाम जालसे मृगको बाँधनेवालेके हैं । वैतसिक, कौटिक, मासिक ये तीन नाम मान बँधनेवालेके हैं ॥ १४ ॥ भृतक, भृतिभुक् (जात), कर्मरु, वैतनिक ये चार नाम नीचके हैं । वार्तावह, वैवधिक ये दो नाम सदेशाले जानेवालेके हैं । भारवाह, भारिक ये दो नाम मोहावालेके हैं ॥ १५ ॥ विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन,

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।

नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥

पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।

चण्डालप्लवमातङ्गादिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥

निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

कोलेयकः सारमेयः कुकुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥

शुनको भषकः श्वा स्यादलर्कस्तु स योगितः ।

इवा विश्वकहुर्मृगयाकुशलः सरमा शुनी ॥ २२ ॥

विद्वचरः सूकगो ग्राम्यो वर्करस्तरुणः पशुः ।

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥

अपसद, जालम, क्षुल्लक, इतर ये दश नाम नीचके हैं ॥ १६ ॥ भृत्य, दासेर, दासेय, दास, गोप्यक, चेटक, नियोज्य, किंकर, प्रैष्य, भुजिष्य, परिचारक ये ग्यारह नाम दासके हैं ॥ १७ ॥ पराचित, परिस्कन्द, परजात, परैधित ये चार नाम दूसरोंसे वर्धित कियेके हैं । मन्द, तुन्द, परिमृज, आलस्य, शीतक, अलस, अनुष्ण ये छः नाम आलस्यके हैं ॥ १८ ॥ दक्ष, चतुर, पेशल, पटु, सूत्थान, उष्ण ये छः नाम चतुरके हैं । चण्डाल, प्लव, मातंग, दिवाकीर्ति, जनंगम ॥ १९ ॥ निषाद, श्वपच, अन्तेवासिन (इन्नन्त), चाण्डाल, पुक्कस ये दश नाम चाण्डालके हैं । किरात, शबर, पुलिन्द ये तीन भेद म्लेच्छ जातिके हैं ॥ २० ॥ व्याध, मृगवधाजीव, मृगयु-लुब्धक ये चार नाम व्याधके हैं । कोलेयक, सारमेय, कुकुर, मृगदंशक ॥ २१ ॥ शुनक, भषक, श्वर (नाति) ये सात नाम कुत्तेके हैं । अलर्क यह एक नाम उन्मत्त (पागल) कुत्तेका है । विश्वकहु यह एक नाम शिकारी कुत्तेका है । यहातक (पु०) हैं । सरमा यह एक (स्त्री०) नाम कुत्तीका है ॥ २२ ॥ विद्वचर यह एक (पु०) नाम गामके शूक-

दक्षिणारुर्लब्धयोगादक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥

प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटञ्चरमलिम्लुचा ।

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेय लोप्त्र तु तद्धने ॥ २५ ॥

वीतसस्तूपकरण बन्धने मृगपक्षिणाम् ।

उन्माथः कूटयन्त्र स्याद्वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

शुलभ वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

उद्घाटन घटीयन्त्र सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥

पुसि वेमा वायदड' सूत्राणि नरि तन्तवः ।

वाणिव्यूतिः स्त्रियो तुल्ये पुस्त लेप्यादिकर्माणे ॥ २८ ॥

का है । वर्कर यह एक (पु०) नाम जवान पशु बकरे आदि का है ।
 आच्छोदन (न०), मृगन्य (न०), आखेट (पु०), मृगया (स्त्री०)
 ये चार नाम शिकारके हैं ॥ २३ ॥ दक्षिणेर्मन् (नाँत) यह एक (पु०)
 नाम शिकारीके हाथसे दहने अगमें धाववाले मृगका है । चौर, ऐकागा
 रिक, स्तेन, दस्यु, तस्कर, मोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन् (इन्नन्), परास्क
 देन् (इन्नन्), पाटञ्चर, मलिम्लुच ये दश (पु०) नाम चोरके हैं ।
 चौरिका (स्त्री०), स्तैन्य (न०), चौर्य (न०), स्तेय (न०) ये चार
 नाम चोरीके हैं । लोप्त्र यह एक (न०) नाम चोरी किये धनका है
 ॥ २५ ॥ वीतस यह एक (पु०) नाम मृगपक्षियोंके बन्धनेके लिये पात्र
 और जाल आदि का है । उन्माथ (पु०), कूटयन्त्र (न०) ये दो नाम मृग
 और पक्षियोंको बाँधनेके लिये छलसे रखनेके यन्त्र अर्थात् फन्देके हैं ।
 वागुरा, मृगबन्धनी ये दो (स्त्री०) नाम मृग बाँधनेकी रज्जु (जाल)
 का है ॥ २६ ॥ शुलभ (न०), वराटक (न०), रज्जु (स्त्री०), वटी,
 (स्त्री०), गुण (पु०) ये पाँच नाम रज्जुके हैं । उद्घाटन, घटीयन्त्र ये दो
 (न०) नाम रहटके हैं ॥ २७ ॥ वेमन् (नाँत पु० न०), वायदण्ड
 (पु०) ये दो नाम कपडा बुननेके दण्डके हैं । सूत्र (न०), तंतु (पु०)
 ये दो नाम सूतके हैं । वाणि, व्यूति ये दो (स्त्री०) नाम बुननेके हैं ।
 पुस्त यह एक (न०) नाम पुस्तिकाकर्म (लीपने आदि) का है ॥ २८ ॥

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वह्नदन्तादिभिः कृता ।
 जतुत्रपुविकारे तु जातुपं त्रापुपं त्रिषु ॥ २९ ॥
 पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूपाऽथ विहङ्गिका ।
 भारयष्टिस्तदालम्बि शिष्यं काचोऽथ पादुका ॥ ३० ॥
 पादूरुपानत्स्त्री सैवानुपदीना पदायता ।
 नथ्री वथ्री वरत्रा स्यादश्वदेस्ताडनी कशा ॥ ३१ ॥
 चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ।
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
 ब्रश्चनः पत्रपरशुरीषिका तूलिका समे ।
 तैजसावर्तनी मूषा भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥ ३३ ॥
 आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।
 वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ३४ ॥

पाञ्चालिका यह एक (स्त्री०) नाम कपडा और दन्त आदिसे बनाई पुत्र-
 लिकाका है । जातुप यह एक (त्रि०) नाम, लेखके विकारका है ।
 त्रापुप यह एक (त्रि०) नाम रंगेके विकारका है ॥ २९ ॥ पिटक-
 (पु०), पेटक (पु०), पेटा (स्त्री०), मञ्जूपा (स्त्री०) ये चार नाम
 सन्दूकके हैं । विहंगिका, भारयष्टि ये दो (स्त्री०) नाम छींकेकी लक-
 डीके हैं । शिष्य (न०), काच (पु०) ये दो नाम उस लकड़ीमें लटकके
 हुए छींकेके हैं । पादुका ॥ ३० ॥ पादू, उपानहू ये तीन (स्त्री०) नाम
 जूतीके हैं । अनुपदीना यह एक (स्त्री०) नाम पैरेके समान विस्तारवाली
 जूतीका है । नथ्री, वथ्री, वरत्रा ये तीन (स्त्री०) नाम चामरजूके हैं ।
 कशा यह एक (स्त्री०) नाम घोड़े आदिके ताडनेकी रज्जू अर्थात् चा-
 बुकका है ॥ ३१ ॥ चाण्डालिका, कण्डोलवीणा, चण्डालवल्लकी ये तीन
 (स्त्री०) नाम नीच जातिके वीणाके हैं । नाराची, एषणिका ये दो
 (स्त्री०) नाम कांटे तराजूके हैं । शाण, निकष, कष ये तीन (पु०) नाम
 क्रसोटीके हैं ॥ ३२ ॥ ब्रश्चन, पत्रपरशु ये दो (पु०) नाम कानस (रती) के
 हैं । ईषिका, तूलिका ये दो (स्त्री०) नाम सलाईके भेदके हैं । मूषा यह एक
 (स्त्री०) नाम सोना आदि गलानेके पात्रविशेषका है । भस्त्रा, चर्मप्रसेविका
 ये दो (स्त्री०) नाम धौंकनीके हैं ॥ ३३ ॥ आस्फोटनी, वेधनिका ये दो

ऋकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ।

स्मृतिं स्थूणाऽयःप्रतिमा शिल्प कर्म कलादिकम् ॥ ३५ ॥

प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।

प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिरुपमोपमान स्यात् ॥ ३६ ॥

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्य सदृशः सदृशः सदृक् ।

साधारणः समानश्च स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥

निभसकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।

कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् । ३८ ॥

भरणं भरण मूल्य निवेशः पण इत्यपि ।

सुरा हलिप्रिया हाला परिसुद्धरुणात्मजा ॥ ३९ ॥

(स्त्री०) नाम मणि आदि वेधनेके शस्त्रविशेष अर्थात् वनेके है । कृपाणी, कर्तरी ये दो (स्त्री०) नाम सोने आदिको काटनेकी कैचीके है । वृक्षादनी (स्त्री०), वृक्षभेदित्र (इन्नन्त पु०) ये दो नाम वृक्षको काटनेके लिये शस्त्रविशेष (कुल्हाडी) के है । टफ, पापाणदारण ये दो (पु०) नाम टाँफके है ॥ ३४ ॥ ऋकच (पु० न०), करपत्र (न०) ये दो नाम करोत (आरे) के है । आरा, चर्मप्रभेदिका ये दो (स्त्री०) नाम चाम काटनेके आरके हैं । स्मृतिं, स्थूणा, अय प्रतिमा ये तीन (स्त्री०) नाम लोहेकी प्रतिमाके हैं । शिल्प यह एक (न०) नाम कला आदि कर्मका है ॥ ३५ ॥ प्रतिमान (न०), प्रतिविम्ब (न०), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा, प्रतिनिधि ये आठ नाम प्रतिमाके है । तर्हा प्रतिनिधिशब्द (पु०) उप (स्त्री०) है । उपमा (स्त्री०), उपमान (न०) ये दो नाम उपमित करनेके हैं ॥ ३६ ॥ आगेके शब्द वाच्यलिङ्गी है । सम, तुल्य, सदृश, सदृश, सदृश् (शान्त), साधारण, समान ये सात नाम समानके है और उत्तरपदमें स्थित हुए निभ, सकाश आदि शब्द वाच्यलिङ्गी अर्थात् त्रिलिङ्गी ह ॥ ३७ ॥ निभ, सकाश, नीकाश, प्रतीकाश, उपमा आदि शब्द तुल्यके पर्याय है । कर्मण्या (स्त्री०), विधा (स्त्री०), भृत्या (स्त्री०), भृति (स्त्री०), भर्मत्र (नान्त न०), वेतन (न०) ॥ ३८ ॥ भरण्य (न०), भरण (न०), मूल्य (न०), निवेश (पु०), पण (पु०) ये ग्याग्रह नाम मजदूरीके हैं । सुरा, हलि

तृतीयं काण्डम् ।

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः १ ।

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरापि ।

लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥

स्त्रीदाराद्यैर्याद्विशेष्यं चादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।

गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्नस्य भेदकाः ॥ २ ॥

सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः ।

हृदयालुः सुहृदयो मद्योत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

अथ विशेष्यनिघ्नवर्गः । इस सामान्य तृतीयकाण्डमें विशेष्यनिघ्न जिसमें विशेषणोंका वर्णन है, जैसे सुकृती आदि । संकीर्ण जिसमें विशेषण तो है परन्तु उन विशेषणोंके विशेष्य कई अर्थोंमें हो सक्ते हैं, जैसे ' कर्मपरायण ' जो शब्द है वह शिल्पविद्या पढाना आदि अनेक काममें जो चतुर हो उसको कह सक्ते हैं । नानार्थ जिसमें एकही शब्दके अनेक अर्थ हैं, जैसे ' अब्द ' यह एक नाम बादलका और वर्षका है । अव्यय जिसमें अव्ययोंके अर्थ हैं । लिंगादिसंग्रह जिसमें प्रत्ययोंसे लिंगका ज्ञान होता है । इन नामोंवाले वर्गोंके द्वारा पूर्वोक्त स्वर्ग आदि वर्गोंसे संबंध रखनेवाले ऐसे वर्ग कहे जावेंगे ॥ १ ॥ इस शास्त्रमें जैसे स्त्री आदि भेदकरके बहुधा लिंगका निर्णय है तैसेही यहांभी हो इस भ्रमको दूर करनेके लिये व्यापक लक्षण कहते हैं । जैसे स्त्री, दार आदि पदोंसे विशेष्य बनता है उसी प्रकार उसके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेष्य बनते हैं । अर्थात् जैसे विशेष्य होगा उसी लिंग और वचनका उसका विशेषण होगा । आगे उदाहरणमें सुकृती आदि गुण द्रव्य क्रियावाचक विशेषण हैं इनको विशेष्यके लिंगके अनुसार किये तो इस प्रकार हुए । जैसे—' सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कुलम् ' । जैसे—दंडिनी स्त्री, दंडिनो दाराः, दंडि कुलम् ' । जैसे—पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुलम् ' ऐसे हैं ॥२॥ आगे आहतलक्षण शब्दतक सब शब्द त्रिलिगी हैं । सुकृतिन् (इन्नन्त), पुण्यवत् (मत्वन्त), धन्य ये तीन नाम भाग्यवाचकके हैं । महेच्छ, महाशय ये दो नाम उदारचित्तवालेके हैं । हृदयालु

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।

वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥ ४ ॥

पूज्यः प्रतीक्ष्यः साशयिकः सशयापन्नमानसः ।

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥ ५ ॥

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशीण्डा बहुप्रदे ।

जैवातृकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्द्धकः ।

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥ ७ ॥

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मना ।

दक्षिणे सरलोदारौ सुकलो दातृभोक्तरि ॥ ८ ॥

तत्परे प्रसितासक्ताविष्टार्योद्युक्त उत्सुकः ।

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥ ९ ॥

सुहृदय ये दो नाम सुन्दर हृदयवालेके हैं । महोरसाह, महोद्यम ये दो नाम उद्यमीके हैं ॥ ३ ॥ प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, कृतमुख, कृतिर (इन्नन्त), कुशल ये दश नाम चतुरके हे ॥ ४ ॥ पूज्य, प्रतीक्ष्य ये दो नाम पूज्यके हैं । साशयिक, सशयापन्नमानस ये दो नाम सशयवालेके हैं । दक्षिणीय, दक्षिणार्ह, दक्षिण्य ये तीन नाम दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥ वदान्य, स्थूललक्ष्य, दानशीण्ड, बहुप्रद ये चार नाम अधिकदानीके हैं । जैवातृक, आयुष्मत (मत्वन्त) ये दो नाम बडी आयुवालेके हैं । अन्तर्वाणि, शास्त्रविद् (दान्त) ये दो नाम शास्त्रको जाननेवाले (शास्त्री) के हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक, कारणिक ये दो नाम परीक्षा करनेवालेके हैं । वरद, समर्द्धक ये दो नाम वर देनेवालेके हैं । हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनस् (सान्त), हृष्टमानस ये चार नाम प्रसन्न मनवालेके हैं ॥ ७ ॥ दुर्मनस्, विमनस्, अन्तर्मनस् ये तीन नाम व्याकुलचित्तवाले अर्थात् उदासके हैं । और सान्त है । उत्क, उन्मनस् (सान्त) ये दो नाम उत्कण्ठावालेके हैं । दक्षिण, सरल, उदार ये तीन नाम सरलचित्तवालेके हैं । सुकल यह एक नाम दाता भोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर, प्रसित, आसक्त ये तीन नाम किसी विषयमें लगे हुएके हैं । इष्टार्योद्युक्त, उत्सुक ये दो नाम उद्योगवालेके हैं । प्रतीत, प्रथित, ख्यात, वित्त, विज्ञात,

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहितलक्षणौ ।

इभ्य आढ्यो धनी स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥ १० ॥

अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुटुम्बव्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥

स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम् ।

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥

निर्वार्यः कार्यकर्त्ता यः संपन्नः सत्वसंपदा ।

अवाचि मूकोऽथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥ १३ ॥

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।

लक्ष्मीवल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान् स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १४ ॥

स्यादद्यालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः ।

स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

विश्रुत ये छः नाम विख्यातके हैं ॥ ९ ॥ कृतलक्षण, आहितलक्षण ये दो नाम धन शौर्य आदिसे विख्यातके हैं । सुकृतीसे लेकर यहाँतक सब शब्द विशेषण होनेसे त्रिलिगी हैं । इनका लिंग विशेष्यके समान रहता है । इभ्य, आढ्य, धनिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु०) नाम धनवालेके हैं । स्वामिन् (इन्नन्त), ईश्वर, पति, ईशितृ (ऋकारान्त) ॥ १० ॥ अधिभू, नायक, नेतृ (ऋकारान्त), प्रभु, परिवृढ, अधिप ये दश (पु०) नाम स्वामीके हैं । अधिकर्द्धि, समृद्ध ये दो (त्रि०) नाम सुसम्पन्न (भरे पूरे) के हैं । कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक, उपाधि ये तीन (पु०) नाम कुटुम्बपोपकके हैं । सिंहसंहनन यह एक (पु०) नाम उत्तम अंग और रूपवालेका है ॥ १२ ॥ निर्वार्य यह एक (त्रि०) नाम विकल अवस्थामेंभी चित्त लगाकर कार्य करनेवालेका है । अवाच्, मूक ये दो (त्रि०) नाम गूमेके हैं । मनोजवस, पितृसन्निभ ये दो (त्रि०) नाम पिताके समानके हैं ॥ १३ ॥ कूकुद यह एक (पु०) नाम सत्कारपूर्वक अलंकृत करी कन्याको देनेवालेका है । आगे वर्गान्ततक सब शब्द(त्रि०) हैं । लक्ष्मीवत् (मत्तन्त), लक्ष्मण, श्रील, श्रीमत् (मत्तन्त) ये चार नाम लक्ष्मीवालेके हैं । स्निग्ध, वत्सल ये दो नाम स्नेहीके हैं ॥ १४ ॥ दयालु, कारुणिक, कृपालु, मूरत ये चार नाम दयावानके हैं । स्वतन्त्र,

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि ।

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसौ ॥ १६ ॥

खलपूः स्याद्बहुकरो दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ।

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥ १७ ॥

कर्मक्षमोऽलकर्मिणः क्रियावान्कर्मसूद्यत ।

स कर्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥

भरण्यभुक्कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

अपस्त्रातो मृतस्त्रात आमिपाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

परान्नः परपिण्डादो भक्षको घस्मरोऽन्नरः ॥ २० ॥

आद्यूनः स्यादौदारिको विजिगीषाविवर्जिते ।

उमौ त्वात्मंभरिः कुक्षिभरिः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

अपावृत, स्वैरिन् (इन्नन्त), स्वच्छन्द, निरवग्रह ये पांच नाम स्वतन्त्र (अपराधीन) के है ॥ १६ ॥ परतन्त्र, पराधीन, परवत् (मत्वन्त), नाथ वत् (मत्वन्त) ये चार नाम पराधीनके है । अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्वच्छन्द, गृह्यक ये पाच नाम आधीनके है ॥ १६ ॥ खलपू, बहुकर ये दो नाम बुहारनेवालेके है । दीर्घसूत्र, चिरक्रिय ये दो नाम बहुत देरमें काम करनेवालेके है । जाल्म, असमीक्ष्यकारिन् (इन्नन्त) ये दो नाम विना विचारे करनेवालेके है । कुण्ठ यह एक नाम आलसीका है ॥ १७ ॥ कर्मक्षम, अलकर्मिण ये दो नाम कर्ममें समर्थके है । क्रियावत् (मत्वन्त) यह एक नाम कर्ममें लगे हुएका है । कर्म, कर्मशील ये दो नाम सर्वदा कर्ममें लगे हुएके है । कर्मशूर कर्मठ ये दो नाम यत्नसे कार्यको पूरा करेनेवालेके है ॥ १८ ॥ भरण्यभुज् (जान्त), कर्मकर ये दो नाम तनखा लेके काम करनेवालेके है । कर्मकार यह एक नाम विना तनखा काम करनेवालेका है । अपस्त्रात, मृतस्त्रात ये दो नाम मरेके लिये स्त्रान करेनेवालेके है । आमिपाशिन् (इन्नन्त), शौष्कुल ये दो नाम मच्छका मांस खानेवालेके है ॥ १९ ॥ बुभुक्षित, क्षुधित, जिघत्सु, अशनायित ये चार नाम भूखेके है । परान्न, परपिण्डाद् ये दो नाम पराये अन्नको खानेवालेके है । भक्षक, घस्मर, अन्नर ये तीन नाम खानेवालेके है ॥ २० ॥ आद्यून

सर्वात्रीनस्तु सर्वान्नभोजी गृध्रस्तु गर्धनः ।
 लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक् समौ लोलुपलोलुभौ ॥ २२ ॥
 सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीवाः कामुके कामिताऽनुकः ॥ २३ ॥
 कम्पः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।
 विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
 वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।
 धृष्टे धृष्णगिवयातश्च प्रगल्भः प्रतिभान्विते ॥ २५ ॥
 स्यादधृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्विते ।
 अधीरे कातरस्त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥
 आशंसुराशंसितरि गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।
 श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पतयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

औदरिक ये दो नाम भूखसे बहुत पीडित हुएके हैं । आत्मभरि, कुक्षिभरि
 ये दो नाम अपने पेटको भरनेवालेके है ॥ २१ ॥ सर्वात्रीन, सर्वान्नभोजिन्
 (इन्नन्त) ये दो नाम परमहंस आदिके हैं । गृध्र, गर्धन ये दो नाम
 आकांक्षावालेके हैं । लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णक् (जान्त) ये तीन नाम
 लोभीके हैं । लोलुप, लोलुभ ये दो नाम अत्यंत लोभीके हैं ॥ २२ ॥ सोन्माद,
 उन्मदिष्णु ये दो नाम पागलके हैं । अविनीत, समुद्धत ये दो नाम अन्या-
 यीके हैं । मत्त, शौण्ड, उत्कट, क्षीव ये चार नाम मतवालेके हैं । कामुक,
 कामित् (ऋकारान्त), अनुक ॥ २३ ॥ कम्प, कामयित् (ऋकारान्त),
 अभीक, कमन, कामन, अभिक ये नव नाम कामवालेके हैं । विधेय, विन-
 यग्राहिन् (इन्नन्त), वचनेस्थित, आश्रव ये चार नाम आज्ञाकारीके हैं
 ॥ २४ ॥ वश्य, प्रणेय ये दो नाम वश हुएके हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित ये
 तीन नाम नम्रके हैं । धृष्ट, धृष्णक्, वियात ये तीन नाम ढीठके हैं । प्रग-
 ल्भ, प्रतिभान्वित ये दो नाम प्रतिभासहित अर्थात् बुद्धिमानके हैं ॥ २५ ॥
 अधृष्ट, शालीन ये दो नाम लज्जासहितके हैं । विलक्ष, विस्मयान्वित ये दो
 नाम पराये धर्मशील आदिको देख आश्चर्य करनेवालेके है । अधीर, कातर
 ये दो नाम कायरके हैं । त्रस्त, भीरु, भीरुक, भीलुक ये चार नाम डर-
 पोकेके हैं ॥ २६ ॥ आशंसु, आशंसित् (ऋकारान्त) ये दो नाम कहने-

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुर्वन्शरुभिवादके ।

शरारुर्घातुको हिंस्र स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥

उत्पतिष्णुस्तुत्पतिताऽञ्जंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।

भूष्णुर्मविष्णुर्मविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

निराकारिष्णु' क्षिप्नु स्यात्सान्द्रस्त्रिग्धस्तु मेदुरः ।

ज्ञाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

विसृत्वरो विसृमरः प्रसारि च विसारिणि ।

सहिष्णु' सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपन ।

जागरूको जागरिता घूर्णितः प्रचलायित' ॥ ३२ ॥

चाले वा इच्छाशीलके है । गृहयालु, ग्रहीतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम लेनेवालेके है । श्रद्धालु यह एक नाम श्रद्धावालेका है । पतयालु, पातुक ये दो नाम गिरनेवालेके हैं ॥२७॥ लज्जाशील, अपत्रपिष्णु ये दो नाम लोफ लाजवालेके है । वन्दारु, अभिवादक ये दो नाम वन्दन करनेवालेके हैं । शरारु, घातुक, हिंस्र ये तीन नाम हिंसा करनेवालेके है । वर्धिष्णु, वर्धन ये दो नाम बढ़नेवालेके हैं ॥२८॥ उत्पतिष्णु, उत्पतितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम उछलनेवालेके हैं । अलंकरिष्णु, मडन ये दो नाम गहना पहरने वालेके है । भूष्णु, भविष्णु, भवितृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम होनेवालेके हैं । वर्तिष्णु, वर्तन ये दो नाम वर्त्ताव करनेवालेके है ॥ २९ ॥ निराकारिष्णु, क्षिप्नु ये दो नाम तिरस्कार करनेवालेके है । मेदुर यह एक नाम सान्द्रस्त्रिग्ध (चिकने) का है । ज्ञातृ (ऋकारान्त), विदुर, विन्दु ये तीन नाम ज्ञाताके है । विक्रासितृ (इन्नन्त), विकस्वर ये दो नाम खिलनेवालेके है ॥ ३० ॥ विसृत्वर, विसृमर, प्रसारितृ (इन्नन्त), विसारितृ (इन्नन्त) ये चार नाम फेलनेवालेके है । सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ (ऋकारान्त), तितिक्षु, क्षमितृ (ऋकारान्त), क्षमितृ (इन्नन्त) ये छ नाम क्षमा करनेवालेके हैं ॥ ३१ ॥ क्रोधन, अमर्षण, कोपितृ (इन्नन्त) ये तीन नाम क्रोधीके हैं । चण्ड, अत्यतक्रोधन ये दो नाम अत्यत क्रोधीके हैं । जागरूक, जागरितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जागनेवालेके हैं । घूर्णित, प्रचलायित ये दो नाम नाँदसे घूर्णित (घुराँटे लेनेवाले) के हैं ॥ ३२ ॥

स्वप्नञ् शयालुनिद्रालुनिद्राणशयितौ समौ ।

पराङ्मुखः पराचीनः स्यादवाङ्प्यधोमुखः ॥ ३३ ॥

देवानश्चति देवद्रङ् विष्वद्रचङ् विष्वगश्चति ।

यः सहाश्चति सध्यङ् स स तिर्यङ् यस्तिरोश्चति ॥ ३४ ॥

वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकोऽतिवक्ता ॥ ३५ ॥

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ शङ्खः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥

लोहलः स्यादस्फुटवाग्गर्हवादी तु कद्ददः ।

समौ कुवादकुचरौ स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥ ३७ ॥

रवणः शब्दनो नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

जडोऽज्ञ एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥ ३८ ॥

स्वप्नञ् (जान्त), शयालु, निद्रालु ये तीन नाम नींदवालेके हैं । निद्राण, शयित ये दो नाम शयन करते हुएके हैं । पराङ्मुख, पराचीन ये दो नाम विमुखके हैं । अवाञ्च (चान्त), अधोमुख ये दो नाम नीचे मुखवालेके हैं ॥ ३३ ॥ देवद्रचञ्च (चान्त) यह एक नाम देवताओंको पूजनेवालेका है । विष्वद्रचञ्च (चान्त) यह एक नाम सब ओरको चलनेवालेका है । सध्यञ्च (चान्त) यह एक नाम साथ चलनेवालेका है । तिर्यञ्च यह एक नाम तिरछे चलनेवालेका है ॥ ३४ ॥ वद, वदावद, वक्तृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम वक्ताके हैं । वागीश, वाक्पति ये दो नाम सुन्दर वाणी बोलनेवालेके हैं । वाचोयुक्तिपटु, वाग्मिन् (इन्नन्त) ये दो नाम न्यायसे बोलनेवालेके हैं । वावदूक, अतिवक्तृ (ऋकारान्त) ये दो नाम बहुत बोलनेवालेके हैं ॥ ३५ ॥ जल्पाक, वाचाल, वाचाट, बहुगर्हवाच् (चान्त) ये चार नाम अवाच्य बोलनेवालेके हैं । दुर्मुख, मुखर, अबद्धमुख ये तीन नाम अप्रियवादीके हैं । शङ्ख, प्रियवद ये दो नाम प्रियवादीके हैं ॥ ३६ ॥ लोहल, अस्फुटवाच् (चान्त) ये दो नाम अस्पष्ट बोलनेवालेके हैं । गर्हवादिन् (इन्नन्त), कद्दद ये दो नाम निन्दित बोलनेवालेके हैं । कुवाद, कुचर ये दो नाम दोषकथनशील (बुराई करनेवाले) के हैं । असौम्यस्वर, अस्वर ये दो नाम काकके स्वरके समान बुरे बोलनेवालेके हैं ॥ ३७ ॥ रवण, शब्दन ये दो नाम शब्दकर्त्ताके हैं । नान्दीवादिन् (इन्नन्त), नान्दीकर ये

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको नग्नोऽवासा दिग्म्बरे ।
 निष्कासितोऽपकृष्ट स्यादपध्वस्तस्तु धिकृतः ॥ ३९ ॥
 आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यादापितः साधितः समौ ।
 प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
 निकृतः स्याद्विप्रकृतो विप्रलब्धस्तु वञ्चितः ।
 मनोहतः प्रतिहनः प्रतिवद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
 अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तो बद्धे कीलितसयती ।
 आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्कादिशीको भयद्रुतः ॥ ४२ ॥
 आक्षारितः क्षारितोऽभिज्ञस्ते सकसुकोऽस्थिरे ।
 व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ विद्वस्तव्याकुलौ समौ ॥ ४३ ॥
 विह्वलो विह्वल स्यात्तु विवशोऽरिष्टदृष्टधीः ।
 कश्यः कशार्द्धं सनद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

दो नाम स्तुतिविशेष करनेवालेके है । जड, अज्ञ ये दो नाम अत्यन्त मूढके है । एडमूक यह एक नाम गूंगे बाहिरका है ॥ ३८ ॥ तूष्णींशील, तूष्णीक ये दो नाम चुपके रहनेवालेके हैं । नग्न, अवासस् (सान्त), दिग्म्बर ये तीन नाम नग्रेके ह । निष्कासित, अपकृष्ट ये दो नाम निष्कासे हुएके है । अपध्वस्त, धिकृत ये दो नाम झिडके हुए वा धिक्कार करे गयेके है ॥ ३९ ॥ आत्तगर्व, अभिभूत ये दो नाम भय हुए गर्ववालेके ह । दापित, साधित ये दो नाम धनादि देकर वश किये गयेके है । प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्याख्यात, निराकृत ये चार नाम त्यागे हुएके हैं ॥ ४० ॥ निकृत, विप्रकृत ये दो नाम निष्काले हुए वा विपरिणीकृतके है । विप्रलब्ध, वञ्चित ये दो नाम ठगे हुएके है । मनोहत, प्रतिहत, प्रतिवद्ध हत ये चार नाम टूटे मनवालेके है ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त, प्रतिक्षिप्त ये दो नाम आक्षेप किये मनुष्यके हैं । बद्ध, कीलित, सयन ये तीन नाम रज्जु आदिसे बधे हुएके है । आपन्न, आपत्प्राप्त ये दो नाम आपदामें पडे हुएके है । कादिशीक, भयद्रुत ये दो नाम भयसे भागे हुएके है ॥ ४२ ॥ आक्षारित, क्षारित, अभिज्ञस्त ये तीन नाम लोकापवादमें दूषित हुएके है । सकसुज, अस्थिर ये दो नाम अश्वल प्रकृतिवालेके ह । व्यसनार्त, उपरक्त ये दो नाम व्यसनमें पीडित हुएके है । विह्वस्त, व्याकुल ये दो नाम व्याकुल हुएके हैं ॥ ४३ ॥ विह्वल,

द्वेष्ये त्वक्षिगतो वध्यः शीर्षिच्छेद्य इमौ समौ ।
 विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसलेन यः ॥ ४५ ॥
 शिष्विदानोऽकृष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समौ ।
 दोषैकदृक् पुरोभागी निकृन्तस्वनृजुः शठः ॥ ४६ ॥
 कर्णेजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ।
 नृशंसो घातुकः क्रूरः पापो धूर्तस्तु वञ्चकः ॥ ४७ ॥
 अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयवालिशाः ।
 कदर्यं कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
 निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
 वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

विह्वल ये दो नाम शोकआदिसे अंगभंगको प्राप्त हुएके हैं । विवश, अरि-
 ष्टदुष्टधी ये दो नाम आसन्नमरणसे दुष्ट बुद्धि हो जानेवालेके हैं । कश्य,
 कशार्ह ये दो नाम वेतसे मारनेयोग्यके हैं । आततायिन् (इन्नन्त) यह
 एक नाम वर्म आदिसे सावधान हो मारनेकी इच्छावालेका है ॥ ४४ ॥
 द्वेष्य, अक्षिगत ये दो नाम वैरके योग्यके हैं । वध्य, शीर्षिच्छेद्य ये दो नाम
 शिर काटनेके योग्यके हैं । विष्य यह एक नाम विषसे मारने योग्यका है ।
 मुसल्य यह एक नाम मूसलसे मारने योग्यका है ॥ ४५ ॥ शिष्विदान,
 अकृष्णकर्मन् (नान्त) ये दो नाम पुण्यकर्मवालेके हैं । चपल, चिकुर ये
 दो नाम विना विचारे शीघ्र वध करनेवालेके हैं । दोषैकदृक् (शान्त),
 पुरोभागिन् (इन्नन्त) ये दो नाम दोषमात्रको देखनेवालेके हैं । निकृन्त,
 अनृजु, शठ ये तीन नाम टेढे अन्तःकरणवालेके अर्थात् कपटीके हैं ॥ ४६ ॥
 कर्णेजप, सूचक ये दो नाम चुगलखोरके हैं । पिशुन, दुर्जन, खल ये तीन
 नाम आपसमें वैर करानेवालेके हैं । नृशंस, घातुक, क्रूर, पाप ये चार नाम
 द्रोही पुरुषके हैं । धूर्त, वञ्चक ये दो नाम धूर्तके हैं ॥ ४७ ॥ अज्ञ, मूढ,
 यथाजात, मूर्ख, वैधेय, वालिश् ये पांच नाम मूर्खके हैं । कदर्य, कृपण,
 क्षुद्र, किंपचान, मितंपच ये पांच नाम स्त्री पुत्र आदिको पीडित कर लोभसे
 धन संचय करनेवालेके हैं ॥ ४८ ॥ निःस्व, दुर्विध, दीन, दरिद्र, दुर्गत ये
 पांच नाम दरिद्रके हैं । वनीयक, याचनक, मार्गण, याचक, अर्थिन् (इन्नन्त)

अहकारवानहयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजा ॥ ५० ॥

स्वेदजाः कृमिदशाद्याः पक्षिसर्पादयोऽण्डजाः ।

इति प्राणिवर्गः ।

उद्भिदस्तरुगुल्माद्या उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ ५१ ॥

सुन्दर रुचिर चारु सुपमं साधु शोभनम् ।

कान्त मनोरमं रुच्य मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥

तदासेचनक वृक्षेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

अभीष्टेऽभीप्सित ह्य दयित वल्लभं प्रियम् ॥ ५३ ॥

निकृष्टप्रतिकृष्टार्बरेफयाप्यावमाधमाः ।

कुपूयकुत्सितावचखेटगर्हाणकाः समा ॥ ५४ ॥

मलीमस तु मलिन कच्चरं मलद्रूपितम् ।

पूतं पवित्र मेघ्य च वीध्र तु विमलार्थकम् ॥ ५५ ॥

ये, पाँच नाम याचकके हैं ॥ ४९ ॥ अहकारवत् (मत्तन्त), अहयुस् ये दो नाम अहकारीके हैं । शुभयुस्, शुभान्वित ये दो नाम शुभसे युत हुएके हैं । दिव्योपपादुक यह एक नाम अपने माता पिताके विना अपने भाग्यके गुणोंसे आकाशमे उत्पन्न होनेवालाका है । जरायुज यह एक नाम मनुष्य गौ घोडे आदिका है ॥ ५० ॥ स्वेदज यह एक नाम कढिे डोस आदिका है । अण्डज यह एक नाम पक्षि सर्प आदिका है ॥ यहाँ प्राणिवर्ग समाप्त हुआ * ॥ उद्भिद् यह एक (पु०) नाम वृक्ष वेल आदिका है । उद्भिद्, उद्भिज्ज, उद्भिद् ये तीन नाम उद्भिद्के हैं ॥ ५१ ॥ आगेसे अतिशोभनतरु सप्त शब्द (त्रि०) हैं । सुन्दर, रुचिर, चारु, सुपम, साधु, शोभन, कान्त, मनोरम, रुच्य, मनोज्ञ, मञ्जु, मञ्जुल ये बारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥ आसेचनक यह एक नाम जिसको देखनेसे दृष्टि और मनकी वृत्तिका अन्त न हो और जो बहुत धार देखनेपरभी अधिक प्रीतिकों उत्पन्न करे उस परम सुन्दरका है । अभीष्ट, अभीप्सित, ह्य, दयित, वल्लभ, प्रिय ये छ नाम प्रियके हैं ॥ ५३ ॥ निकृष्ट, प्रतिकृष्ट, अर्बु (नान्त), रेफ, याप्य, अवम, अधम, कुपूय, कुत्सित, अवच, खेट, गर्हा, अणक ये तेरह नाम दुष्टके हैं ॥ ५४ ॥ मलीमस, मलिन, कच्चर, मलद्रूपित ये चार नाम

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।

असारं फल्गु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥

पराध्याग्रपाग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ।

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुङ्गवर्षमकुञ्जराः ।

सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥ ६० ॥

वङ्गोरुविपुलं पीनपीत्री तु स्थूलपीवरे ।

स्तोत्राल्पक्षुल्लकाः सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥ ६१ ॥

मलवालेके हैं । पृत, पवित्र, मेध्य ये तीन नाम पवित्रके हैं । वीघ्र यह एक नाम स्वभावसे निर्मलका है ॥ ५५ ॥ निर्णिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य, अनवस्कर ये पांच नाम निर्मलके हैं । असार, फल्गु ये दो नाम निर्मलके हैं । शून्य, वशिक, तुच्छ, रिक्तक ये चार नाम रीतिके हैं ॥ ५६ ॥ प्रधान (न०), प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्य, वरेण्य, प्रवर्ह, अनवराध्य ॥ ५७ ॥ पराध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्र्य, अग्र्य, अग्रीय, अग्रिय ये सत्रह नाम प्रधानके हैं । श्रेयम् (सान्त), श्रेष्ठ, पुष्कल, सत्तम, अतिशोभन ये पांच नाम अत्यन्त शोभनके हैं ॥ ५८ ॥ व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द श्रेष्ठ अर्थको कहनेवाले (पु०) हैं और उत्तरपदमें रहते हैं । जैसे—' पुरुषोऽयं व्याघ्र इव पुरुषव्याघ्रः ' अर्थात् पुरुषश्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ अप्राग्र्य (त्रि०), अप्रधान, उपसर्जन ये तीन नाम अप्रधानके हैं । तहां अप्रधान और उपसर्जन ये दो शब्द (न०) हैं । आगेके तनुशब्दतक (त्रि०) हैं । विशङ्कट, पृथु, बृहत्, विशाल, पृथुल, महत् ॥ ६० ॥ वङ्ग, उरु, विपुल ये नव नाम बडेके हैं । पीन, पीवत् (नान्त), स्थूल, पीवर ये चार नाम मोटेके हैं । स्तोक, अल्प, क्षुल्लक ये तीन नाम अल्पके हैं । सूक्ष्म, श्लक्ष्ण, दभ्र, कृश, तनु ॥ ६१ ॥

द्विया मात्रा वृटिः पुसि लवलेशकणाणव' ।
 अत्यल्पेऽल्पप्रमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥
 प्रभूर्त्तं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुल बहु ।
 पुरुह् पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥
 परःशताद्यास्ते येषा परा सख्या शतादिकात् ।
 गणनीये तु गण्येय सख्याते गणितमथ सम सर्वम् ॥ ६४ ॥
 विश्वमशेष कृत्स्न समस्तनिखिलाखिलानि नि'शेषम् ।
 समग्रं सकलं पूर्णमखण्ड स्यादनूनके ॥ ६५ ॥
 घनं निरन्तरं सान्द्र पेलव विरलं तनु ।
 समीपे निकटासन्नमनिकृष्टमनीडवत् ॥ ६६ ॥
 सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।
 उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥
 संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।
 नेदिष्ठमन्तिकतम स्याद्दूर विप्रकृष्टम् ॥ ६८ ॥

मात्रा, वृटि, लव, लेश, कण, अण ये ग्यारह नाम सूक्ष्मके हैं । तहाँ मात्रा और वृटि शब्द (स्त्री०) और लव आदि शब्द (पु०) जोष (त्रि०) हैं । आगेके वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि०) हैं । अल्पिष्ठ, अल्पीयस् (सान्त), कनीयस् (सात्), अणीयस् (सान्त) ये चार नाम अत्यन्त अल्पके हैं ६२ । प्रभूर्त्त, प्रचुर, प्राज्य, अदभ्र, बहुल, बहु, पुरुह्, पुरु, भूयिष्ठ, स्फार, भूयस् (सान्त), भूरि ये बारह नाम बहुतके हैं ॥ ६३ ॥ पर शत यह एक नाम १०० से अधिक सख्यावालाका है । पर सहस्र यह एउ नाम १००० से अधिक सख्यावालाका है । ऐसेही अन्यभी जानना । गणनीय, गण्येय ये दो नाम गिनने योग्यके हैं । सख्यात, गणित ये दो नाम गिने हुएके हैं ॥ ६४ ॥ विश्व, अशेष, कृत्स्न, समस्त, निखिल, अखिल, नि जोष, समग्र, सकल, पूर्ण, अखण्ड, अनूनक ये चारह नाम समग्रके हैं ॥ ६५ ॥ घन, निरन्तर, सान्द्र ये तीन नाम सघनके हैं । पेलव, विरल, तनु ये तीन नाम तिरल (अग्र २) के हैं । समीप, निकट, आसन्न, सनिकृष्ट, मनीड ॥ ६६ ॥ सदेश, अभ्याश, सविध, समर्याद, सवेश, उपकण्ठ, अतिश, अभ्यर्ण, अभ्यग्र, अभितस् ये पंद्रह नाम समीपके हैं । तहाँ अभितस् यह अव्यय है ॥ ६७ ॥ संसक्त, अव्य

द्वीयश्च दविष्टं च सुदूरं दीर्घमायतम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं बन्धुरं तृन्नतानतम् ॥ ६९ ॥
 उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छिन्नास्तुङ्गेऽथ वामने ।
 न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्थुरवाग्रेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
 अरालं वृजिनं जिह्वामूर्मिमत्कुञ्चितं नतम् ।
 आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेष्टितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
 ऋजावजिह्वप्रगुणौ व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।
 शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
 स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयानेकरूपतया तु यः ।
 कालव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥
 चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमङ्गं चराचरम् ।
 चलनं कम्पनं कम्पं चलं लोलं चलाचलम् ॥ ७४ ॥

चहित, अपदांतर ये तीन नाम मिले हुएके हैं । नेदिष्ट, अंतिकतम ये दो नाम अत्यंत निकटके हैं । दूर, विप्रकृष्टक ये दो नाम दूरके हैं ॥ ६९ ॥
 द्वीयस् (सान्त), दविष्ट, सुदूर ये तीन नाम अत्यंत दूरके हैं । दीर्घ, आयत ये दो नाम लंबेके हैं । वर्तुल, निस्तल, वृत्त ये तीन नाम गोलके हैं ।
 बंधुर यह एक नाम जो स्वभावसे ऊंचा हो और उपाधिके भेदसे कुछ नीचा हो जावे उसका है ॥ ६९ ॥ उच्च, प्रांशु, उन्नत, उदग्र, उच्छिन्न, तुंग ये छः नाम ऊंचेके हैं । वामन, न्यच्, नीच, खर्व, ह्रस्व ये पांच नाम वीनेके हैं । अवाग्र, अवनत, आनत ये तीन नाम नीचेको मुखवालेके हैं ॥ ७० ॥
 अराल, वृजिन, जिह्व, मूर्मिमत्, कुञ्चित, नत, आविद्ध, कुटिल, भुग्न, वेष्टित, वक्र ये ग्यारह नाम टेढ़ेके हैं ॥ ७१ ॥ ऋजु, अजिह्व, प्रगुण ये तीन नाम सीधेके हैं । व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये तीन नाम आकुलके हैं ।
 शाश्वत, ध्रुव, नित्य, सदातन, सनातन ये पांच नाम नित्यके हैं ॥ ७२ ॥
 स्थास्तु, स्थिरतर, स्थेयस् (सान्त) ये तीन नाम अत्यंत स्थिरके हैं ।
 कूटस्थ यह एक नाम एक स्वभाव करके कालके व्यापक आकाश आदिका है । स्थावर, जंगमेतर ये दो नाम अचरके हैं ॥ ७३ ॥ चरिष्णु, जंगम, चर, त्रस, अंग, चराचर ये छः नाम चरके हैं । चलन, कम्पन, कम्प ये तीन नाम कंपवालेके हैं । चल, लोल, चलाचल ॥ ७४ ॥

चञ्चलं तरल चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।
 अतिरिक्त' समधिको दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥
 कर्कशं कठिन क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।
 जठरं मूर्तिमन्मूर्तं प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥
 पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरंतनाः ।
 प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥
 नूतनश्च सुकुमारं तु कोमल मृदुल मृदु ।
 अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपद् क्लीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥
 प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।
 एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥ ७९ ॥
 अप्येकमर्गं एकाग्रोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।
 पुंस्यादि पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथाद्यियाम् ॥ ८० ॥
 अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमा' ।
 मोघ निरर्थक स्पष्ट स्फुट प्रव्यक्तमुल्बणम् ॥ ८१ ॥

चञ्चल, तरल, पारिप्लव, परिप्लव ये सात नाम चल्के हैं । अतिरिक्त, समधिक ये दो नाम अधिकके हैं । दृढसंधि, संहत ये दो नाम दृढसंधान अर्थात् बडे मिलपीके हैं ॥ ७५ ॥ कर्कश, कठिन, क्रूर, कठोर, निष्ठुर, दृढ, जठर, मूर्तिमत्, मूर्त्त ये नव नाम कठिनके हैं । प्रवृद्ध, प्रौढ, एधित ये तीन नाम प्रवृद्धके हैं ॥ ७६ ॥ पुराण, प्रतन, प्रत्न, पुरातन, चिरतन ये पाँच नाम पुरातनके हैं । प्रत्यग्र, अभिनव, नव्य, नवीन, नूतन, नव ॥ ७७ ॥ नूतन ये सात नाम नवीनके हैं । सुकुमार, कोमल, मृदुल, मृदु ये चार नाम कोमलके हैं । अन्वच् (चान्त), अन्वक्ष, अनुग, अनुपद् ये चार नाम पीछेके हैं । तहाँ अनुपद् शब्द (न०) तथा अव्यय है ॥ ७८ ॥ प्रत्यक्ष, ऐन्द्रियक ये दो नाम इन्द्रियोसे ग्राह्य प्रत्यक्षके हैं । अप्रत्यक्ष, अतीन्द्रिय ये दो नाम अप्रत्यक्ष अर्थात् इन्द्रियोसे अग्राह्य धर्म आदिके हैं । एकतान, अनन्यवृत्ति, एकाग्र, एकायन ॥ ७९ ॥ एकसर्ग, एकाग्र्य, एकायनगत ये सात नाम एकाग्रके हैं । आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आद्य ये पाँच नाम आद्यके हैं । तहाँ आदिशब्द (पु०) है ॥ ८० ॥ अत, जघन्य, चरम, अन्त्य, पाश्चात्य, पश्चिम ये छ नाम अन्तके हैं ।

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ।
 भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि ॥ ८२ ॥
 उच्चावचं नैकभेदमुच्चण्डमविलम्बितम् ।
 अरुंतुदस्तु मर्मस्पृगवाधं तु निरर्गलम् ॥ ८३ ॥
 प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्टु च ।
 वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यं तु दक्षिणम् ॥ ८४ ॥
 संकटं ना तु संवाधः कलिलं गहनं समे ।
 संकीर्णं संकुलाकीर्णं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥
 ग्रंथितं संदितं दृब्धं विस्मृतं विस्तृतं ततम् ।
 अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्प्राप्तप्रणिहिते समे ॥ ८६ ॥
 वेष्टितप्रेष्विताधूतचलिताकम्पिता ध्रुते ।
 नुत्तनुच्चास्तनिष्ठचूताविद्धक्षिप्तेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

तहां अन्तशब्द (पु० न०) है । मोघ, निरर्थक ये दो नाम व्यर्थके हैं ।
 स्पष्ट, स्फुट, प्रव्यक्त, उल्वण ये चार नाम स्पष्टके हैं ॥ ८१ ॥ साधारण,
 सामान्य ये दो नाम साधारणके हैं । एकाकिन (इन्नन्त), एक, एकक
 ये तीन नाम अकेले अर्थात् असहायकके हैं । भिन्न, अन्यतर, एक, त्व,
 अन्य, इतर ये छः नाम भिन्नके वाचक हैं ॥ ८२ ॥ उच्चावच, नैकभेद ये
 दो नाम बहुत प्रकारके हैं । उच्चण्ड, अविलम्बित ये दो नाम जल्दीके हैं ।
 अरुंतुद, मर्मस्पृश (शान्त) ये दो नाम मर्मभेदीके हैं । अबाध, निरर्गल
 ये दो नाम निर्बाध (बेरोक) के हैं ॥ ८३ ॥ प्रसव्य; प्रतिकूल, अपसव्य;
 अपष्टु ये चार नाम विपरीतके हैं । सव्य यह एक नाम वाम शरीरका
 है । अपसव्य यह एक नाम दाहिने शरीरका है ॥ ८४ ॥ संकट, संवाध
 ये दो नाम अल्प अवकाशवाले मार्ग आदिके हैं । तहां संवाधशब्द (पु०)
 है । कलिल, गहन ये दो नाम दुःखसे अधिगम्यके हैं । संकीर्ण, संकुल,
 आकीर्ण ये तीन नाम अत्यन्त मिले हुएके हैं । मुण्डित, परिवापित ये दो
 नाम मुण्डितके हैं ॥ ८५ ॥ ग्रंथित, संदित, दृब्ध ये तीन नाम गुंफित
 अर्थात् पुहे हुएके हैं । विस्मृत, विस्तृत, तत ये तीन नाम फैले हुएके हैं ।
 अन्तर्गत, विस्मृत ये दो नाम विस्मृत अर्थात् भूले हुएके हैं । प्राप्त, प्रणि-
 हित ये दो नाम लब्धके हैं ॥ ८६ ॥ वेष्टित, प्रेषित, आधूत, चलित,

परिक्षितं तु निवृतं मृपितं मुपितार्थकम् ।
 प्रवृद्धप्रसृते न्यस्तनिमृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥
 निदिग्धोपचिते गूढगुप्ते गुण्ठितरूपिते ।
 द्रुतावदीर्णे उद्गुर्णोद्यते काचितशिक्षिते ॥ ८९ ॥
 घ्राणघ्राते दिग्धलिप्ते समुदक्तोद्धृते समे ।
 वेष्टितं स्याद्बलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥
 रुग्ण भुग्नेऽथ निशितक्षणुतशातानि तेजिते ।
 स्याद्विनाशोन्मुखं पक्कं ह्रीणहीतौ तु लज्जिते ॥ ९१ ॥
 वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ संयोजित उपाहित ।
 प्राप्यं गम्य समासाद्य स्यन्न रीण स्तुतं सुतम् ॥ ९२ ॥

आकृषित, धुत ये छ नाम कुठ कषित हुएके है । नुत्त, नुन्न, अस्त, निष्टन्न, आविद्ध, क्षित, ईरित ये सात नाम प्रेरितके है ॥ ८७ ॥ परिक्षित, निवृत ये दो नाम कोट आदिसे सब ओर धिरे हुएके है । मृपित, मुपित ये दो नाम चुराये हुएके है । प्रवृद्ध, प्रसृत ये दो नाम फैले हुएके हैं । न्यस्त, निमृष्ट ये दो नाम फेंके हुएके है । गुणित, आहत ये दो नाम गुणा किये हुएके हैं ॥ ८८ ॥ निदिग्ध, उपचित ये दो नाम समृद्ध हुएके हैं । गूढ, गुप्त ये दो नाम गुप्तके हैं । गुठित, रूपित ये दो नाम धूलिसे णित हुएके हैं । द्रुत, अवदीर्ण ये दो नाम पिचले हुएके है । उद्गुर्ण, उद्यत ये दो नाम उठाये हुए शत्रु आदिके हैं । काचित, शिक्षित ये दो नाम छाँकेपर धरे हुएके हैं ॥ ८९ ॥ घ्राण, घ्रात ये दो नाम सूचे हुएके है । दिग्ध, लिप्त ये दो नाम विलिप्तके हैं । समुदक्त, उद्धृत ये दो नाम रुआ आदिसे निकाले हुए जल आदिके है । वेष्टित, वशयित, संवीत, रुद्ध, आवृत ये पाँच नाम धिरे हुएके ह ॥ ९० ॥ रुग्ण, भुग्न ये दो नाम टूटे हुएके हैं । निशित, क्षणुत, शात, तेजित ये चार नाम शाण आदिसे तीक्ष्ण किये शस्त्र आदिके हैं । पक्क यह एफ नाम पके हुएका है । ह्रीण, हीत, लज्जित ये तीन नाम लज्जित हुएके है ॥ ९१ ॥ वृत्त, वृत, व्यावृत्त ये तीन नाम किये हुए बरणवालके है । संयोजित, उपाहित ये दो नाम मिलाये हुएके है । प्राप्य, गम्य समासाद्य ये तीन नाम प्राप्त होनेके योग्यके हैं । स्यन्न, रीण, स्तुत, धुत ये चार नाम प्रसृत अर्थात्

संगूढः स्यात्संकलितोऽवगीतः ख्यातगर्हणः ।
 विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ॥ ९३ ॥
 अवरीणो धिक्कृतश्चाप्यवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।
 अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥
 बद्धे संदानितं मृतमुद्धितं संदितं सितम् ।
 निष्पक्के कथितं पाके क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥ ९५ ॥
 निर्वाणो मुनिवद्व्यादौ निर्वातस्तु गतेऽनिले ।
 पक्कं परिणते गूनं हन्ने मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥
 पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्गान्तमुद्गते ।
 दान्तस्तु दमिते शान्तः शमिते प्रार्थितेऽर्दितः ॥ ९७ ॥

वहते हुएके हैं ॥ ९२ ॥ संगूढ, संकलित ये दो नाम जोड़े हुए अंक
 आदिके हैं । अवगीत, ख्यातगर्हण ये दो नाम निन्दितके हैं । विविध, बहु-
 विध, नानारूप, पृथग्विध ये चार नाम अनेक प्रकारके हैं ॥ ९३ ॥ अवरीण,
 धिक्कृत ये दो नाम निन्दितमात्रके हैं । अवध्वस्त, अवचूर्णित ये दो नाम
 चूर्ण किये हुएके हैं । फाण्ट यह एक नाम विना परिश्रम किये कायका
 है । स्वनित, ध्वनित ये दो नाम शब्दितके हैं ॥ ९४ ॥ बद्ध, संदानित,
 मृत, उद्धित, संदित, सित ये छः नाम बंधे हुएके हैं । निष्पक्क, कथित
 ये दो नाम सकल रीतिसे पके हुए काय आदिके हैं । शृत यह एक नाम
 पके हुए दूध घृत आदिका है ॥ ९५ ॥ निर्वाण यह एक नाम मुनि
 और अग्निविषयमें मुक्त और बुझनेके अर्थमें है । जैसे—‘निर्वाणो मुनिः’
 निर्मुक्त इत्यर्थः । ‘निर्वाणो वह्निः’ अर्थात् बुझी हुई अग्नि । निर्वात यह
 एक नाम वायुरहितका है । पक्क, परिणत ये दो नाम पके हुएके हैं । गून,
 हन्न ये दो नाम विषा त्यागनेवालेके हैं । मीढ, मूत्रित ये दो नाम मूत्र
 कर चुकनेके हैं ॥ ९६ ॥ पुष्ट, पुषित ये दो नाम मोटेके हैं । सोढ, क्षान्त
 ये दो नाम क्षमाको प्राप्त हुएके हैं । उद्धांत, उद्गत ये दो नाम वमन करके
 गेरे हुए अन्न आदिके हैं । दान्त, दमित ये दो नाम इन्द्रिय जीतेके हैं ।
 शांत, शमित ये दो नाम शान्त हुएके हैं । प्रार्थित, अर्दित ये दो नाम
 याचित अर्थात् मांगे हुएके हैं ॥ ९७ ॥

ज्ञप्तस्तु ज्ञापिते उन्नश्रुतादिते पूजितेऽश्वितः ।

पूर्णस्तु पूरिते क्लिष्टः क्लिशितेऽवसिते सितः ॥ ९८ ॥

मुष्टप्लुष्टोपिता दग्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे विन्नवित्तौ विचारिते ॥ ९९ ॥

निष्प्रभे विगतारोकौ विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ दारिते भिन्नभेदितौ ॥ १०० ॥

ऊत स्यूतमुतं चेति त्रितय तन्तुसन्तते ।

स्यादर्हिते नमस्यित नमसितमपचायितार्चितापचितम् ॥ १०१ ॥

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासित उपचरित च ।

सतापितसंतप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ॥ १०२ ॥

हृष्टे मत्तस्त्वृप्तं प्रह्वन प्रमुदित. प्रीत. ।

छिन्न छातं लून कृत् दात दित छित वृक्णम् ॥ १०३ ॥

ज्ञप्त, ज्ञापित ये दो नाम जाने हुएके हैं । छन्न, छादित ये दो नाम ढके हुएके हैं । पूजित, अर्चित ये दो नाम पूजित प्रियेके हैं । पूर्ण, पूरित ये दो नाम पूर्णके हैं । क्लिष्ट, क्लिशित ये दो नाम क्लेशको प्राप्तहुएके हैं । अवसित, सित ये दो नाम समाप्तके हैं ॥ ९८ ॥ मुष्ट, प्लुष्ट, उपित, दग्ध ये चार नाम जले हुएके हैं । तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये तीन नाम छीलकर अल्प बनाये हुएके हैं । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये तीन नाम छेदे हुएके हैं । विन्न, वित्त, विचारित ये तीन नाम विचारे हुएके हैं ॥ ९९ ॥ निष्प्रभ, विगत, अरोक ये तीन नाम दीप्तिरहितके हैं । विलीन, विद्रुत, द्रुत ये तीन नाम द्रवीभूत अर्थात् पिघले हुए घृतादिके हैं । सिद्ध, निर्वृत्त, निष्पन्न ये तीन नाम सिद्ध हुएके हैं । दारित, भिन्न, भेदित ये तीन नाम फाड़े हुएके हैं ॥ १०० ॥ ऊत, स्यूत, उत ये तीन नाम तंतुओंके प्रबन्ध अर्थात् चीने हुएके हैं । अर्हित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अर्चित, अपचित ये छ नाम अर्चितके हैं ॥ १०१ ॥ वरिवसित, वरिवस्यित, उपासित, उपचरित ये चार नाम शुश्रूषितके हैं । सतापित, संतप्त, धूपित, धूपायित, दून ये पांच नाम संतापितके हैं ॥ १०२ ॥ हृष्ट, मत्त, वृत्त, प्रह्वन्न, प्रमुदित, प्रीत ये छ नाम प्रमुदितके हैं । छिन्न, छात, लून, कृत्, दात, दित, छित, वृक्ण ये आठ नाम खडित (कटे) के हैं ॥ १०३ ॥

स्वस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

लब्धं प्राप्तं विन्नं भाषितमासादितं च भूतं च ॥ १०४ ॥

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५ ॥

त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च ।

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभूते ॥ १०६ ॥

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥ १०७ ॥

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवासतावगते ।

उगीकृतमुग्रीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८ ॥

संगीर्णं विदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुतपणितपनितानि ॥ १०९ ॥

अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखाङ्गित्पमातम् ॥ ११० ॥

स्वस्त, ध्वस्त, भ्रष्ट, स्कन्न, पन्न, च्युत, गलित ये सात नाम च्युत अर्थात्
 च्युए हुएके हैं । लब्ध, प्राप्त, विन्न, भाषित, आसादित, भूत ये छः नाम
 प्राप्त हुएके हैं ॥ १०४ ॥ अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित, मृगित ये
 पाँच नाम ढूँढे हुएके हैं । आर्द्र, सार्द्र, क्लिन्न, तिमित, स्तिमित, समुन्न,
 उत्त ये सात नाम गीले हुएके हैं ॥ १०५ ॥ त्रात, त्राण, रक्षित, अवित,
 गोपायित, गुप्त ये छः नाम रक्षितके हैं । अवगणित, अवमत, अवज्ञात,
 अवमानित, परिभूत ये पाँच नाम अवमानितके हैं ॥ १०६ ॥ त्यक्त, हीन,
 विधुत, समुज्झित, धूत, उत्सृष्ट ये छः नाम त्यागे हुएके हैं । उक्त, भाषित,
 उदित, जल्पित, आख्यात, अभिहित, लपित ये छः नाम कहे हुएके हैं
 ॥ १०७ ॥ बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित, अवगत ये
 सात नाम अवगत (जाने हुए) के हैं । उगीकृत, उग्रीकृत, अंगीकृत,
 आश्रुत, प्रतिज्ञात ॥ १०८ ॥ संगीर्ण, विदित, संश्रुत, समाहित, उपश्रुत,
 उपगत ये ग्यारह नाम अगीकार कियेके हैं । ईलित, शस्त, पणायित,
 पनायित, प्रणुत, पणित, पनित ॥ १०९ ॥ गीर्ण, वर्णित, अभिष्टुत, ईडित,
 स्तुत ये बारह नाम स्तुति कियेके हैं । भक्षित, चर्वित, लीढ, प्रत्यवसित,

अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशित भुक्ते ।
 क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठरिष्ठस्यविष्ठवंदिष्ठाः ॥ १११ ॥
 क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्था ।
 साधिष्ठद्राविष्ठस्फेष्ठगरिष्ठहसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥
 बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ सकीर्णवर्गः २ ।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यै सकीर्णै लिङ्गमुन्नयेत् ।
 कर्म क्रिया तत्सातत्ये गम्ये स्युपरस्पराः ॥ १ ॥
 साकल्यासङ्गवचने पारायणस्यगणे ।
 यहच्छा स्वैरिता हेतुशून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥

गिलित, खादित, प्सात ॥ ११० ॥ अभ्यवहृत, अन्न, जग्ध, ग्रस्त, ग्लस्त, अशित, भुक्त ये चौदह नाम खाये हुएके है । क्षेपिष्ठ, क्षोदिष्ठ, प्रेष्ठ, धरिष्ठ, स्थविष्ठ, वहिष्ठ ॥ १११ ॥ ये शब्द क्रमसे अत्यन्त क्षिप्र, अत्यन्त क्षुद्र, अत्यन्त अभीप्सित, अत्यन्त पृथु, अत्यन्त पीवर इन अर्थोंके वाचक है । अर्थात् क्षेपिष्ठ यह एक नाम अत्यन्त क्षिप्रका है । ऐसे अन्यभी जानने । साधिष्ठ, द्राविष्ठ, स्फेष्ठ, गरिष्ठ, हसिष्ठ, वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥ ये शब्द क्रमसे बाढ, व्यायत, बहु, गुरु, वामन, वृन्दारक इन्हींके अतिशयमे वर्तते हैं । जैसे—अतिशयेन बाढ साधिष्ठ इत्यादि । इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥ १ ॥

अथ सकीर्णवर्गः । पूर्वकथित दोनों कांडोंमें स्वर्ग आदि नाम अपने २ सजातीय वर्गमें कहे गये हैं और तीसरे कांडमेंभी विशेष्यनिघ्नवर्गमें प्रकृतिप्रत्यय आदि शब्द विशेष्यनिघ्नके अनुसार कहे गये । उन पूर्वोक्त दोनों मिल न जाय इस आपत्तिके भयसे जो पहले नहीं कहे हैं उन्हांके समग्रहके लिये सकीर्णवर्गका आरम्भ है । इस वर्गमें वक्ष्यमाण लिंगसमग्रहको उक्त रीतिसे प्रकृतिका अर्थ और प्रत्ययका अर्थ और वही २ रूपभेद करके लिंगका विचार करना । कर्म (नां०), क्रिया (स्त्री०) ये दो नाम क्रियाके है । अपरस्पर यह एक (त्रि०) नाम क्रियाके निरन्तर होनेका है ॥ १ ॥ पारायण यह एक (न०) नाम साकल्य (सम्पूर्ण) वचनका है । परा

शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ।
 अवदानं कर्म वृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥
 वशक्रिया संवननं मूलकर्म तु कार्मणम् ।
 विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥
 पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तधारणमित्यपि ।
 सेवनं सीवनं स्यूतिर्विदरः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥
 आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना ।
 संमूर्च्छनमभिव्याप्तिर्याच्चा भिक्षार्थनाऽर्दना ॥ ६ ॥
 वर्धनं छेदनेऽथ द्वे आनन्दनसमाजने ।
 आपच्छन्नमथास्त्रायः संप्रदायः क्षये-क्षिया ॥ ७ ॥

यण यह एक (त्रि०) नाम आसंग वचनका है । यदृच्छा, स्वैरिता ये दो
 (स्त्री०) नाम स्वतन्त्रताके हैं । विलक्षण यह एक (न०) नाम कारण-
 रहित स्थितिका है ॥ २ ॥ शमथ (पु०), शम (पु०), शान्ति (स्त्री०)
 ये तीन नाम चित्तकी शान्तिके हैं । दान्ति (स्त्री०), दमथ (पु०), दम
 (पु०) ये तीन नाम इन्द्रियोंके रोकनेके हैं । अवदान यह एक (न०)
 नाम पहिले ही गये चरित्रका है । प्रवारण यह एक (न०) नाम काम्य
 अर्थात् तुलापुरुष आदि दानका है ॥ ३ ॥ वशक्रिया (स्त्री०), संवनन
 (न०) ये दो नाम मणि मंत्र आदिकरके वशीकरणके हैं । कार्मण यह
 एक (न०) नाम ओषधियोंके मूलोंसे उच्चाटन आदि कर्मका है । विधू-
 नन, विधुवन ये दो (न०) नाम कंपनके हैं । तर्पण, प्रीणन, अवन ये तीन
 (न०) नाम तृप्तिके हैं ॥ ४ ॥ पर्याप्ति (स्त्री०), परित्राण (न०),
 हस्तधारण (न०) ये तीन नाम मारनेके लिये उद्युक्त हुएके निवारणके
 हैं । सेवन (न०), सीवन (न०), स्यूति (स्त्री०) ये तीन नाम सुईके
 कर्म अर्थात् सीवनेके हैं । विदर (पु०) स्फुटन (न०), भिदा (स्त्री०)
 ये तीन नाम फूटनेके हैं ॥ ५ ॥ आक्रोशन (न०), अभीषंग (पु०) ये दो
 नाम गाली देनेके हैं । संवेद (पु०), वेदना (स्त्री० न०) ये दो नाम
 अतुभवके हैं । संमूर्च्छन (न०), अभिव्याप्ति (स्त्री०) ये दो नाम सब
 ओरसे व्याप्तिके हैं । याच्चा, भिक्षा, अर्थना, अर्दना ये चार (स्त्री०)
 नाम मांगनेके हैं ॥ ६ ॥ वर्धन, छेदन ये दो (न०) नाम काटनेके हैं ।

ग्रहे ग्राहो वशः कान्तौ रक्षणस्त्राणे रणः कणे ।
व्यधो वेधे पचा पाके हवो हृतौ वरो वृती ॥ ८ ॥
ओपः प्लोपे नयो नाये ज्यानिर्जीर्णौ भ्रमो भ्रमौ ।
स्फातिर्वृद्धौ प्रथा ख्यातौ स्पृष्टिः पृक्तौ स्तवः स्रवे ॥ ९ ॥
एधा समृद्धौ स्फुरणे स्फुरणा प्रमितौ प्रमा ।
प्रसृतिः प्रसवे श्रयोते प्राधारः क्लमथः क्लमे ॥ १० ॥
उत्कर्षोऽतिशये संधिः श्लेषे विषय आश्रये ।
क्षिपाया क्षेपण गीर्णिर्गिरी गुरणमुद्यमे ॥ ११ ॥

आनन्दन, सभाजन, आप्रच्छन्न ये तीन (न०) नाम स्वागत आदि कुशरु
पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके है । आम्नाय, सप्रदाय ये दो (पु०) नाम
गुरुकी परपरासे प्राप्त हुए उपदेशके हैं । क्षय (पु०), क्षिया (स्त्री०) ये
दो नाम क्षयके है ॥ ७ ॥ ग्रह, ग्राह ये दो (पु०) नाम ग्रहणके है ।
वश (पु०), कान्ति (स्त्री०) ये दो नाम इच्छाके है । रक्षण (पु०),
त्राण (न०) ये दो नाम रक्षाके है । रण, कण ये दो (पु०) नाम शब्द
करनेके हैं । व्यध, वेध ये दो (पु०) नाम वेधनेके हैं । पचा (स्त्री०),
पाक (पु०) ये दो नाम पाकके है । हव (पु०), ह्राति (स्त्री०) ये दो
नाम बुलानेके है । वर (पु०), वृति (स्त्री०) ये दो नाम वरदानके हैं
॥ ८ ॥ ओप, प्लोप ये दो (पु०) नाम दाहके है । नय, नाय ये दो
(पु०) नाम नीतिके है । ज्यानि, जीर्णि ये दो (स्त्री०) नाम जीर्णप
नेके है । भ्रम (पु०), भ्रमि (स्त्री०) ये दो नाम भ्रातिके है । स्फाति,
वृद्धि ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । प्रथा, ख्याति ये दो (स्त्री०)
नाम ख्यातिके है । स्पृष्टि, पृक्ति ये दो (स्त्री०) नाम स्पर्शके है । स्तव,
स्रव ये दो (पु०) नाम प्रस्रवण (झरने) के हैं ॥ ९ ॥ एधा, समृद्धि
ये दो (स्त्री०) नाम वृद्धिके हैं । स्फुरण (न०), स्फुरणा (स्त्री०) ये
दो नाम फरकनेके हैं । प्रमिति, प्रमा ये दो (स्त्री०) नाम यथार्थ ज्ञानके
हैं । प्रसृति (स्त्री०), प्रसव (पु०) ये दो नाम गर्भमोचनके हैं । श्रयोत,
प्राधार ये दो (पु०) नाम घृत आदिके टपकनेमें हैं । क्लमथ, क्लम ये दो
(पु०) नाम ग्लानिके है ॥ १० ॥ उत्कर्ष, अतिशय ये दो (पु०)
नाम उत्कर्ष (बडाई) के है । संधि (स्त्री०), श्लेष (पु०) ये दो नाम
मिलापके हैं । विषय, आश्रय ये दो (पु०) नाम आश्रयके है । क्षिपा

उच्चाय उच्चये श्रायः श्रयणे जयने जयः ।

निगादो निगदे मादो मद उद्देग उद्भ्रमे ॥ १२ ॥

विमर्दनं परिमलोऽभ्युपपत्तिः अनुग्रहः ।

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यादभियोगस्त्वभिग्रहः ॥ १३ ॥

सुष्टिवन्धस्तु संग्राहो ङिम्बे डमः विप्लवो ।

बन्धनं प्रसितिश्चारः स्पर्शः स्पष्टो रतत्परि ॥ १४ ॥

निकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।

परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥

अपहारस्त्वपचयः समाहारः समुच्चयः ।

प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

(स्त्री०), क्षेपण (न०) ये दो नाम प्रेरणा (आज्ञा) के हैं । गीर्ण, गिरि ये दो (स्त्री०) नाम निगलनेके हैं । गुरण (न०), उद्यम (पु०) ये दो नाम भार आदि उठानेके उद्यमके हैं ॥ ११ ॥ उच्चाय, उच्चय ये दो (पु०) नाम उठानेके हैं । श्राय (पु०), श्रयण (न०) ये दो नाम सेवाके हैं । जयन (न०), जय (पु०) ये दो नाम जयके हैं । निगाद, निगद् ये दो (पु०) नाम कथनके हैं । माद, मद ये दो (पु०) नाम मदके हैं । उद्देग, उद्भ्रम ये दो (पु०) नाम उद्देगके हैं ॥ १२ ॥ विमर्दन (न०), परिमल (पु०) ये दो नाम केसर आदिसे किये मर्दनके हैं । अभ्युपपत्ति (स्त्री०), अनुग्रह (पु०) ये दो नाम अनुग्रहके हैं । निग्रह यह एक (पु०) नाम अनङ्गीकारका है । अभियोग, अभिग्रह ये दो (पु०) नाम कलहमें पुकारनेके हैं ॥ १३ ॥ सुष्टिवन्ध, संग्राह ये दो (पु०) नाम सुष्टीसे दृढ पकडनेके हैं । ङिम्ब, डमर, विप्लव ये तीन (पु०) नाम प्रलम्बके हैं । बन्धन (न०), प्रसिति (स्त्री०), चार (पु०) ये तीन नाम बंधनके हैं । स्पर्श, स्पष्ट (ऋकारान्त), उपतप्त (ऋकारान्त) ये तीन (पु०) नाम उपताप नामक रोगविशेषके हैं ॥ १४ ॥ निकार, विप्रकार ये दो (पु०) नाम अपकारके हैं । आकार (पु०), इंग (पु०), इङ्गित (पु० न०) ये तीन नाम अभिप्रायके अनुरूप चेष्टित कियेके हैं । परिणाम, विकार ये दो (पु०) नाम प्रकृति बदलनेके हैं । विकृति, विक्रिया ये दो (स्त्री०) नाम विरुद्ध करनेके हैं ॥ १५ ॥ अपहार, अप-

अभिहारोऽभिग्रहणं निर्हागोऽभ्यवर्षणम् ।

अनुहारोऽनुकार' स्यादर्थस्यापगमे व्यय' ॥ १७ ॥

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्प्रवहो गमनं वाहि' ।

वियामो वियमो यामो यम सयामसयमौ ॥ १८ ॥

हिंसाकर्माभिचारः स्याज्जागर्या जागरा द्वयो' ।

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूह' स्याद्दुपघ्नोऽन्तिवाश्रये ॥ १९ ॥

निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्प' परिश्रिया ।

विधुर' तु प्रविश्लेषेऽभिप्रायश्छन्द आशय' ॥ २० ॥

सक्षेपण समसन पर्यवस्था विरोधनम् ।

परिसर्या परीसार' स्यादास्या त्वासना स्थिति' ॥ २१ ॥

व्यय ये दो (पु०) नाम अपहरण (ग्रान् ल्ने) के हैं । समाहार, समुच्चय ये दो (पु०) नाम इन्द्रके हैं । प्रत्याहार (पु०), उपादान (न०) ये दो नाम इन्द्रियों के स्वीचने के हैं । विहार, परिश्रम ये दो (पु०) नाम सर करने के हैं ॥ १६ ॥ अभिहार (पु०), अभिग्रहण (न०) ये दो नाम चोरी करने के हैं । निर्हार (पु०), अभ्यवर्षण (न०) ये दो नाम शिल्प आदि निरुत्सने के हैं । अनुहार, अनुकार ये दो (पु०) नाम नरल करने के हैं । व्यय यह एक (पु०) नाम रचने का है ॥ १७ ॥ प्रवाह (पु०), प्रवृत्ति (स्त्री०) ये दो नाम पानी आदिकी निरंतर गति के हैं । प्रवह यह एक (पु०) नाम बाहिर वह निरुत्सने का है । वियाम, वियम, याम, यम, सयाम, संयम ये छ (पु०) नाम सयम के हैं ॥ १८ ॥ हिंसा कर्म (नात्तन०) यह एक नाम मारना आदि अभिचार का है । जागर्या (स्त्री०), जागरा (पु० स्त्री०) ये दो नाम जागने के हैं । विघ्न, अन्तराय, प्रत्यूह ये तीन (पु०) नाम विघ्न के हैं । उपघ्न यह एक (पु०) नाम समीपभूत आश्रय का है ॥ १९ ॥ निवेश, उपभोग ये दो (पु०) नाम उपभोग के हैं । परिसर्प (पु०), परिश्रिया (स्त्री०) ये दो नाम परिश्रम अर्थात् श्रम के हैं । विधुर (न०), प्रविश्लेष (पु०) ये दो नाम अर्थात् श्रम के हैं । अभिप्राय, छन्द, आशय ये तीन (पु०) नाम अभिप्राय के हैं ॥ २० ॥ सक्षेपण, समसन ये दो (न०) नाम सक्षेपण के हैं । पर्यवस्था (स्त्री०), विरोधन (न०) ये दो नाम विरोध के हैं ।

विस्तारो विग्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।
 संवाहनं मर्दनं स्याद्विनाशः स्याददर्शनम् ॥ २२ ॥
 संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
 नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः संनिकर्षणम् ॥ २३ ॥
 लवोऽभिलावो लवने निष्पावः पवने पवः ।
 प्रस्तावः स्यादवसरस्त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
 प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ।
 धीशक्तिर्निष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 स्यादभ्यादानमुद्धात आरम्भः संभ्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

परिसर्या (स्त्री०), परीसार (पु०) ये दो नाम सब ओर फैले हुएके हैं ।
 आस्या, आसना, स्थिति ये तीन (स्त्री०) नाम आसनके हैं ॥ २१ ॥
 विस्तार, विग्रह, व्यास ये तीन (पु०) नाम विस्तारके हैं । विस्तर यह
 एक (पु०) नाम शब्दसंबंधी विस्तारका है । संवाहन, मर्दन ये दो
 (न०) नाम अंगमर्दनके हैं । विनाश (पु०), अदर्शन (न०) ये दो
 नाम लोपके हैं ॥ २२ ॥ संस्तव, परिचय ये दो (पु०) नाम परिचयके
 हैं । प्रसर (पु०), विसर्पण (न०) ये दो नाम घाव आदिके फैलनेके
 हैं । नीवाक, प्रयाम ये दो (पु०) नाम धन धान्य आदिके संग्रहके हैं ।
 सन्निधि (पु०), सन्निकर्षण (न०) ये दो नाम पडौसके हैं ॥ २३ ॥
 लव, अभिलाव, लवन ये तीन (पु०) नाम अन्न आदिको काटनेके हैं ।
 निष्पाव (पु०), पवन (न०), पव (पु०) ये तीन नाम अन्न आदिको
 पवित्र करनेके हैं । प्रस्ताव, अवसर ये दो (पु०) नाम प्रसंगके हैं ।
 त्रसर (पु०), सूत्रवेष्टन (न०) ये दो नाम जुलाहेके बनाये सूत्रवेष्टन-
 विशेषके हैं ॥ २४ ॥ प्रजन, उपसर ये दो (पु०) नाम गर्भग्रहणके हैं ।
 प्रश्रय, प्रणय ये दो (पु०) नाम प्रेमके हैं । धीशक्ति (स्त्री०), निष्क्रम ये
 दो नाम बुद्धिकी सामर्थ्यके हैं । तहां निष्क्रमशब्द (पु० न०) है । संक्रम,
 दुर्गसंचर ये दो (पु०) नाम दुर्गमार्गके हैं ॥ २५ ॥ प्रत्युत्क्रम, प्रयोग ये
 दो (पु०) नाम युद्धके अर्थ अत्यंत उद्योगके हैं । प्रक्रम, उपक्रम ये दो
 (पु०) नाम प्रथमारंभके हैं । अभ्यादान (न०), उद्धात (पु०), आरंभ

प्रतिबन्ध. प्रतिष्टम्भोऽवनायस्तु निपातनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभव' समालम्भो विलेपनम् ॥ २७ ॥
 विप्रलंभो विप्रयोगो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।
 विश्रावस्तु प्रतिख्यातिरवेक्षा प्रतिजागर. ॥ २८ ॥
 निपाठनिपठौ पाठे तेमस्तेमौ समुन्दने ।
 आदीनवान्त्रवीं क्लेशे मेलके सङ्गसगमौ ॥ २९ ॥
 सवीक्षण विचयन मार्गणं मृगणा मृग. ।
 परिरम्भ परिष्वङ्ग संश्लेष उपगूहनम् ॥ ३० ॥
 निर्वर्णन तु निध्यान दर्शनालोकनेक्षणम् ।
 प्रत्याख्यान निरसन प्रत्यादेशो निराकृति ॥ ३१ ॥

(पु०) ये तीन नाम आरम्भमात्रके हैं । सभ्रम (पु०), त्वरा (स्त्री०) ये दो नाम सत्रेगके हैं ॥ २६ ॥ प्रतिबन्ध, प्रतिष्टम्भ ये दो (पु०) नाम कार्यके रूपके हैं । अवनाय (पु०), निपातन (न०) ये दो नाम नीचेको गिरनेके हैं । उपलम्भ, अनुभव ये दो (पु०) नाम साक्षात्कारके हैं । समालम्भ (पु०), विलेपन (न०) ये दो नाम केसर आदिसे किये लेपके हैं ॥ २७ ॥ विप्रलंभ, विप्रयोग ये दो (पु०) नाम विप्रयोगके हैं । विलम्भ (पु०), अतिसर्जन (न०) ये दो नाम अत्यन्त दानके हैं । विश्राव (पु०), प्रतिख्याति (स्त्री०) ये दो नाम अत्यन्त प्रसिद्धिके हैं । अवेक्षा (स्त्री०), प्रतिजागर (पु०) ये दो नाम यन्तुओंको देखनेके हैं ॥ २८ ॥ निपाठ, निपठ, पाठ ये तीन (पु०) नाम पठनेके हैं । तेम (पु०), स्तेम (पु०), समुन्दन (न०) ये तीन नाम आद्राभाव (गीले करने) के हैं । आदीनव, आश्रव, क्लेश ये तीन (पु०) नाम क्लेशके हैं । मेलक, सग, सगम ये तीन (पु०) नाम सगम (मेल) के हैं ॥ २९ ॥ सवीक्षण (न०), विचयन (न०), मार्गण (न०), मृगणा (स्त्री०), मृग (पु०) ये पाँच नाम तात्पर्यमें यन्तुओंके दूढ़नेके हैं । परिरम्भ (पु०), परिष्वङ्ग (पु०), संश्लेष (पु०), उपगूहन (न०) ये चार नाम आदिगानके हैं ॥ ३० ॥ निर्वर्णन, निध्यान, दर्शन, अलोकन, इक्षण ये पाँच (न०), नाम निम्नर देखनेके हैं । प्रत्याख्यान (न०), निरसन (न०), प्रत्यादेश (पु०), निराकृति (स्त्री०) ये चार नाम निगकरणके हैं ॥ ३१ ॥

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

अर्तनं च ऋतीया च हणीया च घृणार्थकाः ॥ ३२ ॥

स्याद्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

पर्यायोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

स संस्तावः ऋतुषु या स्तुतिभूमिर्द्विजन्मनाम् ॥ ३४ ॥

निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्धनः ।

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥

आविधो विध्यते येन तत्र विष्वक्समे निघः ।

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्थकौ ॥ ३६ ॥

निगारोद्गारविक्षावाद्ग्राहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥

आरत्यवरतिविरतय उपरामेऽथास्त्रियां तु निष्ठेवः ।

निष्ठञ्चनिर्निष्ठवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ॥ ३८ ॥

उपशाय, विशाय ये दो (पु०) नाम पहर आदिके अनुसार शयनके हैं । अर्तन (न०) ऋतीया (स्त्री०), हणीया (स्त्री०), घृणा (स्त्री०) ये चार नाम करुणाके हैं ॥ ३२ ॥ व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्यय ये चार (पु०) नाम, व्यतिक्रम (उलट पुलट) के हैं । पर्याय, अतिक्रम, अतिपात, उपात्यय ये चार (पु०) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३३ ॥ प्रतिशासन यह एक (न०) नाम नौकर आदिको बुलाके प्रेरित करनेका है । संस्ताव यह एक (पु०) नाम यज्ञोंमें वेदको गानेवाले ब्राह्मणोंके स्तवन-देशका है ॥ ३४ ॥ उद्धन यह एक (पु०) नाम जिस काठपर काठको स्थापित कर छोला जावे उस काठका है । स्तंबघ्न, स्तंबघन ये दो (पु०) नाम खुरपेके हैं ॥ ३५ ॥ आविध यह एक (पु०) नाम जिस करके वेधा जावे उस शस्त्रविशेष अर्थात् वंमेका है । निघ यह एक (पु०) नाम सब ओरसे समानरूप वृक्षका है । उत्कार, निकार ये दो (पु०) नाम अन्नको ऊपर निकालनेके हैं ॥ ३६ ॥ निगार यह एक (पु०) नाम निगलनेका है । उद्गार यह एक (पु०) नाम वमनका है । विक्षाव यह एक (पु०) नाम छीकका है । उद्ग्राह यह एक (पु०) नाम ऊपरको करके ग्रहण करनेका है ॥ ३७ ॥ आरति, अवरति, विरति, उपराम ये चार नाम उप-

जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्यादथ ज्वरे जूर्ति ।
उदजस्तु पशुप्रेरणमकरणित्यादयः शापे ॥ ३९ ॥
गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवकादिकम् ।
आपृषिकं शाण्डुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥
माणवाना तु माणव्यं सहायाना सहायता ।
हल्या हलाना ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥
द्वे पशुकाणा पृष्ठाना पार्श्वं पृष्ठचमनुक्रमात् ।
खलाना खलिनी खल्याप्यथ मानुष्यक नृणाम् ॥ ४२ ॥
ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक्पृथक् ।
आपि साहस्रकारीपवार्मणाथर्वणादिकम् ॥ ४३ ॥

इति संकीर्णवर्ग ॥ २ ॥

रामके है । उपराम (पु०) शेष (स्त्री०) है । निष्ठेव (पु० न०), नि-
ष्ठच्छति (स्त्री०), निष्ठेवन (न०), निष्ठीवन (न०) ये चार नाम
थूकनेके हैं ॥ ३८ ॥ जवन (न०), जूर्ति (स्त्री०) ये दो नाम वेगके
हैं । साति (स्त्री०), अवसान (न०) ये दो नाम अतके है । ज्वर
(पु०), जूर्ति (स्त्री०) ये दो नाम ज्वरके है । उदज यह एक (पु०)
नाम पशुओंके प्रेरणाका है । अकरणि (पु०), अजननि, अवग्राह,
निग्राह आदि शब्द शापके वाचक हैं ॥ ३९ ॥ अपत्यार्थं प्रत्ययान औपगव
आदि शब्दोंसे “ उसका समूह ” इस अर्थमें औपगवक आदि जानने ।
जैसे-‘उपगोरपत्यानि पुमांस औपगवास्तेषां समूह औपगवाम्’ और यह
एक (न०) नाम उपगुकी सनानोंके समूहका है । आपृषिक यह एक (न०)
नाम जडरूप अपूप अर्थात् मालपुत्रे आदिके समूहका है । शाण्डुलिक
यह एक (न०) नाम शण्डुली अर्थात् पुरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥
माणव्य यह एक (न०) नाम माणव अर्थात् बालकोंके समूहका है ।
सहायता यह एक (स्त्री०) नाम सहायोंके समूहका है । हल्या यह एक
(स्त्री०) नाम हलोंके समूहका है । ब्राह्मण्य, वाडव्य ये दो (न०)
नाम ब्राह्मणोंके समूहके है ॥ ४१ ॥ पार्श्व यह एक (न०) नाम पार्श्वका
अर्थात् अभ्यक्षिशेनके समूहका है । पृष्ठ यह एक (न०) नाम पृष्ठोंके
समूहका है । खलिनी, खल्या ये दो (स्त्री०) नाम खलोंके समूहके है ।
मानुष्यक यह एक (न०) नाम मनुष्योंके समूहका है ॥ ४२ ॥ ग्रामता

अथ नानार्थवर्गः ३ ।

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः ।

भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥ १ ॥

आकाशे त्रिदिवे नाको लोकस्तु भुवने जने ।

पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्गे च सायकः ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ पृथुकौ चिपिटार्मकौ ।

आलोकौ दर्शनद्योतौ भेरीपटहमानकौ ॥ ३ ॥

यह एक (स्त्री०) नाम ग्रामोंके समूहका है । जनता यह एक (स्त्री०) नाम जनोंके समूहका है । धूम्या यह एक (स्त्री०) नाम धूमोंके समूहका है । पाश्या यह एक (स्त्री०) नाम पाशोंके समूहका है । गल्या यह एक (स्त्री०) नाम गल अर्थात् बृहत्काशोंके समूहका है । साहस्र यह एक (न०) नाम सहस्रोंके समूहका है । कारीप यह एक (न०) नाम करीष अर्थात् सूखे हुए गोबरके आरनोंके समूहका है । वार्मण यह एक (न०) नाम वर्म अर्थात् कवचोंके समूहका है । आथर्वण यह एक (न०) नाम अथर्वणोंके समूहका है । चार्मण यह एक नाम चर्मोंके समूहका है ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः । जो यह कहो कि किसलिये अनेकार्थोंका आरंभ किया जाता है । क्योंकि वे शब्द तो पूर्वोक्त वर्गोंमें कहे गये हैं और जो यहांभी कहे जावेंगे तो पहले क्यों कहे हैं ? तहां कहते हैं कि यहां वक्ष्यमाण कांत आदि वर्गोंमें कितनेही अनेक अर्थवाले कहे हैं और प्रागुक्त पर्यायोंमें नहीं और बहुतसे प्रयोग कवियोंने काव्य आदिकोंमें अधिकासे कहे हैं वेही पूर्वोक्त पर्यायोंमें दीखते हैं । जैसे नाकशब्द पूर्व कहे वर्गोंमें स्वर्ग और आकाशका वाची कहा है वह फिर यहां कहा जावेगा और जंबुक शब्द गीदडके नामोंमें कहा है और वरुणके नामोंमें नहीं इसलिये यहां फिर कहा जावेगा ॥ १ ॥ नाक यह एक (पु०) नाम आकाश और स्वर्गका है । लोक यह एक (पु०) नाम स्वर्ग आदिका और जनका है । श्लोक यह एक (पु०) नाम अनुष्टुप् आदि पद्य और यशका है । सायक यह एक (पु०) नाम शर और तलवारका है ॥ २ ॥ जंबुक यह एक (पु०) नाम गीदड और वरुणका है । पृथुक यह एक (पु०)

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्गः कलङ्कोऽङ्गापवादयोः ।
 तक्षको नागवर्धकयोरर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥ ४ ॥
 मारुते वेधसि ब्रध्ने पुसि कः क शिरोम्बुनो ।
 स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ५ ॥
 उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।
 कमण्डलौ च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥
 किष्कुर्हरते वितस्तां च शूकक्रोटे च वृश्चिकः ।
 प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिण्वेकदेशे तु पुस्तयम् ॥ ७ ॥
 स्याद्भूतिक तु भूनिम्बे कनूण भूतृणोऽपि च ।
 ज्योतिस्त्रिफाया च घोपे च कोशातक्यथ कद्रुले ॥ ८ ॥
 सिते च खदिरे सोमवल्क स्यादथ मिह्लके ।
 तिलकल्के च पिण्याको वाह्लीक रामठोऽपि च ॥ ९ ॥

नाम भूने चाण्ड और वाण्डका है । आलोक यह एक (पु०) नाम
 दीपना और प्रकाशका है । आनक यह एक (पु०) नाम भेरी और
 मृदगका है ॥ ३ ॥ अरु यह एक (पु०) नाम गौड़ और चिह्नका है ।
 कलक यह एक (पु०) नाम चिह्न और अपवादना है । तक्षक यह एक
 (पु०) नाम नागना और चटईका है । अर्क यह एक (पु०) नाम
 स्फटिकमणि और सूर्यका है ॥ ४ ॥ क यह एक (पु०) नाम वायु,
 ब्रह्मा, सूर्य इहोंका है और यही (न०) नाम शिर और जटका है ।
 पुलाक यह एक (पु०) नाम तुच्छ अन्न और अन्नके अवयवका है
 ॥ ५ ॥ पेचक यह एक (पु०) नाम उलू और हाथीकी पुच्छके मृत्के
 गुदान्छादक मानका है । करक यह एक (पु० न०) नाम कमण्डलु और
 चकारसे आकाशमे बंध हुए ओलेका है । विनायक यह एक (पु०) नाम
 वृद्धका और चकारमे गणेशका है ॥ ६ ॥ किष्कु यह एक (पु०) नाम हाथ
 और बिस्तरा है । वृश्चिक यह एक (पु०) नाम शूकक्रोटा और चकार
 से जिनूरा है । प्रतीक यह एक शब्द प्रतिकूलका वाची (नि०) है और
 अवयवका वाची (पु०) है ॥ ७ ॥ भूतिक यह एक (न०) नाम शिग
 यना और गध तृणनिक्षेपका है । कोशातकी यह एक (स्त्री०) नाम
 कदय, तोरई और उगाका है ॥ ८ ॥ सोमदन्क यह एक (पु०) नाम

महेन्द्रगुग्गुलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः ।

रुक्तापशङ्कास्वातङ्कः स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥ १० ॥

जैवातृकः शशाङ्केऽपि स्वरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्चानः स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यादलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ १२ ॥

शीलान्वयावनूके द्वे शल्के शकलवलकले ।

साष्टे ज्ञत सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥

दीनाभेऽपि च निष्कोऽस्त्री कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।

दम्भेऽप्यथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥ १४ ॥

कायफल और सुपेद खैरका है । पिण्याक यह एक (पु० न०) नाम पण्यभेदका और स्नेहरहित तिलंके चूर्णका है । बाह्यीक यह एक (न०) नाम हींगका और चकारसे बाह्यीक देशका और घोडेका है ॥ ९ ॥ कौशिक यह एक (पु०) नाम इन्द्र, गुग्गुलू, उल्लू, सर्पग्राही, विश्वामित्र और नौलेका है । आतंक यह एक (पु०) नाम रोग, ताप, शंका, भय इन्हींका है । क्षुल्लक यह एक (त्रि०) नाम स्वल्पका और अपिशब्दसे नीच, दादुरका है ॥ १० ॥ जैवातृक यह एक (त्रि०) नाम चंद्रमाका और अपिशब्दसे दीर्घायु और कुशाका है । वर्तक यह एक (पु०) नाम अश्वके स्वरका और अपिशब्दसे बतक पक्षीका है । पुण्डरीक यह एक (पु०) नाम वधेराका और अपिशब्दसे (न०) सुपेद कमलका है । दीपक यह एक (पु०) नाम अजमानका और अपिशब्दसे प्रकाशका है ॥ ११ ॥ शालावृक यह एक (पु०) नाम वानर, गीदड, कुत्ता इन्हींका है । गैरिक यह एक (न०) नाम सोनेका और अपिशब्दसे गेरूका है । व्यलीक यह एक (न०) नाम अप्रियका और पीडाका है । अलीक यह एक (न०) नाम अप्रिय और झूठका है ॥ १२ ॥ अनूक यह एक (न०) नाम स्वभावका और वंशका है । शल्क यह एक (न०) नाम खंड और छालका है । निष्क यह एक (पु० न०) नाम सोनेके १०८ कर्पांका, सुवर्णका, छातीके गहनेका, पलभर सोनेका ॥ १३ ॥ और व्यवहारके अनुसार द्रव्यभेदका है । कल्क यह एक (पु० न०)

धेनुका तु करेणा च मेघजाले च कालिका ।
 कारिका यातनावृत्त्यो' कार्णिका कर्णभूषणे ॥ १५ ॥
 करिहर्सेऽगुलौ पद्मबीजकोश्या त्रिपूत्रे ।
 वृन्दारकौ रूपिमुख्यावके मुख्यान्वकेवला. ॥ १६ ॥
 स्याद्दाम्भिक. कौकुटिको यश्चाद्गेरितेक्षण' ।
 लालाटिक प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च य ॥ १७ ॥
 " मृभृत्तितम्बवलयचक्रेषु कटकौऽस्त्रियाम् ।
 सूच्यते क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च कण्टक' ॥
 पाकौ पक्तिशिशू मव्यात्र नेतारि नायक ।
 पर्यङ्क. स्यात्परिकरे स्याद्वयाग्रेऽपि च लुब्धकः ॥

नाम विष्ठा और पाप और पासडका है । पिनाक यह एक (पु० न०)
 नाम त्रिशूल और महादेवके धनुषका है ॥ १४ ॥ धेनुका यह एक (स्त्री०)
 नाम हयनीका और चकारसे नवीन व्याई हुई गौका है । कालिका यह
 एक (स्त्री०) नाम मेघके समूहका और चकारमे कालिकादेवीका है ।
 कारिका यह एक (स्त्री०) नाम नरकयातनाका और विवरणश्लोकका
 है । कार्णिका यह एक (स्त्री०) नाम कानकी तरकी ॥ १५ ॥ हागी
 की सूडेके अग्रभाग, अगुला, कमलक बीजका गुच्छा इत्याका है ।
 इससे आगे और खानशब्दीसे पहले सब शब्द (त्रि-) है । वृन्दारक
 यह एक नाम देवताका, रूपजालेका और मुरयका है । एकशब्द मुरय,
 अन्य और केवल इहोंका षाचक है ॥ १६ ॥ कौकुटिक यह एक नाम
 मायावीका और जो मभीप प्रेरित क्रिये नेत्रोंवाला हो उत्पन्न है ।
 लालाटिक यह एक स्वामीके मन्त्रको देखनेवालेका और कार्य करनेमें
 असमर्थका है ॥ १७ ॥ " कटक यह एक (पु० न०) नाम पर्यंत, नित्य,
 तटा, चक्र इनका है । कटक यह एक (पु०) नाम सूईका अग्र, छोटा
 शत्रु, रोमोंका उगना इनका है । पाक यह एक (पु०) नाम पाक
 और बालक इनका है । नायक यह एक (पु०) नाम मध्यरत्न और
 प्रभुका है । पर्यङ्क यह एक (पु०) नाम पर्यङ्क और समूहका है । लुब्धक
 यह एक (पु०) नाम धेरा और लुब्धकका है । पाठान्तरसे लुब्धक नाम
 चार्त्तान्तपताभी है । पेरक यह एक (त्रि०) नाम समूह और मद्रका

पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च देशिकः ।
 खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च जालिकः ॥
 पुष्परेणौ च किञ्जल्कः शुल्कोऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च ।
 स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका वार्धकं भाववृन्दयोः ॥
 करिण्यां चापि गणिका दारकौ बालभेदकौ ।
 अन्धेऽप्यनेडमूकः स्यादृङ्गौ दर्पाश्मदारणौ ॥ ”

इति कान्ताः ।

मयूखस्तिवट्करज्वालास्वलिवाणौ शिलीमुखौ ।
 शङ्खो निधौ ललाटास्थिन कर्क्वौ न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥
 वृणिज्वाले अपि शिखे-

इति खान्ताः ।

शैलवृक्षौ नगावगौ ।

आशुगौ वायुविशिखौ शार्कविहगाः खगाः ॥ १९ ॥

है । देशिक यह एक (पु०) नाम गुरु और देशमें होनेवालेका है । खेटक यह एक (पु०) नाम ग्राम और फलकका है । जालिक यह एक (पु०) नाम धीमर और जालीका है । किंजल्क यह एक (पु०) नाम पुष्परेणुका और किंजल्कका है । शुल्क यह एक (पु० न०) नाम स्त्रीधनका है । उत्कलिका यह एक (स्त्री०) नाम लहरियोंका है । वार्धक यह एक (न०) नाम भाव और समूहका हैं । गणिका यह एक (स्त्री०) नाम हथिनी और वेश्याका है । दारक यह एक (पु०) नाम बालक और भेदनेवालेका है । अनेडमूक यह एक (पु०) नाम आंधरेका है । टंक यह एक (पु०) नाम गर्व और टांकीका है । ” यहाँ ककारांत शब्द समाप्त हुए ॥ मयूख यह एक (पु०) नाम शोभा, किरण, ज्वाला इन्हींका है । शिलीमुख यह एक (पु०) नाम भौरकेका और वाणका है । शंख यह एक (पु०) नाम खजांना, मस्तककी हड्डी और शंख इन्हींका है, जब शंखवाची है तब (पु० न०) है । ख यह एक (न०) नाम इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, विन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक, कल्याण इन्हींका वाची है ॥ १८ ॥ शिखा यह एक (स्त्री०) नाम किरणका और चोटीका है यहाँ खकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नग, अग ये दोनों (पु०) नाम पर्वतके और

पतङ्गौ पक्षिसूर्यौ च पूगं क्रमुक्वृन्दयोः ।
 पशवोऽपि मृगा वेगः प्रवाहज्वयोरपि ॥ २० ॥
 परागं कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥ २१ ॥
 सर्गं स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।
 योगः संनहनोपायध्यानसगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
 भोगः सुखे ह्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः ।
 चातके हरिणे पुंसि सारङ्ग शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
 कपौ च प्लवगं शापे त्वभिपङ्गं पराभवे ।
 यानाद्यङ्गे युगं पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥

वृक्षके है । आशुग यह एक (पु०) नाम वायुका और बाणका है । खग यह एक (पु०) नाम बाण, पक्षी और सूर्यका है ॥१९॥ पतग यह एक (पु०) नाम पक्षी, सूर्य और शालिचावलके भेदका है । पूग यह एक (पु०) नाम सुपारीके वृक्ष और समूहका है । मृग यह एक (पु०) नाम पशुका, मृगशिरका और डूढनेका है । वेग यह एक (पु०) नाम प्रवाहका और वेगका है और अपिशब्दसे विष्ठाको गुदाके बाहिर निकासनेका है ॥२०॥ पराग यह एक (पु०) नाम फूलसबधी रेणु और स्नानके योग्य गंधके चूर्णविशेषका है और अपिशब्दसे उपरागका है । नाग मातग ये दो (पु०) नाम हस्तीके और अपिशब्दसे सर्प, नागनेसर पानवेल आदिके है । अपाग यह एक (पु०) नाम तिलकका और अपिशब्दसे नेत्रके अन्तभाग और अगहोनका है ॥ २१ ॥ सर्ग यह एक (पु०) नाम स्वभाव, त्याग, निश्चय, अध्याय, सृष्टि इन्हींका है । योग यह एक (पु०) नाम कवच, उपाय, ध्यान, सगति, युक्ति इन्हींका है ॥२२॥ भोग यह एक (पु०) नाम सुख, पण्यस्त्री, हस्ती घोडे आदिका मूल्य, पालन वा भरना, सर्पके फण और शरीर इनका है । सारग यह एक (पु०) नाम पेया और हिरणका है । और शबलका वाची (त्रि०) है ॥ २३ ॥ श्वग यह एक (पु०) नाम वानर और चकारसे मँडक और सारथि आदिका है । अभिपग यह एक (पु०) नाम शापका और तिरस्कारका है । युग यह एक नाम रथ गाडे आदिके अवयवमें (पु०) है और जोडा और सत्ययुग

स्वर्गेषु पशुवाग्बज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले ।

लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौर्लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥ २५ ॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वीश्व वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु ॥ २६ ॥

इति गान्ताः ।

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽप्योघो वृन्देऽम्भसां रये ।

मूल्ये पूजाविधावर्षोऽहोद्दुःखव्यसनेष्वधम् ॥ २७ ॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः—

इति घान्ताः ।

काचाः शिष्यमृद्देददृष्ट्युजः ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः पावके शुचिः ॥ २८ ॥

मास्यमात्ये चात्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः ।

आदिका वाची (न०) है ॥ २४ ॥ गो यह एक नाम स्वर्ग, बाण, पशु, वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, पानी इन्होंका है और प्रयोगके अनुसार (स्त्री०) और (पु०) है । लिंग यह एक (न०) नाम चिह्नका और लिंगइन्द्रियका है ॥ २५ ॥ गृंग यह एक (न०) नाम प्रधानपना, शिखर और चकारसे पशुके सींगका है । वरांग यह एक (न०) नाम शिरका और योनिका है । भग यह एक (न०) नाम लक्ष्मी, काम, ऐश्वर्य, वीर्य, यत्न, अर्क, कीर्ति इन्होंका है ॥ २६ ॥ यहां गकारांत शब्द समाप्त हुए ॥ परिघ यह एक (पु०) नाम लोहेकी लाठीका और अपि-शब्दसे योगभेदका है । ओघ यह एक (पु०) नाम समूह और पानीके प्रवाहका है । अर्ध यह एक (पु०) नाम मोलका और पूजाके जलका है । अध यह एक (न०) नाम पाप, दुःख अर्थात् बुढापा मरण आदि, व्यसन अर्थात् शिकार जूआ खेलने आदिका है ॥ २७ ॥ लघु यह एक (त्रि०) नाम मनोवाञ्छित और अल्पका है ॥ यहां घकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ काच यह एक (पु०) नाम छाँक, काँच, नेत्ररोग इन्होंका है । प्रपञ्च यह एक (पु०) नाम विपरीतपनेका और विस्तारका है । शुचि यह एक नाम अग्निका ॥ २८ ॥ और आषाढ महीना, मंत्री तथा शुद्ध चित्तवालेका

“ प्रसन्ने भल्लुकैऽप्यच्छो गुच्छः स्तवकहारयोः ।
परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥ १ ॥ ”

इति क्षेपकाश्रयान्ताः ।

केकिताक्षर्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजा ।

अजा विष्णुहरच्छागा गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥ ३० ॥

धर्मराजौ जिनयमौ कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।

वलजे क्षेत्रपृद्दारे वलजा वलगुदर्शना ॥ ३१ ॥

समे क्षमाशे रणेऽप्याजि प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।

अब्जो शंखशशङ्कौ च स्वके नित्ये निज त्रिपु ॥ ३२ ॥

इति जान्ता ।

है और (पु०) है । पवित्रमे और शुक्लवर्णमे (त्रि०) है । रुचि यह एक (स्त्री०) नाम मिलाप, बहुत इच्छा, किरण इन्हींका है और चकारसे शोभाका है ॥ २९ ॥ यहा चकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ “ अच्छ यह एक (पु०) नाम रीछ, प्रसन्न और अपिशब्दसे स्फटिकका है । गुच्छ यह एक (पु०) नाम गुच्छेका और हारका है । कच्छ यह एक नाम धोती आदि पहिरनेके वस्त्रका किनारा, नावना अगविशेष, जलप्रायदेश इन्हींका है । तहां वधवाची (पु०) है और तट नौकाद्गादिवाची (त्रि०) है । ” यहाँ छकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अहिभुज यह एक (पु०) नाम मोरका और गरुड (और नौले) का है । द्विज एक (पु०) नाम दांत, ब्राह्मण, पक्षी इन्हींका है । अज यह एक (पु०) नाम विष्णु, महादेव, चक्रा इन्हींका है । व्रज यह एक (पु०) नाम गौओंका स्थान, मार्ग, समूह इनका है ॥ ३० ॥ धर्मराज यह एक (पु०) नाम जिन अर्थात् बुद्धदेवता और यमदेवता और युधिष्ठिरका है । कुज यह एक (पु० न०) नाम हुस्तीके दांतका और निकुञ्जका है । वलज यह एक (न०) नाम खेत और नगरके द्वारका है । वलजा यह एक (स्त्री०) नाम सुन्दर स्त्रीका है ॥ ३१ ॥ आजि यह एक (स्त्री०) नाम समानरूप पृथ्वीभागका और युद्धका है । प्रजा यह एक (स्त्री०) नाम सतानका और जनका है । अब्ज यह एक (पु०) नाम शंख और चन्द्रमाका है । निज यह एक

पुंस्यात्मानि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यालिङ्गकः ।
संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्वर्यसूचना ॥ ३३ ॥

इति जान्ताः ।

काकेभगण्डौ करटौ गजगण्डकटी कटौ ।
शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥
देवशिल्पिन्यपि त्वष्टा दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः ।
रसे कटुः कटुकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः ॥ ३५ ॥
रिष्टं क्षेमाशुभाभावेष्वरिष्टे तु शुभाशुभे ।
मायानिश्रल्यन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
अयोवने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ।
सूक्ष्मलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संगयेऽपि सा ॥ ३७ ॥

(त्रि०) नाम अपना और नित्यका है ॥ ३२ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ क्षेत्रज्ञ यह एक नाम आत्माका वाची (पु०) है और कुशलका वाची (त्रि०) है । संज्ञा यह एक (स्त्री०) बुद्धि, नाम और हाथ भौंह लोचन आदिसे अर्थकी सूचना करनेका है । गायत्री और सूर्यकी स्त्रीकोभी कहते हैं ॥ ३३ ॥ यहाँ जकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ करट यह एक (पु०) नाम काकका और हाथीके कपोलका है । कट यह एक (पु०) नाम हाथीके कपोलका और कटिका और चटाईका है । शिपिविष्ट यह एक (पु०) नाम बालोंसे रहित शिरवाला, दुष्टचामवाला और महादेवका है ॥ ३४ ॥ त्वष्ट (ऋकारान्त) यह एक (पु०) नाम विश्वकर्माका और अपिशब्दसे सूर्यविशेष तथा खातीका है । दिष्ट यह एक नाम देवका वाची (न०) है और कालका वाची (पु०) है । कटु यह एक नाम रसका वाची (पु०) है और अकार्यका वाची (न०) है । मत्सर और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है ॥ ३५ ॥ रिष्ट यह एक (न०) नाम कुशल, अमंगल, अशुभके अभावका है । अरिष्ट यह एक (न०) नाम शुभ अशुभका है । सोवडका घर, मदिरा और मरणके चिह्नकाभी है ॥ ३६ ॥ कूट यह एक (पु० न०) नाम माया, निश्चल्यंत्र, कपट, झूठ, समूह, लोहेका समूह, पर्वतका शिखर, हलका अंग इन्हींका है । त्रुटि यह एक (स्त्री०) नाम छोटी इलायचीका है और कालभेद, लेश, सन्देह इन्हींका है ॥ ३७ ॥

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यो मूले लग्नकचे जटा ।
 व्युष्टिः फले समृद्धौ च दृष्टिर्ज्ञानेऽदिग दर्शने ॥ ३८ ॥
 इष्टियागेच्छयोः सृष्टे निश्चिते बहुनि त्रिषु ।
 कष्टे तु कृच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥
 पटुर्द्रौ वाच्यलिङ्गौ च—

इति ढान्ताः ।

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ।

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठर कुसलोऽन्तर्गृह तथा ॥ ४० ॥
 निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ता काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ।
 त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयो ॥ ४१ ॥

इति ढान्ताः ।

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्दण्डो गोलेषुपाकयोः ।

सर्पमासात्पशू व्याडौ गोभूवाचस्त्विडा इला ॥ ४२ ॥

कोटि यह एक (स्त्री०) नाम धनुषके अग्रभाग, प्रकर्ष, कोण, सख्याभेद इन्होंका है । जटा यह एक (स्त्री०) नाम मूल, मिले हुए बाल, जयमांसी इन्होंका है । व्युष्टि यह एक (स्त्री०) नाम फलका और समृद्धिका है । दृष्टि यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, आँख, देखना इन्होंका है ॥ ३८ ॥ इष्टि यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञका और इच्छाका है । सृष्ट यह एक (त्रि०) नाम निश्चय और बहुतका है । कष्ट यह एक नाम दु खका और दु रसे प्राप्त हो सकनेवाली वस्तुका है ॥ ३९ ॥ पटु यह एक नाम चतुर, तीक्ष्ण, रोगहीन इन्होंका है । कष्ट और पटु ये दोनो शब्द वाच्यलिंगी है । यहाँ टकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नीलकण्ठ यह एक (पु०) नाम महादेवका और अपि शब्दसे मोरका है । कोष्ठ यह एक (पु०) नाम पेटके भीतर अन्नके मका नका, कठीलेका और भीतरके घरका है ॥ ४० ॥ निष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम सिद्धि, नहीं दीखना, नाश इन्होंका है । काष्ठा यह एक (स्त्री०) नाम उत्कर्ष, स्थिति और दिशाका है । ज्येष्ठ यह एक (त्रि०) नाम अत्यत उत्तमका है और अपिशब्दसे अत्यत वृद्ध, बडा और जेठ महीनेका है । कनिष्ठ यह एक (त्रि०) नाम बालकका और अल्पका है ॥ ४१ ॥ यहाँ ठकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ दण्ड यह एक (पु० न०) नाम

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि नाडी नालेऽपि षट्क्षणे ।
काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्धवर्गवसरवारिषु ॥ ४३ ॥
स्याद्वाण्डमश्वभरणेऽमत्रे मूलवाणिग्धने ।

इति डान्ताः ।

भृशप्रतिज्ञयोर्वाढं प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ॥ ४४ ॥
शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ।

इति ढान्ताः ।

भ्रूणोऽर्भके छ्रैणगर्भे वाणो बलिषुते शरे ॥ ४५ ॥
कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे संघाते प्रमथे गणः ।
पणो घृतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ॥ ४६ ॥

लाठीका और अपिशब्दसे मानभेद और दंडका है । गुड यह एक (पु०) नाम गोलका और गुडका है । व्याड यह एक (न०) नाम सर्पके मांसको खानेवाले और पशुका है । इडा और इला ये दो (स्त्री०) नाम गौ, पृथ्वी, वाणी इन्होंके हैं और इला यह एक नाम बुधकी स्त्रीका भी है ॥ ४२ ॥
क्ष्वेडा यह एक (स्त्री०) नाम वंशकी सलाई और अपिशब्दसे विषका है । तर्हा विषका वाची (पु०) है । नाडी यह एक (स्त्री०) नाम नालका और छः क्षणपरिमित कालका अर्थात् घडीका है । कांड यह एक (पु० न०) नाम दंड, वाण, घोडा, वर्ग, अक्षर, पानी इन्होंका है ॥ ४३ ॥
भांड यह एक (न०) नाम घाडेके भूषण, पात्र, मूलरूप वैश्यके धनका है ॥ यर्हा डकारान्त शब्द समास हुए ॥ वाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और प्रतिज्ञाका है । प्रगाढ यह एक (न०) नाम अत्यंतका और दुःखका है ॥ ४४ ॥ दृढ यह एक (त्रि०) नाम समर्थका और स्थूलका है । व्यूढ यह एक (त्रि०) नाम धरोहरका और समूहका है ॥ यर्हा ढकारांत शब्द समास हुए ॥ भ्रूण यह एक (पु०) नाम बालकका और स्त्रीके गर्भका है । वाण यह एक (पु०) नाम बलिके पुत्रका और शरका है ॥ ४५ ॥ कण यह एक (पु०) नाम अत्यंत छोटेका और अन्नके अंशका है । गण यह का और महादेवके गणका है । पण यह एक की वाजी, वेतन मोल, धन और अपिशब्दसे

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशीर्यसंध्यादिके गुण' ।
 निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवयो क्षणः ॥ ४७ ॥
 वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाऽक्षरे ।
 अरुणो भास्करेऽपि स्याद्दर्णभेदेऽपि च त्रिषु ॥ ४८ ॥
 स्याणु' शर्वोऽप्यथ द्रोणः कावेऽप्याजौ रवे रण' ।
 ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ॥ ४९ ॥
 ऊर्णा मेपादिलोमि म्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः ।
 हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ॥ ५० ॥
 त्रिषु पाण्डौ च हरिण' स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मन. ।
 तृष्णे स्पृहापिपासे द्वे जुगुप्सावरुणे घृणे ॥ ५१ ॥
 विणक्पथे च विपणिः सुरा प्रत्यक् च वारुणी ।
 करेणुरिभ्या स्त्री नेमे द्रविण तु बल धनम् ॥ ५२ ॥

खरीदनेके योग्य शाक आदिका है ॥ ४६ ॥ गुण यह एक (पु०) नाम धनुषको डोरी, रस गंध आदि, सत्व रज, तम, चतुरपना, सधि विग्रह आदि इन्हींका है । क्षण यह एक (पु०) नाम चुपचाप रहना, काल विशेष, उत्सव इहोका है ॥ ४७ ॥ वर्ण यह एक (पु०) नाम ब्राह्मण आदि वर्ण, सुपेद आदि रंग, स्तुति इहोका है और अक्षरका वाची (पु० न०) है । अरुण यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अपिशब्दसे सूर्यके सारथिका है और कपिल वर्ण, सव्याका राग इन्हींका वाचक (त्रि०) है ॥ ४८ ॥ स्याणु यह एक (पु०) नाम महादेवका और स्तम्भ आदिका है । द्रोण यह एक (पु०) नाम द्रोणाचार्य, तोलविशेष, काक इन्हींका है । रण यह एक (पु०) नाम युद्धका और शब्दका है । ग्रामणी यह एक नाम नाईका वाची (पु०) है । अत्यंत उत्तम और गामके मालिकका वाची (त्रि०) है ॥ ४९ ॥ ऊर्णा यह एक (स्त्री०) नाम भंडा आदिके रोम, भृशुटियोंके घेरका है । हरिणी यह एक (स्त्री०) नाम मृगी, सोनेकी मूर्ति, हरे वर्णवाली इहोका है ॥ ५० ॥ हरिण यह एक (त्रि०) नाम पांडुर वर्णका और चन्द्ररसे मृगके भेदका है । स्पूणा यह एक (स्त्री०) नाम मजानके स्तम्भ और अपिशब्दसे लोहेकी प्रतिमाका है । तृष्णा यह एक (स्त्री०) नाम इच्छाका और तृपाका है । तृणा यह एक (स्त्री०) नाम निन्दाका और दयाका है ॥ ५१ ॥ विपणि यह

शरणं गृहरक्षित्रोः श्रीपर्णं कमलेऽपि च ।
 विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ॥ ५३ ॥
 प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमावृसु ।
 करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ॥ ५४ ॥
 प्राण्युत्पादे संसरणमसंवाधचमृगतौ ।
 घण्टापथेऽय वान्तात्ने समुद्गिरणमुन्नये ॥ ५५ ॥
 अतस्त्रिषु विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेमदन्तयोः ।
 प्रवर्णं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रहे ना तु चतुष्पथे ॥ ५६ ॥
 संकीर्णौ निचिताशुद्धौ विरिणं शून्यमृषरम् ।
 “ सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये । ”
 इति णान्ताः ।
 देवसूर्यौ विवस्वन्तौ सरस्वन्तौ नदार्णवौ ॥ ५७ ॥

एक (स्त्री०) नाम बाजारकी गली और दुकानका है । वारुणी यह एक (स्त्री०) नाम मदिराका और पश्चिम दिशाका है । करेणु यह एक नाम हथिनीका वाची (स्त्री०) और हाथीका वाची (पु०) है । द्रविण यह एक (पु० न०) नाम बलका और धनका है ॥ ५२ ॥ शरण यह एक (न०) नाम घरका और रक्षा करनेवालेका है । श्रीपर्ण यह एक (न०) नाम कमलका और चकारसे अरनीका है । तीक्ष्ण यह एक नाम विष, युद्ध, लोहा इन्हींका (न०) है और तीक्ष्णका वाची (त्रि०) है ॥ ५३ ॥ प्रमाण यह एक (न०) नाम हेतु, मर्यादा, शास्त्र, परिच्छेद, ज्ञाता इन्हींका है । कारण यह एक (न०) नाम क्रियाकी सिद्धिमें प्रकृष्ट कारणका है और क्षेत्र, अंग, इन्द्रिय इन्हींका है ॥ ५४ ॥ संसरण यह एक (न०) नाम प्राणियोंके जन्मका, निर्बाध सेनाके गमनका और चौहटका है । समुद्गिरण यह एक (न०) नाम उलटी किये अन्नका और जलके पात्र आदिको ऊपर लानेका है ॥ ५५ ॥ इससे आगे वक्ष्यमाण शब्द (त्रि०) हैं । विषाण यह एक नाम पशुके सींगका और हाथीके दंतका है । प्रवर्ण यह एक नाम क्रमसे ढूँधी पृथ्वीका और नम्रका है और चौराहेका वाचक (पु०) है ॥ ५६ ॥ संकीर्ण यह एक नाम व्यापक और अशुद्धका है । विरिण यह एक नाम शून्यका और ऊपर पृथ्वीका है । “ वरण

पक्षितास्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 अद्भ्युत्पातौ धूमकेतू जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ ५८ ॥
 हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे मरुतौ पवनामरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सूते भर्ता धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥
 यानपात्रे शिशौ पोतः प्रेत प्राण्यन्तरे मृते ।
 ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
 स्थपतिः कारुभेदेऽपि भृभृद्भूमिधरे नृपे ।
 मूर्धाभिपिक्तो भूपेऽपि ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥
 विष्णावप्यजिताव्यक्तौ सूतस्त्वष्टरि सारथौ ।
 व्यक्तः प्राज्ञेऽपि दृष्टान्ताजुमौ शास्त्रनिदर्शने ॥ ६२ ॥

यह एक (पु०) नाम पुल, वेणी, नदीका भेद और चालोंके समूहका है ॥”
 यहाँ णकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विवस्वत् (तान्) यह एक (पु०)
 नाम देवताका और सूर्यका है । सरस्वत् (मत्स्वन्त) यह एक (पु०) नाम
 नदका और समुद्रका है ॥ ५७ ॥ गरुत्मत् (मत्स्वन्त) यह एक (पु०)
 नाम पक्षीका और गरुटका है । शकुत् यह एक (पु०) नाम गीधका
 और पक्षीका है । धूमकेतु यह एक (पु०) नाम अग्निका और उल्का
 तरा है । जीमूत यह एक (पु०) नाम मेघका और पर्वतका है ॥ ५८ ॥
 हस्त यह एक (पु०) नाम हाथका और हस्त नक्षत्रका है । महत् यह
 एक (पु०) नाम पवनका और देवताका है । यत् (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम हाथीवाचका और सारथिका है । भर्तृ (ऋकारान्त पु०) यह
 एक नाम धारकका और माणिकका है ॥ ५९ ॥ पोत यह एक (पु०)
 नाम यानके पात्र अर्थात् दूगी आदिका और बालकका है । प्रेत यह एक
 (पु०) नाम भूतका और मरे हुएका है । केतु यह एक (पु०) नाम
 येतु ग्रहका और ध्वजाका है । सुत यह एक (पु०) नाम राजका और
 पुत्रका है ॥ ६० ॥ स्थपति यह एक (पु०) नाम शिल्पीका और अपि
 शब्दसे जीवोष्टि यज्ञको करनेवालेका है । भृभृत् यह एक (पु०) नाम
 पर्वतका और राजका है । मूर्धाभिपिक्त यह एक (पु०) नाम राजका
 और अपिशब्दसे प्रधानका है । ऋतु यह एक (पु०) नाम ग्रीको पूर
 आनेका और हेमत आदि ऋतुओंका है ॥ ६१ ॥ अभित, अ-पक्त ये

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे ।

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्धिशेषयोः ।

कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ॥ ६४ ॥

श्लेष्मादि रसरक्तादि महाभूतानि तद्गुणाः ।

इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः ॥ ६५ ॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे ।

कासू सामर्थ्ययोः शक्तिर्मूर्तिः काठिन्यकाययोः ॥ ६६ ॥

विस्तारवल्ल्योर्व्रततिर्वसती रात्रिवेश्मनोः ।

क्षयार्चयोरपचितिः सातिर्दानावसानयोः ॥ ६७ ॥

दो (पु०) नाम विष्णुके और महादेवके हैं । सूत यह एक (पु०) नाम खातीका और सारथिका है । व्यक्त यह एक (त्रि०) नाम पांडितका और स्फुटका है । दृष्टांत यह एक (पु०) नाम न्याय आदि शास्त्रका और उदाहरणका है ॥ ६२ ॥ क्षत्तृ (ऋकारान्त पु०) यह एक नाम सारथी, द्वारपाल और क्षत्रियकी स्त्रीमें शूद्रसे उत्पन्न बालकका है । वृत्तान्त यह एक (पु०) नाम प्रकरण, प्रकार, सकल्पना, वार्ता इन्हींका है ॥ ६३ ॥ आनर्त यह एक (पु०) नाम युक्त, नाचनेका स्थान, द्वारकापुर इन्हींका है । कृतान्त यह एक (पु०) नाम धर्मराज, सिद्धान्त, प्राक्तन कर्म, पाप इन्हींका है ॥ ६४ ॥ धातु यह एक (पु०) नाम कफ आदि, रस रक्त आदि, पृथ्वी पानी अग्नि वायु आकाश इन्हींके गंध आदि गुण, आंख आदि इन्द्रियां, मनशिल आदि, शब्दयोनि इन्हींका है ॥ ६५ ॥ शुद्धान्त यह एक (पु०) नाम स्थानके भीतरकी कक्षा, राजधानीविशेष, रनवास और आशोचिके अन्तका है । शक्ति यह एक (स्त्री०) नाम बरछीका और सामर्थ्यका है । आगेके वार्त्ताशब्दतक सब शब्द (स्त्री०) हैं । मूर्ति यह एक नाम कठिनपनेका और शरीरका है ॥ ६६ ॥ व्रताति यह एक (स्त्री०) नाम विस्तारका और बेलका है । वसति यह एक नाम रात्रिका और मकानका है । अपचिति यह एक नाम क्षयका और पूजाका है । साति यह एक नाम दानका और अन्तका है ॥ ६७ ॥

अर्तिः पीडाधनुष्कोटचोर्जाति सामान्यजन्मनो ।
 प्रचारस्यन्दयो रीतिरीतिर्दिम्बप्रवासयो ॥ ६८ ॥
 उदयेऽधिगमे प्राप्तिस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ।
 वीणाभेदेऽपि महती भूतिर्भस्मनि सपदि ॥ ६९ ॥
 नदीनगर्योर्नागाना भोगवत्यथ संगरे ।
 सङ्गे सभाया समिति क्षयवासावपि क्षिती ॥ ७० ॥
 खेगर्चेश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः ।
 जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ॥ ७१ ॥
 पक्तिश्छन्दोऽपि दशम स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ।
 पत्तिर्गती च मूले तु पक्षति पक्षमेदयोः ॥ ७२ ॥
 प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च कौशिक्याद्याश्च वृत्तयः ।
 सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे श्रवसि च श्रुतिः ॥ ७३ ॥

अर्ति यह एक नाम पीडाका और धनुषकी कोटिका है । जाति यह एक नाम सामान्यका और जन्मका है । रीति यह एक नाम प्रचारका और क्षिरनेका है । ईति यह एक नाम विप्लव याने अतिवृष्टि आदिका और प्रवासका है ॥ ६८ ॥ प्राप्ति यह एक नाम उदयका और लाभका है । त्रेता यह एक नाम तीनों अग्निका और त्रेतायुगका है । महती यह एक नाम नारदकी वीणा और बड़े गुणसे युक्त स्त्रीका है । भूति यह एक नाम भस्मका और सपत्का है ॥ ६९ ॥ भोगवती यह एक नाम नदीका और नागोकी नगरीका है । समिति यह एक नाम युद्ध, सग, सभा इन्होंका है । क्षिति यह एक नाम क्षय, वास, पृथ्वी इन्होंका है ॥ ७० ॥ हेति यह एक नाम सूर्यकी प्रभा, शस्त्र, अग्निकी ज्वाला इन्होंका है । जगती यह एक नाम लोकका, जगतिच्छन्दका और पृथ्वीका है ॥ ७१ ॥ पक्ति यह एक नाम पक्तिच्छन्दका और पक्तिका है । आयति यह एक नाम प्रभावका, उत्तरकालका और लवाईका है । पत्ति यह एक नाम गतिका और वीरभेदका है । पक्षति यह एक नाम पक्षकी आदिकी तिथिका और पिच्छके मूलका है ॥ ७२ ॥ प्रकृति यह एक नाम लिङ्गका और योनिका है । वृत्ति यह एक नाम विश्वामित्रकी बहनकी बनाई कौशिकी नदी और आरभटी और

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति ।
 गुप्तिः क्षितिर्व्युदासेऽपि धृतिर्धारणधैर्ययोः ॥ ७४ ॥
 बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदो महत्यपि ।
 वासिता स्त्रीकरिण्योश्च वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ॥ ७५ ॥
 वार्तं फलग्रन्थरोगे च त्रिष्वप्सु च घृतामृते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोर्निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्युगपर्याप्तयोः कृतम् ।
 अत्याहितं महामीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥
 युक्ते क्षमादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।
 वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥

जीविका आदिका है । सिकता यह एक नाम बालू, बालूकामय प्रदेश, शकर इन्हींका है । श्रुति यह एक नाम वेदका और कानका है ॥ ७३ ॥ वनिता यह एक नाम बहुत प्यारी स्त्रीका है । गुप्ति यह एक नाम पृथ्वीके छिद्रका और रक्षाका है । धृति यह एक नाम धारणका और धैर्यका है ॥ ७४ ॥ बृहती यह एक नाम कटेलीविशेषका, छन्दोभेदका और मोटी वस्तुका है । वासिता यह एक नाम स्त्रीका और हथिनोका है । वार्ता यह एक नाम वृत्तिका और मनुष्योंकी बात सुननेका है । यहाँतक (स्त्री०) हैं ॥ ७५ ॥ वार्त्तं यह एक नाम असारका वाची (न०) है, रोगरहितका वाची (त्रि०) है । घृत यह एक (न०) नाम घी और जलका है । अमृत यह एक (न०) नाम जल, घी, अमृत और यज्ञशेषका है । कलधौत यह एक (न०) नाम चाँदीका और सोनेका है । निमित्त यह एक (न०) नाम कारणका और चिह्नका है ॥ ७६ ॥ श्रुत यह एक (न०) नाम शास्त्रका और निश्चयका है । कृत यह एक (न०) नाम सत्ययुगका और पूर्णताका है । अत्याहित यह एक (न०) नाम बहुत भयका और साहसकर्मका है ॥ ७७ ॥ भूत यह एक (न०) नाम न्याय्य, पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूत, सत्य, प्राणी, अतिक्रान्त और समान इन्हींका है और समान वाचक (त्रि०) है । वृत्त यह एक नाम श्लोक और चरित्रका वाचक (न०) है । अतीतकाल, दृढ और गोलका वाचक (त्रि०) है ॥ ७८ ॥

महद्वाज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्ग्रहिते त्रिषु ।
 श्वेतं रूप्येऽपि रजतं हेमि रूप्ये सिते त्रिषु ॥ ७९ ॥
 त्रिष्वतो जगद्विद्धेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च ।
 अवदातं सिते पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥
 युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतोऽथ सस्कृतम् ।
 कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधावपि ॥ ८१ ॥
 ख्याते हृष्टे प्रतीतोऽभिजातस्तु कुलजे बुधे ।
 विविक्तौ पृतविजनौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयो ॥ ८२ ॥
 द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ शिती धवलमेचकौ ।
 सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ॥ ८३ ॥
 पुरस्कृतं पूजितेऽगत्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ।
 निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥

महत् यह एक (न०) नाम राज्यका और बडेका है । बडेका वाची (त्रि०) है । अवगीत यह एक नाम जनोंके अपवादका और निदितका (त्रि०) है । श्वेत यह एक (न०) नाम चादीका और सुपेद रगका है । रजत यह एक (न०) नाम सोना और चादीका है । शुभ्रका वाची (त्रि०) है ॥ ७९ ॥ इससे आगे तकान्त शब्द (त्रि०) है । जगत् यह एक नाम जगमका और लोकका है । रक्त यह एक नाम नीले आदिसे रगे हुए और लालरगका है । अवदात यह एक नाम सुपेद, पीरा, शुद्ध इन्होंका है । सित यह एक नाम सुपेद और बद्धका है ॥ ८० ॥ अभिनीत यह एक नाम योग्य, बहुत उत्तम, भूषित किया और क्षमावालेका है । सस्कृत यह एक नाम बनाये हुए घाट आदिका और शास्त्रके लक्षणसे युक्तका है । अनत यह एक नाम मर्यादासे रहितका और शेषनागका है ॥ ८१ ॥ प्रतीत यह एक नाम प्रसिद्धका और आनन्दितका है । अभिजात यह एक नाम कुलीनका और पडितका है । विविक्त यह एक नाम पवित्रका और एकान्तका है । मूर्च्छित यह एक नाम मूढका और शृद्धिसे युत हुएका है ॥ ८२ ॥ शुक्त यह एक नाम खट्टेका और कठोरका है । शिती यह एक नाम सुपेदका और कालेका है । सत् (तान्त) यह एक नाम सत्य, साधु, विद्यमान, बहुत उत्तम, योग्य इन्होंका है ॥ ८३ ॥ पुरस्कृत्य यह एक नाम पूजित, शत्रुओंसे पीडित और अगाडी

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्चिह्ना उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्ना आदृतौ सादरार्चितौ ॥ ८५ ॥

इति तान्ताः ।

अर्थोऽभिधेयैवस्तुप्रयोजननिवृत्तिषु ।
निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ॥ ८६ ॥
समर्थद्विषु शक्तिस्थे संबद्धार्थे हितेऽपि च ।
दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ वीथी पदव्यपि ॥ ८७ ॥
आस्थानीयत्रयोरास्था प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ।
“ शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृत्तौ । ”

इति यान्ताः ।

अभिप्रायवशौ छन्दावब्दौ जीमूतवत्सरौ ॥ ८८ ॥

किये हुएका है । निवात यह एक नाम आश्रयका और वातसे रहित स्थानका है और जो शस्त्रोंसे नहीं कट सके उस कवचका भी है ॥ ८४ ॥ उच्चिह्नत यह एक नाम उत्पन्न, गर्वित, प्रवृद्ध, इन्होंका है । उत्थित यह एक नाम वृद्धिवाला, अधिक उद्यत हुआ, उत्पन्न इन्होंका है । आदृत यह एक नाम आदरसहितका और सत्कार किये हुएका है ॥ ८५ ॥ यहाँ तकारान्त और (त्रि०) शब्द समाप्त हुए ॥ अर्थ यह एक (पु०) नाम वाच्य, धन, चीज, प्रयोजन, निवर्तन इन्होंका है । तीर्थ यह एक (न०) नाम कूपके पासका जलाशय, बौद्धशास्त्रसे अन्य शास्त्र और मुनियोंसे सेवित किये जल तथा गुरु इन्होंका है ॥ ८६ ॥ समर्थ यह एक (त्रि०) नाम शक्तिवाला, संबन्धयुक्त अर्थ, हितकारी इन्होंका है । दशमीस्थ यह एक (पु०) नाम क्षीण हुए रसवालेका और अत्यंत बूढेका है । वीथी यह एक (स्त्री०) नाम मार्गका और पंक्तिका है ॥ ८७ ॥ आस्था यह एक (स्त्री०) नाम सभा और यत्नका है । प्रस्थ यह एक (पु० न०) नाम पर्वतकी शिखरका और परिमाणविशेषका है । “ ग्रन्थ यह एक (पु०) नाम शास्त्रका और द्रव्यका है । संस्था यह एक (स्त्री०) नाम आधार, स्थिति, मरना इन्होंका है ” ॥ यहाँ तकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ छन्द यह एक (पु०) नाम अभिप्रायका और आधीनका है । अब्द यह एक (पु०) नाम बादलेका और वर्षका है ॥ ८८ ॥

अपवादौ तु निन्दाज्ञे दायादौ सुतबान्धवौ ।
 पादा रश्म्यंघ्रिनूर्याशाश्चन्दाभ्यर्कास्तमोनुदः ॥ ८९ ॥
 निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बालशष्पयोः ।
 आरावे रुदिते त्रातर्यार्कन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥
 स्यात्प्रमादोऽनुरागेऽपि सूद स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ।
 गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दो हर्षेऽप्यामोदवन्मदः ॥ ९१ ॥
 प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृत्ताङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम् ।
 स्त्री मविज्ज्ञानसभापाक्रियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥
 धर्म रहस्युपनिषत्स्यादृती वत्सरे शरत् ।
 पद व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माघ्रिवस्तुपु ॥ ९३ ॥
 गोष्पद सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् ।
 त्रिष्विष्टमधुरी स्वादू मृदू चानीक्षणकोमलौ ॥ ९४ ॥

अपवाद यह एक (पु०) नाम निन्दाका और आज्ञाका है। दायाद यह एक (पु०) नाम पुत्रका और भाईका है। पाद यह एक (पु०) नाम किरण, पैर, चौथाई भाग इन्हींका है। तमोनुद् यह एक (पु०) नाम चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि इन्हींका है ॥ ८९ ॥ निर्वाद यह एक (पु०) नाम लोककी निन्दा और सिद्धान्त अर्थात् निर्णय कियेका है। शाद यह एक (पु०) नाम, कीचडका और बालवृणका है। आरून्द यह एक (पु०) नाम आर्त्त शब्द, रुदित, रक्षक, दारुण कर्म, भयानक युद्ध इन्हींका है ॥ ९० ॥ प्रमाद यह एक (पु०) नाम अनुग्रह, प्रसन्नता और काव्यगुण इन्हींका है। सूद यह एक (पु०) नाम व्यञ्जनका और रसोदयका है। गोविन्द यह एक (पु०) नाम गोपाल, बृहस्पति, कृष्ण इन्हींका है। आमोद, मद ये दो (पु०) नाम न्यानन्दके और अत्यन्त निर्हार गंधके हैं ॥ ९१ ॥ ककुद यह एक (पु० न०) नाम प्रधान, राजाचिह्न, बेलका अंग इन्हींका है। सविद (दान्त) यह एक (स्त्री०) नाम ज्ञान, सभापण, कर्मका नियम, युद्ध, सत्ता इन्हींका है ॥ ९२ ॥ उपनिषद् (दान्त स्त्री०) यह एक नाम वेदान्त, धर्म और एकान्तका है। शरद् यह एक (स्त्री०) नाम ऋतु, सवत्सर इन्हींका है। पद यह एक (न०) नाम व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, वस्तु इन्हींका है ॥ ९३ ॥ गोष्पद यह एक (न०) नाम गौओंसे सेवित निये

मृदालपापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युद्धौ तु शारदौ ।
प्रत्यग्राप्रतिभौ विद्वत्सुप्रगल्भौ विशारदौ ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः ।

व्यामो वटश्च न्यग्रोधानुत्सेधः काय उन्नतिः ।
पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ॥ ९६ ॥

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ।

बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ॥ ९७ ॥

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः ।

दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ॥ ९८ ॥

प्रगल्भान्यगिनि जिज्ञौ प्रकृतस्यानुवर्त्तने ।

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि परिच्छेदे विलेखाधिः ॥ ९९ ॥

देशका और खुरके प्रमाणका है । आस्पद यह एक (न०) नाम स्थानका और कृत्यका है । इससे आगे वर्गकी समाप्तिपर्यंत दकारान्त शब्द (त्रि०) हैं । स्वादु यह एक नाम मनोवाञ्छितका और मधुरका है । मृदु यह एक नाम अतीक्षणका और कोमलका है ॥ ९४ ॥ मन्द यह एक नाम मृदु, अल्प, मूर्ख, निर्भाग्य इन्हींका है । शारद यह एक नाम नवीनका और अप्रगल्भका है । विशारद यह एक नाम पण्डितका और प्रगल्भका है ॥ ९५ ॥ यहाँ दकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ न्यग्रोध यह एक (पु०) नाम व्याम अर्थात् पसारी हुई दोनों भुजाओंका और वडवृक्षका है । उत्सेध यह एक (पु०) नाम शरीरका और उन्नतिका है । विवध, वीवध ये दो (पु०) नाम ध्यान आदिके और मार्गके हैं ॥ ९६ ॥ परिधि यह एक (पु०) नाम यज्ञमें वर्त्तनेके यज्ञियशाखाका और उपसूर्यका है । आधि यह एक (पु०) नाम गहने धरी चीज, व्यसन, चित्तकी पीडा, अध्यास इन्हींका है ॥ ९७ ॥ समाधि यह एक (पु०) नाम समर्थन अर्थात् शंकाका परिहार वा समाधान, वचनका प्रभाव, अंगीकार इन्हींका है । अनुबन्ध यह एक (पु०) नाम दोषके उत्पादनका और इत्संज्ञक याने लोप करके अदर्शनशील अक्षरका ॥ ९८ ॥ मुख्य अर्थात् माता पिता और गुरुकी आज्ञा पालन करनेवाला बालक और प्रकृतिके पदकी निवृत्तिका अभाव इन्हींका है । विधु यह एक (पु०) नाम विष्णु और चन्द्रमाका है ।

विधिर्विधाने दैवेऽपि प्रणिधिः प्रार्थने चरे ।

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि स्क्न्ध* समुदयेऽपि च ॥ १०० ॥

देशे नदविशेषेऽधौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम् ।

विधा विधौ प्रकारे च साधु रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

वधूर्जाया स्तुषा स्त्री च सुधा लेपोऽमृतं स्तुही ।

संधा प्रतिज्ञा मर्यादा श्रद्धा संप्रत्यय स्पृहा ॥ १०२ ॥

मधु मधे पुष्परसे क्षौद्रेऽप्यन्धं तमस्यपि ।

अतस्त्रिषु समुन्नद्धौ पण्डितमन्यगर्वितौ ॥ १०३ ॥

ब्रह्मवन्धुराधिकेपे निर्देशेऽथावलम्बित* ।

अविदूरोऽप्यवष्टब्ध* प्रमिद्धौ ख्यातभूपितौ ॥ १०४ ॥

इति धान्ता* ।

अवधि यह एक (पु०) नाम परिच्छेद, बिल और कालका है ॥ ९९ ॥
 विधि यह एक (पु०) नाम विधानका और दैवका है । प्रणिधि यह एक
 (पु०) नाम प्रार्थनाका और चरका है । बुध और वृद्ध ये दो (पु०) नाम
 पंडितके हैं और बुध यह नाम ग्रहका नाम और बुद्ध बूढेका नाम ऐसेभी हैं ।
 स्क्न्ध यह एक (पु०) नाम समूहका और राजाका है ॥ १०० ॥ सिंधु यह
 एक (पु०) नाम देश, नदविशेष अटक आदि और समुद्रका वाची (पु०)
 है और नदीका वाची (स्त्री०) है । विधा यह एक (स्त्री०) नाम विधि
 का और प्रकारका है । साधु यह एक (त्रि०) नाम सज्जनका और रम-
 णीकका है ॥ १०१ ॥ वधु यह एक (स्त्री०) नाम भार्याका, पुत्रकी
 पत्नीका और स्त्रीमात्रका है । सुधा यह एक (स्त्री०) नाम अमृतको और
 थोहरके वृक्षका है । संधा यह एक (स्त्री०) नाम प्रतिज्ञा और मर्यादाका
 है । श्रद्धा यह एक (स्त्री०) नाम श्रद्धाका और इच्छाका है ॥ १०२ ॥
 मधु यह एक (न०) नाम मदिरा, पुष्पोंका रस, शहद इन्हांका है । अध
 यह एक (न०) नाम अधरेका और अधे पुस्पका है । इससे परे धका
 रान्त वर्गपर्यंत शब्द (त्रि०) है । समुन्नद्ध यह एउ नाम आपेको पंडित
 माननेवालेका और गर्ववालेका है ॥ १०३ ॥ ब्रह्मवधु यह एक नाम
 निर्दाके प्रयोगका और ब्राह्मणोंकी आज्ञाका है । अवष्टब्ध यह एक
 नाम आश्रितका और सन्निहितका है । प्रसिद्ध यह एक नाम विख्यातका

सूर्यवह्नी चित्रभानू भानू गश्मिदिवाकरौ ।
 भूनात्मानो धातृदेहौ मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ॥ १०५ ॥
 ग्रावाणौ शैलपाषाणौ पत्रिणौ शरपक्षिणौ ।
 तरुशैलौ शिखरिणौ शिखिनौ वह्निर्वाहिणौ ॥ १०६ ॥
 प्रतिपत्तावुभौ लिप्सोपग्रहावथ सादिनौ ।
 ह्यौ साग्धिद्रयागेहौ वाजिनोऽश्वेषु पक्षिणः ॥ १०७ ॥
 कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ।
 वर्षाचित्रीर्हिमेनाश्च चन्द्राश्चर्का विरोचनाः ॥ १०८ ॥
 क्लृशऽपे वृजिनो विश्वकर्माकसुगशिल्पिनोः ।
 आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
 शक्रो धातुकमत्तंभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।
 घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥ ११० ॥

और भूपित हुका है ॥ १०४ ॥ यहां धकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ आगे-
 के शब्द राजा शब्दतक (पु०) हैं । चित्रभानु यह एक नाम सूर्यका और
 अग्निका है । भानु यह एक नाम किरणका और सूर्यका है । भूनात्मन्
 (नान्त) यह एक नाम ब्रह्माजीका और देहका है । पृथग्जन यह एक
 नाम मूर्खका और नीचका है ॥ १०५ ॥ ग्रावन् (नांत) यह एक नाम
 पर्वत और पत्थरका है । पत्रिन् (इन्नन्त) यह एक नाम शरका और
 पक्षीका है । शिखरिन् (इन्नन्त) यह एक नाम वृक्षका और पर्वतका
 है । शिखिन् यह एक नाम अग्निका और मौरका है ॥ १०६ ॥ प्रतिपत्त
 यह एक नाम इच्छाका और अनुकूलका है । सादिन् (इन्नन्त) यह एक
 नाम सारथिका और घोड़ेके सवारका है । वाजिन् यह एक (इन्नन्त)
 नाम घोड़ेका और पक्षीका है ॥ १०७ ॥ अभिजन यह एक नाम कुलका
 और जन्मभूमिका है । हायन यह एक नाम वर्ष, किरण, व्रीहिभेद
 इन्हींका है । विरोचन यह एक नाम चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य इन्हींका है
 ॥ १०८ ॥ वृजिन यह एक नाम क्लेशका और पापका है । विश्वकर्मान्
 (नांत) यह एक नाम सूर्यका और देवताओंके शिल्पीका है । आत्मन्
 (नांत) यह एक नाम यत्न, धीरजपना, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर
 इन्हींका है ॥ १०९ ॥ घनाघन यह एक नाम इन्द्र, उन्मत्त हुआ खनी

अभिमानाऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ।
 इनः सूर्ये प्रमौ राजा मृगाङ्गे क्षत्रिये नृपे ॥ १११ ॥
 वाणिन्यौ नर्तकीदृत्यौ स्रवन्त्यमपि वाहिनी ।
 ह्यादिन्यौ वज्रनाडितौ वन्दायामपि कामिनी ॥ ११२ ॥
 त्वग्देहयोरपि तनु' सुनाऽधोजिह्विकापि च ।
 ऋतुविस्तारयोरस्त्री वितान त्रिपु तुच्छके ॥ ११३ ॥
 मन्देऽथ केतन कृत्ये केतावुपनिमन्त्रणे ।
 वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्र प्रजापति ॥ १४ ॥
 उत्साहने च हिंसाया सूचने चापि गन्धनम् ।
 आतश्चनं प्रतीवापजवनाप्ययनार्थकम् ॥ ११५ ॥

हाथी, वर्षनेशाला बादल इन्होंका है । घन यह एक नाम मेघ, कठिनपना इन्होंका वाचक (पु०) है । कठिनपना और निरन्तरका वाचक (त्रि०) है ॥ ११० ॥ अभिमान यह एक नाम द्रव्य पशु मूल और गुण आदिसे उपजा गर्व, ज्ञान, नरमाई, हिंसा इन्होंका है । इन यह एक नाम सूर्य और मालिकका है । राजन् (नान्त) यह एक नाम चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा इन्होंका है ॥ १११ ॥ वाणिनी यह एक (स्त्री०) नाम नाचनेवाली नारी और दूतीका है । वाहिनी यह एक (स्त्री०) नाम नदीका और सेनाका है । ह्यादिनी यह एक (स्त्री०) नाम वज्रका और बिजलीका है । कामिनी यह एक (स्त्री०) नाम वज्रवृक्षका और सुन्दर स्त्रीका है ॥ ११२ ॥ तनु यह एक (स्त्री०) नाम रालका और देहका है । सूना यह एक (स्त्री०) नाम गलघाटिकाका और घघस्थानका है । वितान यह एक (पु० न०) नाम यज्ञ और विस्तारका है । तुच्छका और मन्दका वाचक (त्रि०) है ॥ ११३ ॥ केतन यह एक (न०) नाम कृत्य, ध्वजा, निवास, मित्रोंका नौता इन्होंका है । ब्रह्मन् (नान्त न०) यह एक नाम वेद, चैतन्य, तप इन्होंका है । ब्रह्मन् (नान्त पु०) यह एक नाम ब्राह्मण और ब्रह्माका वाचक है ॥ ११४ ॥ गधन यह एक (न०) नाम उत्साह, हिंसा और आशयके प्रकाशका है । आतचन यह एक (न०) नाम दूध आदिमें तक्र आदिका जामन देना, वेग, पुष्टाई इन्होंका

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ।
 स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम् ॥ ११६ ॥
 स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।
 अवकाशे स्थितौ स्थानं क्रीडादावपि देवनम् ॥ ११७ ॥
 उत्थानं पौरुषे तन्त्रे संनिविष्टोद्गमेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपि च ॥ ११८ ॥
 मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ।
 निर्वर्त्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९ ॥
 निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपि च ।
 व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२० ॥
 पक्ष्माक्षिलोम्नि किञ्चलके तत्त्वाद्यंशेऽप्यणीयासि ।
 तिथिभेदे क्षणे पर्वे वर्त्मनेत्रच्छेदेऽध्वनि ॥ १२१ ॥

है ॥ ११६ ॥ व्यञ्जन यह एक (न०) नाम चिह्न, डाढी, मूँछ, शाक
 आदि, अंग अवयव इन्हींका है । कौलीन यह एक (पु०) नाम लोकका
 अपवाद, सर्प पक्षी पशु आदिका युद्ध, कुलीनपना इन्हींका है ॥ ११६ ॥
 उद्यान यह एक (न०) नाम ग्रह आदिका निकसन, उपवन और प्रयो-
 जनका है । स्थान यह एक (न०) नाम अवकाशका और स्थितिका है ।
 देवन यह एक (पु० न०) नाम क्रीडाका व्यवहार, जीतनेकी इच्छा
 इन्हींका है ॥ ११७ ॥ आगेके शब्द वनतक (न०) हैं । उत्थान यह
 एक नाम पौरुष, तंत्र, बैठे हुएको उठाना और मलरोग इन्हींका है ।
 व्युत्थान यह एक नाम तिरस्कार, विरोधका करना, अपने आधीन कृत्य
 इन्हींका है ॥ ११८ ॥ साधन यह एक नाम मारण अर्थात् पारेका साधन,
 मृतसंस्कार, अग्निदाह, गमन, धन, धनका देना, धनका निष्पादन, उपाय,
 अनुगमन इन्हींका है ॥ ११९ ॥ निर्यातन यह एक नाम वैरकी शुद्धि,
 त्याग, धरोहरका देना इन्हींका है । व्यसन यह एक नाम विपद, नाश,
 पतन, कामज दोष, क्रोधज दोष इन्हींका है ॥ १२० ॥ पक्ष्मन् (नान्त) यह
 एक नाम आँखोंके रोग, केसर, बहुत अल्प सूत्र आदिका अंश इन्हींका
 है । पर्वन् (नान्त) यह एक नाम तिथियोंका भेद अर्थात् अष्टमी, अमावस
 आदिका और उत्सवका है । वर्त्मन् (नान्त) यह एक नाम ढकनेका

अकार्यगुहो कौपीन मैथुन सगतौ रते ।
 प्रधानं परमात्मा धी प्रज्ञान बुद्धिचिद्वयोः ॥ १२२ ॥
 प्रसूनं पुष्पफलयोर्निधन कुलनाशयो' ।
 क्रन्दने रोदनाह्वाने वर्ष्म देहप्रमाणयो' ॥ १२३ ॥
 गृहदेहत्विद्प्रभावा धामान्यथ चतुष्पदे ।
 संनिवेशे च संस्थान लक्ष्म चिद्प्रधानयो ॥ १२४ ॥
 आच्छादने सपिधानमपवाणामित्युमे ।
 आराधन साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।
 रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ॥ १२६ ॥
 तलिन विरले स्तोके वाच्यलिङ्ग तथोत्तरे ।
 समानास्सत्समैके स्थु' पिशुनौ खलसूचकौ ॥ १२७ ॥

और मार्गका है ॥ १२१ ॥ कौपीन यह एक नाम अकार्यका और गुदा
 लिंगका है । मैथुन यह एक नाम भार्या आदिके सबधका और स्त्रीसगका
 है । प्रधान यह एक नाम परमात्मा और बुद्धिका है । प्रज्ञान यह एक
 नाम बुद्धिका और चिद्गका है ॥ १२२ ॥ प्रसून यह एक नाम फूलका
 और फलका है । निधन यह एक नाम कुलका और नाशका है । क्रन्दन
 यह एक नाम रोनेका और बुलानेका है । वर्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम
 शरीरका और प्रमाणका है ॥ १२३ ॥ धामन् (नान्त) यह एक नाम
 शरीर, किरण, प्रभाव इन्हींका है । संस्थान यह एक नाम चौराहेका और
 अवयवके विभागका है । लक्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम चिद्गका
 और प्रधानका है ॥ १२४ ॥ सपिधान, अपवाण ये दो नाम आच्छादन
 के हैं । आराधन यह एक नाम साधन, लाभ, सतोष इन्हींका है ॥ १२५ ॥
 अधिष्ठान यह एक नाम रथका पहिया, नगर, प्रभाव, आक्रमण इन्हींका
 है । रत्न यह एक नाम अपनी जातिमें श्रेष्ठका और मणि आदिका है ।
 वन यह एक नाम जगका और वनका है । यहाँतक (न०) है ॥ १२६ ॥
 आगे नान्तवर्गतक (त्रि०) है । तलिन यह एक नाम विरलका और
 बहुत अल्पका है । तलिनशब्द वाच्यलिङ्गी है । समान यह एक नाम पण्डित,
 समान, एक इन्हींका है । पिशुन यह एक नाम खलका और निन्दकका

तत्रावूनगर्ह्यौ वेगिशूरी तरस्विनी ।
अपन्नौऽपराद्धाभिग्रस्तव्यापद्रतावपि ॥ १२८ ॥

इति नान्ताः ।

कलापो भूषणे बर्हे तूणी रे संहतावपि ।

परिच्छदे परीवापः पर्युप्तौ सलिलस्थितौ ॥ १२९ ॥

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरविष्णू वृषाकपी ।

बाष्पमूष्माश्लु कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम् ॥ १३० ॥

तल्पं शय्यादृदोषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ।

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः ॥ १३१ ॥

भेद्यलिङ्गा अमी कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ।

“ कुतपो मृगरोमोत्थपटे चान्नोऽष्टमेशके । ”

इति पान्ताः ।

खर्णो पुंसि रेफः स्यात्कुतिसते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥

इति फान्ताः ।

है ॥ १२७ ॥ हीन, न्यून ये दो नाम अल्पके और निन्दाके योग्यके हैं । तरस्विन (इन्नन्त) यह एक नाम वेगवालेका और शूरवीरका है । अभि-
पन्न यह एक नाम अपराधवाला, शत्रुसे आक्रांत हुआ और विपत्तवाला
इन्हींका है ॥ १२८ ॥ यहाँ नकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कलाप यह
एक (पु०) नाम गहना, मोरकी पंख, तरकस, समुदाय, आभूषण इन्हींका
है । परीवाप यह एक (पु०) नाम बह्रमदप आदिकी सामग्री, सब
ओरसे बपन, पानीकी स्थिति इन्हींका है ॥ १२९ ॥ गोप यह एक (पु०)
नाम गौको दोहनेवालेका और गोशालाके मालिकका है । वृषाकपि यह
एक (पु०) नाम महादेवका और विष्णुका है । बाष्प यह एक (पु०)
नाम ऊष्माका और आँसूका है । कशिपु यह एक (पु० न०) नाम
अन्नका और आच्छादनका है ॥ १३० ॥ तल्प यह एक (पु० न०)
नाम शय्या, अटारी, स्त्री इन्हींका है । विटप यह एक (पु० न०) नाम
तृणोंका गुच्छा, विस्तार, शाखा इन्हींका है । प्राप्तरूप, स्वरूप, अभिरूप
ये तीन नाम पंडितके और मनोहरके हैं । ये सब वाच्यलिङ्गी हैं ॥ १३१ ॥
कच्छपी यह एक नाम कछवीका और वीणाके भेदका है । “ कुतप यह

अन्तरामवसस्त्रेऽश्वे गन्धर्वो द्विव्यगायने ।

कम्बुर्ना वलये शङ्खे द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ ॥ १३३ ॥

पूर्वोऽन्यलिङ्गः प्राणाह पुं बहुतेऽपि पूर्वजान् ।

इति वा ता* ।

कुम्भौ घटेममूर्धाशीं डिम्भौ तु शिशुनालिशौ ॥ १३४ ॥

स्वम्भौ स्थूणाजडीभावी शंभू ब्रह्मत्रिलोचनौ ।

कुक्षिभ्रूणार्मका गर्मा विस्रम्भ प्रणयेऽपि च ॥ १३५ ॥

स्याद्गर्भा दुन्दुभि पमि स्यादक्षे दुन्दुभि* स्त्रियाम् ।

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना सुगमिर्गवि च स्त्रियाम् ।

समा ससदि सभ्ये च त्रिष्वध्यक्षेऽपि बह्वम् ॥ १३७ ॥

इति भान्ता* ।

एक नाम मृगके रोमोत्से बने वध्रजा और दिनके आठवे अशजा है । *
 यहाँ प्रकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ रेफ यह एक नाम रवर्णका वाचक
 (पु०) और तुत्सतजा वाची (त्रि०) है ॥ १३२ ॥ यहाँ फान्त शब्द
 समाप्त हुए ॥ गधर्व यह एक (पु-) नाम मरणजन्मके बीचमें स्थित हुआ
 प्राणी, घोडा, विश्वात्सु आदि, गायन इन्होंका है । कबु यह एक (पु०)
 नाम कद्रगजा और शयजा है । द्विजिह्व यह एक (पु०) नाम सर्पका
 और सुगलसोरका है ॥ १३३ ॥ पूर्व यह एक नाम पूर्व दिशाका वाची
 (त्रि०) है और पितामह आदि पूर्व लोगोंका वाची (पु०) और बहु
 वचनान्त है ॥ यहाँ वान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कुम्भ यह एक (त्रि०)
 नाम घट, हस्तीके शिरका भाग इन्होंका है । डिम्भ यह एक (पु०) नाम
 अत्यंत बालकका और मूर्तजा है ॥ १३४ ॥ स्तम्भ यह एक (पु०) नाम घग्ने
 धमेया और जडपनेका है । शंभु यह एक (पु०) नाम त्रयाना और
 महादेवका है । गर्भ यह एक (पु०) नाम कुक्षि, गर्भमें स्थित प्राणी,
 बालक इन्होंका है । विश्रम्भ यह एक (पु०) नाम पिताका और विश्वा
 त्सा है ॥ १३५ ॥ दुन्दुभि यह एक नाम भेरीका वाचक (पु०) और बाल
 ककी डफटी आदिका वाचक (त्रि०) है । कुसुम्भ यह एक नाम कसूमका
 वाचक (न०) और कमदलका वाचक (पु०) है ॥ १३६ ॥ नाभि यह

७१८

मग्नदौ रश्मी कपिभेकौ पुर्वंगमौ ।

ल्लामनोभवौ कामौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ १३८ ॥

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः ।

उपायपूर्वं आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९ ॥

वणिकपथः पुरं वेदो निगमो नागरो वणिक् ।

नैगमौ द्वौ बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ॥ १४० ॥

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः क्रान्ती च विक्रमः ।

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्वस्तु कुटिलेऽलसे ॥ १४१ ॥

एक नाम क्षत्रियका वाचक (पु०) और मुख्य, राजा, चक्रका मध्य-भाग, प्राणीका अंग इन्होंका वाचक (पु० स्त्री०) है । सुरभि यह एक नाम गौका वाचक (स्त्री०) और वसंत चमेलीके फूल आदिका वाचक (न०) है । सभा यह एक (स्त्री०) नाम सभाका और सभ्यका है । वल्लभ यह एक (त्रि०) नाम मालिकका और कुलीन घोडेका है ॥ १३७ ॥ यहाँ भांत शब्द समाप्त हुए ॥ रश्मि यह एक (पु०) नाम किरणका और घोडे आदिके बांधनेकी रस्ती अर्थात् लगामका है । पुर्वंगम यह एक (पु०) नाम वानरका और मैडकका है । काम यह एक (पु०) नाम इच्छाका और कामदेवका है । पराक्रम यह एक (पु०) नाम शूरवीरपनेका और उद्योगका है ॥ १३८ ॥ धर्म यह एक (पु०) नाम पुण्य, धर्मराज, न्याय, स्वभाव, आचार, सोमको पीनेवाला इन्होंका है । उपक्रम यह एक (पु०) नाम, उपायपूर्वक आरंभ, नौकरका शील और परीक्षाका उपाय, चिकित्सा इन्होंका है ॥ १३९ ॥ निगम यह एक (पु०) नाम व्यवहार, नगर, वेद, इन्होंका है । नैगम यह एक (पु०) नाम नगरमें होनेवालेका और वैश्यका है । राम यह एक नाम बलदेवजीका वाचक (पु०) और नील, सुन्दर, सुपेद इन्होंका वाचक (त्रि०) है और राम यह नाम रामचंद्र परशुरामकाभी है ॥ १४० ॥ ग्राम यह एक (पु०) नाम गांवका, शब्दादिपूर्वक ग्रामशब्द समूहका और स्वरविशेषका है । विक्रम यह एक (पु०) नाम क्रांतिका और पराक्रमका है । स्तोम यह एक (पु०) नाम स्तोत्र, यज्ञ, समूह इन्होंका है । जिह्व यह एक (पु०) नाम कुटिलका और आलसका है ॥ १४१ ॥

“ उष्णेऽपि घर्मश्चेत्शलङ्कारे भ्रान्तौ च विभ्रमः । ”

गुल्मा रुक्स्तम्बसेनाश्च जामि. स्वसुकुलस्त्रियोः ।

क्षितिक्षान्तयोः क्षमा युक्ते क्षम शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२ ॥

त्रिषु श्यामी हरित्कृष्णौ श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।

ललामं पुच्छपुण्ड्राश्वभूषामाधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥

सूक्ष्ममध्यात्ममप्याद्ये प्रधाने प्रथमस्त्रिषु ।

वामौ वल्गुप्रतीपी द्वाधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥ १४४ ॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम् ।

इति मान्ताः ।

तुरङ्गगरुडौ ताक्ष्यौ निलयापचयौ क्षयौ ॥ १४५ ॥

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ।

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ स्यादर्यं स्वामिभैश्ययोः ॥ १४६ ॥

“ घर्म यह ए० (पु०) नाम घामका और पसीनेका है । विभ्रम यह एक (पु०) नाम गहनेका और भ्रांतिका है । ” गुल्म यह एक (पु०) नाम गु-
त्तरोग, तिळीरोग, तृणगुच्छा, सेना इन्होंका है । जामि यह एक (स्त्री०)
नाम घहनना और कुलकी स्त्रीका है । क्षमा यह एक (स्त्री०) नाम
पृथ्वीका और सहनशीलताका है । क्षम यह एक नाम योग्यका वाचक
(न०) है और समर्थका और हितका वाचक (त्रि०) है ॥ १४२ ॥
श्याम यह एक (त्रि०) नाम हरे और काले रंगका है । श्यामा यह एक
(स्त्री०) नाम शतावरीका और रात्रिका है । ललाम यह एक (न०)
नाम पूउ, घोडा आदिकोंके मस्तकका चित्र, घोडेका गहना, प्रधानपना,
ध्यजा इन्होंका है ॥ १४३ ॥ सूक्ष्म यह एक (न०) नाम लिंगदेह और
अल्पका है । प्रथम यह ए० नाम आदिमें होनेवालेका और अधानका है
और इसको लेकर वर्गसमाप्तिपर्यंत सब शब्द (त्रि०) हैं । वाम यह
एक नाम टेढका और विपरीतका है । अधम यह एक नाम न्यूनका
और नीचका है ॥ १४४ ॥ यातयाम यह एक नाम पुरानेका और भोजन
करके बचे हुएका है ॥ यहाँ मान्त शब्द समाप्त हुए ॥ ताक्ष्य यह एक
नाम घोडेका और गरुडका है । इसको लेकर विषयशब्दतक (पु०) हैं ।
क्षय यह एक नाम घरका और नाशका है ॥ १४५ ॥ श्वशुर्य यह एक

कलियुगे पर्यायोऽवमरे क्रमे ।

आधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥

शब्देऽथानुशयो दीर्घद्वेषानुनापयोः ।

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥

समयाः शपथाचारकालभिद्धान्तसंविदः ।

व्यसनान्यशुभं देवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ।

युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च ॥ १५० ॥

पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥

विस्त्रम्भयाच्चाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ।

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥

नाम देवका और श्यालेका है । भ्रातृव्य यह एक नाम भाईके पुत्र अर्थात् भतीजेका और शत्रुका है । पर्जन्य यह एक नाम शब्द करते हुए बादलका और इन्द्रका है । अर्य यह एक नाम मालिकका और वंशका है ॥ १४६ ॥ तिष्य यह एक नाम पुष्यनक्षत्रका और कालियुगका है । पर्याय यह एक नाम अवसरका और क्रमका है । प्रत्यय यह एक नाम आधीन, शपथ, ज्ञान, विश्वास, हेतु, छिद्र, शब्द इन्हींका है ॥ १४७ ॥ अनुशय यह एक नाम बहुत दिनसे वैरका और पश्चात्तापका है । स्थूलोच्चय यह एक नाम न्यूनका और हाथियोंकी मध्यम गतिका है ॥ १४८ ॥ समय यह एक नाम शपथ (सौगंध), आचार, काल, सिद्धान्त, श्रेष्ठ भाषा इन्हींका है । अनय यह एक नाम व्यसन, अशुभ देव, विपत् इन्हींका है ॥ १४९ ॥ अत्यय यह एक नाम अतिक्रम, कष्ट, दोष, दंड इन्हींका है । संपराय यह एक नाम आपत्, युद्ध, उत्तरकाल इन्हींका है । पूज्य यह एक नाम पूजाके योग्यका और समुरेका है ॥ १५० ॥ अवस्थायि यह एक नाम सेनाके पृष्ठभागमें जो सेना स्थित हो उसके पीछे स्थित हुई सेनाका है । समवाय यह एक नाम समूहका और सन्नायका है । संस्त्याय यह एक नाम समूह, स्थान, विस्तार इन्हींका है । प्रणय यह एक नाम विश्वास, याच्ना, प्रेम इन्हींका है ॥ १५१ ॥ समुच्छ्रय यह एक नाम

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री ममाया च प्रतिश्रय* ।
 प्रायो भूम्यन्तगमने मन्पुर्देन्ये क्रतौ कृषि ॥ १५३ ॥
 रहस्योपस्थयोर्गुह्य सत्य शपथतथ्ययो ।
 वीर्यं बले प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥
 धिष्ण्य स्थाने गृहे भेऽग्नौ भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ।
 कशेरुहेन्द्रोर्गङ्गेय विशल्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥
 वृषाकपायी श्रीगौर्योर्गभिरुषा नामशोभयोः ।
 आरम्भो निष्कृति शिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् ॥ १५६ ॥
 उपाय* कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रिया ।
 छाया सूर्यप्रिया कान्ति* प्रतिनिम्बमनातप* ॥ १५७ ॥

वैरका और उन्नतिका है । विषय यह एक नाम मच्छ आदि तथा जल
 आदि जाना हुआ वस्तु और शब्द, रप्ती, रूप, रस मज इन्हींका है
 ॥ १५२ ॥ कषाय यह एक (पु० न०) नाम काथके रसका और विले
 पन आदिका है । प्रतिश्रय यह एक (पु०) नाम सभाका और समीप
 गमनका है । प्राय यह एक (पु०) नाम बहुतका और अन्नत्यागका है
 और बहुवचनान्त है । मन्पु यह एक (पु०) नाम दीनपना, यज्ञ, क्रोध
 इन्हींका है ॥ १५३ ॥ गुह्य यह एक (न०) नाम गुप्तका और गुदा
 लिंगका है । सत्य यह एक (न०) नाम सौगन्धका और सचका है ।
 वीर्य यह एक (न०) नाम बलका और प्रभावका है । द्रव्य यह एक
 (न०) नाम सत्वका और गुणोंके आश्रयका है ॥ १५४ ॥ धिष्ण्य यह
 एक (न०) नाम स्थान, स्त्री, नक्षत्र, अग्नि इन्हींका है । भाग्य यह एक
 (न०) नाम शुभ अशुभ कर्मका और ऐश्वर्यका है । गांयेय यह एक
 (न०) नाम कशेरुका और जमालगोटेकी जडका है । विशल्या यह
 एक (स्त्री०) नाम जमालगोटेकी जडका और गिलोयका है ॥ १५५ ॥
 वृषाकपायी यह एक (स्त्री०) नाम रक्ष्मीका और गौरीका है ।
 अभिन्या यह एक (स्त्री०) नाम नामका और शोभाका है । क्रिया यह
 एक (स्त्री०) नाम आरम्भ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, सम्प्रधारण ॥ १५६ ॥
 उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ये नव प्रकारकी क्रियाका है । छाया यह
 एक (स्त्री०) नाम सूर्यप्रिया, कान्ति, प्रतिबिम्ब, अनातप इन चारों अर्थोंका

कक्ष्या प्रकोष्ठ हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभवन्धने ।
 कृत्या क्रियादेवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ॥ १५८ ॥
 जन्यं स्याज्जनवादेऽपि जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ।
 गर्ह्याहीनी च वक्तव्या कल्या सज्जनिरामयौ ॥ १५९ ॥
 आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यो पुण्यं तु चार्वापि ।
 रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि वदान्यो बलगुवागपि ॥ १६० ॥
 न्याय्येऽपि मध्यं सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ।

इति यान्ताः ।

निवहावसरौ वारौ संस्तरौ प्रस्तराऽध्वरौ ॥ १६१ ॥
 गुरु गीष्पतिपित्राद्यौ द्वापरो युगसंशयौ ।
 प्रकारौ भेदसादृश्ये आकाराविद्धिनाकृती ॥ १६२ ॥

वाची है ॥ १५७ ॥ कक्ष्या यह एक (स्त्री०) नाम हवेली आदिके भीतरका मकान, तागडी, हस्तिबंधनका मध्यभाग इन्होंका है । कृत्या यह एक (स्त्री०) नाम क्रिया, देवता इन्होंका वाचक (त्रि०) है और धन, स्त्री, पृथ्वी आदिसे भेदन करनेके योग्य जो परदेशगत पुरुष आदि उसका वाचक वाच्यलिङ्गी है । आगेके शब्द वर्गान्ततक (त्रि०) हैं ॥ १५८ ॥ जन्य यह एक नाम निन्दित वादका और युद्ध आदिका है । जघन्य यह एक नाम चंडाल आदि और नीचका है । वक्तव्य यह एक नाम निन्दाके योग्यका और आधीनका है । कल्या यह एक नाम सामग्रीसहितका और आरोग्यका है ॥ १५९ ॥ अर्थ्य यह एक नाम बुद्धिमानका और प्रयोजनसे युक्त पुरुषका है । पुण्य यह एक नाम सुन्दरका और सुकृतधर्मका है । रूप्य यह एक नाम सुन्दर रूपका और रुपैया तथा अशरफी आदिका है । वदान्य यह एक नाम टेढा बोलनेवालेका और दाताका है ॥ १६० ॥ न्याय्य यह एक नाम उचितका और अवलग्नका है । सौम्य यह एक नाम सुन्दर, मृगशिर, नक्षत्र, बुध इन्होंका है । यहाँ यान्त शब्द समाप्त हुए ॥ आगे वारसे दुरोदरशब्दतक (पु०) हैं । जहाँ भेद है दिखावेंगे । वार यह एक नाम समूहका और अवसरका है । संस्तर यह एक नाम डाभकी शय्या और यज्ञका है ॥ १६१ ॥ गुरु यह एक नाम बृहस्पतिका और पिता आदिका है । द्वापर यह एक नाम युगका और संशयका है । प्रकार यह

किंशारु सस्यशूकेषु मरु धन्वधराधरौ ।
 अद्रयो द्रुमशैलार्का' स्त्रीस्तनान्दौ पयोधरौ ॥ १६३ ॥
 ध्वान्तारिदानवा वृत्रा बलिहस्ताशव. कराः ।
 प्रदरा भङ्गनारीरुग्वाणा अस्त्रा' कचा अपि ॥ १६४ ॥
 अजातशत्रो गी' कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूवरौ ।
 स्वर्णेऽपि राः परिकर' पर्यङ्कपरिवारयो' ॥ १६५ ॥
 मुक्ताशुद्धौ च तारः स्याच्छारो वायौ स तु त्रिषु ।
 कर्बुरेऽथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु सगर. ॥ १६६ ॥
 वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो खावापि ।
 मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुर्गुह्येऽप्यवस्कर' ॥ १६७ ॥

एक नाम भेदका और सदृशपनेका है। आकार यह एक नाम चेष्टाका और आकृतिका है ॥ १६० ॥ किंशारु यह एक नाम खेतीके तुपाविशेषका, बाणका और क्वक्पक्षीका है। मरु यह एक नाम बागडदेशका और पर्वतका है। अद्रि यह एक नाम वृक्ष, पर्वत, सूर्य इन्हींका है। पयोधर यह एक नाम स्त्रियोंकी शूचियोंका और बादलका है ॥ १६३ ॥ धृन् यह एक नाम अधेरा, शत्रु, दानव इन्हींका है। कर यह एक नाम बलि, हाथ, किरण इन्हींका है। प्रदर यह एक नाम भग, स्त्रीका प्रदररोग, बाण इन्हींका है। अस्त्र यह एक नाम बालोंका और कोणका है ॥ १६४ ॥ तूवर यह एक नाम समयमें नहीं उपजे सींगोंवाले बैलका और समयमें नहीं उपजी मूछ दाढीवाले पुरुषका है। रे यह एक नाम धनका और सोनेका है। परिकर यह एक नाम पलंगका और कुट्टवका है ॥ १६५ ॥ तार यह एक नाम मोतियोंकी शुद्धिका, तिरना, ऊचा शब्द और चादीका है। शार यह एक नाम वायुका वाचक (पु०) और कर्बुरखण्डका वाचक वाच्यलिंगी है। सगर यह एक नाम प्रतिज्ञा, युद्ध, क्रियाका करना, दु रा इन्हींका है ॥ १६६ ॥ मन्त्र यह एक नाम वनविशेषका, गुप्तचात और देव आदिको साधने और वेदभेदका है। मित्र यह एक नाम सूर्यका वाचक (पु०) है और प्रियका वाचक (न०) है। स्वरु यह एक नाम यज्ञके धमके खंडका और वज्रका है। अवस्कर यह एक नाम गुप्तका और मलका

व्याजटांशुकयोनेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ।

मुखाग्रे क्रोडहृत्तयोः पोत्रं गोत्रं तु नाम्नि च ॥ १८० ॥

सत्रमाच्छादने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ।

अजिरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वाससि ॥ १८१ ॥

चक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्सु च ।

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ द्वारमात्रेऽपि गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गुहादुम्भौ गह्वरे द्वे रहोऽन्तिकमुपद्वरे ।

पुगेऽधिकमुपर्यग्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।

दोऽस्त्रियां भये श्वश्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ ॥ १८४ ॥

हे । शास्त्र यह एक नाम आज्ञाका और शास्त्र अर्थात् व्याकरण आदि-
शास्त्रका है । शस्त्र यह एक नाम हथियारका और लोहेका है ॥ १७९ ॥
नेत्र यह एक नाम वृक्षकी जडका और वस्त्रके भेद तथा आँखका है ।
क्षेत्र यह एक नाम भार्याका और शरीरका है । पोत्र यह एक नाम शूकर
और हलके अग्रभागका है । गोत्र यह एक नाम कुलका और नामका है
॥ १८० ॥ सत्र यह एक नाम आच्छादन, यज्ञ, सदावर्त्त, वन इन्हींका है ।
अजिर यह एक नाम विषय, शरीर, चौराहा इन्हींका है । अंबर यह एक
नाम आकाशका और वस्त्रका है ॥ १८१ ॥ चक्र यह एक नाम देशका और
रथके पहियेका है । अक्षर यह एक नाम मोक्षका और परब्रह्मका है ।
क्षीर यह एक नाम पानीका और दूधका है । भूरि, चन्द्र ये दो (पु०)
नाम सोनेके और अपिशब्दसे भूरि यह नाम बहुतका और चन्द्र यह नाम
कपूर आदिका है । गोपुर यह एक (न०) नाम द्वारमात्रका और मो-
थेका है ॥ १८२ ॥ गह्वर यह एक (न०) नाम गुफाका और पाखंडका
है । उपह्वर यह एक (न०) नाम एकांतका और समीपका है । अग्र
यह एक (न०) नाम अगाड़ी, अधिक, ऊपर इन्हींका है । पुर यह एक
(न०) नाम नगरका और मन्दिरका है ॥ १८३ ॥ राष्ट्र यह एक (पु०
न०) नाम देशका और उपद्रवका है । दर यह एक (पु० न०) नाम
भयका और छिद्रका है । वज्र यह एक (पु० न०) नाम हीरेका और

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।
 औशीरश्चामरे दण्डंऽप्यौशीर शयनामने ॥ १८५ ॥
 पुष्करं करिहस्वाग्र वाद्यमाण्डमुखे जले ।
 व्योम्नि सङ्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयो ॥ १८६ ॥
 अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्यं ।
 छिद्रात्मीयविनावाहिरवसरमध्येऽन्तरात्मनि च ॥ १८७ ॥
 मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।
 शार्वरं त्वन्वतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥
 गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्येऽप्यरुष्कर ।
 जठरं कठिनेऽपि स्यादधस्तादपि चाधरः ॥ १८९ ॥
 अनाकुलेऽपि चैकाग्रो व्यग्रो व्यासक्त आकुले ।
 उपर्युदीच्य श्रेष्ठेष्वुत्तरं स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥

इन्द्रके वत्रका हे ॥ १८४ ॥ तत्र यह एक (न०) नाम प्रधान, सिद्धान्त, सूत्रको बुननेका अर्जुन, परिच्छद इन्होंका है। औशीर यह एक नाम चमरका और दण्डका वाचा (पु०) और शय्याका, आसनका वाची (न०) है ॥ १८५ ॥ पुष्कर यह एक (न०) नाम हाथीकी सूडके अग्रभाग, बाजा, वर्तनका मुख, पानी, आकाश, तलवारका मध्यभाग, कमल, तीर्थ, औषधिविशेष इन्होंका है ॥ १८६ ॥ अत्र यह एक (न०) नाम अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धि, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीय, विना, वाहिर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा इन्होंका है ॥ १८७ ॥ पिठर यह एक (न०) नाम नागरमाथेका और दधि मयनेकी खाईका है। नागर यह एक (न०) नाम राजकशेरुका और सोंठका है। शार्वर यह एक नाम गाढे अरेरेका और मारनेवालेका है और वाच्यार्थलगी है। आगेके वगान्तरु त्व शब्द (त्रि०) है ॥ १८८ ॥ गार यह एक नाम अरुण, सुपेद, पीला इन्हींका है। अरु कर यह एक नाम घाव करनेवालेका और भिखवेका है। जठर यह एक नाम कठिनका और पेटका है। अधर यह एक नाम नीचेका और होठका है ॥ १८९ ॥ एकाग्र यह एक नाम स्वल्पका और एकताका है। व्यग्र यह एक नाम बिगडे हुए चित्तवालेका और आकुलका है। उत्तर यह एक नाम ऊपर, उदीच्य, श्रेष्ठ इन्होंका है। अनुत्तर यह एक नाम नीचे, आदि २३ तीनोंके विपरीतपनेका अमरकोष. १७

परिकाशः ।

दूरानात्मोत्तमाः पराः ।

मधुरी क्रूरी कठिननिर्दयो ॥ १९१ ॥

महतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।

मन्दयोः स्वैरः शुभ्रमुदीप्तशुक्लयोः ॥ १९२ ॥

इति रान्ताः ।

किरीटं केलाथ संयता मौलयस्त्रयः ।

दुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः क्षालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम् ।

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ॥ १९६ ॥

और श्रेष्ठका है ॥ १९० ॥ पर यह एक नाम दूर, दूसरा, उत्तम इन्होंका है । मधुर यह एक नाम स्वादुका और प्रियका है । क्रूर यह एक नाम कठोरका और निर्दयका है ॥ १९१ ॥ उदार यह एक नाम दाताका और बडेका है । इतर यह एक नाम अन्यका और नीचका है । स्वैर यह एक नाम मन्दका और स्वाधीनका है । शुभ्र यह एक नाम प्रकाशितका और सुपेदका है ॥ १९२ ॥ यहां रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ मौलि यह एक (त्रि०) नाम चौटी, मुकुट, बंधे हुए बाल इन्होंका है । पीलु यह एक (पु०) नाम वृक्षविशेष, हस्ती, बाण, पुष्प इन्होंका है ॥ १९३ ॥ काल यह एक (पु०) नाम धर्मराजका और समयका है । कलि यह एक (पु०) नाम कालियुगका और कलहका है । कमल यह एक (पु० न०) नाम मृगविशेष, जलकमल इन्होंका है । कम्बल यह एक (पु०) नाम कम्बल नाम उनके कपडेका और नागराजका है ॥ १-४ ॥ बलि यह एक नाम बलिदैत्यका, करका और भेडका वाची (पु०) है आर त्वचाके संकोचका वाची (स्त्री०) है । बल यह एक नाम स्थूलपना, सामर्थ्य, सेना इन्होंका वाची (न०) है और काकका और हलका वाची (पु०) है ॥ १९५ ॥ वातूल यह एक नाम वातके समूहका वाची (पु०) और

मलोऽघ्नी पापविद्विष्टान्यघ्नी शूलं रुगायुधम् ।
 शङ्खावपि द्वयोः कीलं पालिं ह्यश्वद्वपक्तिषु ॥ १९७ ॥ ॥
 कला शिल्पे कालमदेऽप्याली सरख्यावली अपि ।
 अच्यम्बुविकृता वला कालमर्यादयोरपि ॥ १९८ ॥
 बहुलाः कृत्तिका गावा बहुलोऽग्रा शिता त्रिषु ।
 लीला विनामक्रियोरुपला शर्करापि च ॥ १९९ ॥
 शोणितेऽम्भासि कीलालं मूलमाद्ये शिफामयोः ।
 जाल समूह आनायगवाक्षशारकेश्वपि ॥ २०० ॥
 शील स्वभावे सदृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् ।
 छदिर्नेत्ररुजोः क्लीव समूहे पटल न ना ॥ २०१ ॥

वातके विकारको नहीं सहनेवाले प्राणीका वाची (त्रि०) है । व्याल यह एक नाम शठका वाची वाच्यालगी और सिंह, भेटिया आदिका और सर्पका वाची (पु०) है ॥ १९६ ॥ मल यह एक (पु० न०) नाम पाप, मिष्टा, पर्साना आदि इन्हींका है । शूल यह एक (पु० न०) नाम रोग, हथियार इन्हींका है । कील यह एक (पु० स्त्री०) नाम शरुका और अग्निके तेनका है । पालि यह एक (स्त्री०) नाम कानकी लत्ता, पक्ति, चिह्न इन्हींका है ॥ १९७ ॥ कला यह एक (स्त्री०) नाम शिल्पका और कालके भेदका है । आली यह एक (स्त्री०) नाम सरखीका और पक्तिका है । वला यह एक (स्त्री०) नाम चद्रमाके उदय आदिसे समुद्रके पानीकी शुद्धि और अशुद्धि अर्थात् ज्वारभाटा, कालमर्यादा इन्हींका है ॥ १९८ ॥ बहुला यह एक (स्त्री०) नाम कृत्तिकाओंका और गौओंका है । बहुल यह एक नाम अग्निका वाची (पु०) और कृष्णवर्णका वाची (त्रि०) है । लीला यह एक (स्त्री०) नाम भोगका और प्रियाका है । उपला यह एक (स्त्री०) नाम रत्निका और पत्थरका है ॥ १९९ ॥ कीलाल यह एक (पु० न०) नाम रक्तका और पानीका है । आगोके नाम कुशरशब्दतरु (न०) है । मूल यह एक नाम पहला, जट, मूलनक्षत्र इन्हींका है । जाल यह एक नाम समूह, सन, सूतका बना रज्जुबन्ध, झगोटा, बिना मिठी कर्षिता इन्हींका है ॥ २०० ॥ शाल यह एक नाम स्वभाष, सस्त इन्हींका है । पटल यह एक नाम रत्न आदिसे

अधःस्वरूपयोरस्त्री तलं स्याच्चाभिपे पलम् ।

और्नानलेऽपि पानालं चैलं वस्त्रधमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

कुक्कूलं शंकुभिः कीर्णं श्वभ्रे ना तु तुपानले ।

निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृतस्त्रयोः ॥ २०३ ॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥ २०४ ॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे चागौ दसे च पेशलः ।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः रथालोलश्चलसतृष्णयोः ॥ २०५ ॥

इति लान्ताः ।

द्वदावौ वनारण्यवह्नी जन्महरौ भवौ ।

मन्त्री सहायः सचिवौ पतिशाखिनरा धवाः ॥ २०६ ॥

फलका और कार्यके फलका और त्रिफला आदिका है । पल यह एक नाम घरका छादन, नेत्रकी पीडा इन्होंका वाचक (न०) है और समूहका वाची पटलशब्द (पु०) नहीं है ॥ २०१ ॥ तल यह एक (पु० न०) नाम नीचेका और स्वरूपका है । पल यह एक नाम पलभरका और मांसका है । पाताल यह एक नाम बडवाग्निका और पानालका है । चैल यह एक (न०) नाम वस्त्रका और नीचका है और नीचका वाची (त्रि०) है ॥ २०२ ॥ कुक्कूल यह एक नाम कीलोंसे आच्छादित छिद्रका और तुपकी आग्निका है । केवल यह एक नाम निश्चितका वाची (न०) और एकका और संपूर्णका वाची (त्रि०) है ॥ २०३ ॥ कुशल यह एक नाम सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य इन्होंका वाची (न०) और शिक्षाका वाची (त्रि०) है । प्रवाल यह एक (पु० न०) नाम अंकुरका और मूगेका है । स्थूल यह एक (त्रि०) नाम जडका और मोटेका है ॥ २०४ ॥ कराल यह एक (त्रि०) नाम उंचे दातोंवालेका और उंचेका है । पेशल यह एक (त्रि०) नाम शत्रुका और चतुरका है । बाल यह एक (त्रि०) नाम मूर्खका और बालकका है । लोल यह एक (त्रि०) नाम चञ्चलका और तृष्णावालेका है ॥ २०५ ॥ यहाँ लान्त शब्द समाप्त हुए ॥ द्व, दाव ये दो (पु०) नाम वनके और वनकी अग्निके हैं । भव यह एक (पु०) नाम जन्मका और महादेवका है । सचिव यह एक (पु०) नाम मन्त्रीका

अवय' शैलमेपार्का आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।
 भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥ २३ ॥
 स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।
 अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृताऽपि निह्व' ॥ २०८ ॥
 उत्सेकामर्षयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सव' ।
 अनुभाव' प्रभावे च सता च मतिनिश्चये ॥ २०९ ॥
 स्याज्जन्महेतु' प्रभवः स्थान चाद्योपलब्धये ।
 शूद्राया विप्रतनये शस्त्रे पारश्वो मत' ॥ २१० ॥
 ध्रुवो भमेदे ह्रीव तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।
 स्वो ज्ञातायात्मनि स्व त्रिष्व्वात्मीये स्वोऽस्त्रिया धने ॥ २११ ॥
 स्त्रीकटीवस्त्रवन्वेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ।
 शिवा गौरीफेरवयोर्द्वन्द्व कलहप्लुग्मयोः ॥ २१२ ॥

और सहायका है । ध्रुव यह एक (पु०) नाम पति, ध्रुववृक्ष, मनुष्य
 इन्होका है ॥ २०६ ॥ अवि यह एक (पु०) नाम पर्वत, मेंढा, सूर्य
 इन्होका है । ह्व यह एक (पु०) नाम आज्ञा, आह्वान, यज्ञ इन्होका
 है । भाव यह एक (पु०) नाम सत्ता, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा,
 जन्म इन्होका है ॥ २०७ ॥ प्रभव यह एक (पु०) नाम उत्पात्ति, फल,
 पुष्प, गर्भमोचन इन्होका है । निह्व यह एक (पु०) नाम अविश्वास,
 अपलाप (वदवाद), शठपना इन्होका है ॥ २०८ ॥ उत्सव यह एक
 (पु०) नाम उद्गति (ऊपरको उठाना), कोप, इच्छाका वेग, आन
 न्दका अवसर इन्होका है । अनुभव यह एक (पु०) नाम प्रभाव, सत्पु
 र्णको बुद्धिका निश्चय इन्होका है ॥ २०९ ॥ प्रभव यह एक (पु०)
 नाम जन्मका हेतु और प्रथम ज्ञानका स्थान इन्होका है । पारश्व यह एक
 (पु०) नाम शूद्रकी स्त्रीमे ब्राह्मणसे उपजे पुत्रका और शस्त्रका है ॥ २१० ॥
 ध्रुव यह एक नाम ध्रुव तारेका वाची (पु०) है, निश्चयका वाची (न०)
 है और निश्चयका वाची (त्रि०) है । स्व यह एक नाम सगोत्रीका और
 आत्माका वाची (पु०) है । अपने सबधनारेका वाची (त्रि०) है
 और धनका वाची (पु० १०) है ॥ २११ ॥ नीवी यह एक (स्त्री०)
 नाम स्त्रीकी कटके वस्त्रवधनका और मूलद्रव्यका है । शिवा यह एक

द्रव्यामुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।

स्त्रीवं नपुंसकं पण्डे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ।

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ द्वौ चराभिमरौ स्पशौ ।

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥ २१४ ॥

रहःप्रकाशौ वीकाशौ निर्वेशौ भृतिभोगयोः ।

कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु ॥ २१५ ॥

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्सु च ।

दशाऽवस्थानेकविधाप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥

वशा स्त्री करिणी च स्याद् दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।

स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि ॥ २१७ ॥

(स्त्री०) नाम पार्वतीका और गीदडीका है । इन्द्र यह एक (न०) नाम कलहका और जोडेका है ॥ २१२ ॥ सत्व यह एक नाम वस्तु, प्राण, वीर्यकी अधिकता इन्होंका वाची (न०) और प्राणीका वाची (पु० न०) है । स्त्रीव यह एक नाम हीजडेका वाची (न०) और अलसका वाची वाच्यलिङ्गी है ॥ २१३ ॥ यहां वान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विंश (शान्त) यह एक (पु०) नाम वैश्यका और मनुष्यका है । स्पश यह एक (पु०) नाम गूढ पुरुषका और युद्धका है । राशि यह एक (पु०) नाम समूहका और मेष आदि राशिका है । वंश यह एक (पु०) नाम कुलका और वासका है ॥ २१४ ॥ वीकाश यह एक (पु०) नाम एकान्त और प्रकाशका है । निर्वेश यह एक (पु०) नाम तनखाका और भोगका है । कीनाश यह एक नाम यमका वाची (पु०) है । क्षुद्र रोगका और किसानका वाची (त्रि०) है ॥ २१५ ॥ अपदेश यह एक (पु०) नाम पद, लक्ष्य, निमित्त इन्होंका है । कुश यह एक (पु० न०) नाम लाभका और रामचन्द्रके पुत्रका है । दशा यह एक (स्त्री०) नाम अनेक प्रकारकी बाल्य आदि अवस्थाका और बध्नके अतका है । आशा यह एक नाम (स्त्री०) नाम बडी तृष्णाका और दिशाका है ॥ २१६ ॥ वशा यह एक (स्त्री०) नाम स्त्रीका और हथिनीका है । दृश् (शान्त) यह एक नाम ज्ञानका और ज्ञाताका वाची (त्रि०) है, दृष्टिका वाची

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिशः ।
कोशोऽस्त्री कुङ्मले खड्गपिधानेऽर्षोऽदिद्वययोः ॥ २१९ ॥
इति शान्ताः ।

सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥
काकमत्स्यात्वगौ ध्वाक्षी कक्षी तु तृणवीरुधौ ।
अभीषुः प्रगहे रश्मौ प्रैषः प्रेषणमर्दने ॥ २२० ॥
पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ।
शुक्रले मृषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ॥ २२१ ॥
द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षोऽयाक्षमिन्द्रिये ।
ना द्यूताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ॥ २२२ ॥
कर्षूर्वात्ता करीपाग्निः कर्षूः कुल्याभिधायिनी ।
दुभावे तत्क्रियाया च पीरुष विपमप्सु च ॥ २२३ ॥

(स्त्री०) है । कर्कश यह एक (त्रि०) नाम विषेकरहित, कठोर, दुष्ट स्पर्शवाला इन्होंका है ॥ २१७ ॥ प्रकाश यह एक (त्रि०) नाम अत्यत प्रसिद्धता और घामका है । बालिश यह एक (त्रि०) नाम बालकका और मूखका है । कोश यह एक (पु० न०) नाम फूलकी कली, तलवारका घर, घनसमूह, शपथभेद इन्होंका है ॥ २१८ ॥ यहाँ शान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अनिमिष यह एक (पु०) नाम देवताका और मन्त्रका है । पुरुष यह एक (पु०) नाम आत्माका और मनुष्यका है ॥ २१९ ॥ ध्वाक्ष यह एक (पु०) नाम काकका और बगला आदिका है । कक्ष यह एक (पु०) नाम तृणका और वेलका है । अभीषु यह एक (पु०) नाम घोडे आदिकी रस्सीका और किरणका है । प्रैष यह एक (पु०) नाम प्रेषणका और मर्दनका है ॥ २२० ॥ पक्ष यह एक (पु०) नाम सहायका और पन्द्रह दिनोंका है । उष्णीष यह एक (पु० न०) नाम शिरका पगडा आदिका और सुकृतका है । वृष यह एक (पु०) नाम वीर्यवाला, मृषा, श्रेष्ठ, सुकृत, बल इन्होंका है ॥ २२१ ॥ आकर्ष यह एक (पु०) नाम जूता, पाशा, जूताकी पीठिका इन्होंका है । अक्ष यह एक नाम इन्द्रियका वाची (न०) है और जूवाका अग, कर्ष (तोल), चक्र, व्यवहार, बहेडा इन्होंका वाची (पु०) है ॥ २२२ ॥ कर्षू यह

उपादानेऽप्यामिषं स्यादपराधेऽपि किल्विषम् ।

स्याद्दृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ॥ २२४ ॥

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भृतिः ।

त्विद् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्नर्यानिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेरण्यचिक्वणे ॥ २२६ ॥

इति पान्ताः ।

रविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवह्नी विभावसू ।

वत्सौ तर्पणवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२७ ॥

शृंगारादौ विषे दीर्ये गुणे रामे द्रवे रसः ।

पुंस्युत्तंसावत्सौ द्वौ कर्णपूरे च शेरवरे ॥ २२८ ॥

एक नाम बात और अरनेकी अग्निका धाची (पु०) और कर्षू नदीका वाची (स्त्री०) है। पौरुष यह एक (न०) नाम पुरुषपनेका और पुरुषके कर्मका है। विष यह एक (न०) नाम पानीका और जहरका है ॥ २२३ ॥ आमिष यह एक (पु० न०) नाम उपादानका और उत्कोच (रिश्वत) का है। किल्विष यह एक (न०) नाम अपराधका और रोगका है। वर्ष यह एक (पु० न०) नाम वर्षा, जम्बूद्वीपका अंश भरतखंड आदि, संवत्सर इन्हींका है ॥ २२४ ॥ प्रेक्षा यह एक (स्त्री०) नाम नाच देखनेका और बुद्धिका है। भिक्षा यह एक (स्त्री०) नाम सेवा, मांगना, तनखा इन्हींका है। त्विप् (पान्त) यह एक (स्त्री०) नाम शोभाका और कांतिका है। वक्ष्यमाण तीन शब्द वाच्यलिगी हैं। न्यक्ष यह एक नाम संपूर्णपनेका और नीचेका है ॥ २२५ ॥ अध्यक्ष यह एक नाम प्रत्यक्ष और अधिकृतका है। रूक्ष यह एक नाम प्रेमरहितका और रूखेका है ॥ २२६ ॥ यहां पान्त शब्द समाप्त हुए ॥ हंस यह एक (पु०) नाम सूर्यका और हसविशेषका है। विभावसु यह एक (पु०) नाम सूर्यका और अग्निका है। वत्स यह एक (पु०) नाम गौके बच्चेका और वर्षका है। दिवौकस यह एक (पु०) नाम पपैके और देवताओंका है ॥ २२७ ॥ रस यह एक (पु०) नाम जृगार आदि, विष, वीर्य, गुण, प्रीति, द्रव इन्हींका है। उत्तस, अवतंस ये दो (पु०) नाम कानके गहनेके और शिरके गहनेके हैं ॥ २२८ ॥

देवमेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ।

विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीर्दिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥ २२९ ॥

लालसे प्रार्थनीत्सुकये हिंसा चौर्यादिकर्म च ।

प्रसूश्वापि भ्रूयात्री रोदस्यौ रोदसा च ते ॥ २३० ॥

ज्वालाभासी न पुस्यचिर्ज्योतिर्भद्यातदृष्टिषु ।

पापापराधयोरागः खगत्रालयादिनोर्वयः ॥ २३१ ॥

तेजःपुरीषयोर्वर्षो महस्सूस्वतेजसोः ।

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥

छन्दः पद्येऽभिलापे च तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

सहो बलं सहा मार्गो नमः खं श्रावणो नमः २३३ ॥

वसु यह एक नाम देवता (वसुदेवता), अग्नि, किरण इन्होंका वाची (पु०) है । रत्नका और धनका वाची (न०) है । वेधस् (सान्त) यह एक (पु०) नाम विष्णुका और ब्रह्माका है । आशिस् यह एक (स्त्री०) नाम हितकी चाहनाका और सर्पकी डाढका है ॥ २२९ ॥ लालसा यह एक (स्त्री०) नाम प्रार्थनाका और आनन्दका है । हिंसा यह एक (स्त्री०) नाम चोरी और मारना आदि कर्मका है । प्रसू यह एक (स्त्री०) नाम माताका और घोडीका है । रोदस् (सान्त न०), रोदसा (स्त्री०) ये दो नाम पृथ्वी आकाशके हैं ॥ २३० ॥ अचिस् यह एक नाम ज्वालाका और प्रकाशका है और (पु०) नहीं है । ज्योतिस् यह एक (न०) नाम नक्षत्र, प्रकाश, दृष्टि इन्होंका है । आगस् यह एक (न०) नाम पापका और अपराधका है । वसू यह एक (न०) नाम पक्षीका और वार्य यौवन अवस्था आदिका है ॥ २३१ ॥ वर्षस् यह एक (न०) नाम तेजका और विष्ठाका है । महस् यह एक (न०) नाम उत्सवका और तेजका है । रजस् यह एक (न०) नाम रजोगुणका और स्त्रीके फूलका है । तमस् यह एक (न०) नाम राहु, अथेरा, तमोगुण इन्होंका है ॥ २३२ ॥ छन्दस् यह एक (न०) नाम गायत्री आदि छन्दका और इन्द्राका है । तपस् यह एक (न०) नाम सातवन और चान्द्रायण आदि व्रतका है । सहस् यह एक नाम बलका वाची (न०) है और मार्गका वाची (पु०) है । नमस् यह एक नाम स्वाकाशका वाची (न०)

ओकः सद्वाश्रयश्चीव । पयः क्षीं गंयांऽस्तु च ।

ओजो दीप्तौ बले स्रोतः इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुभेऽप्यतस्त्रिषु ।

विद्वान्विदंश्च बीभत्समां हिंस्रेऽप्यतिशये त्वमी ॥ २३५ ॥

वृद्धप्रगस्थयोऽर्थायान्कनीयांस्तु युवालपयोः ।

वरीयांऽस्तृलुवरयोः सार्धीयान्साधुवाहयाः ॥ २३६ ॥

इति सान्ताः ।

दलेऽपि वर्धं निर्धन्वो गगर्वाऽयो ग्रहाः ।

द्वार्यापीडे क्वाथामे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥

तुलासूत्रेऽश्वादिग्मौ प्रग्रहः प्रग्रोऽपि च ।

पत्नीपरिजनादानमूलगागः परिग्रहाः ॥ २३८ ॥

और श्रावणका वाची (पु०) है ॥ २३३ ॥ ओकस् यह एक नाम मकानका वाची (न०) और आश्रयका वाची (पु०) है । पयस् यह एक (न०) नाम दूधका और पानीका है । ओजन् यह एक (न०) नाम क्रांतिका और बलका है । स्रोतस् यह एक (न०) नाम इन्द्रियका और नदीके वेगका है ॥ २३४ ॥ तेजस् यह एक (न०) नाम प्रभाव, तेज, बल, वीर्य इन्हींका है । इमसे आगे सकागन्त शब्दोंकी समाप्तिपर्यन्त सब शब्द (त्रि०) हैं । विद्वम् यह एक न म जाननेवालेका आर आत्मज्ञानीका है । बीभत्स यह एक नाम क्रमका और समभेदका है । ये वक्ष्यमाण (आगे कहे जानेवाले) ज्यायस्मे लेकर सार्धीयस् शब्द पर्यन्त अनिश्चयके वाची हैं ॥ २३५ ॥ ज्यायस् यह एक नाम अत्यन्त वृद्धका आर अत्यन्त स्तुतिके योग्यका है । कनीयस् यह एक न म अत्यन्त जवानका आर अत्यन्त अल्पका है । वरीयस् यह एक नाम अत्यन्त बड़ेका और अत्यन्त श्रेष्ठका है । सार्धीयस् यह एक नाम अत्यन्त साधुका आर अत्यन्त प्रतिज्ञाशालेका है ॥ २३६ ॥ यहाँ सांत शब्द समाप्त हुए ॥ वर्धं यह एक (पु० न०) नाम पत्तेका और मोरके पंखका है । ग्रह यह एक (पु०) नाम आग्रहविशेष, ग्रहण, सूर्य आदि ग्रह इन्हींका है । आगेके वर्गनातक सब शब्द (पु०) हैं । निर्व्यूह यह एक नाम द्वार, मुकुट, क्वाथका रस, घर आदिकी भीतमें गाड़ी हुई दूरीको इन्हींका है ॥ २३७ ॥ प्रग्रह, प्रग्रह ये दो नाम तराजूकी दोरी

दग्धेषु च गृहाः श्रेण्यामप्यागोदो वगधिया ।
 व्यूहो वृन्देऽप्यर्ध्वप्रऽप्यग्नौर्वास्तमोऽपहाः ॥ २३९ ॥
 परिच्छेदे नृपाहोऽर्थे पांश्वर्हो-

इति हान्ताः ।

ऽव्ययाः परे ।

आहीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमांशु धातुयोगजे ॥ २४० ॥
 आ प्रगृह्य स्मृती वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कापपीडयो ।
 पापकुत्सेपदर्थे कु धिङ् निर्मत्सैननिन्दयोः ॥ २४१ ॥
 चान्वाचयसमाहारेत्तरेतरममुच्चये ।
 स्वस्त्याशी क्षेपपृण्यादौ प्रक्षेपे लङ्घनेऽप्यति २४२ ॥

और घोडे आदिकी गस्ता इन्होना है । परिग्रह यह एक नाम भार्या, बुद्धि, अंगिकार, मूल, शाप इन्होना है ॥ २३९ ॥ गृह यह एक नाम स्त्री या वाची बहवचनान्न (पु०) है और मकानका वाची (न०) है । आरोह यह एक नाम उत्तम स्त्री की उठिना और हाथीके चढ़नेका है । व्यूह यह एक नाम समूह या और सेनाके स्थित करनेका है । आह यह एक नाम वृत्रासुर या और सर्प या है । तपोपह यह एक नाम आग्र, चन्द्रमा, सूर्य इहांका है ॥ २३९ ॥ परिबर्ह यह एक नाम राजाके योग्य सुपेद छत्र आदि या और चदे वा वत्र आदिका है ॥ यहाँ हान्त शब्द समाप्त हुए ॥ इसमें आगे अव्यय हैं । आङ् गृह एक नाम इपदय अथात् थाडा, अभिव्याप्ति सामर्थ्य, धातुयोगज इन्होना वाचा अव्यय है और इसका उच्चारण अन्वये लिखे है । ईषदर्थे अर्ध्वप्र अर्थात् लृङ् अपगल है । अभिव्याप्तिमे जने- ' आ सत्प्रयोगात् ' अर्थात् सत्प्रयोगको अभिव्याप्त होने । सीमार्थमे जने- ' आसमुद्रगज, ट ' अथात् समुद्रतः राजदृष्ट है । धातु योगमे जने- ' आहृति ' अर्थात् आक्रमण करना है ॥ २४० ॥ जो प्रगृह्यसज्ञा आ है वह स्मरणम और वाच्ये प्रत्यये है । आ यह कापमे और पीडाम रत्तना है । कु यह पाप, निन्दा, थोडा इन्होमे वर्तता है । धिङ् यह झिडकनेम और नि दांमे वर्तता है ॥ २४१ ॥ च यह चान्वाचय, सम हार, इतरेतर, समुच्चय इन्होमे वर्तता है । स्यास्ति यह आशीषांशु, कुशळ, पूष्य आदि इन्होमे वर्तता है । अति यह अत्यंतमे और

स्वित्प्रश्ने च विनर्के च तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।

सकृत्सहैकवारे चाप्यारादूरसमीपयोः ॥ २४३ ॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चाद्गुताप्यर्थविकल्पयोः ।

पुनःसहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥ २४४ ॥

खेदानुकम्पासंतोषविस्मयामंत्रणे वत ।

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः ॥ २४५ ॥

प्रति प्रतिनिधी वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ॥ २४६ ॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुगर्थेऽप्रत इत्यपि ।

यावत्तावच्च साकल्येऽवधी मानेऽवधारणे ॥ २४७ ॥

मङ्गलानन्तराङ्गमप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ ।

वृथा निरर्थकाविध्योर्नानाऽनेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥

लंघनमें वर्त्तता है ॥ २४२ ॥ स्वित् यह प्रश्नमें और तर्कमें वर्त्तता है । तु यह निश्चयमें और भेदमें वर्त्तता है । सकृत् यह सहार्थमें और एकवारमें वर्त्तता है । आरात् यह एक नाम दूरका और समीपका है ॥ २४३ ॥ पश्चात् यह एक नाम पश्चिम दिशाका और अन्त्यका है । उत यह एक नाम समुच्चयका और विकल्पका है । शश्वत् यह एक नाम वारंवारका और सहार्थका है । साक्षात् यह एक नाम प्रत्यक्षका और तुल्यका है ॥ २४४ ॥ वत यह एक नाम खेद, दया, संतोष, आश्चर्य, गुप्त बोलना इन्हींका है । हन्त यह एक नाम आनन्द, दया, वाक्प्रका आरंभ, विवाद इन्हींका है ॥ २४५ ॥ प्रति यह एक नाम प्रतिनिधि, व्याप्त होनेकी इच्छा, लक्षणा, इत्यभूत आख्यान आदि इन्हींका शिष्टप्रयोगके अनुसार है । इति यह एक नाम हेतु, प्रकरण, प्रकाशा, निश्चय, समाप्ति इन्हींका है ॥ २४६ ॥ पुरस्तात् यह एक नाम पूर्वदिशा, प्रथम, वीता हुआ, अगाड़ी इन्हींका है । यावत्, तावत् ये दो नाम सकल्पना, अवधि, परिमाण, निश्चय इन्हींका है ॥ २४७ ॥ अतो, अतये नाम मंगल, अनन्तर, आरंभ, प्रश्न, सकल्पना इन्हींका है । वृथा यह एक नाम निरर्थकका और विधिसे हीनका है । नाना यह एक नाम अनेकार्थका और उभयार्थका है ॥ २४८ ॥

नु पृच्छाया विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरनु ।
 प्रश्नावधारणाऽनुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥
 गर्हासमुच्चयप्रश्नशङ्कासंभावनास्वपि ।
 उपमायां विकल्पे वा सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥
 अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ।
 इवेत्यमर्थयोरेवं नूनं तर्केऽर्थनिश्चये ॥ २५१ ॥
 तूष्णीमर्थे सुखे जोष किं पृच्छाया जुगुप्सने ।
 नाम प्रकाशसमाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥ २५२ ॥
 अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।
 इं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
 पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।
 स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५४ ॥

नु यह एक नाम पृच्छनेका और विकल्पका है । अनु यह एक नाम
 पीछेका और सदृशपनेका है । ननु यह एक नाम प्रश्न, निश्चय, आज्ञा,
 सान्त्वन, सञ्चोधन इन्हींका है ॥ २४९ ॥ अपि यह एक नाम निन्दा,
 समुच्चय, प्रश्न, शंका, संभावना इन्हींका है । वा यह एक नाम उपमाका
 और विकल्पका है । सामि यह एक नाम आधेका और निन्दाका है ॥ २५० ॥
 अमा यह एक नाम साथका और समीपका है । क यह एक नाम पानीका
 और शिरका है । एव यह एक नाम सदृशपनेका और निश्चयका है । नून
 यह एक नाम तर्कका और अर्थके निश्चयका है ॥ २५१ ॥ तूष्णीं यह एक
 नाम मौनका है । जोष यह एक नाम सुखका है । किं यह एक नाम
 पूछनेका और निन्दाका है । नाम यह एक नाम प्रकाशना, कथाचिदर्थ,
 क्रोध, वैरसहित अंगीकार, निन्दा इन्हींका है ॥ २५२ ॥ अलं यह एक
 नाम परिपूर्णता, गहना, सामर्थ्य, निवारण इन्हींका है । इं यह एक
 नाम वितर्कका और प्रश्नका है । समय यह एक नाम समीपका और
 मध्यका है ॥ २५३ ॥ पुनर यह एक नाम वाग्वार और भेदका है । निर
 यह एक नाम निश्चयका और निषेधका है । पुरा यह एक नाम प्रबन्ध,
 मृत दिनोंका बीता हुआ, समीप आनेवाला इन्हींका है ॥ २५४ ॥

ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।

स्वर्गं परे च लोके स्ववार्तासंभाव्ययोः किल ॥ २५५ ॥

निषेधवाक्यालंकारजिज्ञासानुनये खलु ।

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमृखेऽभितः ॥ २५६ ॥

नामप्रकाश्ययोः प्राहुर्मिथोऽन्थोन्यं रहस्यपि ।

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५७ ॥

अहहेत्यद्भुते खेदे हि हेताववधारणे ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः ४ ।

चिरायचिररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्षणमसकृत्तममाः ॥ १ ॥

स्नाग्घटित्यञ्जसाहाय द्राक् मङ्क्षु सपदि हुते ।

बलवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यनीव च निर्भरे ॥ २ ॥

ऊररी, ऊरी, उररी ये तीन नाम विस्तारके और अगाकारनेके हैं । स्वर यह एक नाम स्वर्गका और परलोकका है । किल यह एक नाम वार्ताका और संभाव्यका है ॥ २५५ ॥ खलु यह एक नाम निषेध, वाक्यकी शोभा, जाननेकी इच्छा, नम्रपना इन्हींका है । अभितस् यह एक नाम समीप, दोनों तरफसे, शीघ्र, सकल्पना, सन्मुख इन्हींका है ॥ २५६ ॥ प्राद्वर यह एक नाम नामका और प्रकाशपनेका है । मिथस् यह एक नाम आपसका और एकान्तका है । तिरस् यह एक नाम अंतर्धानका और तिरछेपनेका है । हा यह एक नाम विषाद, शोक पीडा इन्हींका है ॥ २५७ ॥ अहह यह एक नाम अद्भुतका और खेदका है । हि यह एक नाम हेतका और निश्चयका है ॥

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः । चिराय चिररात्राय, चिरस्य, चिरेण, चिरात्, चिरं ये छः चिर अर्थात् बहुत देरके नाम हैं । मुहुस्, पुनः, पुनर्, शश्वत्, अभीक्षणं, असकृत् ये पाँचों नाम वारंवारके हैं और अर्थसे समान हैं ॥ १ ॥ स्नाक्, झटिति, अंतसा, अहाय, द्राक्, मङ्क्षु, सपदि ये सात नाम शीघ्रके हैं । बलवत्, सुष्ठु, किमुत, सु, अति, इव ये छः नाम अतिशयके हैं ॥ २ ॥

पृथग्विनान्तरेणते हिरुङ्क नाना च वर्जने ।
 यत्तद्यनस्ततो हेतावसाकल्पे तु चिच्चन ॥ ३ ॥
 कणाचिजातु सार्धं तु साकं सत्रा सम सह ।
 आनुकूल्यार्थकं प्राक्वं व्यर्थके तु वृथा मुधा ॥ ४ ॥
 आ.। उताहो किमुत विकल्पे किं किमुत च ।
 तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥
 दिवाहीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।
 निर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ सर्वोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
 स्यु प्याद् पाडङ्ग हे है भोः समया निकषा हिरुक् ।
 अतर्किते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥ ७ ॥
 स्वाहा देवहविर्दाने श्रीपद् वीपद् वपद् स्वधा ।
 किंचिदीपन्मनागल्पे प्रत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
 व वा यथा तयेवैव साम्येऽहो ही च विस्मये ।
 मौने तु तूष्णीं तूष्णीका सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥ ९ ॥

पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋने, हिरुङ्क, नाना ये छ नाम वर्जनेके अर्थमें
 हैं। यत्, तत्, यत, तत ये चारों नाम कारणवाचक हैं। चित्,
 चन ये दो नाम असंपूर्णवाचक हैं ॥३॥ रुदाचित्, जातु ये दो नाम किसी
 कालके हैं। सार्धं, साकं, सत्रा, सम, सह ये पांच नाम साथके हैं। प्राक्
 यह एक नाम अनुकूलनेका है। वृथा, मुधा ये दो नाम व्यर्थके हैं ॥ ४॥
 आहो, उताहो, किमुत, किं, किमु, उत ये छ नाम विकल्पके हैं। तु, हि,
 च, स्म, ह, वै ये छ नाम श्लोकके पादको पूरण करनेमें वर्तते हैं। सु,
 अति ये दो नाम पूजनके हैं ॥५॥ दिवा यह एक नाम दिनका है। दोषा,
 नक्त ये दो नाम रात्रिके हैं। साचि, तिरस् ये दो नाम तिरछेके हैं ॥ ६ ॥
 प्याद्, पाद्, अग, हे, है, भोस् ये छ नाम सर्वोधनके हैं। समया, निक
 षा, हिरुक्, ये तीन नाम समीपनेके हैं। सहसा यह एक नाम नहीं तर्कित
 किये (अस्मात्) का है। पुर, पुरत, अग्रत ये तीन नाम अगाडीके
 हैं ॥७॥ स्वाहा, श्रीपद्, वीपद्, वपद्, स्वधा इहोमि आदिके चार नाम
 देवताआके अर्थ हविर्दानविशेषके हैं और स्वधा यह एक नाम पितरोंके अर्थ
 देनेमें प्रसिद्ध है। किञ्चित्, ईपत्, मनाक् ये तीन नाम अल्पके हैं। प्रेत्य,
 अनुत्त ये दो नाम अन्यत्र मके हैं ॥ ८ ॥ व, वा, यथा, तथा, इव, एवं ये

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्देऽथान्तरेऽन्तरा ।

अन्तरेण च मध्ये स्युः प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥ १० ॥

युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थानेऽभीक्षणं शश्वदनारते ।

अमावे नह्य नो नापि मास्म मालं च वारणे ॥ ११ ॥

पक्षान्तरे चैद्यादि च तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विश्वगित्यापि ।

अकामानुमतौ काममसूयोपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने ।

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥

मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।

स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥

छः नाम तुल्यके हैं । अहो, ही ये दो नाम आश्चर्यके हैं । तूष्णीं, तूष्णीकां ये दो नाम मौन अर्थात् चुपकेके हैं । सद्यः, सपदि ये दो नाम तत्कालके हैं ॥१॥ दिष्ट्या, समुपजोषं ये दो नाम आनन्दके हैं । अंतरे, अंतरा, अन्तरेण ये तीन नाम मध्यके हैं । प्रसह्य यह एक नाम हठका है ॥ १० ॥ साम्प्रत, स्थाने ये दो नाम युक्तके हैं । अभीक्षणं, शश्वत् ये दो नाम निरंतरके हैं । नाहि, अ, नो, न ये चार नाम अभावके हैं । मास्म, मा, मालं ये तीन नाम मने करनेके हैं ॥ ११ ॥ चेत, यदि ये दो नाम अन्यपक्षके हैं । अद्धा, अंजसा ये दो नाम तत्त्वके हैं । प्रादुस्, आविस् ये दो नाम स्पष्टपनेके हैं । अं, एवं परमं ये तीन नाम अंगीकारके हैं ॥ १२ ॥ समन्ततः, परितः, सर्वतः, विश्वक् ये चार नाम सब ओरके हैं । कामं यह एक नाम विना इच्छा अनुमत्तिका है । अस्तु यह एक नाम गुणोंमें दोष आरोपण करनेका और अंगीकारका है ॥ १३ ॥ ननु यह एक नाम विरोधवचनका है । कञ्चित् यह एक नाम वाञ्छितको पूँछनेका है । निःषम, दुःषमं ये दो नाम निन्दाके योग्यके हैं । यथास्वं, यथायथं ये दो नाम यथायोग्यके हैं ॥ १४ ॥ मृषा, मिथ्या ये दो नाम असत्यके हैं । यथार्थं, यथातथं ये दो नाम सत्यके हैं । एवं, तु, पुनर्, वै, वा ये पाँच नाम विश्वयके हैं ॥१५॥

प्रागतीतार्थकं नूनमवश्य निश्चये द्वयम् ।
 सवद्वर्षेऽधरे त्वर्वागामेवं स्वयमात्मना ॥ १६ ॥
 अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भून्व्यदुते जनैः ।
 सना नित्ये बहिर्वाह्ये स्मातीतेऽस्तमदर्शने ॥ १७ ॥
 अस्ति सत्त्वे रूपोक्तायु ऊं प्रश्नेऽनुनये त्वयि ।
 ई तर्के स्यादुपा रात्रेरवसाने नमो नतौ ॥ १८ ॥
 पुनरर्थेऽङ्ग निन्दाया द्रुष्टु सुष्टु प्रशंसने ।
 साय साधे प्रगे प्रातः प्रभाते निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥
 परुत्परार्थेषमोऽन्दे पूर्व पूर्वतरे यति ।
 अद्यात्राद्बचथ पूर्वोऽङ्गीत्यादी पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥

प्राक् यह एक नाम बीते हुआ है । नून, अवश्य ये दो नाम निश्चयके हे ।
 सवत् यह एक नाम वर्षका है । अर्वाक् यह एक नाम पीछेका है । आं,
 एव ये दो नाम अगीकारके हैं । स्वय यह एक नाम अपनेका है ॥ १६ ॥
 नीचैस् यह एक नाम अल्पका है । उच्चैस् यह एक नाम बड़ेका और
 ऊंचेका है । प्राय यह एक नाम बहुतका है । जनैस् यह एक नाम हो
 लेका है । सना यह एक नाम नित्यका है । बहिस् यह एक नाम बाहरका
 है । स्म यह एक नाम बीते हुआ है । अस्त यह एक नाम दर्शनके अभा
 वका है ॥ १७ ॥ अस्ति यह एक नाम सत्यका और प्रसिद्धका है । उ यह
 एक नाम कोपके वचनका है । ऊ यह एक नाम प्रश्नका है । अथि यह
 एक नाम अनुनयका है । इ यह एक नाम तर्कका है । उपा यह एक नाम
 रात्रिके अन्तका है । नमस् यह एक नाम प्रणामका है ॥ १८ ॥ अग यह
 एक नाम वारवारका है । द्रुष्टु यह एक नाम निन्दाका है । सुष्टु यह एक
 नाम प्रशंसाका है । साय यह एक नाम सांझका है । प्रगे, प्रातः ये दो नाम
 प्रभातके हैं । निकषा यह एक नाम समीपका है ॥ १९ ॥ परत् यह एक नाम
 पहले वर्षका है । पराणि यह एक नाम पहलेसे पहले वर्षका है । ऐषम यह
 एक नाम वर्तमान वर्षका है । अद्य यह एक नाम इस दिनका है । पूर्वं
 ह्यस् यह एक नाम पहले दिनका है । उत्तरेद्युस् यह एक नाम अगले दि-
 नका है । अपरेद्युस् यह एक नाम अपर दिनका है । अधरेद्युस् यह एक
 नाम नीचे दिनका है । अथेद्युम् यह एक नाम अथ दिनका है । अन्य

तथाऽधरान्यान्यतरैतरात्पूर्वेद्युरादयः ।

उभयद्युश्चोभयेद्युः परे त्वद्भि परेद्यवि ॥ २१ ॥

ह्यो गतेऽनागतेऽद्भि श्वः परश्वस्तु परेऽहनि ।

तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥

एताहिं संप्रतीदानीमधुना, सांप्रतं तथा ।

दिग्देशकाले पूर्वादी प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः ६ ।

सलिङ्गशास्त्रैः सत्रादिकृत्तद्धितसमासजैः ।

धनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥ १ ॥

तरेद्युस् यह एक नाम अन्यतर दिनका है । इतरेद्युस् यह एक नाम इतर अर्थात् अन्य दिनका है ॥ २० ॥ उभयद्युस्, उभयेद्युस् ये दो नाम दोनों दिनोंके हैं । परेद्यवि यह एक नाम परदिनका है ॥ २१ ॥ ह्यस् यह एक नाम बीते हुए दिनका है । श्वस् यह एक नाम अगले दिनका है । परश्वस् यह एक नाम परसों दिनका है । तदा, तदानीं ये दो नाम तिस कालके हैं । युगपत्, एकदा ये दो नाम एक कालके हैं । सर्वदा, सदा ये दो नाम सब कालके हैं ॥ २२ ॥ एताहिं, संप्रति, इदानीं, अधुना, सांप्रतं ये पाँच नाम इस कालके हैं । तथा यह समुच्चयार्थक है । प्राक् यह एक नाम पूर्वदिशा, पूर्वदेश, पूर्वकाल इन्होंका है । उदक् यह एक नाम उत्तर दिशा, उत्तर देश, उत्तर कालका है । प्रत्यक् यह एक नाम पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पश्चिम काल इन्होंका है । अर्वाक् यह एक नाम दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, दक्षिण काल इन्होंका है ॥ २३ ॥

इति अव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ लिंगादिसंग्रहवर्गः । लिंगशास्त्र अर्थात् पाणिनिआदिसे कहे हुए लिंगानुशासनसहित सत्र आदि प्रत्ययोंसे बने हुए चिकीर्षा आदि शब्दोंसे और कृदंतसे बने हुए श्वपाक आदि शब्दोंसे और तद्धित प्रत्ययोंसे बने हुए अण् आव्यंत शब्दोंसे और समाससे उपजे अदंतोत्तरपद् द्विगु आदिसे कहे हुए शब्दोंसे और बहुधा करके पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे यह संग्रह किया जाता है । इस संग्रहवर्गमें संकीर्णवर्गकी तरह लिंगको विचारना-

लिङ्गशेषविधिव्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

स्त्रियामीदृद्विरामैकाच्च सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥

नाम विद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीहियाम् ।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्था न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥

तत् वृन्दे येनिकट्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ।

स्त्रीभावादावनिक्तिण्वुल्लणच्ण्वुक्क्यव्युजिजङ्निशा' ॥ ४ ॥

उनमें प्रकृतिके अर्थसे जैसे—“ अर्द्धर्चा पुंसि च ” और प्रत्ययके अर्थसे यथा—“ स्त्रियां क्तिन् ” और “ प्रकृत्यर्थ्याद्यै ” इस आद्यशब्दसे क्रिया विशेषण सर्वदा नपुंसकालिग और एकवचनमें रहता है । जैसे—“ शोभन पचति ” आदि ॥ १ ॥ सन् आदि, कृत्, तद्धित, समास इन्हांसे उत्पन्न विषयवाला पूर्वोक्त शब्दोंके लिगसे जो अन्यलिग है वह लिग शेष है । उसकी विधिव्यापी अर्थात् अपने विषयकी व्यापक है । जो पहले कही गई और यहाँ कहीं गई विशेषविधियोंसे बाधित न हो तबही व्यापी हो सक्ता है । क्योंकि अपवादविषय छोड़कर उत्सर्ग सब स्थानोंमें होता है । इसलिये लिग विशेषविधिरूप उत्सर्गभूतके स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद जानने उचित है । ईकारान्त, उकारान्त, एकस्वरवाला (थ) और योनि अर्थात् भगसहित प्राणियोंका नाम ये सब (स्त्री०) हैं । जैसे—“ धी, श्री, भू, भ्रू, माता, दुहिता, धेनु ” इत्यादि शब्द जानने और दारशब्द तो विशेषवचनके बलसे (पु०) वाची है ॥ २ ॥ विद्युत् अर्थात् तद्धित, निशा अर्थात् रात्रे, वल्ली अर्थात् व्रतति, वीणा अर्थात् विपची, दिग् अर्थात् दिशा, भू अर्थात् पृथ्वी, नदी अर्थात् तरगिणी, द्वी अर्थात् रज्जा इन शब्दोंके नाम और मूल आदि अदत्त शब्दोंकरके जो समाहार अर्थवाला द्विगुसमास ये (स्त्री०) हैं । जैसे—“ पञ्चानां मूलानां समाहार पचमूली ” आदि जानने । पात्र और युग ये दोनों उत्तरपदमें हैं जिन्हांके ऐसा अदत्त द्विगु (स्त्री०) नहीं है । जैसे—“ पञ्चानां पात्राणां समाहार पञ्चपात्रम्, चतुर्णां युगानां समाहारश्चतुर्युगम् ” इत्यादि अन्यभी जानने । जैसे—“ त्रिभुवनम् ” ॥ ३ ॥ भाव आदि अर्थमें तत् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है । जैसे—“ शुष्टता, ब्राह्मणता ” ये हैं । समूहअर्थमें य, इन्, कट्यन्, च ये चार प्रत्यय (स्त्री०) हैं । जैसे—“ पाश्या, खरिनी, रयकट्या, गोत्रा ” ऐसे जानने । वैरअर्थमें और भेथुनअर्थमें जो एन् प्रत्यय है वह (स्त्री०) है ।

उणादिषु निरूरीश्च उचाबूडन्तं चलं स्थिरम् ।
 तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाल्वा ण दिक् ॥ ५ ॥
 घञो जः सा स्त्रियाऽस्यां चेदाण्डपाता हि फाल्गुनी ।
 श्यैनंपाता च मृगया तैलंपाता स्वधेति दिक् ॥ ६ ॥
 स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि ।
 लङ्गा शैफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥ ७ ॥
 सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका ।
 तिन्दुकी कणिका भङ्गिः सुरङ्गामूचिमाढयः ॥ ८ ॥

जैसे—“अश्वमहिपिका, काकोलूकिका, अत्रिभरद्वाजिका” ऐसे जानने ।
 आदिशब्दसे वीप्साअर्थमें वुक्का ग्रहण है । स्त्रियां इसका अधिकार कर
 भाव आदिमें जो अनि, क्तिन्, ण्वुल्, णच्, ण्वुच्, क्यप्, युञ्, इच्, अङ्,
 निश् ये प्रत्यय विहित हैं वे (स्त्री०) हैं । जैसे—“अकरण, कृत्ति, प्रच्छादिका,
 व्यावक्रोशी, शायिका, ब्रज्या, कारणा, आसना, वापि, आजिपचा, ग्लानि,
 क्रिया” आदि शब्द (स्त्री०) हैं ॥ ४ ॥ उणादिकोंमें नि, ऊ, ई ये तीन प्रत्यय
 (स्त्री०) होते हैं । जैसे—“श्रेणि, श्रोणि, चमू, कर्पू, तंत्री” आदि अन्यभी
 जानने । ङिप्, आप्, ऊङ् प्रत्ययांत जो जंगम और स्यावर हो वह
 (स्त्री०) हैं । जैसे—“नारी, शिवा, ब्रह्मवधू, कदली, माला, कर्कन्धू” आदि
 जानने । ब्रह्मष्टि आदि प्रहरण जो क्रीडामें हो उस अर्थमें विहित ण-प्रत्यय
 (स्त्री०) होता है । जैसे—दांडा, मौसला, मौष्टा, पाल्वा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ५ ॥ वह घञन्तवाच्य दंडपाताका आदि क्रिया फाल्गुनिका-
 याम् इस अर्थमें घञन्तसे विहित जो ज प्रत्यय है वह (स्त्री०) होता है ।
 जैसे—दांडपाता फाल्गुनी, श्यैनपाता मृगया, तैलंपाता स्वधा ऐसे अन्यभी
 जानने ॥ ६ ॥ जो अल्पपनेमें कहनेकी इच्छा हो तब मृणाली आदि
 शब्द (स्त्री०) होते हैं । जैसे—मृणाली, वंशी आदि अन्यभी जानने ।
 लंका अर्थात् राक्षसकी पुरी, शैफालिका अर्थात् शंभालू, टीका अर्थात्
 विपमपदोंका आख्यान करना, धातकी अर्थात् धववृक्ष, पंजिका अर्थात्
 निःशेष पदव्याख्या, आढकी अर्थात् अरहर ॥ ७ ॥ सिध्रका अर्थात्
 वृक्षभेद, सारिका अर्थात् मैना, हिक्का अर्थात् हिचकी, प्राचिका
 अर्थात् वनकी माखी, उल्का अर्थात् तेजका समूह, पिपीलिका अर्थात्

पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्रूणिः शाणी दृणी दस्त ।
 सातिः कन्या तथाऽऽसन्दी नामी राजसमापि च ॥ ९ ॥
 झहरी चर्चरी पारी होरा लडा च सिधमला ।
 लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥ १० ॥
 इति स्त्रीलिङ्गसग्रहः ।

पुस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।
 स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरायः ॥ ११ ॥
 करगण्डोष्ठदोर्दन्तकण्ठकेशनखस्तनाः ।
 अह्लाहान्ता. क्षेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

कीडी, तिट्टुकी अर्थात् टेंबरनी वृक्ष, कणिका अर्थात् परिमाण, भगि अर्थात् कुटिलपनेका भेद, सुरगा अर्थात् सुरग, श्रूचि अर्थात् सुई, माढि अर्थात् पत्रशिरा ॥८॥ पिच्छा अर्थात् शमलका निर्यास, वितडा अर्थात् वादभेद, काकिणी अर्थात् दमडी, श्रूणि अर्थात् श्रूणिका, शाणी अर्थात् सनका वध्वविशेष, दृणी अर्थात् कानकी जलौका, दस्त अर्थात् म्हेच्छ जाति, साति अर्थात् दान और अन्त, कथा अर्थात् वध्वविशेष और माटीकी भीत, आसदी अर्थात् आसनभेद वेतका आसन, नाभि अर्थात् सूडी, राजसभा अर्थात् राजाओंकी सभा ॥ ९ ॥ झहरी अर्थात् बाजाविशेष, चर्चरी अर्थात् हाथोंका शब्द अथवा आनदकी क्रीडा, पारी अर्थात् हाथोंके पेरकी रज्ज, होरा अर्थात् राशिका आधा माग, लडा अर्थात् गामका चिडा, सिधमला अर्थात् मखी मछली, लाक्षा अर्थात् लार, लिक्षा अर्थात् लीग, गण्डूषा अर्थात् पानी आदिसे मुखको पूगना, गृध्रसी अर्थात् वातरोगभेद, चमसी अर्थात् यज्ञपात्रभेद प्रणीतापात्र, मसी अर्थात् म्याही ॥ १० ॥ यहाँ स्त्रीलगावाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ तुपित, साध्य आदि अनुचर इन्होंसहित देवता और दैत्योंके पर्यायवाची शब्द (पु०) हैं । स्वर्गके नाक, त्रिदिव आदि पर्याय, यागके यज्ञ, मर आदि पर्याय, अद्रिके पर्वत, अद्रि आदि पर्याय, मेघके घन आदि पर्याय, अब्धिके समुद्र आदि पर्याय, द्रुके शरसो आदि पर्याय, कालके दिष्ट, समय आदि पर्याय, असिके रङ्ग आदि पर्याय, शरके बाण आदि पर्याय, अरिके शत्रु आदि पर्याय ॥ ११ ॥ करके रश्मि, पाणि आदि पर्याय,

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।

कशेरुजतुवस्तुनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ ।

पथनयसटोपान्ता गोत्रारख्याश्चरणाह्वया ॥ १४ ॥

गंडके कपोल आदि पर्याय; ओष्ठके दन्तच्छन्द आदि पर्याय; दोष्के बाहु आदि पर्याय; दन्तके रद् आदि पर्याय; कंठके गल आदि पर्याय; केशके कच आदि पर्याय; नखके कररुह आदि पर्याय; स्तनके कृच आदि पर्याय ये सब भेदोंसहित शब्द (पु०) हैं । अह्न और अह ये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) वाची हैं । जैसे—पूर्वाह्न, अपराह्न, द्युह आदि जानने । क्ष्वेड अर्थात् विपविशेषके वाची सौराष्ट्रिक आदि शब्द (पु०) हैं । रात्र है अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और आदिमें नहीं है संख्यावाचक शब्द जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे—अहोरात्र, सर्वरात्र आदि जानने और संख्या है आदिमें जिन्होंके वे पञ्चरात्र आदि शब्द (न०) हैं ॥ १२ ॥ श्रीवेष्ट आदि शब्द निर्यास (गोंद वा सार) वाचक हैं वे और अस् अन् ये प्रत्यय हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और विशेषवचनसे नहीं बाधित किये ऐसे ये सब शब्द (पु०) हैं । जैसे—श्रीवेष्ट, सरल, चन्द्रमाः कृष्णवर्त्मा आदि अन्यभी जानने । कशेरु, जतु, वस्तु इन शब्दोंको छोड़ तु और रुये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु०) हैं । जैसे—सेतु, धातु आदि अन्यभी जानने ॥ १३ ॥ क, ष, ण, भ, म, र ये छः अक्षर अन्त्यके समीप हैं जिन्होंके वे और नहीं बाधित किये अदंत शब्द (पु०) हैं । जैसे—अंक, लोक, स्फटिक आदि और ओष, प्लोष, माष, प्लक्ष आदि और पाषाण, गुण, किरण आदि और कौस्तुभ, दर्भ, शलभ आदि और होम, ग्राम, गुल्म, व्यायाम आदि और झंझर, सीकर, कर आदि ये सब शब्द (पु०) वाची हैं और शल्क वल्क आदि, वर्षा आदि, विषाण आदि, कुसुंभ आदि, पद्म आदि, अजिर आदि ये सब शब्द विशेषवचनसे बाधित हुए (पु०) नहीं हैं । प, थ, न, य, स, ट ये छः वर्ण हैं अन्त्यके समीप जिन्होंके वे शब्द नहीं बाधित किये (पु०) वाची हैं । जैसे—यूप, बाष्प, कलाप आदि और वेपथु, रोमंथ आदि और इन, धन, भानु आदि और आय, व्यय, जायु, तंतुवाय आदि और रस, हास आदि और पट आदि ये सब शब्द (पु०) हैं और कुतप आदि, वन आदि, मृगया आदि, विस आदि, किरीट आदि ये शब्द विशेषमूर्तोंसे

नाम्यकर्तरि भावे च घञजञ्जङ्गणघाथुचः ।

ल्युः कर्तरीमनिञ्ज भावे को घोः किः प्राटितोऽन्यतः ॥ १५ ॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहते ।

कान्तः सूयेन्दुपर्यायपूर्वोऽयं पूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥

वटकश्चानुवाकश्च रत्नकश्च कुडङ्गकः ।

पुखो न्यूङ्गः समुद्रश्च विटपट्टधटाः खटाः ॥ १७ ॥

बाधित हैं । गोत्र अर्थात् वंश उसमें है सज्ञा जिन्होंकी वे गोत्रके आदि पुरुष जो प्रवराध्यायमें पठित हैं और जो अन्यभी अपत्यप्रत्ययके विना गोत्रवाचित्वकरके लोकमें प्रसिद्ध हैं वे सब (पु०) है । जैसे-भरद्वाज, कश्यप, वत्स आदि जानने । वेदकी शाखाकी सज्ञावाले शब्द (पु०) है । जैसे-कठ, चहुच आदि शब्द जानने ॥ १४ ॥ सज्ञा, कारक, भाव इन्होंमें विहित किये घञ्, अच्, अप्, नङ्, ण, घ, अथुच् ये सात प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्राप्त, वेद, प्रपात, भाव, माघ, पाक, त्याग आदि, जय, घय, नय आदि, कर, गर, एष, प्लष आदि, यज्ञ, प्रश्न आदि, न्याद, रस आदि, उरश्छद आदि और वेपथु आदि ये सब शब्द (पु०) है । कर्त्तामें नन्द्यादिसे हुआ रपुप्रत्यय (पु०) है । जैसे-नन्दन, रमण, मधुसूदन आदि अन्यभी जानने । भावमें पृथु आदिसे हुआ इमनिच् प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्रथिमा, महिमा आदि अन्यभी जानने । भावमें हुआ कप्रत्यय (पु०) है । जैसे-आरूप्य, प्रस्य आदि, अन्यभी जानने । प्रादिकोंसे और अन्यसे परे जो घुसज्ञक धातु उससे विहित किया कि प्रत्यय (पु०) है । जैसे-प्रधि, निधि आदि, जलधि आदि अन्यभी जानने ॥ १५ ॥ समाहारसे अन्य द्वन्द्वसमासमें अश्ववडवो शब्द (पु०) है । सूर्य और चन्द्रमाका पर्यायपूर्वक का तशब्द और अयस् अर्थात् लोहका वाचक शब्द है पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द (पु०) है । जैसे-सूर्यकान्त, अर्ककान्त, चन्द्रकान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त, अयस्कान्त, लोहकान्त आदि अन्यभी जानने ॥ १६ ॥ वटक अर्थात् पीठीका वटा, अनुवाक अर्थात् वेदका अग्रक, रत्नक अर्थात् कमल, सुदगक अर्थात् वृक्षरताका वन, पुस्त अर्थात् बाणका अग्रवध, न्यूरा अर्थात् सामवेदमें निपातित अकार, समुद्र अर्थात् सपुत्र, विट अर्थात् धूर्त, पट्ट अर्थात् पट्टा, घट अर्थात् तुला, खट अर्थात्

कौट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।

गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्रीयबुद्बुदाः ।

कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ ॥ १९ ॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः ।

पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥ २० ॥

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः ।

कुल्मापो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥

इति पुँल्लिङ्गशेषः ।

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्चभ्रहिमोदकम् ।

शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं वलम् ॥ २२ ॥

अंधा कृवा आदि ॥ १७ ॥ कोट्ट अर्थात् किलेकी भीत, अरघट्ट अर्थात् अरहट्टका कूया, हट्ट अर्थात् दुकान, पिण्ड अर्थात् माटी आदिका गोला, गोण्ड अर्थात् नाभि, पिचंड अर्थात् पेट, गडु अर्थात् गलगंड, करंड अर्थात् बीस आदिकी बनाई हुई करंडी, लगुड अर्थात् लाठी, वरण्ड अर्थात् मुख-रोग, किण अर्थात् मांसकी ग्रंथिका भेद, घुण अर्थात् घुन ॥ १८ ॥ दृति अर्थात् चाम, सीमंत अर्थात् केशोंका वेश, हरित् अर्थात् पालाशवर्ण, रोमन्थ अर्थात् पशुओंके चर्बितका चावना, उद्रीय अर्थात् सामवेद, बुद्बुद अर्थात् जलविकार, कासमर्द अर्थात् कसौंदी, अर्बुद अर्थात् दशकरोड, कुन्द अर्थात् शिल्पभांड, फेन अर्थात् झाग, स्तूप अर्थात् बड आदि, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, पूष अर्थात् मालपुत्रा ॥ १९ ॥ आतप अर्थात् घाम, क्षत्रियका वाची नाभि, कुणप अर्थात् मुर्दा, क्षुर अर्थात् उरतरा, केदर अर्थात् व्यवहार पदार्थ, पूर अर्थात् जलका प्रवाह, क्षुरप्र अर्थात् बाण-भेद, चुक्र अर्थात् चूका शाक, गोल अर्थात् गोला, हिङ्गुल अर्थात् सिंग-रफ, पुद्गल अर्थात् आत्मा ॥ २० ॥ वेताल अर्थात् भूतोंसे अधिष्ठित किया मुर्दा, भल्ल अर्थात् रीछ, मल्ल अर्थात् बाहुओंसे युद्ध करनेवाला, पुरोडाश अर्थात् हविर्भेद, पट्टिश अर्थात् हथियारविशेष, कुल्माप अर्थात् आधा सिजाया जव, रभस अर्थात् आनन्द, कटाह अर्थात् कडाही, पतद्ग्रह अर्थात् पीकदानी ये सब शब्द (पु०) वाची हैं ॥ २१ ॥ यहाँ पुँल्लिङ्गशेष समाप्त हुआ ॥ अब (न०) का अधिकार है । वाधि-

फलहेमशुल्बलोहसुखदु खशुभाशुभम् ।

जलपुष्पाणि लवण व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥

कोट्या शतादिसख्याऽन्या वा लक्षा नियुत च तत् ।

द्व्यचकमसिसुसन्नन्त यदनान्तमकर्तारि ॥ २४ ॥

त्रान्न सलोपध शिष्टे रात्र प्राक्संख्ययान्वितम् ।

पात्राद्यदन्तिरेकाथो द्विगुर्लक्षयानुसारत ॥ २५ ॥

तसे जो अन्य है वही (न०) वाची है । ख अर्थात् आकाश, अरण्य अर्थात् वन, पर्ण अर्थात् पत्ता, श्वभ्र अर्थात् छिद्र, हिम अर्थात् जाडा, उदक अर्थात् जल, शीत अर्थात् सीला, उष्ण अर्थात् गर्म, मास अर्थात् कनाब, रुधिर अर्थात् लोह, मुख अर्थात् मुँह, अक्षि अर्थात् आँसू, द्रविण अर्थात् धन, वरु अर्थात् सेना ॥ २२ ॥ फल अर्थात् केय आदि, हेम अर्थात् सोना, शुल्ब अर्थात् ताँबा, लोह अर्थात् लोहा, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जलपुष्प अर्थात् कमलके फूल आदि, लवण अर्थात् नमक, व्यञ्जन अर्थात् दधि तक्र आदि पदार्थ, अनुलेपन अर्थात् केसर आदिका तिलक ॥ २३ ॥ कोटिशब्दके विना जो शत आदि सरयावाचक शब्द है वे (न०) है और लक्षशब्द विकल्पमे (न०) है इसलिये (स्त्री०) में लक्षा वनता है । लक्षका पर्याय नियुत है । असत, इसत, उसत और अन्नन्त ऐसे शब्द दो रूपवाले (न०) वाची है । जैसे—पयस्, सर्पिस्, वपुस्, शर्मन् अदि शब्द (न०) है । कर्त्तासे अन्यमे जो अनांत है वह (न०) है । जैसे—गमन, मरण, दान आदि अन्यभी जानने । और कर्त्तामे रमण आदि (पु०) है ॥ २४ ॥ त्रांत शब्द (न०) है । जैसे—गात्र, पात्र, वस्त्र आदि अन्यभी जानने । स और ल उपधामें है जिन्होके वे शब्द (न०) है । जैसे—विस, कुल, आदि अन्यभी (न०) जानने और जो प्रागुक्त अर्थात् पूर्वमे कहे हुआसे शेष है वेही (न०) है और जो बाधित है वे पुत्र, वृक्ष, हस, कस, शिशा, काल आदि (पु०) और (स्त्री०) है । सरया है पूर्व जिसके ऐसा रात्रशब्द (न०) है । जैसे—त्रिरात्र, पञ्चरात्र ये (न०) है । और सरयासे रहित पूर्ववाले अक्षरात्र आदि शब्द (पु०) है । पात्र आदि अदन्त शब्दोंसे एकार्थ द्विगु शिष्टप्रयोगके अनुसारसे जानना । इसपास्ते पचमूली, त्रिलोकी येभी ठीक

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः ।
 षष्ठ्याश्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ समा ॥ २६ ॥
 शालार्थापि पराराजामनुष्यार्थादराजकात् ॥
 दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥ २७ ॥
 उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।
 कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥
 भावे नणकचिद्भ्रचोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।
 अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥
 क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्त्यतोदके ।
 चोचं पिच्छं गृहस्थूर्णं तिरीटं मर्मं योजनम् ॥ ३० ॥

वने सक्ते हैं ॥२६॥ द्वन्द्वसमासका एकत्व और अव्ययीभाव (न०) होता है । जैसे-पाणिपाद, शिरोग्रीव आदि और अधिस्त्रि, उपसंग आदि । संख्यासे और अव्ययसे परे पथिन्शब्द (न०) होता है । जैसे-द्विपथ, त्रिपथ, विपथ, कापथ आदि । समासमें षष्ठीविभक्त्यन्तसे परे छायाशब्द (न०) है जो छाया बहुतोंकी हो तो । जैसे विच्छाय अर्थात् पक्षियोंकी छाया है यहाँ वि नाम पक्षियोंका है । समूहके विषयमें सभाशब्द (न०) है । जैसे-दासीसभ, स्त्रीसभ आदि हैं ॥ २६ ॥ शालानामवाली और अपिशब्दसे समूह नामवाली जो सभा है वह राजशब्दके पर्यायोंसे वर्जित और मनुष्यके पर्यायसे वर्जित शब्दके संग (न०) है । जैसे-इनसभ, प्रभुसभ, रक्षःसभ, पिशाचसभ आदि शब्द (न०) हैं ॥ २७ ॥ उपज्ञा और उपक्रमके आदिपनेको प्रकाशित करनेमें उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास (न०) है । जैसे-कोपज्ञ, क अर्थात् ब्रह्माकी उपज्ञा अर्थात् प्रजा, कोपक्रम अर्थात् लोक उशीनरोंके नामोंके मध्यमें षष्ठी विभक्तिसे परे कन्थाशब्द (न०) है । जैसे-सौशमिकन्थ आदि हैं ॥२८॥ न, ण, क, चित् इन प्रत्ययोंसे अन्य जो तव्य आदि अदन्त धातुप्रत्यय हैं वे भावमें विहित किये (न०) हैं । जैसे-भवितव्य, भाव्य, सहित, भुक्त आदि हैं । समूह, भाव, कर्म इन अर्थोंमें विहित किये अदन्त प्रत्यय (न०) वाची हैं । जैसे-भेक्ष अर्थात् भिक्षाओंका समूह, गोत्व अर्थात् गौओंका समूह, चौर्य अर्थात् चोरका कर्म आदि । पुण्य और सुदिन शब्दसे परे अहन्शब्द (न०) है । जैसे-पुण्याह सुदिनाह ये हैं ॥ २९ ॥ क्रियाओंके और

गजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।

माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरापिञ्जरम् ॥ ३१ ॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालवाह्निकम् ।

इति नपुसकसग्रहः ।

पुंनपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥

मोदकस्तण्डकष्टकः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः ।

पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥ ३३ ॥

कुष्ठं मुण्ड शीघ्रं बुस्तं क्ष्वेडित क्षेमकुट्टिमम् ।

सगम शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

अव्ययोंके विशेषण शब्द (न०) और एकवचन है । जैसे-मन्द पचति सुखद प्रात आदि अन्यभी जानने । उक्थ अर्थात् सामभेद, तोटक अर्थात् वृत्तभेद, चोच अर्थात् उपभुक्त किये फलसे बचा हुआ, पिच्छ अर्थात् मोरकी पाख, गृहस्थूण अर्थात् घरमे थाभ, तिरीट अर्थात् वेष्टन, मर्म अर्थात् सधिस्थान, योजन अर्थात् चार कोश ॥ ३० ॥ राजसूय अर्थात् यज्ञविशेष, वाजपेय अर्थात् यज्ञविशेष, गद्य अर्थात् पदसमूह, पद्य अर्थात् श्लोक, माणिक्य अर्थात् माणिकरत्न, भाष्य अर्थात् पदार्थका विवरण, सिन्दूर अर्थात् लालचूर्ण, चीर अर्थात् वस्त्र, चीवर अर्थात् मुनिवास, पिजर अर्थात् पिंजरा ॥ ३१ ॥ लोकायत अर्थात् चार्वाक शास्त्र, हरिताल अर्थात् हरताल, विदल अर्थात् वासके छिलकोंका बनाया पात्रविशेष, स्थाल अर्थात् पात्र भेद, वाह्निक अर्थात् केशर आदि ॥ यहाँ (न०) वाची शब्दोंका सग्रह समाप्त हुआ ॥ उक्तसे शेष रहे शब्द (पु० न०) हैं । अर्धर्च अर्थात् ऋचाका आधा भाग, पिण्याक अर्थात् तिलोंका कल्क, कटक अर्थात् कांश ॥ ३२ ॥ मोदक अर्थात् लड्डू, तडक अर्थात् उपताप, टक अर्थात् टांकी, शाटक अर्थात् शाटीविशेष, कर्पट अर्थात् वस्त्रभेद, अर्बुद अर्थात् सरपाभेद, पातक अर्थात् ब्रह्महत्या आदि, उद्योग अर्थात् उत्साह, चरक अर्थात् वैद्यकशास्त्र, तमाल अर्थात् वृक्षभेद, आमलक अर्थात् आवला, नड अर्थात् नरसल ॥ ३३ ॥ कुष्ठ अर्थात् कौटुरोग, मुण्ड अर्थात् शिर, शीघ्र अर्थात् मदिरा, बुस्त अर्थात् भुना हुआ मांस, क्ष्वेडित अर्थात् धीर पुरुषका किया सिद्धान्त, क्षेम अर्थात् कुशल, कुट्टिम अर्थात् भीतिका भेद, सगम

कवियं कन्दकार्पासं पारावारं युगंधरम् ।

यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूपं चमसचिक्कसौ ॥ ३५ ॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।

तन्नोक्तमिह लोकेऽपि तच्चेदस्त्यरतु शेषवत् ॥ ३६ ॥

इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः ।

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।

जातिभेदाः पुमाख्याश्च स्त्रीयोगैः सह मल्लकः ॥ ३७ ॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको ज्ञाटलिर्मनुः ।

मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८ ॥

इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहवर्गः ।

अर्थात् संयोग, शतमान अर्थात् तोलविशेष, अर्म अर्थात् नेत्ररोगका भेद, शंवल अर्थात् वर्णभेद, अव्यय अर्थात् स्वर आदि निपात, तांडव अर्थात् नृत्यभेद ॥ ३४ ॥ कविय अर्थात् लगाम, कन्द अर्थात् कमलिनीकी मूल आदि, कार्पास अर्थात् कपास, पारावार अर्थात् जलसमूह, युगंधर अर्थात् लहोदर, यूप अर्थात् यज्ञस्तम्भ, प्रग्रीव अर्थात् वृक्षका शिरः, पात्रीव अर्थात् यज्ञपात्रभेद, यूप अर्थात् मांड, चमस अर्थात् चमसा, चिक्कस अर्थात् पात्रभेद ॥ ३५ ॥ इस अर्धर्चादि वर्गमें जो घृत आदि शब्द (पु०) वाची पाणिनि आदिने कहे हैं वह रीति वैदिक है अर्थात् वेदभे प्रसिद्ध है । इस कारण यहां नहीं कहे । वे लोकमेंभी हैं तो शिष्टप्रयोगसे जानना उचित है ॥ ३६ ॥ यहा (पु०न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ अपत्यप्रत्यान्त शब्द (स्त्री०पु०) हैं । जैसे-औपगव, औपगवी । दो चार छः पेंगोवाले प्राणी और सर्पवाची ऐसे जातिभेद (स्त्री०पु०) हैं । जैसे-मानुष मानुषी, ब्राह्मण ब्राह्मणी, मृग मृगी, भृंग भृगी, उरग उरगी, नाग नागी । स्त्रियोंके साथ पुरुषवाचक शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-इन्द्र इन्द्राणी, मातुल मातुली । मल्लक आदि शब्द (स्त्री० पु०) हैं । जैसे-मल्लक मल्लिका ॥ ३७ ॥ ऊर्मि अर्थात् तरंग, वराटक अर्थात् कौडी, स्वाति अर्थात् नक्षत्र, वर्णक अर्थात् चन्दन, ज्ञाटलि अर्थात् मोखावृक्ष, मनु अर्थात् मंत्र, मूषा अर्थात् घडिया, सृपाटी अर्थात् परिमाणभेद, कर्कन्धू अर्थात् बडवेरी, यष्टि अर्थात् लाठी, शाटी अर्थात् धोती, कटी अर्थात् कड, कुटी अर्थात्

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः प्यञ् क्वचिच्च वुञ् ।
 औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्य वुञ् प्रागुदाहतः ॥ ३९ ॥
 पष्ठ्यन्तप्राक्पदा. सेनात्रायाशालामुगानिशा ।
 स्याद्वा नृमेन श्वनिश गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥
 आवन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुसि नश्च लृप् ।
 त्रिखट्व च त्रिखट्ठी च त्रितक्ष च त्रितक्षपि ॥ ४१ ॥
 इति स्त्रीनपुंसकशेषः ।
 त्रिपु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदादिमौ ।
 इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ।
 परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥
 अर्थान्ताः प्राचलमाप्तापन्नपूर्वा परोपगाः ।
 तद्धितार्था द्विगुः सरूपासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

घरका कोठा ये सब शब्द (स्त्री० पु०) हैं ॥ ३८ ॥ यहाँ (स्त्री० पु०)
 वाची शब्दोंका संग्रहवर्ग समाप्त हुआ ॥ भावमें और कर्ममें वर्तमान
 प्यञ् प्रत्यय और वुञ् प्रत्यय नहीं २ (स्त्री० पु०) है । जैसे-औचित्य
 औचिती, मै य मैत्री, मैथुनक मैथुनिना ॥ ३९ ॥ तत्पुरुष समासमें पठ्ठी
 विभक्त्यन पठ् हे पूर्व जिहोंके ऐसे सेना, त्राया, शाला, मुग, निशा ये
 शब्द (स्त्री०) आर (न०) हैं । जैसे-नृसेन नृमेना, कुडयच्छाय कुडय
 च्छाया, गोशाल गोशाला, यवसुर यवसुरा, श्वनिश श्वनिशा आदि
 अन्यमी जानने ॥ ४० ॥ आवत्त शब्द और अवन्त शब्द हैं उत्तरपदमें
 जिसने ऐसा द्विगु समास (स्त्री० न०) है । जैसे-त्रिखट्व त्रिखट्ठी, त्रितक्ष
 त्रितक्षी । तक्षत्रशब्दने अन्तका नकार लुप्त हो रहा है ॥ ४१ ॥ यहाँ (स्त्री०
 न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ पात्र, पुट, वाट, पेठ, कुवल,
 दादिम ये शब्द (त्रि०) हैं । जैसे-पात्र पात्री पात्रम्, पुट पुटी पुटम्,
 वाट वाटी वाटम्, पेठ पेठी पेठम्, कुवल कुवली कुवलम्, दादिम दादिमी
 दादिमम् ॥ यहाँ (त्रि०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उभय
 पदप्रधान समासमें जो इनेतर द्वन्द्वसमासमें अग्रिम पदका लिंग होता
 है । जैसे-कुम्भमयूया, मयूरीकुम्भगी, धार्यार्थ, नपभाति आदि अग्रमी
 जानने ॥ ४२ ॥ अर्थान्त अर्थात् अर्थ शब्द है अन्तमें जिनके और आदि

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम् ।

गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अलं, प्राप्त, आपन्न ये हैं पूर्वमें जिन्होंने के वे शब्द विशेष्यके लिंगको प्राप्त होते हैं । जैसे—‘द्विजार्थः सूपः’ अर्थात् द्विजके लिये दाल है, ‘द्विजार्था यवागूः’ अर्थात् द्विजके लिये यवागू है, ‘द्विजार्थं पयः’ अर्थात् द्विजके लिये दूध है । ‘अतिमालो हारः’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह हार है, ‘अतिमाला इयम्’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाली यह माला है, ‘अतिमालमिदम्’ अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘अलंकुमारिरयम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह पुरुष है, ‘अलंकुमारी इयम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाली यह स्त्री है, ‘अलंकुमारि इदम्’ अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है । ‘प्राप्तजीविको द्विजः’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘प्राप्तजीविका स्त्री’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘प्राप्तजीविकं कुलम्’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । ‘आपन्नजीविको द्विजः’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला द्विज है, ‘आपन्नजीविका स्त्री’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ‘आपन्नजीविकं कुलम्’ अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला कुल है । तद्विदित है अर्थ जिसका ऐसा द्विगु समास वाच्य-लिंगी है । जैसे—‘पञ्चकपालः पुरोडाशः’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत किया पुरोडाश है, ‘पञ्चकपालं हविः’ अर्थात् पांच कपालोंमें संस्कृत किया घृत है । संख्यावाचिशब्द, सर्वनामसंज्ञक शब्द, संख्यांत शब्द ये सब विशेष्यके लिंगके समान होते हैं । जैसे—‘एकः पुमान्’ अर्थात् एक पुरुष है, ‘एकं कुलम्’ एक कुल है । ‘द्वौ पुमांसौ’ अर्थात् दो पुरुष हैं, ‘द्वे स्त्रियौ’ अर्थात् दो स्त्री हैं । ‘सर्वो देशः’ अर्थात् संपूर्ण देश है, ‘सर्वा नदी’ अर्थात् संपूर्ण नदी है, ‘सर्वं जलम्’ अर्थात् संपूर्ण पानी है । ‘परमसर्वः पुमान्’ अर्थात् परमसर्व पुरुष है, ‘परमसर्वा स्त्री’ अर्थात् परमसर्वरूप स्त्री है, ‘परमसर्वं कुलम्’ अर्थात् परमसर्वरूप कुल है ॥४३॥ दिशशब्दसे वर्जित नामवालोंका बहुव्रीहि अन्यके लिंगके समान होता है । जैसे—‘वृद्धभार्य्यः’ अर्थात् बूढ़ी है भार्या जिसकी वह पुरुष है । गुणके योग-करके, द्रव्यके योगकरके और क्रियाके योगकरके जो उपाधि विशेषण है उसकरके धर्ममें प्रवृत्त हुए धर्मलिंगभाज होते हैं । जैसे—‘गंधवती पृथिवी’

कृतः कर्तर्यसज्ञायां कृत्या कर्तारि कर्मणि ।

अणाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥ ४५ ॥

पट्सज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिडव्ययम् ।

पर विरोधे शेष तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

अर्थात् गधवाली पृथिवी है, 'गधवानश्मा' अर्थात् गधवाला पर्वत है, 'गधवत् कुसुमम्' अर्थात् गधवाला फूल है । 'दडिनी स्त्री' अर्थात् दडवाली स्त्री है । 'पाचिका स्त्री' अर्थात् पाक करनेवाली स्त्री है ॥ ४४ ॥ कर्त्तामें और असज्ञामे कृत्प्रत्यय विशेष्यके लिंगको भजते है । जैसे—'कर्त्ता पुमान्' अर्थात् करनेवाला पुरुष है, 'कर्त्री स्त्री' अर्थात् करनेवाली स्त्री है, 'कर्तृ कुलम्' अर्थात् करनेवाला कुल है । कर्ममें और कर्त्तामें वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय परके लिंगके समान होते है । जैसे—'कर्त्तव्या भक्ति' अर्थात् करने योग्य भक्ति है, 'कर्त्तव्यो धर्मस्त्वया' अर्थात् तुझको धर्म करना योग्य है । 'वास्तव्योऽयम्' अर्थात् यह वसनेके योग्य है, 'वास्तव्या सा' अर्थात् वह स्त्री वसनेके योग्य है, 'वास्तव्य तत्' अर्थात् वह कुल वसनेके योग्य है । "तेन रक्तम्" आदि अर्थमें अण् आदि तद्धितप्रत्ययात् अनेकार्यविशेषणभूत विशेष्यके लिंगके समान होते है । जैसे—'कौसुमी शायी' अर्थात् कुसुभासे रगी हुई धोती है, 'कौसुम पट' अर्थात् कुसुभासे रगा हुआ वस्त्र है, 'कौसुम वास' अर्थात् कुसुभासे रगा हुआ वासस् अर्थात् वस्त्र है ॥ ४५ ॥ पट्सज्ञक अर्थात् पान्त और नांत सख्यावाले शब्द कतिशब्द, युष्मदशब्द, अस्मदशब्द, तिङ्प्रत्यय, अव्यय ये सब तीनों लिंगोंमें समान है । जैसे—'पडिमे' अर्थात् ये छ पुरुष है, 'पटिमा' अर्थात् ये छ स्त्री हैं, 'पडिमानि' अर्थात् ये छ कुल है । ऐसे अन्यभी जानने । 'कति पुरुषा' कितने पुरुष है, 'कति स्त्रिय' अर्थात् कितनी स्त्रियां है, 'कति कुलानि' अर्थात् कितने कुल है । 'त्वं पुमान्' अर्थात् तू पुरुष है, 'त्वं स्त्री' अर्थात् तू स्त्री है, 'त्वं कुलम्' अर्थात् तू कुल है । 'अह स्त्री' अर्थात् मैं स्त्री हूँ, 'अह पुरुष' अर्थात् मैं पुरुष हूँ, 'अह कुलम्' अर्थात् मैं कुल हूँ । 'स्थाली भवति' अर्थात् स्थाली है, 'घटो भवति' अर्थात् घट है, 'पात्रं भवति' अर्थात् पात्र है । 'उच्चै पुरुष' अर्थात् ऊचा पुरुष है, 'उच्चै स्त्री' ।

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।

सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इति श्रीअमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने

तृतीयं काण्डं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अर्थात् ऊंची स्त्री है, ' उच्चैः कुलम् ' अर्थात् ऊंचा कुल है । विप्रतिपेधमें परका लिंग होता है । जैसे—' मानुषीयम् ' अर्थात् यह मनुष्यकी स्त्री है, ' मानुषोऽयम् ' अर्थात् यह मनुष्य है । यहां नहीं कहा हुआ शिष्ट अर्थात् महाकवि भाष्यकार आदिके प्रयोगोंसे जानना उचित है ॥ ४६ ॥

इति लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

इस प्रकार अमरसिंहके किये नामलिङ्गानुशासनमें अंगोंसहित सामान्य कांड तीसरा निरूपित किया ॥ १ ॥

इति रौहृतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासिगौडवंशावतंसविविधशास्त्रपरमपंडित-श्रीशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रराजवैद्यविरचितायामागरानगरवास्तव्य-ज्योतिर्विद्वालमुकुन्दभट्टसूरिसूनु-पंडितरामेश्वरभट्टेन संशोधितायां अमरकोशार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां तृतीयकांडः समाप्तः ॥ ३ ॥



सभाषामरकोशस्य

अकारादिवर्णानुक्रमेण

शब्दानुक्रमणिका

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
	अ		अक्षान्ति	७	२४	अग्निपय	१४	६६
अ	२४	११	अक्षि	{ १६	९३	अग्निमुखी	१४	४२
अश	१९	८९		{ २५	२२	अग्निशिख	१६	१२४
अशु	३	३३	अक्षिक्रूटक	१८	३८	अग्निशिखा	{ १४	११८
अशुक	१६	११५	अक्षिगत	२१	४५		{ १४	१३६
अशुमती	१४	११५	अक्षीय	{ १४	३१	अभ्युत्पात	{ ४	१०
अशुमरफला	१४	११३		{ १९	४१		{ २३	५८
अश	१६	७८	अक्षोट	१४	२९	अम	{ २१	५८
असल	१६	४४	अक्षौहिणी	१८	८१		{ २३	१८३
अहति	१७	३०	अखट	२१	६५	अग्रज	१६	४३
अहस्	४	२३	अखात	१०	२७	अग्रजान्	१७	४
अकरणि	२२	३९	अखिल	२१	६५	अमत सा	१८	७२
अकूपार	८	१	अग	२३	१९	अमतस्	{ २३	२४७
अकृष्णकर्मन्	२१	४६	अगद	१६	५०		{ २४	७
	{ १४	५८	अगदकार	१६	५७	अमर्मास	१६	६४
अक्ष	{ १९	४३	अगम	१४	५	अमिय	{ १६	४३
	{ १९	८६	अगत्य	३	२०		{ २१	५८
	{ २०	४५	अगाध	१०	१५	अमीय	२१	५८
	{ २३	२२२	अगार	१२	५	अमेदिषिषु	१६	२३
अक्षत्	१९	४७	अगद	१६	१२६	अमेतर	१८	७२
अक्षदर्शक	१८	५	अगुद	१६	१२६	अग्य	२१	५८
अक्षदेविन्	२०	४४	अगुर्गोशशापा	१४	६२	अघ	{ ४	२३
अक्षधूर्त	२०	४४	अमायी	१७	२१		{ २३	२७
अक्षर	२३	१८२	अमि	१	५६	अघमर्षण	१७	४८
अक्षरचुम्ब	१८	१५	अमिर्कण	१	६०	अघ्या	१९	६७
अक्षरचण	१८	१५	अमिचित	१७	१२	अंक	{ ३	१७
अक्षरसरपान	१८	१६	अमिञ्चाला	१४	१०४		{ २३	४
अक्षवती	२०	४५	अमिञ्चय	१७	२०	अशु	१४	४
अक्षामकीलक	१८	५६	अमिभू	१	४०	अशु	१८	४१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अंकोट ...	१४	२९	अच्छभाह....	१५	४	अभालि	१६	८५
अंशय	७	५	अच्युत	१	१९	अअसा....	{ २४ २	
अंग....	{ १६	७०	अच्युतायज.	१	२८	अटनी	१८	८४
	{ २४	७	अज....	{ १९	७६	अटग्ग	१४	१०३
अंगण ...	१०	१३	अजगयिका.	१४	१३१	अटगी ...	१४	१
अंगद	१६	१०९	अजगय	८	५	अटा . . .	११	३६
अंगना....	{ ३	५	अजगय	१	२७	अट्ट	{ १२	१२
	{ १६	३	अजन्य	१८	१०९		{ २३	१३१
अंगविक्षेप.	७	१६	अजमोदा....	१४	१४५	अट्या	१७	३६
अंगसंस्कार.	१६	१२१	अजशृंगी....	१४	११९	अणक	२१	५४
अंगहार	७	१६	अजस्र	१	६९	अणव्य	१९	७
अंगार	१९	३०	अजहा ...	१४	८६	अणि	१८	५६
अंगारक....	३	२५	अजा	१९	७६	अणिमन्	१	३८
अंगारधानिका.	१९	२९	अजाजी	१९	३६	अणीयसू....	२१	६२
अंगारवह्वरी.	१४	४८	अजाजीव.	२०	११	अणु	{ १९	२०
अंगारवह्वी.	१४	९०	अजित	२३	६२		{ २१	६२
अंगारशकटी.	१९	२९	अजिन	१७	४७	अण्ड	१५	३७
अंगीकार	५	५	अजिनपत्रा.	१५	२६	अण्डकोश....	१६	७६
अंगीकृत ...	२१	१०८	अजिनयोनि.	१५	८	अण्डज.	{ १०	१७
अगुली	१६	८२	अजिर....	{ १२	१३		{ १५	३६
अगुलीमान.	१९	८५	अजिर....	{ २३	१८१	{ २१	५१	
अगुलीमुद्रा.	१६	१०८	अजिह्व	२१	७२	अतट ...	१३	४
अगुलीयक.	१६	१०७	अजिह्वग...	१८	८६	अतर्कित....	२४	७
अंगुष्ठ	१६	८२	अज्जुका....	७	११	अतलस्पर्श.	१०	१५
अंग्रि	१६	७१	अज्जटा ...	१४	१२७	अतसी ...	१९	२०
अंग्रिनामक.	१४	१२	अज्ञ	{ २१	३८	अति	{ २३	२४२
अंग्रिवह्विका.	१४	९२	अज्ञ	{ २१	४८		{ २४	२
अचंडी	१९	७०	अज्ञान	५	७		{ २४	५
अचल	१३	१	अश्रित	२१	९८	अतिक्रम.	{ २२	३३
अचला	११	२	अशन	३	३	{ २३	१५०	
अचिक्रण....	२३	२२६	अशनकेशी.	१४	१३०	अतिचरा....	१४	१४६
अच्छ	१०	१४	अशनावती.	३	५	अतिच्छत्र.	१४	१६७
						अतिच्छत्रा.	१४	१५२

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
अतिजप	१८	७३	अत्यय	{ १८	११६	अधिष्पिका	१३	७		
अतिथि	१७	३४		{ २३	१५०	अधिप	२१	११		
अतिनिर्हारिन्	५	१०	अत्यर्थ	१	७०	अधिभू	२१	११		
अतिनु	१०	१४	अत्यल्प	२१	६२	अधिगहिणी	१२	१८		
अतिपयिन्	११	१६	अत्याहित	२३	७७	अधिवासन	१६	१३४		
अतिपात	{	१७	३७	अति	३	२७	अधिविद्या	१६	७	
		२२	३३	अथ	२३	२४८	अधिभ्रमणी	१९	२९	
अतिप्रसिद्ध	२३	२१८	अथो	२३	२४८	अधिष्ठान	२३	१२६		
अतिमान	१	७०	अदभ्र	२१	६३	अधीन	२१	१६		
अतिमुक्त	१४	७२	अदर्शन	२२	२२	अधीर	२१	२६		
अतिमुक्तक	१४	२६	अदितिनदन	१	८	अधीश्वर	१८	२		
अतिरिक्त	२१	७५	अदृश	१६	६१	अधुना	२४	२३		
अतिवचन	२१	३५	अदृष्ट	१८	३०	अधृष्ट	२१	२६		
अतिवाद	६	१४	अदृष्टि	७	३७	अधोशुक्र	१६	११७		
अतिविषा	१४	९९	अद्वा	२४	१२	अधोक्षज	१	२१		
अतिवेष्ट	१	७०	अद्भुत	{	७	१७	अधोभुवन	८	१	
अतिशक्तिता	१८	१०२		{	७	१९	अधोमुख	२१	३३	
अतिशय	{	१	६९	अग्र	२१	२०	अध्यक्ष	{	१८	६
		२२	११	अद्य	२४	२०			२३	२६
अतिशस्त	२३	४१	अदि	{	१३	१	अध्ययसाय	७	२०	
अतिशोभन	२१	५८		{	२३	१६३	अध्यारम	२०	१४४	
असिस्मृत	२३	८१	अद्रपवादिन्	१	१४	अध्यापक	१७	७		
अतिसर्जन	२२	२८	अधम	{	२१	५४	अध्याहार	५	३	
अतिस्मरिन्	१६	५९		{	२३	१४४	अध्युटा	१६	७	
अतिस्मरम	१७	३३	अधमर्ग	१९	५	अध्येषणा	१७	३२		
अतीक्षण	२३	९४	अधर	{	१६	९०	अधीन	१८	१७	
अतीत	२४	१७		{	२३	१८९	अधीन्	११	१५	
अतीतनौक	१०	१४	अधोद्युम्	२४	२१	अधीनीन	१८	१७		
अतीदिय	२१	७९	अधिगदि	२१	११	अधीय	१८	१७		
अतीव	२४	२	अधिकीग	१८	६३	अधीर	१७	१३		
अतिषा	७	१५	अधिकार	१८	३१	अधीयु	१७	१७		
अत्यंतपेपन	२१	३२	अहित	१८	६	अधीर	६	२१		
अत्यन्तीन	१८	७६	अधिभिम	२१	४२	अधीन	१	२६		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः		
अनच्छ	१०	१४	अनीक.	{ १८ ७८	अनुभाव.	{ ७ २१			
अनद्ध	१९	६०	अनीकस्य.	१८ ६	अनुमति	४ ८		
अनत.	{	२	१	अनीकिनी	{ १८ ७८	अनुयोग	...	६ १०		
		८	४			अनुगोध	१८ १२		
		०३	८१	अनु	२३ २४९	अनुलाप	...	६ १६	
अनंता.	{	११	२	अनुक	२१ २३	अनुलेपन	...	२५ २३	
		२३	१२	अनुकंपा	७ १८	अनुवर्तन.	१८ १२		
		२३	११२	अनुकर्ष	१८ ५७	अनुवाक	...	२५ १७	
		२३	१३६	अनुकल्प	१७ ४०	अनुशय	२३ १४८	
		२३	१५८	अनुकामीन	१८ ७६	अनुष्ण	२० १८		
अनन्यज	१	२७	अनुकार	२२ १७	अनुहार	२२ १७	
अनन्यवृत्ति.	२१	७९	अनुक्रम	१७ ३७	अनुक	२३ १३		
अनय	२३	१४९	अनुक्रोश	७ १८	अनुचान	...	१७ १०	
अनर्थक	६	२०	अनुग	२१ ७८	अनुाक	२१ ६५	
अनल	१	५७	अनुग्रह	२२ १३	अनूप	११ १०	
अनवधानता.	७	३०	अनुचर	१८ ७१	अनुष	...	३ ३२		
अनवरत	१	६९	अनुज	१६ ४३	अचुजु	२१ ४६	
अनवस्कार	२१	५६	अनुजीविन्.	१८ ९	अनुतर्पग.	२० ४३	अचृत.	{ ६ २१	
अनवधार्य	२१	५७	अनुतर्पग.	२० ४३	अनेकप	१८ ३४		
अनस्	...	१८	५२	अनुताप	{ ७ २५	अनेहस्	४ १		
अनागतार्तवा.	१६	८	१५७	अनुत्तम	२१ ५७	अनोकह	...	१४ ५	
अनातप	२३	१५७	अनुत्तर	२३ १९०	अंत....	{ १८ ११६		
अनादर	७	२२	अनुनय	२४ १८	अंत.पुर	१२ ११	
अनामय	...	१६	५०	अनुपद	...	२१ ७८	अंतक	...	१ ६२	
अनामिका.	१६	८२	अनुपदीना.	२० ३१	अनुपमा	३ ४	अंतर	...	२३ १८७
अनायासकृत.	२१	९४	अनुपमा	३ ४	अंतरा	२४ १०		
अनारत	१	६९	अनुप्लव	१८ ७१	अंतराभवसत्त्व	२३ १३२		
अनार्यतित्त.	१४	१४३	अनुबंध	...	२३ ९८	अंतराय	२२ १९		
अनाहत	१६	११२	अनुर्वाध	१६ १२२	अंतराल	३ ६	
अनिमिष.	२३	२१९	अनुभव	२२ २७	अंतरिक्ष	२ १		
अनिषद्ध	...	१	२८							
अनिल	{ १ १०								
		{ १ ६५								
अनिश	१	६९							

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तरीप	१०	८	अन्वेषुस्	२४	२१	अपराजिता	{ १४	१०४
तरीय	१६	११७	अन्वक्	२१	७८		{ १४	१४१
तरे	२४	१०	अ-वक्ष्	२१	७८	अपराद्धृषत्क	१८	६८
तरेण	{ २८	३	अन्वय	१७	१	अपराध	१८	२६
	{ २४	१०	अन्ववाय	१७	१	अपराह	४	३
तर्गत	२१	८६	अन्वाहार्य	१७	३१	अपरोक्षुस्	२४	२०
तथा	३	१२	अन्विष्ट	२१	१०५	अपर्णा	१	३९
तथि	३	१२	अन्वेषणा	१७	३२	अपलाप	६	१७
तद्गार	१२	१४	अन्वेषित	२१	१०५	अपवर्ग	५	७
तर्मनस्	२१	८	अप् (आप)	१०	३	अपवर्जन	१७	३०
तर्वशनी	१६	२२	अपकारगी	६	१४	अपवाद	{ ६	१३
तर्वाणी	२१	६	अपक्रम	१८	१११		{ २३	८९
तवशिक	१८	८	अपघन	१६	७०	अपवारण	{ ३	१२
तावसायिन्	२०	१०	अपचय	२२	१६		{ २३	१२५
सिक	२१	६७	अपचायित	२१	१०१	अपशब्द	६	२
सिकतम	२१	६८	अपचित	२१	१०१	अपष्टु	२१	८४
सिका	१९	२९	अपचिति	{ १७	२५	अपसद	२०	१६
	{ २०	२०		{ २३	६७	अपसर्प	१८	१३
तेवासिन्	{ १७	११	अपट्ट	१६	५८	अपसन्ध	२१	८४
	{ २०	२०	अपरय	१६	२८	अपस्कार	१८	५५
त्य	२१	८१	अपघ्नपा	७	२३	अपध्यात	२१	१९
स	१६	६६	अपघ्नपिप्पु	२१	२८	अपहार	२०	१६
दुक्त	१८	४१	अपय	११	१७	अप्रापति	१०	२
घ	{ १६	६१	अपयिन्	११	१७	अप्राग	{ १६	९४
	{ २३	१०३	अपदात्तर	२१	६८		{ २३	२१
घकारिपु	१	३६	अपदिश	३	५	अपान	{ १	६७
घकार	८	३	अपदेश	{ ७	३३		{ १६	७३
घतमस	८	३	अपध्वस्त	२१	३९	अपामार्ग	१४	८८
घसु	१९	४८	अपध्वस्त	२१	३९	अपावृत्त	२१	१५
घु	१०	२६	अपध्वस्त	२१	३९	अपासन	१८	११३
घ्र	{ १९	४८	अपध्वस्त	२१	३९	अपि	२३	२५०
	{ २१	१११	अपध्वस्त	२१	३९	अपिघान	३	१३
घ्र	२१	८२	अपध्वस्त	२१	३९	अपिनद्ध	१८	६५
घ्रतर	२१	८२	अपध्वस्त	२१	३९			
घ्रतरोषुस्	२४	२१	अपध्वस्त	२१	३९			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अपूप	१९	४८	अभिग्रहण.	२२	१७	अभिशास्त.	२१	४३
अपोगण्ड.	१६	४६	अभिधातिन्.	१८	११	अभिशास्ति.	१७	३२
अप्पति	१	६४	अभिचर	१८	७१	अभिशाप....	६	११
अप्पित्त	१	५९	अभिचार.	२२	१९	अभिषंग	२३	२८
अप्रकांड....	१४	९	अभिजन. {	१७	१	अभिषव. {	१७	४७
अप्रगुण	२१	७२	अभिजात.	२३	१०८	अभिषव. {	२०	४२
अप्रत्यक्ष ...	२१	७९	अभिज्ञात.	२३	८२	अभिषेणन.	१८	९५
अप्रधान ...	२१	६०	अभिज्ञा	२१	४	अभिष्टुत	२१	११०
अप्रहत	११	५	अभितस् {	२१	६७	अभिसंपात	१८	१०५
अप्राश्य	२१	६०	अभितस् {	२३	२५६	अभिपारिका.	१६	१०
अप्सरस्. {	१	११	अभिधान....	१२	८	अभिहार. {	२२	१७
अप्सरस्. {	१	५५	अभिध्या ...	७	२४	अभिहार. {	२३	१६८
अफल	१४	७	अभिनय....	७	१६	अभिहित.	११	१०७
अवद्ध	६	२०	अभिनव	२१	७७	अभीक	२१	२४
अवद्धमुख.	२१	३६	अभिनवोद्भिद्.	१४	४	अभीक्षणम्. {	२४	१
अवला	१६	२	अभिनिर्मुक्त.	१७	५५	अभीक्षणम्. {	२४	११
अवाध	२१	८३	अभिनिर्याण.	१८	९५	अभीप्सित {	२१	५३
अब्ज.... {	३	१४	अभिनीत. {	१८	२४	अभीप्सित {	२१	११२
अब्ज.... {	२३	३२	अभिनीत. {	२३	८१	अभीरु	१४	१००
अब्जयोनि.	१	१७	अभिपन्न	२३	१२८	अभीरुपत्री.	१४	१०१
अब्द.... {	४	२०	अभिप्राय.	२२	२०	अभीषग	२२	६
अब्द.... {	२३	८८	अभिभूत.	२१	४०	अभीषु	२३	२२०
अब्द.... {	२३	१४६	अभिभर.	२६	२१४	अभीष्ट	२१	५३
अब्धि.... {	१०	१	अभिमान. {	७	२२	अभ्यग्र	२१	६७
अब्धि.... {	२३	१०१	अभिमान. {	२३	१११	अभ्यंतर	३	६
अब्धिकफ.	१९	१०५	अभियोग....	२२	१३	अभ्यमित.	१६	५८
अब्धक्षण.	७	१४	अभिरूप	२३	१३१	अभ्यमित्रीण.	१८	७५
अभय	१४	१६४	अभिलाव.	२२	२४	अभ्यमित्रीय.	१८	७५
अभया	१४	५९	अभिलाष	७	२८	अभ्यमित्र्य.	१८	७५
अभाषण....	१७	३६	अभिलाषुक	२१	२२	अभ्यर्ण	२१	६७
अभिक ...	२१	२४	अभिवादक.	२१	२८	अभ्यर्हित.	२३	८३
अभिक्रम.	१८	९६	अभिवादन.	१७	४१	अभ्यवकर्षण.	२२	१०
अभिहया....	२३	१५६	अभिव्याप्ति.	२२	६	अभ्यवस्कंदन	१८	११०
अभिग्रह	२२	१३						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अभयवहत्	२१	१११	अमात्रस्या	४	८	अभ्यय	१०	५
अभ्याख्यान	६	१०	अमात्रास्या	४	८	अम्ल	५	९
अभ्यागम	१८	१०५	अमित्र	१८	११	अम्ललोपिका	१४	१४०
अभ्यागारिक	२१	१०	अमुत्र	२४	८	अम्लवेतस	१४	१४१
अभ्यादान			अमृणाल	१८	१	अम्लान	१८	७३
अभ्यात	१	५८		१	१	अम्लिका	१४	४०
अभ्यामर्द	१८	१०				अय	४	२७
अभ्याश	२१	६७	अमृत	{	१० ३	अयन	{	४ १३
अभ्यासादन	१८	११०			१७ २८			११ १५
अभ्युत्थान	१७	३४			१९ ३	अयस्	१९	९८
अभ्युदित	१७	५५			२३ ७६	अय प्रतिमा	२०	३५
अभ्युपगम	५	५	अमृता	{	१४ ५९	अयाचित	१९	३
अभ्युपपत्ति	२२	१३			१४ ८०	अपि	२४	१८
अभ्युष	१९	४७	अमृताघसू	१	८	अयोम	१९	२५
अभ्र	{	२ १	अमोघा	{	१४ ५४	अयोघन	२३	३७
		३ ६			१४ १०६	अर	१	६८
अभ्रक	१९	१००	अबर	{	२ १	अरघट्ट	२५	१८
अभ्रपुष्प	१४	३०			२३ १८१	अरणि	१७	१९
अभ्रसात्तग	१	४९	अबरीष	१९	३०	अरण्य	{	१४ १
अभ्रमु	३	४	अघठ	२०	२			२५ २२
अभ्रमुवल्लभ	१	४९	अघटा	{	१४ ७१	अरण्यानी	१४	१
अभि	१०	१३			१४ ८४	अरतिन	१६	८६
अभ्रिय	३	८	अघा	७	१४	अरर	१२	१७
अभ्रेष	१८	२४	अघिका	१	३९	अरल	१४	५७
अमत्र	१९	३३	अघु	१०	४	अररिंद	१०	३९
अमर	१	७	अघुक्रुणा	३	११	अराति	१८	११
अमरावती	१	४८	अघुज	१४	६१	अराल	२१	७१
अमरर्ष	१	८	अघुभृत्	३	७	अरि	१८	१०
अमरर्ष	७	२६	अघुवेतस	१४	३०	अरित्र	१०	१३
अमषण	२१	३२	अघुवरण	१०	११	अरिभेद	१४	५०
अमा	२३	२५१	अघुटत	६	२०			१२ ८
अमास	१९	४४	अमसू	१०	४	अरिष्ट	{	१४ ३१
अमात्य	१८	४	अभेदह	१०	४१			१४ ६२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
अविलंबित	}	१ ६८	अश्व	१८ ४३	असूया	७ २४
		२१ ८३	अश्वकर्णक.	१४ ४४	असृग्धरा	... १६ ६२		
अविस्पष्ट....	६ २१	अश्वत्थ १४ २१	असृज १६ ६४			
अवीचि ...	९ १	अश्वयुग् ३ २१	असौम्यस्वर.	२१ ३७			
अवीरा	१६ ११	अश्वघडव....	२५ १६	अस्त....	}	१३ २		
अवेक्षा	२२ २८	अश्वी १८ ४६	२१ ८७				
अव्यक्त ...	२३ ६२	अश्वीभरण.	२३ ४३	अस्तम् २४ १७			
अव्यक्तराग.	५ १५	अश्वारोह....	१८ ६०	अस्ति २४ १८			
अव्यडा	१४ ८६	अश्विन् १ ५४	अस्तु २४ १३			
अव्यथा.	}	१४ ५९	अश्विनी	... ३ २१	अस्त्र १८ ८२		
		१८ १४६	अश्विनीसुत.	१ ५४	अस्थि १६ ६८		
अव्यय	२५ ३४	अश्वीय १८ ४८	अस्थिर २१ ४३			
अव्यवहित.	२१ ६८	अपडक्षीण.	१८ २२	अस्फुटवाच.	२१ ३७			
अज्ञानाया....	१९ ५४	अष्टापद.	}	१९ ९५	}	३ ३३		
अज्ञानायिता.	२१ २०						२० ४६	अस्त्र....
अज्ञानि १ ५०	अष्टीवत्	... १६ ७२	१६ ९३	}	१६४		
अज्ञित २१ १११	असकृत् २४ १	२३ १६४				
अज्ञिश्ची १६ ११	असती १६ १०	अस्त्रप १ ६२			
अज्ञाभ २५ २३	असतीसुत.	१३ २६	अस्तु १६ ९३			
अज्ञोष २१ ६५	असन	... १४ ४४	अस्वच्छंद.	२१ १६			
अज्ञोक १४ ६४	असमीक्ष्यकारिन्.	२१ १७	अस्वप्न १ ८			
अज्ञोक्तो ह्यणी	१४ ८५	असार २१ ५६	अस्वर	... २१ ३७			
अज्ञमर्ग १९ ९२	असि १८ ७९	अस्वाध्याय.	१७ ५४			
अज्ञमज	... १९ १०४	असिकी १६ १८	अहंयु २१ ५०			
अज्ञमन्	... १३ ४	असित ५ १४	अहंकार ७ २२			
अज्ञमंत	... १९ २९	असिधावक.	२० ७	अहंकारवान्.	२१ ५०			
अज्ञमपुष्पा....	१४ १२२	असिधेनुका.	१८ ९२	अहन् ४ २			
अज्ञमरी १६ ५६	असिपुत्री	... १८ ९२	अहमहमिका.	१८ १०१			
अज्ञमसार.	१९ ९८	असिहोति....	१८ ७०	अहंपूर्विका.	१८ १००			
अज्ञात १ ६९	असु	... १८ ११९	अहंमति ५ ७			
अज्ञि १८ ९३	असुधारण.	१८ ११९	अहंपति ३ ३०			
अज्ञु	... १६ ९३	असुर १ १२	अहर्मुख ४ २			
अज्ञील ६ १९	असूक्ष्ण ७ २३	अहस्कर ३ २८			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
अहह	२३	२५८	आक्षेप	६	१३	आजीव	१९	१
अहार्य	१३	१	आखण्ड	१	४७	आज	९	३
अहि	{ ८ २३	{ ६ २३९	आयु	१५	१२	आज्ञा	१८	२६
अहित	१८	११	आयुभुज्	१५	६	आज्य	१९	५२
अहितुष्टिक	८	११	आखेट	२०	२३	आत्रि	१५	२५
अहिभय	१८	३०	आख्या	६	८	आडबर	{ १८ २३	{ १०८ १६८
अहिभुज्	२३	३०	आख्यात	२१	१०७	आडि	१५	२५
अदेह	१४	१०१	आख्यायिका	६	५	आढक	१९	८८
अहो	२४	९	आगतु	१७	३४	आढकिक	१९	१०
अहोरात्र	४	१२	आगम	१४	५	आढकी	{ १४ २५	{ १३० ७
अहाय	२४	२	आगस्	{ १८ २३	{ २६ २३१	आढ्य	२१	१०
आ			आग्	५	५	आणवीन	१९	७
आ (आ)	२३	२४१	आग्नीध्र	१७	१७	आतक	२३	१०
आ	२४	१६	आमहायणिक	४	१४	आतचन	२३	११५
आकापित	२१	८७	आमहायणी	३	२३	अततायिन्	२१	४४
आकर	१३	७	आह्	२३	२४०	आतप	{ ३ २५	{ ३४ २०
आकर्ष	२३	२२२	आगिक	७	१६	आतपत्र	१८	३२
आकल्प	१६	९९	आगिरस	३	२४	आतर	१०	११
आकार	{ २२ २३	{ १५ १६२	आचमन	१७	३६	आतापिन्	१५	२१
आकारगुप्ति	७	३४	आचाम	१९	४९	आतियेय	१७	३३
आकारणा	६	८	आचार्य	१७	७	आतिथ्य	१७	३३
आकाश	२	२	आचार्या	१६	१४	आतर	१६	५८
आकीर्ण	२१	८५	आचार्यानी	१६	१५	आतोद्य	७	५
आकुल	२१	७२	आचित	१९	८७	आत्तगर्ग	२१	४०
आकृति	२३	१६२	आच्छादन	{ ३ १६	{ ९३ ११५	अरमगुप्ता	१४	८६
आकृद्	२३	९०	आच्छुरितक	७	३४	आरमघोष	१५	२०
आक्रीड	१४	३	आच्छोदन	२०	२३	आरमज	१६	२७
आक्रीश	६	१५	आजक	१९	७७	आरमन्	{ ४ २३	{ २९ १०९
आक्रीशन	२२	६	आजानय	१८	४४	आरमभू	{ १ १	{ १६ २७
आक्षाणा	४	१५	आजि	{ १४ २३	{ १०६ ३०			
आक्षारित	२१	४३						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आत्मभरि.	२१	२१	आनाय्य....	१७	२१	आभारपत्री.	१२	२०
आत्रेयी....	१६	२०	आन ह . .	१६	५५	आभारी....	१६	१३
आथर्वण....	२२	४३	आनुपूर्वी.	१७	३७	आभोल....	९	४
आदर्श....	१६	१४०	आंधसिक.	१९	२८	आभोग....	१६	१३७
आदि....	२१	८०	आन्वीक्षिकी.	६	५	आमगधिन्.	५	१२
आदिकरण.	४	२८	आपक ...	१९	४७	आमनस्य.	९	३
आदितेय....	१	८	आपगा....	१०	३०	आमय....	१६	५१
आदित्य. {	१	८	आपण... १२	२	२	आमयाधिन्.	१६	५८
	१	१०	आपगिक.	१९	७८	आमलक.	२५	३३
	३	२८	आपस्मात्.	२१	४२	आमलकी.	१४	५७
आदिनव.	२२	२९	आपद्....	१८	८२	आमिक्षा....	१७	२३
आदृत....	२३	८५	आपन्न....	२१	४२	आमिष. {	१६	६३
आद्य....	२१	८०	आपन्नवत्त्वा.	१३	२२		२३	२२४
आद्यमापक.	१९	८५	आपमित्यक.	१९	४	आमिषाशिन्.	३१	१९
आद्यून....	२१	२१	श्रापन....	२०	४३	आमुक....	१८	६५
आद्योत... २३	३		आपीट....	१६	१३६	आमोद. {	४	२४
आद्यार....	१०	२९	आपीन....	१९	७३		५	१०
आद्यारण.	१८	५९	आपूपिक {	१९	२८		२३	९१
आधि. {	७	२८		२२	४०	अमोदिन्	५	११
	२३	९७	आप्त....	१८	१३	आम्नाय. {	६	३
आवृत... २१	८७		आप्य....	१०	५		२२	७
आध्यान....	७	२९	आप्यायन.	२३	११५	आम्न....	१४	३३
आनक. {	७	६	आप्रच्छन्न	२२	७	आम्नातक.	१४	२७
	२३	३	आप्रपद....	१६	११९	आम्नेडित.	६	१२
आनकदेदुभि.	१	२३	आप्रपदीन.	१६	११९	आयत....	२१	६९
आनत....	२१	७०	अल्ला....	१६	१२१	आयतन... १२	७	
आनद्ध... ७	४		आप्लवत्र तिन्	१७	४३	आयति. {	१८	२९
आनन....	१६	८९	आप्लव....	१६	१२१		२३	७२
आनद....	४	२५	आप्लव... १६	१२१		आयत्त....	२१	१६
आनदथु....	४	२५	आप्लव... १९	१३		अ.याम... १६	११४	
आनदन.	२२	७	आभाण....	१६	१०१	अ.युध....	१८	८२
आनर्त....	२३	६४	अभाषण... ६	१५		आयुधिक.	१८	६७
आनाय....	१०	१६	आभास्वग १	१०		आयुधीय.. १८	६७	
			आभीर... १९	५७		अ.युमन.	२१	६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
आयुस्	१८	१२०	जालान	१८	४१	आशय	२२	२०
आयुधन	१८	१०३	जालाप	६	१५	आशर	१	६२
आयुष्ट	१९	९७	जालि	{ ११ २१ १४ ४ १५ १०	आशा	{ ३ १ २३ २१६		
आरगध	१४	२३			आशितगरीन		१९	५९
आरनालक	१९	३९			आशीविष	८	७	
आरति	२२	३८	जालिय	७	५	आशीस्	२३	२०९
आरभ	२२	२६	जाली	२३	१९८	आशु	{ १ ६८ १९ १५	
आरि	६	२३	जालीढ	१८	८५			
आरा	२०	३५	जालु	१९	३१	आशुग	{ १ ६५ १८ ८५ २३ १९	
आरात	२३	२४३	जालोज	२३	३			
आराधन	२०	१२५	जालोक्न	२०	३१	आशुशुक्षणि	१	५८
आराम	१८	२	जालपन	१९	३३	आशुर्थ	७	१९
आरालिक	१९	२८	जालत	१०	६	आश्रम	१७	४
आराव	६	२३	जालि	१४	८	आश्रय	{ १८ १८ २२ ११	
आरेवत	१४	२८	जालिन	१९	२३			
आरोग्य	१६	१०	जालप	१०	२९	आश्रयाश	१	५७
आरोह	{ १६ ११४ २३ २३९	{ १६ ११४ २३ २३९	जवापरु	१६	१०७	आश्रव	{ ५ ५ २१ २८	
			आराल	१०	२९			
जारोहण-	१०	१८	आमिन्न	१४	६७	आश्रुत	२१	१०८
जातगल	१४	७४	आमिद्ध	{ २१ ७१ २१ ८७	आमिघ	२०	३६	
जातव	१६	२१	आमिल		१०	१४	आश्रुत्य	१४
जाद	२१	१०५	आमिष्ट	२१	९	आश्रयुज	४	१७
जादिक	१९	३७	आमिस्	२४	१२	आश्रिन	४	१७
जय	{ ७ १४ १७ ३	{ ७ १४ १७ ३	जातुस्	७	१०	आश्रिनेय	१	५४
			जयुत्त	७	१२	आश्रिनी	१८	४७
जार्वा	१	४०	जातुर	१७	३७	आषाढ	{ ४ १६ १७ ४५	
जार्वागत	११	८	जावृत्त	२१	९०			
जापभ्य	१९	६२	जावृती	१४	१३७	आसक्त	२१	९
जाल	१९	१०३	जावेशन	१२	७	आसन	{ १६ १३८ १८ १८ १८ ३९	
जालभ	१८	११५	जादेशित	१७	३६			
जालय	१२	५	जाशसिद्ध	२१	२७			
जालपाल	१०	२०	जाशमु	२१	२७	आसना	२२	२१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
आसदी	२५	९	आह्वान	६	८	इंद्र....	{ १	४४
आसन्न	२१	६६					{ ३	२
आसव	२०	४२	इक्षु	१४	१६३	इन्द्रट्ट	१४	४५
आसादित.	२१	१०४				इन्द्रयव	१४	६७
आसार.	{ ३	११	इक्षुगंधा.	{ १४	९८	इन्द्रवाष्णी.	१४	१५६
	{ १८	९६		{ १४	१०४	इन्द्रसरस	१४	६८
आसुरी	१९	१९		{ १४	११०	इन्द्राणिका... ..	१४	६८
आसेचनक.	२१	५३	इक्षुर	१४	१०४	इन्द्राणी	१	४८
आस्कंदन.	१८	१०४	इक्ष्वाकु	१४	१५६	इन्द्रायुध	३	१०
आस्कंदित.	१८	४८				इन्द्रारि	१	१२
आस्तरण.	१८	४२	इंग....	{ २१	७४	इन्द्रावरज	१	२०
				{ २२	१५			
आस्था	२३	८८	इंगित	२२	१५	इन्द्रिय.	{ ५	८
आस्थान.	१७	१५	इंगुदी	१४	४६		{ १६	६२
आस्थानी.	१७	१५	इच्छा	७	२७	इन्द्रियार्थ.	५	८
आस्पद	२३	९४	इच्छावती.	१६	९	इंधन	१४	१३
आस्फोट.	१४	८०	इज्याशील.	१७	८	इभ	१८	३५
आस्फोटनी.	२०	३४	इत्तर	१९	६२	इभ्य	२१	१०
आस्फोटा.	{ १४	७०	इडा	२३	४२	इरंमद	३	१०
	{ १४	१०४						
आस्य	१६	८९	इतर....	{ २०	१६	इरा....	{ २०	४०
आस्या	२२	२१		{ २१	८२		{ २३	१७६
आस्यथ	२२	२९		{ २३	१९२	इला	२३	४२
आहत.	{ ६	२१	इतरेद्युस्	२४	२१	इल्वलाः	३	२३
	{ २१	८८	इति	२३	२४६	इव	२४	९
आहव	१८	१०५	इतिह	१७	१२	इष	४	१७
आहवनीय.	१७	१९	इतिहास	६	४	इपु	१८	८७
आहार	१९	५६	इत्तरी	१६	१०	इषुधि	१८	८८
आहाव	१०	२६	इदानीम्	२४	२३	इष्ट....	{ १७	२८
आहितलक्षण.	२१	१०	इधम	१४	१३		{ १९	५७
आहेय	८	९	इन	२३	१११	इष्टकापथ	१४	१६५
आहो	२४	५	इन्दिशा	१	२९	इष्टगंध	५	११
आहोपुष्पिका.	१८	१०१	इंदीवर	१०	३७	इष्टार्थोद्युक्त.	२१	९
आह्वय	६	७	इंदीवरी	१४	१००	इष्टि	२३	३९
आह्वा	६	८	इंदु	३	१३	इष्वास	१८	८३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
ईक्षण	{ १६ २३	९३ ३१	उग्र .	{ १ ७ २०	३४ २० २	उत्कलिका	७	२९
						उत्कार	२२	३६
ईक्षणिका	१६	२०	उग्रगघा	{ १४ १४	१०२ १४५	उत्क्रोष	१५	२३
ईक्षित	२१	११०	उच्च	२१	७०	उत्त	२१	१०५
ईक्षिति	२३	६८	उच्चटा	१४	१६०	उत्तंस	२३	२२८
ईरित	२१	८७	उच्चड	२१	८३	उत्तप्त	१६	६३
ईर्म	१६	५४	उच्चार	१६	६७	उत्तप्त	२१	५७
ईर्वाक	१४	१५५	उच्चापच	२१	८३	उत्तमर्ण	१९	५
ईर्ष्या	७	२४	उच्चै श्रवस्	१	४८	उत्तमा	१६	४
ईलित	२१	१०९	उच्चैर्घृष्ट	६	१२	उत्तमाग	१६	९५
ईली	१८	९१	उच्चैस्	२४	१७	उत्तर	{ ६ २३	{ १० १९०
ईश	{ १ ३	३२ ३	उच्चैः	१४	१०	उत्तरा	३	२
			उच्चक्षूय	१४	१०	उत्तरासग	१६	११७
ईशान	१	३२	उच्चक्राय .	१४	१०	उत्तरीय	१६	११८
ईशित	२१	१०	उच्चिष्ट	{ २१ २३	{ ७० ८५	उत्तोरुस्	२४	२०
ईश्वर	{ १ २१	२२ १०	उच्चासन	१८	११५	उत्तान	१०	१५
			उच्चपल	७	१७	उत्तानशय	१६	४१
ईश्वरी	१	३८	उच्छ	१९	२	उत्तान	२३	११८
ईषत्	२४	८	उच्छज	१२	६	उच्छियत	२३	८५
ईश्वरपादु	५	११	उच्छु	३	२१	उत्पतित	१६	२९
ईषा	१९	१४	उच्छुप	१०	११	उत्पत्ति	४	३०
ईषिका	{ १८ २०	३८ ३३	उच्छुप	१५	३७	उत्पत्तिष्णु	२१	२९
			उच्छुनि	{ २१ २३ २४	{ १०१ २४४ ५	उत्पन्न	२३	८५
ईहा	७	२७	उत्त	{ २१ २३ २४	{ १०१ २४४ ५	उत्पल	{ १० १४	{ ३७ १२६
ईहामृग .	१५	७	उत्ताहो	२४	५	उत्पलशारिया	१४	११२
उ	२४	१८	उत्तक	२१	८	उत्पात	१८	१०९
उक्त	२१	१०७	उत्कट	{ १४ २१	{ १३४ २३	उत्फल	१४	७
उक्ति	६	१	उत्कठा	७	२९	उत्स	१३	५
उत्पथ	७५	३०	उत्कर	१५	४०	उत्सर्जन .	१७	२९
उक्षम्	१९	५९	उत्कर्ष	२२	११	उत्सप्त	{ ७ २३	{ ३८ २०९
उखा	१९	३१						
उद्य	१९	४५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
उत्सादन ...	१६	१२१	उदीच्य.	{ ११ ७		उद्यत	२१	८९
उत्साह.	{ ७ २९			{ १४ १२२		उद्यम	२२	११
	{ १८ १९		उदुबर.	{ १४ २२		उद्यान.	{ १४ ३	
उत्साहन.	२३	११५		{ १९ ९७			{ २३ ११७	
उत्साहवर्धन.	७	१८	उद्वरपणी.	१४	१४८	उद्युक्त	२१	९
उत्सुक	२१	९	उद्वखल	१९	२५	उद्योग	२५	३३
उत्सृष्ट	२१	१०७	उद्गत	२१	९७	उद्ग	१०	२०
उत्सेध.	{ १४ १०		उद्गम-नीय.	१७	११२	उद्गर्तन....	१६	१२१
	{ २३ ९६		उद्गाढ	१	७०	उद्धान्त.	{ १८ ३६	
उदक्त्वा	२४	२३	उद्गाढ	१७	१७		{ २१ ९७	
उदक्त्वा.	{ १० ४		उद्गार	२२	३७	उद्गातन	१८	११५
	{ २५ २२		उद्गीथ	२५	१९	उद्गाह ...	१७	५७
उद्वया	१६	२१	उद्गूर्ण ...	२१	८९	उद्देश.	{ १४ १६९	
उद्वय	२१	७०	उद्ग्राह	२२	३७		{ २२ १२	
उद्वज	२२	३९	उद्वघ	४	३७	उद्वुघ ...	१५	१२
उद्वदि	१०	१	उद्वघन	२२	३५	उद्वगत	२१	७०
उद्वत	६	७	उद्वघाटन.	२०	२७	उद्वगतानत	२१	६९
उद्वन्या	१९	५५	उद्वघात	२२	२६	उद्वगढ	२३	८५
उद्वन्वन् ...	१०	१	उद्वान	१८	२६	उद्वगय	२२	१२
उद्वपान	१०	२६	उद्वाल	१४	३४	उद्वगाय	२२	१२
उद्वय	१३	२	उद्वहित ...	२१	९५	उद्वगत.	{ १४ ७७	
उद्वर	१६	७७	उद्विगत	१८	१११		{ १६ ६०	
उद्वर्क	१८	२९	उद्वर्ष	७	३८	उद्वगदिगु.	२१	२३
उद्वगसित.	१२	४	उद्वव	७	३८	उद्वगनस् ...	२१	८
उद्वगित् ...	१९	५३	उद्वगत	२२	९६	उद्वगाथ	{ १८ ११५	
उद्वगत ...	६	४	उद्वगत ...	१९	२९		{ २० २६	
उद्वगत ...	१	६७	उद्वगार ...	१९	४	उद्वगाद ...	७	२६
उद्वग.	{ २१ ८		उद्वगा ...	२१	९०	उद्वगादवन.	१६	६०
	{ २३ १९२		उद्वग ...	४	३०	उद्वगण्ठ	२१	६७
उद्वगिनी.	१८	१०	उद्वग ...	२१	५१	उद्वगारिका.	१२	१०
उद्वगार.	६	९	उद्वग ...	२१	५१	उद्वगार्या.	१२	१०
उद्वगित ...	२१	१०७	उद्वग ...	२१	५१	उद्वगुचिका	{ १४ १२५	
उद्वगिनी ...	२	२	उद्वग ...	२१	५१		{ १९ ३७	
			उद्वगम ...	२२	१२	उद्वगुल्या.	१८	५६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
उपक्रम	{	१७ १३	उपमात्र	२३	१७६	उपस्पर्श	१७	३६
		२२ २६	उपमान	२०	३६	उपहार	{	१८ २८
		२३ १३९	उपयम	१७	५६			२३ १९५
उपक्रोश	६	१३	उपयाम	१७	५७	उपहर	०३	१८३
उपगत	०१	१०९	उपरक्त	{	४ १०	उपांशु	१८	२३
उपगूहन	२०	३०			२१ ४३	उपाकरण	१७	४१
उपग्रह	१८	११९	उपरक्षण	१८	३३	उपाकृत	१७	०५
उपग्राह्य	१८	२८	उपराग	४	९	उपाख्यय	{	१७ ३७
उपग्र	२०	१९	उपराम	००	३८			२२ ३३
उपचरित	०१	१०२	उपरि	२३	१८३	उपादान	{	२२ १६
उपचाध्य	१७	००	उपल	१३	४			०३ २२४
उपचित	२१	८९	उपलब्धार्या	६	५	उपाधि	{	७ २८
उपचित्रा	१४	८७	उपलब्धि	५	१			०१ १२
उपजाप	१८	२१	उपलभ	००	२७	उपाध्याय	१७	७
उपज्ञा	१७	१३	उपला	२३	११९	उपाध्याया	१६	१४
उपतप्त	०२	१४	उपवन	१४	२	उपाध्यायानी	१६	१५
उपताप	१६	५१	उपवर्तन	११	८	उपाध्यायी	{	१६ १४
उपत्यका	१३	७	उपवर्ह	१६	१३७			१६ १५
उपदा	१८	०८	उपवास	१७	३८	उपानह	२०	३१
उपधा	{	१८ २१	उपविषा	१४	९९	उपायचतुष्टय	१८	००
		३ १३९	उपवीत	१७	५०	उपायन	१८	७८
उपघान	१६	१३७	उपशल्प	१०	००	उपालभ	६	१४
उपधि	७	३०	उपशाय	०२	३०	उपाहृत	१८	५०
उपनाह	७	७	उपश्रुत	२१	१०९	उपासग	१८	८८
उपनिधि	१९	८१	उपसंयान	१६	११७	उपासन	१८	८६
उपनिषद्	२३	९३	उपसपन्न	{	१७ ०६	उपासना	१७	३५
उपनिष्कर	११	१८			१९ ४१	उपासित	२१	१०२
उपन्यास	६	९	उपसर	०२	२५	उपाहित	{	४ १०
उपपाति	१६	०५	उपसर्ग	१८	१०९			२१ ९०
उपवर्ह	१६	१३७	उपसर्जन	२१	६०	उपेद्	१	२०
उपभृत्	१७	२५	उपसर्प्या	१९	७०	उपोदिका	१४	१५७
उगभोग	२२	२०	उपसूर्यक	३	३२	उपोद्घात	६	९
उपमा	{	०० ३६	उपस्कर	१९	३५	उत्तष्ट	.	१९ ८
		०० २८	उपस्थ	१६	७५			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः		
उभयद्युस्.	२२	२१	उल्लाघ	१६ ५७	ऊरुपर्वन् ...	१६	७२		
उभयेद्युस्.	२४	२१	उल्लोच	१६ १२०	ऊर्ज	... ४	१८		
उमा.	} १ ३८ १९ २०		उल्लोल	... १०	६	ऊर्जस्वल ...	१८	७५		
उमापति		१	३६	उशनस्	३ २५	ऊर्जरिवन्.	१८	७५	
उम्य १९	७	उशीर १४	१६४	ऊर्णनाभ	१५	१३		
उरःसूत्रिका.	१६	१०४	उषणा १४	९७	ऊर्णा	... २३	५०		
उरग ८	८	उषर्धुघ १	५७	ऊर्णाद्यु.	} १९ ७६ १९ १०७			
उरण १९	७६	उपस् ४	२	ऊर्ध्वक	 ७	५	
उरणाख्य....	१४	१४७	उषा २४	१८	ऊर्ध्वजानु.	१६	४७		
उरभ्र १९	७६	उषापति १	२८	ऊर्ध्वज्ञ १६	४७		
उररी	... २३	२५५	उषित २१	९९	ऊर्मि.	} १० ५ २५ ३८			
उररीकृत	२१	१०८	उष्ट्र १९	७५			ऊर्मिका १६	१०७
उरश्छद् १८	६४	उष्ण.	} ४ १९ २५ २२		ऊर्मिमत् २१	७१		
उरस् १६	७८			उष्णारश्मि.	३	२९	ऊष ११	४
उरसिल १८	७६	उषिणिका	... १९	५०	ऊषण १९	३६		
उरस्य १६	२८	उष्णीष २३	२२१	ऊपर ११	५		
उरस्वान्	... १८	७६	उष्णोपगम.	४	१९	ऊषवत् ११	५		
उरु २१	६१	उष्मक ४	१८	ऊष्मागम....	४	१९		
उरुवृक १४	५१	उस्र ३	३३	ऊह ५	३		
उर्वरा ११	४	उस्त्रा १९	६६	ऋ.				
उर्वशी	... १	५५	ऊ.				ऋकथ १९	९०	
उर्वी	... ११	३	ऊत २१	१०१	ऋक्ष.	} ३ २१ १४ ५७ १५ ४			
उर्वार १४	१५५	ऊधस् १९	७३			ऋक्षगन्धा.	१४	१३७
उलप १४	९	ऊन २३	१२८			ऋक्षगन्धिका.	१४	११०
उलूक १५	१५	ऊम्	... २४	१८	ऋच ६	३		
उलूखल	... १९	२५	ऊररी २३	२५५	ऋजीष १९	३२		
उलूखलक.	१४	३४	ऊरव्य १९	१	ऋजु २१	७२		
उलूपिन्	... १०	१८	ऊरी	... २३	२५५	ऋजुरोहित.	३	१०		
उल्का २५	८	ऊरीकृत २१	१०८	ऋण	... १९	३		
उल्मुक १९	३०	ऊरु १६	७३					
उल्ब १६	३८	ऊरज १९	१					
उल्भण २१	८१								

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
ऋत	{ ६ २२ १९ २	एकधुरीण	१९	६५	एलावाटुक	१४	१२१	
ऋतीया	२२ ३२	एकपदी	११	१५	एवम्	{ २३ २५१ २४ ९ २४ १२ २४ १५ २४ १६		
ऋतु	{ ४ १३ ४ २० २३ ६१	एकपिग	१	७३		एवणिक	२० ३२	
ऋतुमती	१६ २१	एकयष्टिका	१६	१०६		ऐ		
ऋते	२४ ३	एकसर्ग	२१	८०		एकागारिक	२० २४	
ऋतिवज्ज	१७ १७	एकहायनी	१९	६८	ऐगुद	१४ १८		
ऋद्ध	१९ २३	एकाकिन्	२१	८२	ऐण	१५ ८		
ऋद्धि	१८ ११२	एकाम	{ २१ ७९ २३ १९०		ऐणेष	१५ ८		
ऋधु	१ ८		एकान्य	०१	८०	ऐतिह्य	१७ १२	
ऋधुक्षिन्	१ ४७	एकात	१	७०	ऐदियक	०१ ७९		
ऋश्य	१५ १०	एकादा	१९	६८	ऐराण	१ ४९		
ऋषभ	{ ७ १ १४ ११६ १९ ५९ २१ ४३	एकायन	२१	७९	ऐरावत	{ १ ४९ ३ ३ १४ ३८		
	ऋषि	१७ ४३	एकापनगत	२१		७०	ऐरावती	३ ९
		ऋष्यकेतु	१ २८	एकावली	१६	१०६	ऐलविल	१ ७३
ऋष्यमोक्ता	{ १४ ८७ १४ १०१	एकाठील	१६	८१	ऐलेय	१४ १२१		
	ए	एकाठीला	१६	८५	ऐन्धर्य	१ ३८		
एरु	{ २१ ८२ २१ ८२ २३ १६	एड	१६	४८	ऐपमस्	२४ २०		
	एकक	२१ ८२	एडक	१९	७६	ओ		
		एकगुघ	१७ १२	एडगज	१४	१४७	ओयस्	२३ २३४
एकतान	२१ ७९	एडमूक	२१	३८	ओघ	{ ७ ९ १५ ३९ २३ २७		
एकताल	७ ३	एडूक	१२	४		ओकार	६ ४	
एकदत	१ ४१	एण	१५	१०	ओजस्	२३ २३४		
एकदा	२४ २२	एत	५	१७	ओङ्गुण्य	१४ ७६		
एकधुर	१९ ६५	एतर्हि	२४	२३	ओतु	१५ ६		
एकधुरावह	१९ ६५	एघ	१४	१३	ओदन	१९ ४८		
		एघस्	१४	१३	ओम्	२४ १२		
		एघा	२२	१०				
		एधित	२१	७६				
		एनस्	४	२३				
		एल	१४	५१				
		एला	१८	१२५				
		एलापर्णी	१४	१४०				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
ओष	...	२२	९	कक्ष्या.	{ १८ ४२	कटिप्रोथ	...	१६ ७५	
ओषधी	१४	६	{ २३ १५८	कटि	२५ ३८		
ओषधीश.	३	१४	कक	...	१५ १६	कटु.	{ ५ ९		
ओष्ठ	...	१६	९०	ककटक	१८ ६४	{ १४ ८५		
औ.			कंकण	१६ १०८	{ २३ ३५			
औक्षक	१९	६०	कंकतिका.	१६ १३९	कटुतुंबी	१४ १५६	
औचित्ति	२५	३९	कंकाल	...	१६ ६९	कटुग्राहिणी.	१४ ८५	
औचित्य	...	२५	३९	ककोलक.	१६ १३०	कटफल	१४ ४०	
औत्तानपादि	३	२०	कगु	...	१९ २०	कटग	१४ ५६	
औरसुक्व.	२३	२३०	कच	..	१६ ९५	कठिजर	१४ ७९	
औदनिक	१९	२८	कच्चर	२१ ५५	कठिन	२१ ७६	
औदरिक	...	२१	२१	कच्चित्	२४ १४	कठिलक	...	१४ १५४
औभगवक.	२२	४०	कच्छ.	{ ११ १०	कठार	२१ ७६		
औषयिक.	१८	२४	{ १४ १२८	कडंगर	१९ २२			
औमीन	...	१९	७	कच्छप	१० २१	कडंब	१९ ३५
औरभ्रक	१९	७७	कच्छर्पा	२३ १३२	कडार	५ १६
औरस	१६	२८	कच्छ	१६ ५३	कण.	{ २१ ६२	
और्ध्वदेहिक.	१७	३०	कच्छुर	१६ ५८	{ २३ ४६			
और्ध्व	...	१	५९	कच्छुरा	१४ ९२	कणा.	{ १८ ९६	
औशीर	२३	१८५	कचुक.	{ ८ ९	{ १९ ३६			
औषय.	{ १४ १३५			{ १८ ६३					
	{ १६ ५०			कचुकिन्.	१८ ८	काणिका.	{ १४ ६६		
औष्टक	१९	७७			{ २४ ८			
क.				{ १६ ७४		काणिश	...	१९ २१	
क	...	२३	५	{ १८ ३७		कंटक	२५ ३२	
कम	१९	३२	{ १९ २६		कंटकारिका.	१४ ९३		
कसारान्ति.	१	२१		{ २३ ३४		कंटकिफल.	१४ ६१		
ककुद	२३	९०	कटक.	{ १३ ५	कंठ	१६ ८८	
ककन्नती	१६	७८		{ १६ १०७		कंठभूषा	१६ १०४	
ककुम्	३	१	कटभी	१८ १५०	कटुरा	१४ ८६
ककुम्.	{ ७ ७			कटंभा.	{ १० ८५	कट्ट	१६ ५३	
	{ १८ ४५			{ १४ १५३		कट्टया	१६ ५३	
कक्ष.	{ १६ ७९			कटाक्ष	१६ ९४	कंडोल	१९ २६
	{ २३ २००			कटाह	२५ २१	कंडोल	१९ २६
				कटि	१६ ५४	कंडोलश्रीणा.	२० ३२	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कलृण	१४	१६६	कधरा	१६	८८	कमठ	१०	२१
कषा	६	६	कम्यकाजात	१६	२४	कमठी	१०	२४
कदधन्	११	१६	कया	१६	८	कमण्डलु	१७	४६
कद्व	१४	४२	कपट	७	३०	कमन	१६	२४
कद्वक	१५	४०	कर्पद	१	३७	कमल	१०	३
		१७	कर्पदिन्	१	३४		१०	४०
२३	१९४	कपाट	१२	१७	२३		१९४	
कदर	१४	५०	कपाल	१६	६८	कमला	१	२८
कदय	२१	४८	कपालभृत्	१	३४	कमलासन	१	१७
कदली	१४	११३	कपि	१५	३	कमलोत्तर	१९	१०६
		९	कापिकच्छु	१४	८७	कमित	२१	२३
कदाचित्	२४	४	कापिरय	१४	२१	कप	७	३८
कदुष्ण	३	३५	कपिल	५	१६	कपन	२१	७४
कदु	५	१६	कपिला	३	४	कप्र	२१	७४
कद्वद	२१	३७				कवल	१६	११६
कनक	१९	९४				२३	१९४	
कनकाध्वस	१८	७	१०	१२०	कवलियाद्यक	१८	५०	
कनकालुका	१८	३२	कपिलाक्षी	१४	९७	कवि	१९	३५
कनकाह्वय	१४	७७	कपिश	५	१६	कवु	१०	२३
कनिष्ठ	१६	४०	कपोतन	१४	२७		२३	१३३
		४१					१४	४३
२३	४१	१४				६३		
कनिष्ठा	१६	८२	कपोत	१५	१४	कवुमीरा	१६	८८
कनीनिका	१६	९०	कपोतपालिका	१२	११	कप्र	२१	२४
कनीपस्	२१	६०	कपोतपत्रिका	१४	१२९	कर	३	३३
		२३	२३६	कपोतशि	१६		९०	१८
२३	२३६	कपोल	१६	९०	२३		१६४	
कषा	०५	९	कफ	१६	६२	करक	१४	६४
कद	१४	१५७	कफिन्	१६	६०		२३	६
		३५	कफोणि	१६	८०	३	१२	
कदर	१८	६	कबंध	१०	८	करका	१४	४७
कदराल	१८	२०					१८	११८
		२२	१०	८	करजक		१०	४७
१८	२२	१०	८	१३९	कर	१५	२०	
१	२६	१६	९७	२३		२४		
कदली	१५	०	१९	४०	करन	२०	२	
कदु	१९	१०	२३	२७१		२३	५५	
कदुष	१६	१३८						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः			
करंड	२५	१८	कर्करी	१९	३१	कर्मण्या	२०	३८
करतोया	१०	३३	कर्करेडु	१५	१९	कर्मदिन्	१७	४२
करपत्र	२०	३५	कर्कश.	{	१४	१४६	कर्मशील	...	२१	१८
करभ.	{	१६	८१	कर्कश.	{	२१	७६	कर्मशूर	२१	१८
करभूषण	१६	१०८	कर्कश.	{	२३	२१७	कर्मसचिव.	१८	४	
करमर्दक	१४	६७	कर्कावि	१४	१५५	कर्मार	१४	१६०
करंभ	१९	४८	कर्चूर	१४	१५४	कर्मद्रिय	५	४
कररुह	१६	८३	कर्चूरक	...	१४	१३५	कर्ष	१९	८६
करवाल	१८	८९	कर्ण	१६	९४	कर्षक	१९	६
करवालिका.	१८	९१	कर्णजलौकम्.	१५	१३	कर्षफल	१४	५८		
करवीर	१४	७७	कर्णधार	१०	१२	कर्ष	२३	२२३
करशाखा.	१६	८२	कर्णपूर	२३	२२८	कल	७	२	
करशीकर.	१८	३७	कर्णवेष्टन	...	१६	१०३	कलकल	६	२५	
करहाट	१०	४३	कर्णिका.	{	१६	१०३	कलंक.	{	३	१७
करहाट	१४	५२	कर्णिका.	{	२३	१५	कलंक.	{	२३	४
कराल	२३	२०५	कर्णिकार	..	१४	६०	कलत्र	२३	१७८
करिगर्जित.	१८	१०७	कर्णिरथ	१८	५२	कलघौत	२३	७६	
करिगी	१८	३६	कर्णेजप	२१	४७	कलंच.	{	१८	८७
करिन्	१८	३४	कर्तरी	...	२०	३४	कलंच.	{	१९	३५
करिपिप्पली.	१४	९७	कर्दम	१०	९	कलभ	१८	३५	
करिशावक.	१८	३५	कर्पट.	{	१६	११५	कलम	१९	२४	
करिर.	{	१४	७७	कर्पट.	{	२५	३३	कलंबी	...	१४	१५७
करिप	१९	५१	कर्पर	१६	६८	कलरव	...	१५	१४
करण	७	१७	कर्परश	२३	१७५	कलल	१६	३८
करणा	७	१८	कर्परी	१९	१०१	कलविक	१५	१८
करेडु	१५	१९	कर्पूर	१६	१३०	कलश	१९	३१
करेणु	२३	५२	कर्षुर.	{	१	६३	कलशी	१४	९३
करोटि	१६	६९	कर्षुर.	{	५	१७	कलहंस	१५	२३
कर्क	१८	४६	कर्षुर.	{	१९	९४	कलह	१८	१०४
कर्कटरु	...	१०	२१	कर्मकार.	{	२०	१५	कला.	{	३	१५
कर्कटी	१८	१५५	कर्मकार.	{	२१	१९	कला.	{	४	११
कर्कपू.	{	१४	३६	कर्मकार	२१	१९	कला.	{	२३	१९८
कर्कपू.	{	२५	३८	कर्मक्षम	...	२१	१८	कलाद	२०	८
				कर्मठ	२१	१८	कलानिधि.	३	१४	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
कलाप	२३	१२९	कविका	१८	४९	काकुद	१६	९१		
कटाप	१९	१६	काविय	२५	३५	काकौदु	१४	३९		
कालि	{ १८	१०५	कवोष्ण	३	३५	काकोदुबरिका	१४	६१		
	{ २३	१९४				काकोदर	८	७		
कलिका	१४	१६	कशा	२०	३१	काकोल	{ ८	१०		
कलिंग	{ १४	६७	कशार्द	२१	४४		{ १५	२१		
	{ १५	१६	काशिपु	२३	१३०	काक्षा	७	२७		
कलिद्रुम	१४	५८	कशेष	२५	१३	काक्षी	१४	१३१		
कलिमारक	१४	४८	कशेषका	१६	६९	काच	{ १९	९९		
कलिल	२१	८५	कश्मल	१८	१०९		{ २०	३०		
कलुष	{ ४	२३	कश्य	{ १८	४७		{ २३	२८		
	{ १०	१४				काचस्थाली	१४	५४		
कलेर	१६	७०				{ २०	४०	काचित	२१	८९
कल्का	२३	१४	{ २१	४४	काचिन	१९	९५			
कल्का	{ ४	२१	कषाय	{ ५	९	काचिनाह्वय	१४	६५		
						{ ४	२२	काचनी	१९	४१
						{ १७	४०	काची	१६	१०८
						{ १८	२४	काजिक	१९	३९
कल्पना	१८	४२	कष्ट	{ २३	३९	काट	२३	४३		
कल्पवृक्ष	१	५३	कस्तूरी	१६	१२९	काटि	१८	६७		
कल्पित	४	२०	काह	१५	२२	काटिपृष्ठ	१८	६७		
कल्पष	४	२३	कास्यताल	७	४	काटिपत्र	१८	६९		
कल्पाप	५	१७	काक	१५	२०	काटार	१८	६९		
कल्प	{ ४	२	काकचिथी	१४	९८	काटिष्ठ	१४	१०४		
			काकसिंदुक	१४	३९	कातर	२१	२६		
			काकनासिका	१४	११८	काट्यायनी	{ १	३८		
काकपक्ष	१६	९६	{ १६	१७						
कल्या	६	१८	काकपीलुफ	१४	३९	कादव	१५	२३		
कल्याण	४	२५	काकमाची	१४	१५१	कादवरी	२०	४०		
कलोल	१०	६	काकमुदा	१४	११३	कादबिनी	३	८		
कल्हार	१०	३६	काकलो	७	२	कादवेय	८	४		
कलत्र	१८	६४	काकानी	१४	११८	कानन	१४	१		
कल्ल	१९	५४	काकिणी	२५	९	कानिन	१०	२४		
कनि	{ ३	२५	काकु	६	१२	कात	२१	५२		
	{ १७	५								

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कातलक	१४	१२८	काय.	{ १६ ७१		कार्षिक	१९	८८
काता	१६	३		{ १७ ५१			{ १ ६२	
कांतार.	{ ११ १७		कायस्था	१४	५९	काल.	{ ४ १	
	{ २३	१७२	कारण	४	२८		{ ५ १४	
कांतारक ...	१४	१६३	कारणा	९	३		{ २३ १९४	
कांतार्थिनी.	१६	१०	कारणिक.	२१	७	कालक	१६	४९
कांति.	{ ३ १७		कारण्डव	१५	३४	कालकठक.	१५	२१
	{ २२ ८		कारंभा ..	१४	५६	कालकूट ...	८	१०
कांदविक.	१९	२८		{ १४ १११		कालखंड	१६	६६
कांदिशीक.	२१	४२	कास्वी.	{ १४ १५२		कालधर्म	१८	११६
कापथ	११	१६		{ १९ ३७		कालघृष्ट	१८	८३
कापोत.	{ १५ ४३			{ १९ ४०		कालमेषिका { १४ ९०		
	{ १९ १०९		कास्वेल	१४	१५४		{ १४ १०९	
कापोर्ताजन.	१९	१००	कारा	१८	११९	कालमेषी....	१४	९६
	{ १ २६		कारिका	२३	१५	कालशेष	१९	५३
	{ ७ २८		कारीष	२२	४३	कालसूत्र.	९	२
काम.	{ १९ ५७		काघ	२०	५			
	{ २३ १३८		कारणिक.	२१	१५	कालस्कंध. { १४ ३८		
कामंगामिन्.	१८	७६	कारण्य	७	१८		{ १४ ६८	
कामन	२१	२४	कारोत्तर	२०	४३	काला.	{ १४ ९४	
कामपाल.	१	२४	कार्तस्वर....	१९	९५		{ १४ १०९	
कामम्	२४	१३	कार्तातिक.	१८	१४		{ १९ ३७	
कामयित....	२१	२४	कार्तिक ...	४	१७	कालागृह	१६	१२७
कामिनी.	{ १६ ३		कार्तिक ...	४	१७	कालानुसार्य { १४ १२२		
	{ २३ ११२		कार्तिकिक.	४	१८		{ १६ १२६	
कामुक	२१	२३	कार्तिकेय.	१	४१	कालायस.	१९	९८
कामुका	१६	९	कारस्त्र्य	२३	१७८	कालिका.	२३	१५
कामुकी	१६	९	कार्षास.	{ १६ १११		कालिंदी	१०	३२
कांपित्य	१४	१४६		{ २५ ३५		कालिंदीभेदन.	१	२५
कांवल	१८	५४	कार्षासी	१४	११६	काली	१	३८
कांचविक ...	२०	८	कार्म	२१	१८	कालीयक. { १४ १०१		
कांबोज	१८	४५	कार्मण	२२	४		{ १६ १२६	
कांबोजी	१४	१३८	कार्मुक	१८	८३	काल्पक	१४	१३५
काम्यदान.	२२	३	कार्श्य	१४	४४	काल्या ...	१९	७०
			कार्षाषण	१९	८८	कावचिक.	१८	६६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कापेरी	१०	३५	किट्ट	१६	६१	कार	११	२१
काव्य	३	२५	किण	२५	१८	कीर्ति	६	११
काश	१४	१६२	किणही	१४	८९	कील	{ १	६०
काश्मरी	१४	३५	किण्य	२०	४२	{ २३	१९७	
काश्मर्य	१४	३६	कितव	{ १५	७७	कीलक	१९	७३
काश्मीर	१४	१४५	किघर	{ २०	४४	कीलाल	{ १०	३
काश्मीरजमन्	१६	१२४	किघर	{ १	११	{ २३	२००	
काश्यपि	३	३२	किघर	{ १	७४	कीलित	२१	४२
काश्यपी	११	२	कित्रेश	१	७२	कीश	१५	३
काष्ठ	१४	१३	किम्	{ २३	२५२	कु	{ ११	३
काष्ठकुद्दाल	१०	१३	{ २४	५	कुकर	{ २३	२४१	
काष्ठतक्ष	२०	९	किमु	२४	५	कुकर	१६	४८
{ ३	१	किमुत	{ २७	२	कुकुदर	१६	७१	
{ ४	११	{ २४	५	कुङ्कुल	२३	२०३		
काष्ठा	{ २३	४१	किपचान	२१	४८	ककट	१५	१७
काष्ठासुवाहिनी	१०	११	किपुष्य	१	७४	कुक्कभ	१५	३५
काष्ठीला	१४	११३	किरण	३	३३	कुङ्कर	{ १५	१३२
कास	१६	५२	किरात	२०	२०	{ २०	२१	
कासमर्द	२५	१९	किरातातित्त	१४	१४३	कुक्षि	१६	७७
कासर	१५	४	किरि	१५	२	कुक्षिभरि	२१	२१
कासार	१०	२८	किरीट	१६	१०२	कुङ्कम	१६	१०३
कामू	२३	६६	किमीर	५	१७	कुङ्ग	१६	८७
किन्दती	६	७	किल	२३	२५५	कुचदन	१६	१३२
किशाष	{ १९	२१	किलास	१६	५३	कुचर	२१	२७
{ २३	१६३	किलासिन्	१६	६१	कुङ्गम	१६	७७	
किशुम्भ	१४	२९	किलिजक	१९	२६	कुङ्ग	३	२५
किशीदिपि	१५	१६	कल्प	{ ४	२३	कुचित	२१	७१
किकर	२०	१७	{ २३	२२४	कुङ्ग	{ १४	८	
किकिणी	१६	११०	किशोर	१८	४६	{ २३	३१	
किचित्	२४	८	किशु	२३	७	कुङ्ग	{ १८	३४
किचुल्क	१०	२२	किमलय	१४	१४	{ १९	५९	
किजल्क	१०	४०	कीकस	१६	६८	कुङ्गाशन	१४	२०
किटि	१५	२	कीकर	१४	१६१	कुङ्गल	१९	३९
			कीनाश	२	२१			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कुट....	{ १४	५	कुत् ...	१९	३३	कुमुदिनी....	१०	३९
	{ १९	३२	कुतूहल	७	३१	कुमुदत् ...	११	९
कुटक	१९	१३	कुत्सा ...	६	१३	कुमुदती	१०	३८
कुटज	१४	६६	कुत्सित	२१	५४	कुचा	१७	१८
कुटन्नट. {	१४	५७	कुग्.... {	१४	१६६	कुंभ. {	१४	३४
	{ १४	१३१		{ १८	४२		{ १८	३७
कुटिल	२१	७१	कुदाल	१४	२२		{ २३	१३४
कुटि ... {	१२	६	कुनटी ...	१९	१०८	कुभकार....	२०	६
	{ २५	३८	कुनाशक....	१४	९१	कुंभसंभव.	३	२०
कुटंब्यापृत.	२१	११	कुंत ...	१८	९३	कुंभिका....	१०	३८
कुटंबिनी....	१६	६	कुंतल ...	१६	९५	कुभी	१४	४०
कुट्टनी	१६	१९	कुंद... {	१४	७३	कुंभीर	१०	२१
कुट्टिम ...	२५	३४		{ १४	१२०	कुंमोलूखलक.	१४	३४
कुठर	१९	७४		{ २३	१९	कुंग	१५	८
कुठार	१८	९२	कुदुरु	१४	१२१	कुंगक	२०	२४
कुठेरक	१४	७९	कुंदुषकी ...	१४	१२४	कुंरटक. {	१४	७४
कुडंगक	२५	१७	कुपूय	२१	५४		{ १४	७५
कुट्टा	१९	८९	कुप्य	१९	९१	कुखक	१४	७५
कुडमल	१४	१६	कुपेर.... {	१	७१	कुरर	१५	२३
कुडच	१२	४		{ ३	३	कुरुविद	१४	१५९
कुप. {	१८	११८	कुवेरक	२०	१२७	कुरुविस्त....	१९	८६
	{ २६	२०	कुवराक्षी....	१४	५५	कल. {	१५	४१
कुणि. {	१४	१२८	कुञ्ज ...	१६	४८		{ १७	१
	{ १६	४८	कुमार. {	१	४३	कुलक. {	१४	३९
कुंठ	२१	१७		{ ७	१२		{ १४	१५५
कुड... {	१६	३६	कुमारक	१४	२५		{ २०	५
	{ १९	३१	कुमारी. {	१४	७३	कुलटा	१६	१०
कुंडल	१६	१०३		{ १६	८	कुलथिका.	१९	१०२
कुंडलिन्	८	७	कुमुद. {	३	३	कुलपालिका.	१६	७
कुटी ...	१७	४६		{ १०	३७	कुलश्रेष्ठिन्	२०	५
कुतप	१७	३१	कुमुदप्राय ..	११	९	कुलसंभव...	१७	२
कुतक	७	३१	कुमुदवाधव.	३	१३	कुलखी ...	१६	७
कुतप	१९	३३	कुमुदिका....	१४	४०	कुलाय	१५	३७

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
कुलाल	२०	६	कुलति	७	३०	कृतपुत्र	१८	६८
कुलालौ	१९	१०२	कुस्तुबुद्ध	१९	३८	कृतमाल	१४	२४
कुलिश	१	५०	कहना	१७	५३	कृतमन्त्र	२१	४
कली	१४	९४	कुहर	८	१	कृतलक्षण	२१	४०
कुलीन	१७	३	कुहू	८	०	कृतसापत्निका	१६	७
कुलार	१०	२१	कुहुद	२१	१४	कृतहस्त	१८	६८
कुन्माप	{ १९ १८ २५ २१		कूट	{ १४ ४ १५ ८२ २३ ३७		कृतांत	{ १ ६१ २३ ६४	
कुन्मापाभिपुत्र	१९	३९	कूटयत्र	२०	२६	कृताभिषेका	१६	५
कुल्य	१६	६८	कूटशालमालि	१४	४७	कृतिन्	{ १७ ६ २१ ४	
कुल्या	१०	३४	कूटस्थ	२१	७३	कृत्	२१	१०३
कुमल	{ १४ ३६ २५ ४०		कूप	१०	२६	कृत्ति	१७	४७
कुमलय	१०	३७	कूपक	{ १० १० १० १२ १६ ७२		कृतिगासस्	१	३०
कुमाद	२१	३७	कूपर	१८	५७	कृत्या	२३	१५८
कुविद	२०	६	कूर्च	१६	९०	कृत्रिमधूपक	१९	१२८
कुत्रेणी	१०	१६	कचशीष	१४	१४२	कृत्त	२१	६५
कुश	{ १४ १६६ २३ २१६		कूर्चिका	१९	४४	कृपण	२१	४८
कुशल	{ ४ २९ २१ ४ २३ २०४		कूर्दन	७	३३	कृपा	७	१८
कुशी	१९	९९	कूर्पर	१६	८०	कृपाण	१८	८९
कुशीलय	२०	१२	कूर्पासक	१६	११८	कृपाणी	२०	३४
कुशेशय	१०	४०	कूर्म	१०	२१	कृपाटु	२१	१५
कुष्ठ	{ १४ १२६ १६ ५४ २५ ३४		कूल	१७	७	कृपीटयोनि	१	५६
कुसीद	१९	४	कूर्मांड	१४	१५५	कृमि	१५	१३
कुसीदिफ	१९	५	कृष्ण	१५	१९	कृमिकोशीत्य	१६	१११
कुसुम	१४	१७	कृत्लास	१५	१२	कृमिज	१६	१२६
कुसुमांजन	१९	१०३	कृत्त्राफ	१५	१७	कृश	२३	६१
कुसुमेपु	१	२७	कृत्ताटिका	१६	८८	कृशानु	१	५७
कुसुभ	{ १९ १०६ २३ १३६		कृत्त	{ ९ ४ १७ ५२		कृशानुरेतस्	१	३५
			कृत	२३	७०	कृशाश्विन्	२०	१२
						कृपक	१९	१०
						कृति	१९	२

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
कृषिक	१९	६	केशव....	{ १	१८	कोटि.	{ १८	१४
कृषीवल	१९	६		{ १६	४५		{ १८	९३
कृष्ट	१९	८	केशवेश	१६	९७	कोटिवर्षा.	{ २३	३८
कृष्टि	१७	६	केशानुनाम.	१८	१२२		१४	१३३
	{ १	१८	केशिक	१६	४५	काटिश	१९	१२
कृष्ण.	{ ४	२२	केशिन्	१६	४५	कोट्ट	२५	१८
	{ ५	१४	केशिनी	१४	१२६	कोठ	१६	५४
	{ १९	३६		{ १०	४३	कोण.	{ ७	६
कृष्णशकफल. १४	६७		केसर.	{ १४	२५		{ १८	९३
कृष्णफला १४	९६			{ १४	६४	कोदड	१८	८३
कृष्णभेदी ५४	८६			{ १४	६५	कोद्रव	१९	१६
कृष्णला	१४	९८	केसरिन्.	१५	१	कोप	७	२६
कृष्णलोहित ५	१६		केठभजित्.	१	२२	कोपना	१६	४
कृष्णवर्मन् १	५७		केडर्य	१८	४०	कोपिन्	२१	३२
कृष्णवृन्ता. ३४	५५		केतव....	{ ७	३०	कोमल	२१	७८
कृष्णसार....	१५	१०		{ २०	४५	कोयष्टिक.	१५	३५
कृष्णा	१४	९६	केदारक ...	१९	११	कोरक . .	१४	१६
कृष्णका. १९	१९		केदारिक ...	१९	११	कोरंगी	१४	१२५
केकर	१६	८९	केदार्य ...	१९	११	कोरूप	१९	१६
केका	१५	३१	केरव	१०	३७		{ १०	११
कोकिन्	१५	३०	केलास	१०	७४	कोल.	{ १४	३६
केतकी	१४	१७०	केवत	१०	१५		{ १५	२
केतन....	{ १८	९९	केवर्तीमुस्तक १४	१३२		कोकल.	{ १६	१२९
	{ २३	११४	केवल्य	५	६		{ १९	३६
केत	२३	६०	कैशिक	१६	९६	कोलदल.	१४	१३०
केदर	२५	२०	कैश्य	१६	९६	कोलवक.	७	७
केदार	१९	११	कोक.	{ १५	७	कोलाली. १४	९७	
केनिपातक. १०	१३			{ १५	२२	कोला	१४	९७
केयूर	१६	१०७	कोकनद	१०	४२	कोलाहल.	६	२५
केलि	७	३२	कोकनदच्छावि. ५	१५	१५	कोलि	१४	३६
केवल	२३	२०३	कोकिल	१५	४९	कोविद	१७	५
केश ..	१६	९५	कोकिलाक्ष १८	१०४		कोविदार १४	२२	
केशपर्णी ...	१४	८९	काटर	१४	१३		{ १५	३७
केशपाशी....	१६	९७	कोटवी	१६	१७	क्रोश.	{ १९	३१
							{ २३	३१५

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
काशफल	१६	१३	कथन	१८	११९	कोट्ट	१५	५
कोशातकी	२३	८	कदन	{ १८	१०७	कोट्टवित्रा	१४	९३
कोष्ठ	२३	४०		{ २३	१२३	कोट्टी	१४	११०
कोष्ण	३	३५	कदित	७	३५	कोच	१५	२२
कोट्टिक	२३	१७	कम	१७	४०	कोचदारण	१	४३
कोक्षेयक	१८	८९	कमुक	{ १४	४१	कुम	२२	१०
कोटतक्ष	२०	९		{ १४	१६९	कुमय	१६	१०
कोटिक	२०	१४	कमेलक	१९	७५	कुत्र	२१	१०५
कोणप	१	६२	कयनिकयिक	१९	७८	कुत्राक्ष	१६	६०
कोतुक	७	३१	कयिक	१९	७९	कुशित	२१	९८
कोतुहल	७	३१	कय्य	१९	८१	कुष्ट	{ ६	१९
कोद्रोण	१९	८	कय्य	१६	६३		{ २१	९८
कोत्ति	१४	१२०	कय्यात्	१	६२	कृतिक	१४	१०९
कोतिक	१८	७०	कय्याद	१	६२	कृतिकिक	१४	९४
कोपीन	२३	१२२	कय्यिक	१९	७९	कृबि	{ १६	२९
कोमुदी	३	१६	कय्या	{ ५	२		{ २३	२१३
कोमोदकी	१	३०	कय्यान्त	{ २३	१५७	केश	२२	२९
कोलटिनेय	१६	२७		२१	१८	कोम	१६	६५
कोलटेय	{ १६	२६	कीडा	{ ७	३२	कण	{ ६	२४
	{ १६	२७		{ ७	३३		{ २०	८
कोलटेर	१६	२६	कुच	१५	२२	कणन	६	२४
कोलीन	२३	११६	कुच	१६	२२	कयित	२२	९५
कोलेय	२०	२१	कुघ	७	२६	कण	६	२४
कोशिक	{ १४	३४	कुष्ट	७	३५	क्षण	{ ४	११
	{ २३	१०		{ २१	४७		{ ७	३८
कोशिय	१६	१११	कूर	{ २१	७६	क्षणदा	{ २३	४७
कोस्तुभ	१	३०		{ २३	१९१		४	४
कफच	२०	३५	कृतव्य	१९	८१	क्षणन	१८	११४
कफर	{ १४	७७	कृत्य	१९	८१	क्षणप्रभा	३	९
	{ १५	१९	कूट	{ १५	२	क्षतज	१६	६४
कतु	१७	१३		{ १६	७७	क्षतप्रत	१७	५५
कतुधसि	१	३६	कूष	७	२६	क्षत्	{ १८	५९
कतुभन्	१	९	कूषन	२१	३०		{ २०	३
			कूषयुग	११	१८		{ २३	६३

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
क्षत्रिय.	{	१७ २	क्षीवन्	२१	२३	क्षेत्र.	{	१९ ११
		१८ १		{	१० ४			२३ १८०
क्षत्रिया	१६	१४	क्षीर.	{	१९ ५१	क्षेत्रज्ञ	{	४ २९
क्षत्रियो	१६	१५			२३ १८२			२३ ३३
क्षत्रियाणी.	१६	१४	क्षीरविकृति.	१९	४४	क्षेत्राजीव....	१९	६
क्षपा	४	४	क्षीरविहारि.	१४	११०	क्षेपण	२२	११
क्षपाकर	३	१५	क्षीरशुक्ला....	१४	११०	क्षेपर्णा	१०	१३
क्षम	२३	१४२	क्षीरावी	१४	१००	क्षेपिष्ठ	२१	१११
क्षमा	२३	१४२	क्षीरिका	१४	४५	क्षेम.	{	४ ०६
क्षमित् २१	३१		क्षीरोद	१०	२			१४ १२८
क्षमिन् २१	३१		क्षीरोदतनया.	१	२९			२५ ३४
क्षन्त २१	३१		क्षुत १६	५२		क्षोणि ११	२	
	{	४ २२	क्षत १६	५२		क्षोद १८	९९	
		१६ ५१	क्षताभिजनन.	१९	१९	क्षोदिष्ठ २१	१११	
क्षय.	{	१८ १९	क्षुद्र.	{	२१ ४८	क्षोद्र. १९	१०७
		२२ ७			२१ ११२	क्षौम	{	१२ १२
		२३ १४५	क्षुद्रघटिका.	१६	११०			१६ ११३
क्षव.	{	१६ ५२	क्षुद्रशस्त्र १०	२३		क्षणुत २१	९१	
		१९ १९	क्षुद्रा.	{	१४ ९४	क्षमा ११	३	
क्षत्र्यु १६	५२				१४ १०७	क्षमाभृत्.	{	१३ १
क्षांत २१	९७		क्षुद्रांडमत्स्यसघात.	१०	११९			१८ १
क्षांति ७	२४		क्षुब्ध १९	५४		क्ष्वेड ... ८	९	
क्षार १९	९९		क्षुधित २१	२०		क्ष्वेडा.	{	१८ १०७
क्षारक १४	१६		क्षुप १४	८				२३ ४३
क्षारमृत्तिका ११	४		क्षुमा १९	२०		क्ष्वेडित २५	३४	
क्षारित २१	४३		क्षुर.	{	१८ १०४	ख.	{	३ १
क्षिति.	{	११ २			२५ २०			२३ १८
		२३ ७०	क्षरक १४	४०				२५ २२
क्षिपा २२	११		क्षप्र २५	२०		खग.	{	१५ ३२
क्षिप्त २१	८७		क्षरिन् २०	१०				१८ ८६
क्षिप्तु २१	३०		क्षुब्धक.	{	२० १६	खगेश्वर ... १	३१	
क्षिप्र.	{	१ ६८			२१ ६१	खजाका १९	३४	
		२१ ११२			२३ १०			
क्षिया २२	७							

शब्द	वग	श्लोक	शब्द	वग	श्लोक	शब्द	वग	श्लोक
सज	१६	४९	खली	१८	४९	गडुल	१६	४८
खजन	१५	१५	खलु	२३	२५६	गण	१५ १८ २३	४० ८१ ४६
सजरीट	१५	१५	खलेदाक	१९	१५			
खट	२५	१७	खल्या	२२	४२			
सट्टा	१६	१३८	खात	१०	२७	गणक	१८	१४
सङ्ग	१५ १८	४ ८९	खादित	२१	११०	गणदेवता	१९	१०
			खारी	१९	८८	गणनीय	२१	६४
खद्दिम्	१५	४	खारीक	१९	१०	गणरात्रि	४	६
खट	३ १०	१६ ४२	खारीगण	१९	१०	गणरूप	१७	८०
			खिल	११	५	गणहासक	१४	१२८
खलपरशु	१	३०	खुर	१४ १८	१३० ४९	गणाधिप	१	४१
खडविकार	१९	४३				गणिका	१४ १६	७१ १९
खदिर	१४	४९	खुरणस्	१५	४७	गणिकारिका	१४	६६
खदिरा	१४	१४१	खुरणस	१६	४७	गणित	२१	६४
खद्योत	१५	२८	खेट	२१	५४	गणेष	२१	६४
खानि	१३	७	खेय	१०	२९	गड	१६ १८	९० २७
खानिन्न	१९	१२	खेला	७	३३			
खपुर	१४	१६९	खोड	१६	४९	गडक	१५	४
खा	३ १९	३५ ७७	रघात	२१	९	गडकारी	१४	१४१
			रघातगर्हण	२१	९३	गडशैल	१३	६
खरणस्	१५	४६	रघाति	२०	९	गडाली	१४	१५९
खरणस	१६	४६	ग			गडौर	१४	१५७
परपुष्पा	१४	१३९				गडपद	१०	२२
खरमजरी	१४	८९	गगन	२	१	गडपदी	१०	२४
खराश्या	१४	१११	गगा	१०	३१	गडूपा	२५	१०
खर्ज	१६	५३	गगाधर	१	३६	गतनासिक	१६	४६
खर्जट	१४ १९	१७० ९६	गज	१८	३४	गद	१६	५१
			गजता	१८	३६	गद्य	२५	३१
खर्जूती	१४	१७०	गजयवनी	१८	४३	गत्री	१८	५०
खर्ब	१६ २१	४६ ७०	गजभक्ष्या	१४	१२३	गध	५	७
			गमानन	१	४१	गयुष्टी	१४	१२३
खल	२१	४७	गजा	१२	८	गघन	२३	११५
खल्प	२१	१७	गक	१०	१०	गघनाम्ली	१४	११४
खलिनी	२०	४०	गदू	२	१८			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
गंधफली.	{ १४	५६	गरुडायज.	३	३२	गवाक्षी ...	१४	१५६
	{ १४	६४	गरुत् १५	३६	गवीश्वर	२९	५८
गंधमादन....	१३	३	गरुत्मत.	{ १	३१	गंधेधु	१९	२५
गंधमूली	१४	१५४		{ १५	३४	गवेद्युका	१९	२५
गंधरस	१९	१०४		{ २३	५८	गवेयणा	१७	३२
	{ १	११	गर्गरी	१९	७४	गवेयित	२१	१०५
	{ १	५५	गर्जित.	{ ३	८	गव्य	१९	५०
गंधर्व.	{ १५	११		{ १८	३६	गव्या	१९	६०
	{ १८	४४	गर्त ...	८	२	गव्युति	११	१८
	{ २३	१३३	गर्दभ	२९	७७	गहन.	{ १४	१
गंधर्वहस्तक.	१४	५०	भर्दभांड	१४	४३		{ २१	८५
गंधवह	१	६५	गर्हन ...	२१	२२	गहर.	{ १३	६
गंधवहा	१६	८९	गर्भ.	{ १६	३९		{ २३	१८३
गंधवाह	१	६५		{ २३	१३५	गांगेय.	{ १९	९४
गंधसार	१६	१३१	गर्भक	१६	१३५		{ २३	१५५
गंधाश्मन्.	१९	१०२	गर्भागार ...	१२	८	गांगेक्षी....	१४	११७
गंधिक	१९	१०२	गर्भाशय	१६	३८	गाढ	१	७०
गंधिनी	१४	१२३	गर्भिणी	१६	२२	गाणिवय	१६	२२
गंधोत्तमा....	२०	४०	गर्भोपघातिनी.१९	६९	६९	गाण्डिव	१८	८४
गंधोली ...	१५	२७	गर्भुत् ...	१४	१६५	गाण्डिव	१८	८४
गभास्ति	३	३३	गर्व	७	२२	गात्र.	{ १६	७०
गभीर	१०	१५	गर्वित ...	२३	१०३		{ १८	४०
गम ...	१८	९५	गर्हण	६	१३	गात्रानुलेपनी.	१६	१३३
गमन	१८	९५	गर्ह्य	२१	५४	गान	६	२५
गंभारी	१४	३५	गर्ह्यगादिन्.	२१	३७	गांधार	७	१
गंभीर	१०	१५	गल	१६	८८	गायत्री.	{ १४	४९
गम्य	२१	९२	गलकंबल.	१९	६३		{ १७	२२
गरण	२२	३७	गलातिका.	१९	३१	गारुत्मत	१९	९२
गरल	८	९	गलित	२१	१०४	गार्भिण	१६	२२
गरा	१४	६९	गलोद्देश ..	१८	४८	गार्हपत्य	१७	१९
गरिष्ठ ...	२१	११२	गल्या	२२	४३	गालव	१४	३३
गरी ...	१४	६९	गयय ..	१५	११	गिर	६	१
गरुड	१	३१	गवल	१९	१००	गिरे	{ १३	१
गरुडध्वज.	१	१९	गवाक्ष	१२	९		{ २२	११

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
गिरिकर्णी	१४	१०४	गुद	१६	७३	गृध्रसी	२५	१०
गिरिका	१५	१२	गुद्र	१४	१६२	गृष्टि	१४	१५१
गिरिज	१९	१०४	गुदा	{ १४	५५	गृह	{ १२	४
गिरिजा	१	४०		{ १४	१६०		{ १२	५
गिरिजामल	१९	१००	गुत	{ २१	८९		{ ३	२३९
गिरिमलिका	१४	६६		{ २१	१०६	गृहगोधिका	१५	१२
गिरिश	१	३३	गृहपाद	२३	१६७	गृहपति	१८	१५
गिरीश	१	३३	गृप्ति	२२	७४	गृह्यालु	२१	२७
गिलित	२१	११०	गुरण	२२	११	गृह्यायुण	२५	३०
गीत	६	२५	गुघ	{ ३	२४	गृहागत	१७	३४
गीर्ण	२१	११०		{ १७	७	गृहाराम	१४	१
गीर्णि	२२	११		{ २३	१६२	गृहावप्रहणी	१२	१३
गीर्वाण	१	९	गुर्विणी	१६	२२	गृहिन	१७	३
गीष्पति	३	२४	गुफ	१६	७२	गृह्यरु	{ १५	४३
गुग्गुलु	१४	३४	गुल्फ	{ १४	९		{ २१	१६
गुच्छ	{ १६	१०५		{ १८	८१		गेंदुक	१६
	{ १९	२१		{ २३	१४९	गह	१९	४
गुच्छक	१४	१६	गुल्मिनी	१४	९	गरिक	{ १४	८
गुच्छार्ध	१६	१०५	गुगारु	१४	१६९		{ २९	१२
गुजा	१४	९८	गुह	१	६२	गैरय	१९	१०४
गुड	२३	४२	गुर्ध	{ १३	६	गो	{ १९	६०
गुटपुष्प	१४	२७		{ १४	९३		{ १९	६६
गुडफल	१४	२८	गुग्ध	२३	१५४		{ २३	२५
गुडा	१४	१०५	गुह्य	१	११	गोकटक	१४	९९
गुडूची	१४	८२	गुह्य	१	७१	गोकण	{ १५	१०
गुण	{ ४	२९	गुह्येश्वर	२१	८९		{ १६	८३
	{ १८	१९	गुड	८	७	गोत्रणी	१४	८४
	{ १८	८५	गुडपाद	१८	१३	गोकुल	१९	५८
	{ १९	२८	गुडपुष्प	१६	६८	गोशक	१४	९९
	{ २०	२७	गुग्	२१	९६	गोचर	५	८
गुह्यक्षर	{ २३	४७	गुजन	१४	१४८	गोलिहा	१४	११९
	१०	१२	गुत्र	२१	२२	गोह्या	१४	१५६
	२१	८८	गुभ्र	१५	५१	गोट	२५	१८
गुणित	२१	८८						
गुठित	२१	८९						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
गोत्र....	{	१३	१	गोभिन्	... १९	५८	गौरी.	{ १ ३८	
		१७	१	गोरस	... १९	५३	{ १६ ८		
		२३	१८०	गोर्द	... १६	६५	गौष्टीन ... ११	१३	
गोत्रभिद् ...	१	४५	गोल	... २५	२०	ग्रंथ .. २३	१७९		
गोत्रा.	{	११	३	गोलक	... १६	२६	ग्रंथि १४	१६२	
		१९	६०	गोला	. १९	१०८	ग्रंथिक १९	११०	
गोदारण	१९	१८	गोलाह	... १४	३९	ग्रथित २१	८६		
गोदुह्.	{	१९	५७	गोलोमी.	{	१४	१०२	ग्रंथिपर्ण १४	१३२
		२३	१३०			१४	१५९	ग्रंथिल.	{ १४ ३७
१९	५८	१९	१११			१४	७७		
गोधन	१९	५८	गोवदनी	१४	५५	ग्रस्त.	{ ६ २०		
गोघा	१८	८४	गोविड्	१९	५०	{ २१ १११			
गोघापदी....	१४	११९	गोविद.	{	१	१९	ग्रह.	{ ४ ९	
गोघी	१६	९२			२३	९१			२२
गोघिका	१०	२२	गोशाल	२५	४०	२३	२३७		
गोघिकारमज.	१५	६	गोशीर्ष	१६	१३१	ग्रहणीरज्ज्.	१६	५५	
गोधूम	१९	१८	गोष्ठ	११	१३	ग्रहपाति	३	३०	
गोनर्द	१४	१३२	गोष्ठपाति	२३	१३०	ग्रहीत् ...	२१	२७	
गोनस	८	४	गोष्ठी	१७	१५	ग्राम.	{ १२ १९		
गोण.	{	१८	७	गोष्ठीन	१४	१३	{ २३ १४१		
		१९	५७	गोष्पद	२३	९४	ग्रामणी ...	२३	४९
२३	१३०	गोसंख्य	१९	५७	ग्रामतक्ष	२०	९		
गोपाति	१९	६२	गोस्तन	१६	१०५	ग्रामता	२२	४३	
गोपरस	१९	१०४	गोस्तनी	१४	१०७	ग्रामाधीन.	२०	९	
गोपानसी....	१२	११	गोस्थानक.	११	१३	ग्रामांत	१२	२०	
गोपायित	२१	१०६	गौतम ...	१	१५	ग्रामीणा	१४	९४	
गोपाल	१९	५७	गौधार	१५	६	ग्राम्य	६	१९	
गोपी	१४	११२	गौधेय ...	१५	६	ग्राम्यधर्म.	१७	५७	
गोपुर.	{	१२	१६	गौधेर	१५	६	ग्रावन्.	{ १३ १	
		१४	१३२	गौर.	{ ५ १३	ग्रास			१९
२३	१८२	गौर.	{ ५ १४	२३	१८९				
गोप्यक ...	२०	१७	गौरय ...	१७	३४	ग्राह.	{ १० २१		
गोमत	१९	५८				{ २२ ८			
गोमय	१९	५०							
गामायु	१५	५							

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
आहिन्	१४	२१	घातुक	{ २१	२८	चक्रकारु	१४	१२९
आवा	१६	८८		{ २१	४७	चक्रपाणि	१	२०
आष्म	४	१८	घास	१४	१६७	चक्रमर्दक	१४	१४७
अत्रेयेक	१६	१०४	घुटिका	१६	७२	चक्रयान	१८	५१
ग्लस्त	२१	१११	घुण	२५	१८	चक्रला	१४	१६०
ग्लह	२०	४५	घूर्णित	२१	३२	चक्रवर्तिन्	१८	२
ग्लान	१६	५८	घृणा	{ ७	१८	चक्रवर्तिनी	१४	१५३
ग्लान्नु	१६	५८		{ २२	३२	चक्रवाक	१५	२२
ग्लौ	३	१४		{ २३	५१	चक्रवाल	{ ३	६
			घृणि	३	३३		{ १३	६५
घट	१९	३२	घृत	{ १९	५२	चक्रांग	१५	२३
घटना	१८	१०७	घृष्टि	{ २३	७६	चक्रांगी	१८	८६
घटा	१८	१०७	घाटक	१५	२	चक्रिन्	८	७
घटीयत्र	२०	२७	घोणा	१८	४३	चक्रिवत्	१९	७७
घटा	१४	३९	घोणिन्	१६	८९	चक्ष अवस्	८	७
घटापथ	११	१८	घोंटा	{ १५	२	चक्षुष	१६	९३
घटापाटलि	१४	३९		{ १४	३७	चक्षुष्या	१९	१००
घटाखा	१४	१०७	घोर	{ १४	१६९	चचल	२१	७५
			घोष	७	२०	चचला	३	९
			घोषक	१२	२०	चचु	{ १४	५१
			घोषणा	१४	११७		{ १५	३६
घन ..	{ ३	७	घ्राण	६	१३	चटक	१८	११
	{ ७	४	घ्राणतर्पण	{ १६	८९	चटका	१५	१८
	{ ७	९		{ २१	९०	चाटिकाशिरस्	१०	११०
	{ १८	९१	घ्रात	{ २१	९०	चणक	१९	१८
	{ २१	६६	च	{ २३	२४२	चण	२१	३२
	{ २३	११०	चकोर	{ २४	५	चण्डा	१४	१०८
घनरस	१०	५		{ १५	३५	चण्डांगु	३	३१
घनसार	१६	१३०		{ १	२९	चण्डांत	१४	७६
घनाघन	२३	११०		{ १०	७	चण्डांतक	१६	११९
घम	{ ७	३३	चक्र	{ १५	२२	चटाट	{ २०	४
	{ २३	१८२		{ १८	५६		{ २०	१९
घमर	२१	२०		{ १८	७८	चटाटाङ्की	२०	६२
घम	४	२		{ २३	१८१			
घाटा	१६	८८						
घाटि	१८	९७						
घास	१८	११५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
चटिका	१	३९	चपनी	२५	१०	चलाचल.	२१	७४
चतु.शाल.	१२	६	चम् ...	{ १८	७८	चलित.	{ १८	९६
चतुर	२०	१९		{ १८	८१		{ २१	८७
चतुरगुल.	१४	२३	चमूह	१५	९	चयिका	१४	९८
चतुरानन.	१	१६	चपक	१४	६३	चय्य ...	१४	९८
चतुर्भद्र	१७	५८	चय ...	{ १२	३	चपक ...	२०	४३
चतुर्भज	१	२०		{ १५	४०	चपाल	१७	१८
चतुर्वर्ग	१७	५८	चर....	{ १८	१३	चाक्रिक	१८	९७
चतुष्पा .	११	१७		{ २१	७४	चांगोरी	१४	१४०
चतुर्हावणी	१९	६८	चरक	२५	३३	चाटकर	१५	१८
चत्वर. { १३	१३		चरण	१६	७१	चाडल	२०	२०
	{ १७	१८	चाण युध	१५	१७	चांडालिका.	२०	३२
चन	२४	३	चाम	२१	८१	चातक	१५	१७
चदन ..	१६	१३१	चरमक्षमाभूत	१३	०	चतुर्वर्ण्य....	१७	२
चंद्र ..	{ ३	१३	चराचर ..	२१	७४	चाप	१८	८३
	{ १४	१८६	चरिणु	०	७४	चामर	१८	३१
	{ २३	१८२	चरु	१७	२२	चामीकर ...	१९	४५
चद्रक	१५	३१	चर्चरी	२५	१०	चापेय. { १४	६३	
चद्रभागा	१०	३४	चर्चा { ५	२			{ १४	६५
चद्रमस् ...	३	१३		{ १६	१२३	चार. { १८	१३	
चंद्रशाला	१४	१२५	चर्मन् { १७	४७			{ २२	१४
चद्रोत्तर ...	१	३२	चर्मकषा	१४	१४३	चागटी ...	१४	१४६
चद्रपत्र	१६	१३०	चर्मकार	२०	७	चारण	२०	१२
चद्रहास ..	१८	८९	चर्मप्रमेदिका	२०	३५	चारु	०१	५२
चद्रिका ...	३	१६	चर्मप्रलेिका	२०	३३	चारिण्य ..	१६	१२२
चपल. { १	६८		चर्मिन् { १४	४६		चालनी	१९	२६
	{ १२	९९		{ १८	७१	चाप	१५	१६
	{ २१	४३	चर्मिन् { १८	७१		चिकित्सक.	१६	५७
चपला. { ३	९		चर्मिन् { १८	७१		चिकित्सा.	१६	५०
	{ १४	९६	चर्मिन् { १८	७१		चिकु. { १६	९५	
चपेट	१६	८४	चर्मिन् { १८	७१			{ २१	४६
चपा ..	११	१०	चर्मिन् { १८	७१		चिकण	१९	४६
चपाकेरु ...	१४	२२	चर्मिन् { १८	७१		चिकस	२५	३५
चपास ...	२५	३५	चर्मिन् { १८	७१				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
छल	१८	१०८	जघन्यज.	{ १६ ४३	जनश्राव	६ ७
छवि.	{	३ १७		{ २० १		जनार्दन	१ १९
	{	३ ३४		जगम २१ ७४	जनाश्रय	१२ ९
छाग	१९ ७६		जंगमेतर २१ ७३	जनि	४ ३०
छागी	१९ ७६		जंघा	... १६ ७२	जनी	{	१४ १५३
छात.	{	१६ ४४		जघाकीक	१८ ७३	{	१६ ९	
	{	२१ १०३		जंघाल १८ ७३	जनुस्	४ ३०
छात्र	१७ ११		{	१४ ११	जत्	... ४ ३०	
छादित	२१ ९८		जरा	{ १६ ९७	जंतुफल १४ २२	
छादस	१७ ६		{ २३ ३८		जन्प्न् ४ ३०	
छाया	... २३	१५७		जटाजूट १ ३७	जन्मिन् ४ ३०	
छित	२१ १०३		जटामासी	१४ १३४	जन्म.	{	१७ ५८
छिद्र	८ २		जाटिन् १४ ३२	{	१८ १०३	
छिद्रित	२१ ९९		जाटिला १४ १३४	{	२३ १५९	
छिन्न	२१ १०३		{	१६ ७७	जन्म्यु ४ ३०	
छिन्नरुहा	१४ ८२		जठर.	{ २१ ७६	जप १७ ४७	
छुरिका	... १८	९२		{ २३ १८९		जपापुष्प १४ ७६	
छेक	१५ ४३		जड.	{ ३ १९	जंपती १६ ३८	
छेदन	२२ ७		{ २१ ३८		जशाल १० ९	
	ज.			जडल १६ ४९	जंवीर.	{	१४ २४
जगत्.	{	११ ६		जतु १६ १२५	{	१४ ७९	
	{	२३ ८०		जतुक	... १९ ४०	जंबु १४ १९	
जगती.	{	११ ६		जतुका	... १५ २६	जंबुक.	{	१५ ५
	{	२३ ७१		जतुकृत १४ १५३	{	२३ ३	
जगत्प्राण	१	६५		जतूका १४ १५३	जंबू १४ १९	
जगर	१८ ६४		जत्रु १६ ७८	जभ १४ २४	
जगल	२० ४२		जनक १६ ०८	जंभमेदिन्.	१ ४६	
जग्घ	२१ १११		जनगम २० १९	जंभल १४ २४	
जग्घि	... १९	५५		जनता	... २२ ४३	जभीर १४ २४	
जघन	१६ ७४		जनन.	{ ४ ३०	जय.	{	१४ ६६
जघनेफला.	१४	६१		{	१७ १	{	१८ ११०	
जघन्य.	{	२१ ८१		जननी १६ २९	{	२३ १२	
	{	२३ १५९		जनपद ११ ८	जयन २३ १२	
				जनयित्री.	१६ २९	जयंत १ ४६	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
जयती	१४	६५	जयनिका	१६	१२०	जार	१६	३५
जया	१४	६५	जहुननया	१०	३१	जाल	{ १० २३	{ १६ २००
जय्य	१८	७४	जागरा	२२	१९	जालक	१४	१६
जरण	१९	३६	जागरित	२१	३२	जालिका	२०	१४
जरत्	१५	८०	जागरूक	२१	३२	जाली	१४	११८
जरद्रव	१९	६१	जागर्ता	२२	१९	जाल्म	{ २० २१	{ १६ १७
जरा	१९	४१	जागुलिक	१०	११	जिघत्सु	२१	२०
जरायु	१६	२८	जाधिक	१८	७३	जिगी	१४	९०
जरायुज	२१	५०	जात	{ ४ २३	{ ३१ ८४	जितार	१८	७७
जल	१०	३	जातरप	१९	९५	जिन	१	१३
जलजतु	१०	२०	जातवेदस्	१	५६	जिष्ण	{ १ १८	{ ४५ ७७
जलधर	३	७	जातापत्या	१६	१६	जिह्व	{ २१ २३	{ ७१ १४१
जलनिधि	१०	२	जाति	{ ४ १४ २३	{ ३१ ७० ६८	जिह्वग	८	८
जलनिर्गम	१०	७	जाती	१४	१९	जिह्वा	१६	९१
जलनीली	१०	३८	जातीकोश	१६	१३२	जीन	१६	४२
जलपुष्प	२५	२०	जातीफल	१६	१३२	जीमूत	{ ३ १० २३	{ ७ ६९ ५८
जलमाय	११	१०	जातु	२४	४	जीरक	१९	३६
जलमुक्	३	७	जातुष	२०	२९	जीर्ण	१५	४२
जलम्याल	८	५	जातोक्ष	१९	६१	जीणरल	१५	११५
जलशायिन्	१	२३	जनु	१५	७०	जीर्ण	२०	९
जलशक्ति	१०	२३	जावाल	२०	११	जीव	{ ३ १८	{ २४ ११९
जलाधार	१०	२१	जामाठ	१६	३०	जीरक	{ १४ १४	{ ४४ १४३
जलाशय	{ १० १४	{ २५ १६४	जामि	२३	१४०	जीरजा	१५	३५
जलोच्छ्वास	१०	१०	जाबरा	१४	१९	जायन	{ १० १९	{ ३ १
जलास्सु	१०	२०	जावनद	१९	९५	जीवनी	१४	१४२
जलोका	१०	२२	जायक	१६	१०५			
जलपाक	२१	३६	जाया	१६	६			
जलित	२१	१०७	जायाजाय	२०	१२			
ज	{ १ १८	{ ६८ ७०	जायापती	१५	३८			
न	{ १८ २२	{ ४१ ३९	जायु	१५	५०			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
जीवनीया.	१४	१४२	ज्ञातृ	२१	३०	ज्ञातृक	१४	४०	
जीवनौषध	१८	१२०	ज्ञातेय	१६	३५	ज्ञिटी. {	१४	७४	
जीवंतिका	{	१४	८२	ज्ञान	५	६	} १४	७५	
		१४	८३	ज्ञानिन् ...	१८	१४		ज्ञिष्ठिका	१५
जीवन्ती.	१४	१४२	ज्यः.... {	११	२	ज्ञीषका	१५	२८	
जीवा	१४	१४२		१८	८५	ज्ञ.			
जीवातु	१८	१२०	ज्याघातवारण.	१८	८४	ज्ञंक. {	२०	३४	
जीवातक.	२०	१४	ज्यानि	२२	९	} २५	३३		
जीविका.	१९	१	ज्यायस् {	१६	४३		ज्ञिष्टम	१५	३५
जीवितकाल.	१८	१२०		२३	२३६	ज्ञीका	२५	७	
जुगुप्सा	६	३	ज्येष्ठ. {	४	१६	ज्ञुटुक	१०	५६	
जुग	१४	१३७		२३	४१	ज्ञ.			
जुहू	१७	२५	ज्योतिरिगण	१५	२८	ज्ञमर	२२	१४	
जूति	२२	३९	ज्योतिपिक	१८	१४	ज्ञमरु	७	८	
जूति	२२	३९	ज्योतिमती.	१४	१५०	ज्यन	१८	५२	
जूंभ	७	३५	ज्योतिस् ...	२३	२३१	जहु	१४	६०	
जूंभण	७	३५	ज्योत्स्ना	३	१६	जिडिम ...	७	८	
जेतृ.	{	१८	७४	ज्योत्स्नी ...	४	५	जिडीर	१९	१०५
		१८	७७	ज्वर. {	१६	५६	जिव	२२	१४
जेमन	१९	५६	२२		३९	जिम. {	१५	३८	
जेय	१८	७४	ज्वलन	१	५३		} २३	१३४	
जेत्र	१८	७४	ज्वाल ...	१	१६०	जिभा		१६	४१
जेवातक.	{	३	१४	ज्ञ.			जुंभुम	८	५
		२१	६	ज्ञज्ञावात.	१	६६	जुलि	१०	२४
		२३	११	ज्ञटामला.	१४	१२७	ज्ञ.		
जोगक ...	१६	१२६	ज्ञाटिति	२४	२	जका	७	६	
जोषम् ...	२३	२५२	ज्ञर	१३	५	ज्ञ.			
ज्ञ	१७	५	ज्ञर्षर	७	८	तक्र	१९	५३	
ज्ञापित	२१	९८	ज्ञक्षरी ...	२५	१०	तक्षक	२३	४	
ज्ञप्त ...	२१	९८	ज्ञष	१०	१७	तक्षन् ...	२०	९	
ज्ञाति	५	१	ज्ञषा	१४	११७	तट	१०	७	
ज्ञातिस् द्विंशत्.	१८	१५	ज्ञाटल	१४	३९	तादिनी ...	१०	३०	
ज्ञाति	१६	३४	ज्ञाटल ...	२५	३८	तटाग	१०	२८	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तडित्	३	९	तत्र	२३	१८४	तरपथ्य	१०	११
तडित्त्वत्	३	७	तत्रक	१६	११२	तरल	{ १६	१०२
तडक	२५	३३	तत्रिका	१४	८२		{ २१	७५
तडुल	१४	१०६	तद्दी	{ ७	३७	तरला	.. १९	५०
तडुलीय	१४	१३६		{ २३	१७६	तरस्	{ १	६७
तत	{ ७	४	तप	४	१९		{ १८	१०२
	{ २१	८६	तप क्लेशसह	१७	४३	तरस	१६	६३
ततस्	२४	३	तपन	{ ३	३१	तरस्विन्	{ १६	७३
तरकाल	१८	२९		{ ९	१		{ ३३	१२८
तस्व	७	९	तपनीय	१९	९४	तरि	१०	१०
तरपर	२१	९	तपस्	{ ४	१५	तरु	१४	५
तथा	२४	९		{ २३	२३३	तरुण	१६	४२
तथागत	१	१३	तपस्य	४	१५	तरुणी	१६	८
तथ्य	६	२२	तपस्विन्	१७	४२	तर्क	५	३
तद्	२४	३	तपस्विनी	१४	१३४	तर्कविद्या	६	५
तदा	२४	२२	तम	३	२६	तर्कारी	१४	६५
तदाव	१८	२९	तमस्	{ ४	२९	तर्जनी	१६	८१
तदानीम्	२४	२२		{ ८	३	तर्णरु	१९	६१
तनय	... १६	२७		{ २३	२३२	तर्द	... १९	३४
तनु	{ १६	७१	तमाल	{ १४	६८	तर्षण	{ १७	१४
	{ २१	६१		{ २५	३३		{ १९	५६
	{ २१	६६	तमालपत्र	१६	१२३		{ २२	४
	{ २३	११३	तमिष	८	३	तर्भन्	१७	१९
तनुत्र	१८	६४	तमिषा	४	४	तर्ष	{ ७	२८
तन्	१६	७१	तमी	४	५		{ १९	५५
तनुकृत	२१	९९	तमोजुः	२३	८९	तल	{ १८	८४
तनूनपाद्	१	५६	तमोपह	२३	२३९		{ २३	२०२
तनुष	{ १५	३६	तरहु	११	१	तलिन	२३	१२०
	{ १६	९९	तरण	१०	५	तन्प	२३	१३१
तप्त	{ १६	१७	तरणिणी	१०	३०	तल्लज	४	२७
	{ २०	२८				तष्ट	२१	९९
तप्तुम	... १९	१७	तरणि	{ ३	३०	तस्कर	२०	२४
तप्तुमाय	{ १५	१३		{ १०	१०	ताडर	{ ७	१०
	{ २०	६		{ १४	७३		{ २५	३४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
तात	१६ २८	ताली.	{ १४ १२७		तिलक.	{ १४ ४०	
तांत्रिक	१८ १५		{ १४ १७०			{ १६ ४९	
तापस	१७ ४२	तालु १६ ९१			{ १६ ६५	
तापसतरु	१४ ४६	तावत्	... २३ २४७			{ १६ १२३	
तापिच्छ	१४ ६८	तिक्त ५ ९		तिलकालक.	१६ ४९	
तामरस	१० ४०	तिक्तक १४ १५५		तिलपर्णी	... १६ १३२	
तामलक्री	१४ १२७	तिक्तशाक.	१४ २५		तिलर्पिज १९ १९	
तामसी	४ ५	तिग्म ३ ३५		तिलपेज	... १९ १९	
तांबूलवल्ली.	१४	१२०	तिट्टुचंतचय.	६ २		तिलिरस	... ८ ५	
तांबूली	१४ १२०	तितल १९ २६		तिल्य १९ ७	
ताम्रक	१९ ९७	तितिक्षा	... ७ २४		तिल्व १४ ३३	
ताम्रकर्णी.	३	५	तितिक्षु २१ ३१		तिष्य.	{ ३ २२	
ताम्रकटुक.	२०	८	तित्तिरि १५ ३५		{ २३ १४७		
ताम्रचूड	१५ १७	तिथि ४ १		तिष्यफला.	१४ ५७	
तार.	{ ७ २	१६६	तिनिश १४ २६		तीक्ष्ण.	{ ३ ३५	
	{ २३	१६६	तितिडी १४ ४३			{ १९ ९८	
तारकजित.	१	४२	तितिटीक	... १९ ३५		{ २३ ५३		
तारका.	{ ३ २१		तितिटीक	... १९ ३५		तीक्ष्णगंधक.	१४ ३१	
	{ १६ ९२		तिट्टुक १४ ३८		तीर १० ७	
ताग	३ २१	तिट्टुकी २५ ८		तीर्थ.	{ १७ ५१	
ताकण्य	१६ ४०	तिमि	... १० १९		{ २३ ८६		
तादर्थ	{ १ ३१		तिमिगिल.	१० २०		तीत्र १ ७०	
	{ २३ १४५		तिमित २१ १०५		तीत्रवेदना.	९ ३	
तादर्थशैल	१९ १०२	तिमिर ८ ३		तु.	{ २३ २४३	
	{ ७ ९		तिरस्.	{ २३ २५७			{ २४ ५	
ताल.	{ १४ १६८		तिरस्.	{ २४ ६		{ २४ १५		
	{ १६ ८३		तिरस्कारीणी.	१६ १२०		तुग.	{ १४ २५	
	{ १९ १०३		तिरस्क्रिया.	७ २२		{ २१ ७०		
तालपत्र	१६ १०३	तिरीष्ट.	{ १४ ३३		तुंगी	... १४ १३९	
तालपर्णी	... १४	१२३		{ २५ ३०		तुच्छ	... २१ ५६	
तालमूलिका.	१४	११९	तिरोधान.	... ३ १३		तुंड १६ ८९	
तालवृतक	... १६	१४०	तिरोहित १८ ११२		तुंडिकेरी.	{ १४ ११६	
तालार्क १	२५	तिर्थच २१ ३४			{ १४ १३९	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
तुत्या	{ १४	९५	तृण	१८	८८	तेजित	२१	९१
	{ १४	१२५	तृणी	१८	८९	तेम	२०	२९
तुत्यांजन	१९	१०१	तृणीर	१८	१८	तेमन	१९	४४
तुद	१६	७७	तृद्	१४	४१	तजस	१९	९९
तुदपरिमृज	२०	१८	तृर्ण	१	६८	तेजसवर्तनी	२०	२३
तुदिन्	१६	४४	तृल	{ १४	४२	तैत्तिर	१५	४३
	{ १६	४४		{ १९	१०६	तैलपर्णिक	१६	१३१
तुदिम	{ १६	६१	तृलिका	२०	३३	तैलपायिका	१५	२६
	{ १६	४४	तृवर	२३	१६५	तैत्रपाता	२५	६
तुदिल	{ १६	६१	तृष्णीशील	२१	३९	तैलान	१९	७
तुध	१४	१०७	तृष्णीक	२१	३९	तैय	४	१५
तुधवाय	२०	६	तृष्णीकम्	२	९	ताङ्	१६	२८
तुमुळ	१८	१०६	तृष्णीम्	२४	९	तोकक	१५	१७
तुनी	१४	१५६	तृण	१४	१६७	तोकम	१९	१६
तुण	१८	४३	तृणद्रुम	१४	१७०	तोटक	२५	३०
तुण	१८	४३	तृणधान्य	१९	२५	तोत्र	{ १८	४१
तुणम	१८	४३	तृणध्वज	१४	१६०		{ १९	१२
तुणगदहन	१	७४	तृणराज	१४	१६८	तोदन	१९	१२
तुरासाह	१	४७	तृणशूय	१४	६९	तोमर	१८	९३
तुदक	१६	१२८	तृण्या	१४	१६८	तोय	१०	४
तुल	१९	८७	तृतीयाष्टत	१९	९	तोयपिप्पली	१४	१११
तुलाकोटि	१६	१०९	तृतीय प्रष्टाति	१६	३९	तोरण	१२	१६
तुलामान	१९	८५	तृन	२१	१०३	तौर्यत्रिक्	७	१०
तुन्य	२०	३७	तृति	१९	५६	त्यक्त	२१	१०७
तुत्पपान	१९	५५	तृप्	{ ७	२७	त्याग	१७	२९
तुवर	५	९		{ १९	५५	त्रपा	७	२३
तुवीरिका	१४	१३१	तृष्णक	२१	२२	त्रपु	१९	१०५
	{ १४	५८	तृष्णा	२३	५१	त्रयी	६	३
तुष	{ १९	२०	तेज	१८	२०	त्रस	२१	७४
	{ ३	१८	तेजन	१४	१६१	त्रस	२०	२४
तुषार	{ ३	१९	तेजनक	१४	१६०	त्रस्त	२१	२६
	{ ३	१९	तेजनी	१४	८३			
तुषित	१	१०	तेजम्	{ १६	६२	त्राण	{ २१	१०९
तुषिन	३	१८		{ ५	३५		{ २०	८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
दत्त	१६	९१	दर्शिकर	८	८	दानगारि	१	९		
दत्तघामन	१४	४९	दर्श	{	४	८	दानशौठ	२१	६	
दत्तभाग	१८	४०			१७	४८	दात	{	१७	४३
दत्तशठ	{	१४	२१	दर्शन	२२	३१		{	२१	९७
		१४	२४	दल	१४	१४	दाति	२२	३	
दत्तशठा	१४	१४०	दव	२३	२०६	दापित	२१	४०		
दतावल	१८	३४	दविष्ट	२१	६९	दाम	१९	७३		
दतिका	१४	१४७	दवीयस्	२१	६९	दामनी	१९	७३		
दतिन्	१८	३४	दशन	१६	९१	दामोदर	१	१८		
ददशुक	८	८	दशनवासस्	१६	९०	दाभिक	२३	१७		
दध्र	२१	६१	दशवल	१	१४	दायाद	२३	८९		
दम	{	१८	२१	दशमिन्	१६	४३	दारद	८	११	
		२२	३	दशमीस्थ	७३	८७	दारा	१६	६	
दमय	२२	३	दशा	{	१६	१४४	दारित	२१	१००	
दमित	२१	९७			२३	२१६	दाघ	{	१४	१३
दमुनस्	१	५९	दशानीकिनी	१८	८१		{	१४	५३	
दपती	१६	३८	दस्यु	{	१८	११	दाघण	७	२०	
दभ	७	३०			२०	२४	दाघहादिदा	१४	१०२	
दभोली	१	५०	दस	१	५४	दाघहस्तक	१९	३४		
दम्य	१९	६२	दहन	१	५८	दावाघ ट	१५	१७		
दया	७	१८	दाक्षायणी	{	१	४०	दाविका	१४	११९	
दयालु	२१	१५			३	२१	दावी	१४	१०२	
दायित	२१	५३	दाक्षाय्य	१५	२१	दाव	२३	२०६		
दर	{	७	२१	दाडिम	{	१४	६४	दाविक	१०	३६
		२३	१८४			२५	४२	दाश	१०	१५
दरत्	२५	९	दाडिमपष्पक	१४	४९	दाशपुर	१४	१३१		
दारद	२१	४९	दाटपाता	२५	६	दास	२०	१७		
दरी	१३	६	दात	२१	१०३	दासी	१४	७४		
ददुर	१०	२४	दात्यूह	१५	२१	दासीसभ	२५	२७		
दर्पक	१	२६	दात्र	१७	१३	दासिय	२०	१७		
दर्पण	१६	१४०	दान	{	१७	२९	दासेर	२०	१७	
दभ	१४	१६६			१८	२०	दिबर	२१	३९	
दाव	१९	३४	दानय	१	१२	दिग्गज	३	४		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
दिग्घ.	{ १८	८८	दीप	... १६	१३८	दुर्जन २१	४७
	{ २१	९०	दीपक २३	११	दुर्दिन ३	१२
दित २१	१०३	दीप्ति ३	३४	दुर्नामक १६	५४
दितिस्तुत....	१	१२	दीप्य १४	१११	दुर्नामन् १०	२५
दिधिषु १६	२३	दीर्घ २१	६९	दुर्बल १६	४४
दिधिप् १६	२३	दीर्घकौशिका.१०	२५	२५	दुर्मनस् २१	८
दिन ४	२	दीर्घदर्शिन	१७	६	दुर्मल २१	३६
दिनांत	... ४	३	दीर्घपृष्ठ ८	८	दुर्वर्ण	... १९	९६
दिघ्.	{ १	६	दीर्घवृत्त १४	५७	दुर्विध २१	४९
	{ २	१	दीर्घसूत्र २१	१७	दुर्हृद् १८	१०
दिवस ४	२	दीर्घिका १०	२८	दुःश्रयन १	४७
दिवस्पाति ..	१	४५	दुःख.	{ १	३	दुष्कृत ४	२३
दिवा २४	६		{ २५	२३	दुष्ट २४	१९
दिवाकर ३	२८	दुःप्रवर्षिणी.	१४	११४	दुष्पत्र १४	१२८
दिवाकीर्ति { २०	१०		दुःषमम्	... २४	१४	दुहित	... १६	२८
	{ २०	१९	दुःस्पर्श १४	९१	दुत १८	१६
द्वित्रिषद् १	८	दुःस्पर्शा १४	९४	दुती १६	१७
द्विवाकस्.	{ १	७	दुकूल १६	१३१	दुत्य	... १८	१६
	{ २३	२२७	दुग्ध १९	५१	दुम २१	१०२
द्विव्यगायन.	२३	१३३	दुग्धिका १४	१००	दुर २१	६८
द्विव्येपादाक.	२१	५०	दुद्रुम १४	१४८	दुरदर्शिन १७	६
द्विश ३	१	दुद्रुम १४	१४८	दुर्वा १४	१५८
द्विश्य ३	२	दुंदुभि.	{ ७	६	दुर्बिका १६	६७
	{ ४	१		{ २३	१३६	दुष्य १६	१२०
द्विष्ट	{ ४	१८	दुर्ध्व	... ११	१६	दुष्या १८	४२
	{ २३	३५	दुरालभा १४	९२			
द्विष्टात १८	११६	दुरित ४	२३	दुः	{ १	७०
द्विष्टया २४	१०	दुरोदर	... २३	१७१	दुः	{ २१	७६
दीक्षात १७	२७	दुर्ग १८	१७		{ २३	४६
दीक्षित १७	८	दुर्गत २१	४९	दुःसंधि २१	७५
दीदित्रि १९	४८	दुर्गति ९	१	दुःति २५	१९
दीधिति ३	३३	दुर्गघ ५	१२	दुःव्य २१	८६
दीन २१	४९	दुर्गसूत्र २२	२५	दुः	{ १६	९३
दीनात	... २३	१४	दुर्गा १	३९		{ २३	२१७

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
दृष्ट	१३	४	देवी	७	१३	द्युम्न	१९	९०		
दृष्ट	१८	३०				१४	८३	द्युत	२०	४५
दृष्टरजस्	१६	८				१४	१३३	द्युतकारक	२०	४४
दृष्टांत	२३	६२	देवृ	१६	३२	द्युनकृत	२०	४४		
दृष्टि	१६	९३	देश	११	८	द्योस्	१	६		
		२३	३८	देशरूप	१८			२४	२	१
दृष्टेः	४	९	देह	१६	७१	द्योत	३	३४		
देव	१	७	देहली	१२	१३	द्वप्त	१९	५१		
		७	१३	देतेय	१	१२	द्वज	७	३३	
देवकीनदन	१	२१	दत्य	१	१२	द्वती			१४	८५
देवकुसुम	१६	१२५	देश्यगुह	३	२५		द्विगण	१८		१०२
देवखातक	१०	२७	दैत्या	१४	१२३	१९			९०	
देवखातबिल	१३	६	दैत्यारि	१	१९					२३
द्वचच्छद	१६	१०५	दैत्य	२३	१५३	२५	२२			
देवजगधक	१४	१६६	दैर्घ्य	१६	११४	द्वय	१९	९०		
देवतघ	१	५३	देव	४	२८			२३	१५४	
देवता	१	९				१७	१४			द्वय
देवताड	१४	६९				१७	५१	द्राक्	२४	
देवत्र	१७	५२	देश	१८	१४	द्राक्षा	१४	१०७		
देवदाघ	१४	५४	देशा	१६	२०	द्राघिष्ठ	२१	११२		
देवद्रघट्	२१	३४	देवत	१	९	द्राघिष्ठक	१४	१३५		
देवन	२०	४५	दोला			४	२१	द्रु	१४	५
		२३		११७	१४			९५	द्रुकिलिम	१४
देवसभ	१४	२५	दोष	१८	५३	द्रुघण	१८	९१		
देवभूय	१७	५२	दोषज्ञ	१७	५	द्रुणी	२५	९		
देवमातृक	११	१२	दोषा	२४	६	द्रुत	१	६८		
देवयज्ञ	१७	१४	दापिकदृग्	२१	४६			२१	८९	
देवयोनि	१	११	दोस्	१६	८०			२१	१००	
देवर	१६	३२	दोहद	७	२७	२४	२			
देवल	२०	११	दोहदयती	१६	२१	द्रुम	१४	५		
देवशिखिन्	२३	३५	द्युस्	२	२	द्रुमामय	१६	१२५		
देवसमा	१	५१	द्युति	३	१७	द्रुमारुण	१४	६०		
देवसायुष्य	१७	५२				३	३४	द्रुवय	१९	८५
देवाग्नीष ...	२०	११	द्युपि	२	३०	द्रुहिण	१	१४		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः		
शोण.	{	१५	१४	द्विरेफ १५	२९	घन्वयास ...	१४ ९१		
		१९	८८	द्विप् १८	११	घन्विन्	१८ ६९		
		२३	४९	द्विपत् १८	१०	घमन ...	१४ १६२		
शोणकाक....	१५	२१	द्विसत्पि १९	९	घमनि	१६ ६५			
शोणक्षीरा....	१९	७२	द्विहल्य १९	९	घमनी	१४ १३०			
शोणदुग्धा....	१९	७२	द्विहायनी....	१९	६८	घम्मिल्ल	१६ ९७			
शोणी.	{	१०	११	द्वीप १०	८	घर ...	१३ १		
		१४	९५	द्वीपवती १०	३०	घराणि ...	११ २		
शोहाचितन.	५	४	द्वीपिन् १५	१	घरा	११ २			
शौणिक	१९	१०	द्वेषण	... १८	१०	घरित्री	११ २			
द्वंद्व.	{	१५	३८	द्वेष्य २१	४५	धर्म.	{	४	२४
		२३	२१२	द्वेष १८	१८			६	३
द्वयातिग	१७	४५	द्वेष	... १८	५३	धर्मोचिता ...	७	२८		
द्व्याःस्य	१८	६	द्वैमातुर १	४१				धर्मध्वजिन्.	१७
द्व्याःस्थित....	१८	६	द्व्यष्ट १९	९७	धर्मपत्तन....	१९	३६		
द्व्यादशांगुल.	१६	८४	घट २५	१७	धर्मराज	{	१	१३	
द्व्यादशात्मन्.	३	२८	घत्ता १४	७७			१	६१	
द्व्यापर.	{	५	३	घन १९			९०	२३	३१
		२३	१६२	घनजय	... १	५६	धर्मसंहिता.	६	६	
द्व्यार् १२	१६	घनद	... १	७२	धर्मिणी	... १६	१०		
द्व्यार १२	१६	घनहरी १४	१२८	धर्म.	{	१६	३५	
द्व्यारपाल १८	६	घनाधिप १	७२			२३	२०६	
द्व्यिगुणाकृत.	१९	९	घनिन् २१	१०	धर्मल	... ५	१३		
द्व्यिज.	{	१५	३२	घनिष्ठा ३	२२	धर्मज्ञा	... १९	६७	
		२३	३०	घनु	... १४	३५	धर्मित्र १७	२३	
द्व्यिराज	३	१५	घनुपट १४	३५	घातकी.	{	१४	१२४	
द्व्यिजा १४	१२०	घनुर्धर १८	६९			२५	७	
द्व्यिजाति	१७	४	घनुष्माक्ष....	१८	६९	घात.	{	१३	८	
द्व्यिजिह्व २३	१३३	घनुस् १८	८३			२३	६५	
द्व्यितीया ...	१६	५	घन्य	... २१	३	घानुपुष्पिका.	१४	१२४		
द्व्यितीयाकृत	१९	९	घन्व १८	८३				घात १
द्व्यिप १८	३४	घन्वम् ११	५	घात्री २३	१७६		
द्व्यिपाद्य १८	२७				घाना १९	४७		
द्व्यिरद	... १८	३४								

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक		
धानुष्क	१८	६९	धुरीण	१९	६५	ध्रुव	३	२०		
धान्य	१९	२१	धुर्य	१९	६५				१४	८
धान्यत्वच्	१९	२२	धृ	२१	१०७				०१	७२
धान्याक	१९	३८	धृपायित .	२१	१०२	ध्रुवा	१४	११५		
धान्यांश ..	२३	४५	धृपित	२१	१०२				१७	२५
धान्याम्ल	१९	३९	धूमकेतु	२३	५८	ध्रुज	१८	९९		
धामन् ..	२३	१२४	धूमयोनि	३	७	ध्राजिनी	१८	७८		
धामार्गव	१४	८८	धूमल	५	१६	ध्रानि	६	२२		
		११७	धूम्या	२२	४३	ध्रानित	२१	९४		
धाव्या	१७	२२	धूम्याट	१५	१६	ध्रस्त	२१	१०४		
धारणा	१८	२६	धूम्र	५	१६	ध्राक्ष	१५	२०		
धारा	१८	४९	धूर्जटि	१	३५				२३	२२०
धाराधर .	३	७	धूर्त	१४	७७	ध्रान	६	२२		
धारासताप	३	११				२०	४४	ध्रात	८	३
धार्तराष्ट	१५	२४				२१	४७	न		
धावनी ...	१४	९३	धूर्वह	१९	६५	न	२४	११		
धिक्	०३	२४१	धूलि	१८	९८	नकुलेष्टा	१४	११५		
धिकृत	२१	३९	धूसर	५	१३	नक्तक	१६	११५		
		९४	धूति	२३	७४	नक्तम्	२४	६		
धिपण	३	२४	धृष्ट	२१	२५	नक्तमाल	१४	४७		
धिषणा	५	१	धृष्णञ्	२१	२५	नक्र	१०	२१		
धिष्णव	२३	१५५	धेनु	१९	७१	नक्षत्र	३	२१		
धी	५	१	धनुका	१८	३६	नक्षत्रमाला	१६	१०६		
धीद्रिय .	५	८				२३	१५	नक्षत्रेण	३	१५
धीमत्	१७	६	धनुष्या	१९	७२	नघ	१४	१३०		
धीमती	१६	१२	धनुक	१९	६०	नघ	१६	८३		
धीर	१७	१२४	धवत .	७	१				नघर	१६
		५	धोरण	१८	५८	नग	२३	१९		
धीर	१०	१५	धातकौशेय	१६	११३	नगरी	१२	१		
धीशक्ति	२२	२५	धौरितक	१८	४८	नगौकस्	१५	३३		
धीसावित्र	१८	४	धीरेय .	१९	६५	नम	२१	३९		
धुनी	१०	३०	ध्याम	१४	१६६	नमद्	२०	४२		
धुर	१८	५५				नमिका	१६	८		
धुधर ...	१९	६५								

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
नट.	{ १४	५६	नभरय	४	१७	नयोद्धृत	१९	५२
	{ २०	१२	नभस्वत्	१	६६	नव्य	२१	७७
नदन ...	७	१०	नमस्	२४	१८	नष्ट	१८	११२
नटी ...	१४	२९	नमासित	२१	१०१	नष्टचेष्टता.	७	३३
	{ १४	१६२	नमस्कारी.	१४	१४१	नष्टाग्नि	१७	५३
नड.	{ १४	१६५	नमस्या	१७	३५	नष्टेदुकला...	४	९
	{ २५	३३	नभस्थित ...	२१	१०१	नस्तित	१९	६३
नडप्राय	११	९	नमुचिसूदन.	१	४६	नस्योत ...	१९	६३
नडसंहति....	१४	१६८	नय	२२	९	नाहि	२४	११
नङ्गा	१४	१६८	नयन	१६	९३	ना	२४	११
नङ्गत्	११	९	नर	१६	१	नाक.	{ १	६
नङ्गुल	११	९	नरक	८	१	{ २	२	
नत	२१	७१	नरकातिक....	१	२२	{ २३	२	
नतनासिक.	१६	४५	नरवाहन	१	७२	नाकु	१०	१४
नद	२३	५७	नर्तक	७	११	नाकुली	१४	११४
नदी	१०	२९	नर्तकी	७	८	नाग.	{ ८	४
नदीमातृक.	११	१२	नर्तकी	७	८	{ १८	३४	
नदीसर्ज	१४	४५	नर्तन	७	१०	{ १९	१०५	
नम्री	२०	३१	नर्मदा	१०	३२	{ २१	५९	
ननाद	१६	२९	नर्मन्	७	३२	{ २३	२१	
	{ २३	२४९	नलकूचर....	१	७३	नागकेशर.	१४	६५
नगु.	{ २४	१४	नलद	१४	१६४	नागजिहिका.	१९	१०८
नंदक	१	३०	नलमीन	१०	१८	नागवला	१४	१५७
नंदन	१	४८	नलिन ...	१०	३९	नागर.	{ १९	३८
नदिक	१	४३	नलिनी	१०	३९	{ २३	१८८	
नदिकेश्वर....	१	४३	नली	१४	१२९	नागरंग	१४	३८
नदिवृक्ष	१४	१२८	नल्व	११	१८	नागलोक ...	८	१
नद्यावर्त	१२	१०	नव	२१	७७	नागवली	१४	१२०
नपुंसक	१६	३९	नवदल	१०	४३	नापसंभव....	१९	१०५
नपत्री	१६	२९	नवनीत	१९	५२	नागातिक....	१	३१
	{ २	१	नवनीत	१९	५२	नाव्य	७	१०
नभस्.	{ ४	१६	नवमालिका.	१४	७२	नाडिधम	२०	८
	{ २३	२३३	नवसूतिका.	१९	७१	नाडी.	{ १६	६५
नभसंगम	१५	३४	नवावर	१६	११२	{ १९	२२	
			नवीन	२१	७७	{ २३	४३	

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक			
नाडीभ्रम	१६	५४	नाढ्य	१०	१०	निद्राति	७	३०			
नाथपद	२१	१६	नाश	१८	११६	निरुष्ट	२१	५४			
नाथ	६	२३	नासत्य	१	५४	निकेतन	१२	४			
नादेयी	{ १४ ३० १४ ३८ १४ ६५ १४ ११८	{ नासा नासिका नास्तिकता	{ १२ १३ १६ ८९ १६ ८९	{ निमोचक निकण निक्वण	{ १४ २९ ६ २४ ६ २४						
						नाना	{ २३ २४८ २४ ३	{ नि शलाक नि शेष	{ १८ २२ २१ ६५	{ निगड निगद	{ १९ ४१ २० १२
						नादीकर	{ २१ ३८ २१ ३८	{ नि श्रेयस नि पमम्	{ ५ ६ २४ १४	{ निगाद निगाट	{ २९ १० २२ ३७
नापित	{ २० १० १८ ५६ २३ १३७ २५ ९ २५ २०	{ नि सरण नि स्व निकट निकर	{ १२ १९ २१ १९ २१ ६६ १५ ३९	{ निगाळ निग्रह निग निघास	{ १९ ४८ २२ १३ २२ ३६ १९ ५६						
						नाम	{ ६ ८ २३ १५२	{ निरुर्धण निकष	{ १० १९ २० ३०	{ निग्न निचुल	{ २१ १६ १४ ६१
						नामन्	{ २० १ २१ ११	{ निक्वपारमज निकामम्	{ १ ६३ १९ ५७	{ निव नितय	{ २३ ३० १३ ५ १६ ७४
नाथ	{ १ १ १ १	{ निकाय निकाप्य	{ १५ ४२ १२ ५	{ नितयिनी नितात	{ १६ ३ १ ७०						
						नाराध	{ १८ ८७ २० ३२	{ निकार निकारण	{ २२ १५ २२ ३६	{ नित्य निदान	{ १ ६९ २१ ७० ४ १९ ७ ३३
नाराधी	{ १ १८ १४ १०१	{ निक्वुज निक्वुम	{ १२ ८ १४ १४४	{ निदिग्ध निदिग्धिका	{ ४ १८ २१ ८९						
						नारायण	{ १ १८ १४ १०१	{ निक्वुज निक्वुम	{ १२ ८ १४ १४४	{ निदिग्ध निदिग्धिका	{ ४ १८ २१ ८९
नारायणी	{ १४ १०१ १६ २	{ निक्वुज निक्वुम	{ १२ ८ १४ १४४	{ निदिग्ध निदिग्धिका	{ ४ १८ २१ ८९						
						नारी	{ १६ २ १० ४० १९ २२	{ निक्वुज निक्वुम	{ १२ ८ १४ १४४	{ निदिग्ध निदिग्धिका	{ ४ १८ २१ ८९
नाल	{ १० ४० १९ २२	{ निक्वुज निक्वुम	{ १२ ८ १४ १४४	{ निदिग्ध निदिग्धिका	{ ४ १८ २१ ८९						
						नालिकेर.	{ १४ १६८ १४ १०	{ निद्रुत निद्रुत	{ २१ ४१ २१ ४६	{ निद्रुत निद्रुत	{ १८ २५ १ १०१

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
निद्रा	७ ३६	नियम.	{	५ ५	निदेश	१८ २५
निद्राण	२१ ३३			१७ ३८	निर्भर.	{	१ ७०
निद्रालु	२१ ३३			१७ ४९		{	२४ २
निघन.	{	१८ ११६	नियामक.		१० १२	निर्मद	१८ ३६
		२३ १२३	नियुत	२५ २४	निर्मुक्त	८ ३
निधि	...	१ ७५	नियुद्ध	१८ १०६	निर्माके	८ ९
निधुवन.	{	१७ ५७	नियाज्य	...	२० १७	निर्याण	...	१८ ३८
		२५ ४	निर	२३ २५४	निर्यातिन	२३ १२०
निध्यान	२२ ३१	निरन्तर	२१ ६६	निर्यास	...	२३ १५३
निनद	६ २२	निरय	९ १	निर्वपण	१७ ३०
निनाद	...	६ २२	निरगल	२१ ८३	निर्वर्णन	२२ ३१
निंदा	...	६ १३	निरर्थक	२१ ८१	निर्वहण	७ १५
निप	१९ ३२	निरवग्रह	२१ १५	निर्वाण.	{	५ ६
निपठ	२२ २९	निरसन	२२ ३१		{	२१ ९६
निपाठ	२२ २९	निरस्त.	{	६ २०	निर्वात	२१ ९६
निपातन	२२ २७			१८ ८८	निर्वाद.	{	६ १३
निपान	१० २६			२१ ४०		{	२३ ९०
निपुण	२२ ४	निराकरिष्णु.	२१	३०	निर्वापण	१८ ११४
निवध	१६ ५५	निराकृत	२१ ४०	निर्वार्य	...	२१ १३
निवधन	७ ७	निराकृति.	{	१७ ५४	निर्वासन	१८ ११३
निवर्हण	१८ ११२			२२ ३१	निर्वृत्त	२१ १००
निभ	...	२० ३८	निरामय	१६ ५७	निर्वेश.	{	२० ३९
निभृत	२१ २५	निरीश	१९ २३		{	२२ २०
निमय	१९ ८०	निर्कृती	९ २		{	२३ २१५
निमित्त	२३ ७६	निर्गुडी.	{	१४ ६८	निर्व्यथन	८ २
निमेष	४ ११			१४ ७०	निर्व्यूह	२३ २३७
निम्र	१० १४	निर्व्यथन	१८ ११३	निर्हार	२२ १७
निम्रगा	...	१० ३०	निर्घोष	६ २३	निर्हारिन्	५ ११
निव	१४ ६२	निर्जर	१ ७	निर्वाद	६ २३
निवतरु	१४ २६	निर्जितेन्द्रियग्राम	१७	४४	निलय	१२ ५
नियति	...	४ २८	निर्झर	१३ ५	निवह	१५ ३९
निर्धत्	...	१८ ५९	निर्णय	५ ३	निवात	२३ ८४
			निर्णिक्त	२१ ५६	निवाप	१७ ३१
			निर्णेजक	२० १०			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्दः	वर्ग	श्लोक
निर्वीत	{ १६ १७	११३ ५०	निष्ठीवन	२२	३८	नीडोद्भव	१५	३४
निवृत्त	२१	८८	निष्ठुर	{ ६ २१	१९ ७६	नीभ्र	१२	१४
निवेश	१८	३३	निष्ठयत्	२१	८७	नीय १४	४२
निशा	४	४	निष्ठयति	.. २२	३८	नीर	१०	४
निशाख्या	१९	४१	निष्ठेव	२२	३८	नील	... ५	१४
निशात	१२	५	निष्ठेवन	२२	३८	नीलकठ	{ १५ २३	३० ४०
निशापति	३	१४	निष्णात	२१	४	नीलगु	१५	१३
निशित	२१	९१	निष्पक्त	२१	९५	नीललोहित	१	३५
निशीय	४	६	निष्पतिमुता	१६	११	नीला	१५	२६
निशीयिनी	४	४	निष्पन्न	२१	१००	नीलावर	१	२५
निश्चय	५	३	निष्पाव	२२	२४	नीलाबुजन्मन्	१०	३७
निश्रेणी	१४	१८	निष्प्रम	.. २१	१००	नीलिका	१४	७०
निषग १८	८८	निष्प्रवाणि	१६	११२	नीलिनी	१४	९५
निषगिन्	१८	६९	निर्गर्ग	७	३८	नीली	१४	९४
निषथा	१२	२	निघट्ट	२१	८८	नीवाक	२२	२३
निषद्वर	१०	९	निस्तल	११	६९	नीवार	१९	२५
निषघ	१३	३	निस्तर्हण	१८	११४	नीवी	{ १९ २३	८० २१२
निषाद	{ ७ २०	१ २०	निश्चिन्त	१८	८९	नीवृत्त	११	८
निषादिन्	१८	५९	निष्ठाव	१९	४९	नीशार	१६	११८
निषूदन	१८	११३	निस्वन	६	२३	नीहार	३	१८
निष्क	.. २३	१४	निस्वान	६	२३	नु	२३	२४९
निष्कला	१६	२१	निहनन	१८	११४	नुति	६	११
निष्कासित	२१	३९	निहाका	१०	२२	नुत	.. २१	८७
निष्कृट	१४	१	निहिंसन	१८	११३	नुत्त २१	८७
निष्कृटि	१४	१२५	निहीन	.. २०	१६	नूतन	२१	७७
निष्कृह	१४	१३	निह्व	{ ६ २३	१७ २०८	नूत	.. २१	७८
निष्क्रम	२२	२५	नीकाश	२०	३८	नूनम्	{ २३ २४	२५१ १६
निष्ठा	{ ७ २३	१५ ४१	नीच	{ २० २१	१६ ७०	नूपुर	.. १६	१०९
निष्ठान	{ १९ २३	४४ ११६	नीचेत्	२४	१७	नृ	.. १६	१
			नीट	... १५	३७	नृम ७	१०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
चृप	१८ १	न्यग्रोधी	१४ ८७	पकिल	११ १०
चृपलक्ष्मन्	१८	३२	न्यङ्	२१ ७०	पंकेरुह	१० ४०
चृपसभ	२५ २७	न्यङ्कु	१५ १०	पक्ति.	{	१४ ४
चृपासन	१८ ३१	न्यस्त	२१ ८८		{	१९ ८४
चृशंस	२१ ४७	न्याद	...	१९ ५६		{	२३ ७२
चृसेन	२५ ४०	न्याय	१८ २४	पंगु	१६ ४८
चेत	२१ ११	नाय्य.	{	१८ २५	पचंपचा	१४ १०२
चेत्र.	{	१६ ९३		{	२३ १६१	पचा	२२ ८
	{	२३ १८०	न्यास	१९ ८१	पंचजन	१६ १
चैत्रावु	१६ ९३	न्युज	१६ ६१	पञ्चता	१८ ११६
चैदिष्ट	२१ ६८	न्युत्र	२५ १७	पञ्चदशी	४ ७
चैपथ्य.	१६ ९९	न्यून	२३ १२८	पञ्चम	७ १
चैमि.	{	१० २७	प.			पञ्चलक्षण.	६	५
	{	१८ ५६	पक्षण	१२ २०	पञ्चशर	१ २६
चैमी	१४ २६	पक्व.	{	२१ ९१	पञ्चशाख	१६ ८१
चैकभेद	२१ ८३		{	२१ ९६	पञ्चांगुल	१४ ५१
चैगम.	{	१९ ७८		{	४ १२	पञ्चास्य	१५ १
	{	२३ १४०	पक्ष.	{	१५ ३६	पञ्जिका	२५ ७
चैचिकी	१९ ६७		{	१६ ९८	पट....	{	१४ ३५
चैपाली	...	१९ १०८		{	१८ ८७		{	१६ ११६
चैमेय	१८ ८०		{	२३ २२१	पटच्चर	१६ ११५
चैयग्रोघ	१४ १८	पक्षक	१२ १४	पटल.	{	१२ १४
चैर्हत.	{	१ ६३		{	४ १		{	२३ २०१
	{	३ २	पक्षाति.	{	१५ ३६	पटलप्रांत....	१४	१४
चैष्किक	१८ ७		{	२३ ७२	पटवासक.	१६	१३९
चैत्रिशिक.	१८	७०	पक्षद्वार	१२ १४	पटह.	{	७ ६
चौ	...	२४ ११	पक्षभाग	...	१८ ४०		{	१८ १०८
चौ	१० १०	पक्षमूल	...	१५ ३६		{	१४ १५५
चौकादंड....	१०	१३	पक्षांत	४ ७	पटु.	{	२० १९
चौतार्य	१० १०	पाक्षिन्	१५ ३२		{	२१ ३५
न्यक्ष	२३ २२५	पक्षिगी	४ ५		{	२३ ४०
न्यग्रोघ.	{	१४ ३२	पक्षमन्	२३ १२१	पटुपर्णी	१४ १३८
	{	२३ ९६	पंक्.	{	४ २३	पटोल	...	१४ १५५
				{	१० ९	पटोलिका.	१४	११८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक						
पट्ट	२५	१७	पतिवरा	१६	७	पदाति	१८	६६						
पट्टिका	१४	४१	पतिवस्त्री	१६	१२	पदिक	१८	६७						
पट्टिन्	१४	४१	पतिव्रता	१६	६	पद्	१८	६७						
पट्टिश	२५	२१	पत्तन	१२	१	पद्धति	११	१५						
पण	{ १९ ८८ २० ३९ २० ४५ २३ ४६		पत्ति	{ १८ ६६ १८ ८० २३ ७२		पद्म	{ १ ७५ १० ३९							
									पत्तिसहति	१८	६७	पद्मक	१८	३९
									पत्नी	१६	५	पद्मचारिणी	१४	१४६
									पत्र	{ १४ १४ १५ ३६ १८ ५८ २३ १७९		पद्मनाभ	१	२०
पणत्र	७	८	पत्रपरशु	२०	३३	पद्मपत्र	१४	१४५						
पणायित	२१	१०९	पत्रपाश्या	१६	१०३	पत्रराग	१९	९२						
पणित	२१	१०९	पत्ररथ	१५	३३	पद्मा	{ १ २८ १४ ८९ १४ १४६							
पणितव्य	१९	८२	पत्रलेखा	१६	१२२				पद्माकर	१०	२८			
पड	१६	३९	पत्रोर्ण	{ १६ १३२ १९ १११					पद्माट	१४	१४७			
पडित	१७	५	पत्रोगुलि	१६	११२	पद्मालया	१	२८						
पडितमय	३३	१०३	पत्रिन्	{ १५ १५ १५ ३३ १८ ४७ २३ १०६		पद्मिन्	१८	३५						
पण्य	१९	८२				पद्मिनी	१०	३०						
पण्यप्रौथिका	१२	२	पत्रोर्ण	{ १४ ५६ १६ ११३		पथ	२५	३१						
पण्या	१४	१५०				पथिऊ	१८	१७	पथा	११	१५			
पण्याजीय	१९	७८	पथिन्	११	१५	पनस	१४	६१						
पत्तन	१५	३३	पथ्या	१४	५९	पनायित	२१	१०९						
पतग	{ १५ २८ २३ २०		पथ्या	१६	७१	पनित	२१	१०९						
						पतगिका	१५	२७	पत्र	२१	१०४			
पतर	१५	३३	पद्	१६	७१	पत्रग	८	८						
पतत्र	१७	३६	पद	२३	९३	पत्रगाशन	१	३१						
पतत्रि	१५	३३	पदग	१८	६६	पयस्	{ १० ३ १९ ५१ २३ २३४							
पतत्रिम्	१५	३३	पदगी	११	१५				पयस्य	१९	५१			
पतद्रुमह	{ १६ १३९ २५ २१		पदाजि	१८	६६				पयोधर	२३	१६३			
पतयाल्ल	२१	२७	पति	{ १६ ३५ २१ १०		पर	{ १० ८ १८ ११ २३ १९१							
पताका	१८	९९												
पताविन्	१८	७१												

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः			
परःशत	२१	६४	परिकर्मन्....	१६	१२१	परिबर्ह	२३	२४०	
परजात	२०	१८	परिक्रम	२२	१६	परिभव	७	२२
परतंत्र	२१	१६	परिक्रिया....	२२	२०	परिभाषण....	६	१४		
परपिडाद्....	२१	२०	परिक्षित	२१	८८	परिभूत	२१	१०६	
परभृत्	१५	२०	परिष्ठा	१०	२९	परिमल.	{	५	१०
परभृत	१५	१९	परिग्रह	२३	२३८		{	२२	१३
परमम्	२४	१२	परिघ.	{	१८	९१	परिरंभ	२२	३०
परमान्न	...	१७	२४		{	२३	२७	परिवर्जन....	१८	११४	
परमेष्ठिन्	१	१६	परिघातिन.	१८	९१	परिवादिनी.	७	३		
परंपराक	...	१७	२६	परिचय	...	२२	२३	परिवापित.	२१	८५	
परवत्	२१	१६	परिचर	१८	६२	परिधिति....	१७	५६	
परङ्गा	१८	९२	परिचर्या....	१७	३५	परिवृष्ट	२१	११	
परश्वस	...	१८	९२	परिचाय्य...	१७	२०	परिवेत्तु	१७	५६	
परश्वस्	२४	२२	परिचारक.	२०	१७	परिवेष	३	३२	
पराक्रम.	{	१८	१०२	परिणत	...	२१	९६	परिव्याध.	{	१४	३०
	{	२३	१३८	परिणय	१७	५७		{	१४	६०
पराग.	{	१४	१७	परिणाम	२२	१५	परिम्राज्	१७	४२
	{	२३	२१	परिणाय	२०	४६	परिपद्	१७	१५
पराङ्मुख...	२१	३३	परिणाह	१६	११४	परिष्कार....	१६	१०१		
पराचित	२०	१८	परितप्त	२४	१३	परिष्कृत	१६	५६
पराचीम	२१	३३	परित्राण	...	२२	५	परिष्वंग	२२	३०
पराजय	१८	१११	परिदान	१९	८०	परिसर	११	१४
पराजित	१८	११२	परिदेवन	...	६	१६	परिसर्प	२२	२०
पराधीन	...	२१	१६	परिधाम	१६	११७	परिसर्या	२२	२१
परान्न	२१	२०	परिधि.	{	३	३३	परिस्कंद	...	२०	१८
पराभूत	१८	११२		{	२३	९७	परिस्तोम	...	१८	४२
परायण	२२	२	परिधिस्थ....	१८	६२	परिस्यंह	१६	१३७	
परारि	२४	२०	परिपण	१९	८०	परिष्णत	२०	४१
पराध्य	२१	५८	परिपण्यिन्...	१८	११	परिष्णुता	२०	४०	
परासन	१८	११३	परिपाटी	१७	३७	परीक्षक	२१	७
परासु	१८	११७	परिपूर्णाता....	१६	१३७	परीभाव	७	२२	
परास्कादिन्.	२०	२५	परिपेलव	१४	१३१	परीवर्त	१९	८०	
परिकार	...	२३	१६५	परिप्लव	२१	७५	परीवाद्	...	६	१३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
परीवाप	२३	१२९	पयु चन	१९	०	पगुमरण	२२	३९
परीवार	२३	१६९	पर्येषणा	१७	३०	पगुल्लुज	१९	७३
परीवाह	१०	१०	पर्यत	१३	१	पधान्	२३	२५४
परीष्टि	१७	३२	पर्यन्त	{ १४	१६०	पश्चात्ताप	७	२५
परिसार	२२	२१		{ ३३	१०१	पश्चिम	२१	८१
परीहास ..	७	३२	पर्यसाधि	४	७	पश्चिमा	३	१
पदत्	२४	२०	पशुमा	१६	६९	पश्चिमोत्तर	११	७
पदप	६	१९	पल	{ १९	८६	पस्त्य	१२	५
पदसू	१४	१६२		{ २३	२०२	पांसु	१८	९८
परेत	१८	११७	पलगट	२०	६	पांसुला	१६	११
परेतगज्ज	१	६१	पलकषा	१४	९८	पाक	{ १५	३८
परेचावि	२४	२१	पलञ्ज	१६	६३		{ २२	८
परोक्षका	१९	७०	पलाट्ट	१४	१४७	पाकल	१४	१२६
परोधित	२०	१८	पलाल	१९	२२	पाकशासन	१	४४
परोष्णी	१५	२६		{ १४	१४	पाकशासने	१	४९
पर्यटो	१४	३२	पलाश	{ १४	२९	पाकस्थान	१९	२७
पर्यनी	१४	१०२		{ १४	१५४	पापय	{ १९	४२
पर्यय	२३	१४६	पलाशिनू	१४	५		{ १९	१०९
	{ १४	१४	पालिनी	१६	१२	पलट	१७	४१
पर्य	{ १४	२९	पालित	१६	४१	पालजय	१	२९
	{ २५	२०	पान्यक	१६	३३८	पाल्यालिका	२०	५९
पर्यशाल	१०	६	पात्र	१४	१४	पाट	२४	७
पर्यास	१४	७९	पल्ल	१०	२८	पाचर	२०	२५
पर्यक	१६	१३८	पत्र	२२	२४	पाटल	{ ५	०५
पर्यटन	१७	३६	पत्रन	{ १	६६		{ १९	१५
पर्येतभू	११	१४		{ २०	२४	पाटला	{ १४	१०
	{ १७	३७	पर्याशान	८	८		{ १४	५४
पर्यय	{ २२	३३	पर्यामान	१	६६	पाटलि	{ १४	३९
पर्ययस्वा	२२	२१	पावि	१	५०		{ १४	५४
पर्यान	१९	५७		{ १४	१६६	पट	{ १७	१४
पर्यास	२२	५	पात्रि	{ १७	४१		{ ३२	२९
	{ १७	२०		{ २१	५१	पात्रा	१४	८४
पर्याय	{ ३३	१८७	पर्यायक	१०	१६	पाट्रे	१४	८०
पर्यायशपा	२०	३०	पगुमते	१	३९	पाट्रीन	१०	१८

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
पाशक	२०	४५	पिठार	{ १९	३१	पपातिना	२५	८
पाशिव	१	६४		{ २३	१८८	पिपल	१४	२०
पाशुपत	१४	८१	पिंड	{ १८	३७	पिपली	१४	९७
पाशुपाल्य	१९	२		{ १९	९८	पिपलीपूल	१९	११०
पाश्चात्य	२१	८१		{ १९	१०४	पिपु	१६	४९
पाश्या	२२	४३		{ २५	१८	पिल	११	६०
पाषाण	१३	४	पिंका	१६	१२८	पिशाग	५	१६
पाषाणदारण	२०	३४	पिडिना	१८	५६	पिशाच	१	११
पिक	१५	९९	पिडोतक	१४	५२	पिशित	१६	६३
पिंग	५	१६	पिण्याक	{ २३	९	पिणुन	{ १६	१२४
पिंगल	{ ३	३१		पितरौ	१६		३७	२१
पिंगला	{ ५	१६	पितामह	{ १	१६	पिणुना	१४	१३३
पिचड	{ १६	७७	पित	१६	२८	पिष्टक	१९	४८
पिचडिल	{ २५	१८	पितदान	१७	३१	पिष्टपचन	१९	३२
पिचडिल	१६	४४	पितपति	{ १	६१	पिष्टात	१५	१३९
पिचु	१९	१०६						
पिचुमद	१४	६२	पितपित	१६	३३	पीडन	१८	१०९
पिचुल	१४	४०	पितप्रसू	४	३	पाडा	९	३
पिचुट	१९	१०५	पितयज्ञ	१७	१४	पात	५	१४
पिचुड	{ १५	३१	पितयन	१८	११८	पीतदाह	१४	५३
पिचुडा	{ २५	३०	पित य	१६	३१	पीतदु	{ १४	६०
पिचुडा	{ १४	४७	पितसन्निभ	२१	१३	पीतन	{ १४	२७
पिचुडल	{ १५	९	पित	१६	६२	पीतन	{ १६	१२४
पिचुडल	{ १७	४६	पि य	{ १७	२४	पीतन	{ १९	१०३
पिज	{ १४	४६	पित्सत्	१५	३४	पीतसाक	१४	८३
पिजर	{ १९	१०३	पिधान	३	१३	पीता	१९	४१
पिजल	{ २५	३१	पिनद्ध	१८	६५	पीतावर	१	१९
पिट	१८	९९	पिनाक	{ १	३७	पान	२१	६१
पिटका	{ १६	५३	पिनाकिन्	{ २३	१४	पानस	१६	५१
	{ २०	०	पिनाकिन्	१	३३	पीताभ्रा	१९	७१
			पिपाता	१०	५५	पीयूष	{ १	५१
							{ १०	५४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पीलु.	{ १४ २३	२८ १९३	पुञ्जा	.. १६	३७	पुनयोत्तम....	१	२१
पीलुपर्णी.	{ १४ १४	८४ १३९	पुञ्ज	... २५	२०	पुण्ड २१	६३
पीवन्	२१	६१	पुनःपुनः....	२४	१	पुण्डित १	४४
पीवर.	{ २१ २१	६१ ११२	पुनर् ...	{ २३ २४	१५४ १५	पुरोग	... १८	७२
पीवरस्तनी.	१९	७१	पुनर्भवा	.. १४	१४९	पुरोगम १८	७२
पुंशली	१६	१०	पुनर्भव १६	८३	पुरोगामिन.	१८	७२
पुरा १६	१	पुनर्भू १६	२३	पुरे टाश	... २५	२१
पुक्कस २०	२०	पुत्राग १४	२५	पुरोवस् १८	५
पुख	. २५	१७	पुत्रमस् १६	१	पुरोभागिन्.	२१	४६
पुंगव	... २१	५९	पुर....	{ १४ २३	३४ १८३	पुरोहित १८	५
पुच्छ १८	५०	पुरासर	... १८	७२	पुराज २३	५
पुंज १५	४२	पुरात्स् २४	७	पुराजिन १०	९
पुटभेद १०	७	पुरादार १२	१६	पुराजिद २०	२०
पुटभेदन	... १२	१	पुरादस् १	४४	पुरोमजा १	४८
पुटी	... २५	४२	पुराश्रो १६	६	पुरापित २१	९७
पुंटीरीक.	{ ३ १० ४३	३ ४१ ११	पुरास् ...	{ २३ २४	१८३ ७	पुराकार	{ २ १० १० १४ २३	१ ४ ४१ १४५ १८५
पुंटीरीकाक्ष.	१	१९	पुरास्मृत २३	८४	पुराकाराह १५	२२
पुड्ड १४	१६३	पुरास्तात २३	२८३	पुराकमिणी....	१०	२७
पुड्डक १४	७२	पुरा २३	२५४	पुराकल २१	५८
पुण्य.	{ ४ २३	२४ १६०	पुराण....	{ ६ २१	५ ७७	पुराकल २१	९७
पुण्यक १७	३८	पुराणपुष्य.	१	२२	पुराकल	... २१	९७
पुण्यजन १	६३	पुरातन	.. २१	७७	पुराकल	... २१	९७
पुण्यजनेश्वर.	१	७३	पुरावृत्त ६	४	पुराकल	{ १४ १६ २५	१७ २१ २३
पुराभूमि ११	८	पुरी १२	१	पुराकल	{ १ १९	७४ १०३
पुराभवत् २१	३	पुरीतत् १६	६६	पुराकल	{ १ १९	७४ १०३
पुराजिन्ना १५	२७	पुरीष १६	६८	पुराकल	{ १ १९	७४ १०३
पुराज १६	२७	पुरा	. २१	६३	पुराकल	{ १ १९	७४ १०३
पुराजिका २०	२९	पुरा	{ ४ १४ १६ २३	२३ २५ १ २१९	पुराकल	{ १ ३ १ १४	७४ ४ २७ २१

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
पुष्परस	१४	१७	पूर्णकुम्भ	१८	३२	पृथ्वाका	१४	१२५
पुष्पलिङ्ग	१५	२९	पूर्णिमा	४	७	पृदाकु	८	६
पुष्पवती	१६	२०	पूर्त	१७	२८	पृश्रि	१६	४८
पुष्पधत्ता	४	१०	पूर्व	{ २१	८०	पृश्रिषर्णी	१४	९२
पुष्पसमय	४	१८	पूर्वज	{ २३	१३४	पृपत्	१०	६
पुष्प	{ ३	२०	पूर्वद्व	१६	४३	पुपत	{ १०	६
	{ २३	१४७	पूर्वपित	१	१२		{ १५	१०
पुष्परथ	१८	५१	पूर्वपित	१३	२	पृपरक	१८	८६
पुस्त	२०	२८	पूर्वा	३	१	पृपरश्व	१	५५
पूग	{ १४	१६९	पूर्वोत्स	२०	२१	पृपद्वय	१७	२४
	{ ३	२०	पृपद्	३	२९	पृष्ठ	१६	७८
पूजन	२३	१५६	पृषित	२२	९	पृष्ठशशाघर	१६	७६
पूजा	१७	३५	पृच्छा	६	१०	पृष्ठारिथ	१६	६९
पूजित	२१	९८	पृत्तना	{ १८	७८			
पूज्य	{ २१	५		{ १८	८१	पृष्ठच	{ १८	४६
	{ २३	१५०	पृथक्	२४	३		{ २२	४२
	{ १७	४५	पृथक्शर्णी	१४	९२	पेचक	{ १५	१५
पूत	{ २९	२३					{ २३	६
	{ २१	५५	पृथक्शर्णी	{ ४	३१	पेटक	२०	३०
पूतना	१४	५९	पृथक्शर्णी	{ १७	३८	पेटा	००	३०
पूतिक	१४	४८	पृथक्शर्णी	{ २०	१६	पेटो	२५	४२
पूतिकरज	१४	४८	पृथक्शर्णी	{ २३	१०५	पेटय	२१	६६
पूतिकारण	{ १४	५४	पृथक्शर्णी	२१	९३		{ ००	१९
	{ १४	६०	पृथक्शर्णी	११	३	पेशल	{ २१	६६
पूतिगाधि	५	१२	पृथक्शर्णी	{ १८	३७		{ २३	२०५
पूतिफली	१४	९६	पृथक्शर्णी	{ १८	४०	पेशी	१५	३७
पूष	१९	४८	पृथक्शर्णी	{ २१	६०	पेशर	१९	४५
पूर	१२	१	पृथक्शर्णी	{ २१	११२	पेशध्वसेय	१६	२५
पूर	०५	२०	पृथक्शर्णी	{ १५	३८	पेशध्वसीय	१६	२५
पूरगी	१४	४६	पृथक्शर्णी	{ १९	४७	पत्र	४	०१
पूरित	२१	९८	पृथक्शर्णी	{ २३	३	पोटगल	{ १४	१६२
पूदप	१६	१	पृथक्शर्णी	{ १०	१०		{ १४	१६३
पूरी	{ २१	६५	पृथक्शर्णी	{ ११	३	पोटा	१६	१५
	{ २१	९८	पृथक्शर्णी	{ १९	३७	पोत	{ १५	३८
			पृथक्शर्णी	{ १९	४०		{ २३	६०

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
पोतवाणिज्.	१०	१२	प्रकोष्ठ	१६ ८०	प्रज्ञान	२३ १२२
पोतवाह	१०	१२	प्रक्रम	२२ २६	प्रज्ञु	१६ ४७
पोताधान...	१०	१९	प्रक्रिया	१८ ३१	प्रज्ञान	...	१५ ३७
पोत्र	२३ १८०	प्रक्षण	६ २४	प्रणय.	{	२२ २५
पोत्रिन्	१५ २	प्रक्षाण	६ २४		{	२३ १५१
पोष्ट	२३ ५९	प्रश्वेडन	१८ ८७	प्रणय	६ ४
पौडर्य	१५ १२७	प्रगंड	१६ ८०	प्रणाद	६ ११
पौत्री	१६ २९	प्रगतजानुक.	१६	४७	प्रणाली	१० ३५
पौर	१८ १६६	प्रगल्भ	२१ २५	प्रणिधि.	{	१८ १३
पौरस्त्य	२१ ८०	प्रगाढ	२३ ४५		{	२३ १००
पौरुष.	{	१६ ८०	प्रगुण	२१ ७२	प्रणिहित	...	२१ ८६
	{	२३ २२३	प्रगो	२४ १९	प्रणीत.	{	१७ २०
पौरोगव	१९ २७	प्रग्रह.	{	१८ ११९		{	१९ ४५
पौर्णमास....	१७	४८		{	२३ २३८	प्रणुत	२१ १०९
पौर्णमासी.	४	७	प्रग्राह	२३ २३८	प्रणय	२१ २५
पौलस्त्य	१ ७२	प्रश्रीव	२५ ३५	प्रतन	२१ ७७
पौलि	१९ ४७	प्रघण	१२ १२	प्रतल.	{	१६ ८४
पौष	४ १५	प्रघाण	१२ १२		{	१६ ८५
प्याट्	२४ ७	प्रचक्र	१८ ९६	प्रताप	१८ २०
प्रकंपन	१ ६६	प्रचलायित.	२१	३२	प्रतपस	१४ ८१
प्रकर्ष	२१ ११२	प्रचुर	२१ ६३	प्रति	२३ २४६
प्रकांड.	{	४ २७	प्रचेतस	१ ६४	प्रतिकर्मन्.	१६	९९
	{	१४ १०	प्रचोदनी	१४ ९४	प्रतिकूल	२१ ८४
प्रकामम्	१९ ५७	प्रच्छदपट.	१६	११६	प्रतिकृति....	२०	३६
प्रकार	२३ १६२	प्रच्छन्न	१२ १४	प्रतिकृष्ट	२१ ५४
प्रकाश.	{	३ ३४	प्रच्छर्दिका.	१६	५५	प्रतिक्षिप्त....	२१	४२
	{	२३ २१८	प्रजन	...	२२ २५	प्रतिख्याति.	२२	२८
प्रकीर्णक....	१८	३१	प्रजविन्	१८ ७३	प्रतिग्रह	...	१८ ७९
प्रकीर्य	१४ ४८	प्रजा	२३ ३२	प्रतिग्राह	..	१६ १३९
प्रकृति.	{	४ २९	प्रजाता	१६ १६	प्रतिघा	७ २६
	{	७ ३७	प्रजापति	१ १७	प्रतिघातन.	१८	११४
	{	१८ १८	प्रजावती....	१६	३०	प्रतिच्छाया.	२०	३६
	{	२३ ७३	प्रज्ञा.	{	५ १	प्रतिजागर.	२२	२८
				{	१६ १२			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
प्रतिज्ञात	२१	१०८	प्रतिहारक	२०	११	प्रत्यादिष्ट	२१	४०
प्रतिज्ञान	५	५	प्रतिहास	१४	७६	प्रत्यादिष्ट	२२	३१
प्रतिदान	१९	८१	प्रतीक	{ १६	७०	प्रत्यालीन	१८	८५
प्रतिघटान	६	२५	प्रतीकार	{ २३	७	प्रत्यासार	१८	७९
प्रतिनिधि	२०	३६	प्रतीकाश	१८	११०	प्रत्याहार	२२	१६
प्रतिपत्	{ ४	१	प्रतीकाश	२०	३८	प्रत्युत्क्रम	२२	२६
			प्रतीक	२१	५	प्रत्युत्पत्	४	२
प्रतिपत्र	२१	१०८	प्रतीची	३	१	प्रत्युत्	४	२
प्रतिपादन	१७	२९	प्रतीत	{ २१	९	प्रयुह	२२	१९
प्रतिबद्ध	२१	४१	प्रतीप	{ २३	८२	प्रयम	{ २१	८०
प्रतिबध	२२	२७	प्रतीपदर्शनी	२३	१४४		{ २३	१४४
प्रतिबिम्ब	२०	३६	प्रतीप	१६	२	प्रया	२२	९
प्रतिभय	७	२०	प्रतीर	१०	७	प्रथित	२१	९
प्रतिभारित	२१	२५	प्रतीराप	२३	१०५	प्रदर	२३	१६४
प्रतिभू	२०	४४	प्रतीहार	{ १०	१६	प्रदीप	१६	१३८
प्रतिमा	{ १८	३९		{ १८	६	प्रदीपन	८	१०
				{ २३	१७०	प्रदेशन	१८	२७
प्रतिमान	{ २०	३६	प्रतीहारी	२३	१७०	पदेशिनी	१८	८१
प्रतिमुक्त	१८	६५	प्रतीली	१०	३	प्रदोष	४	६
प्रतिपत्न	२३	१०७	प्रतन	२१	७७	प्रपुत्र	१	२६
प्रतिपातना	२०	३६	प्रपत्	२४	२३	प्रदाय	१८	१११
प्रतिरोधित्	२०	२५	प्रपत्पत्नी	१४	८९	प्रधन	१८	१०३
प्रतिषाप	६	१०	प्रपत्पत्नी	{ १४	८८	प्रधान	{ ४	२९
प्रतिषिषा	१४	१९		{ १४	१४४		{ १८	५
प्रतिशासन	२२	३४	प्रपक्ष	२१	७९		{ २१	५७
प्रतिषवाप	१६	५१	प्रपत्र	२१	७७	{ २३	११२	
प्रतिश्रय	२३	१५३	प्रपत्	११	७	प्रधि	१८	५६
प्रतिश्रय	५	५	प्रपत्पत्नी	१३	७	प्रधन	२३	२८
प्रतिश्रुति	६	२५	प्रपत्	२३	१४७	प्रधर	१६	७१
प्रतिष्टम्भ	२२	२७	प्रपत्पिष्ट	१८	१३	प्रधा	१०	७
प्रतिहार	२३	१७४	प्रपाचद	१८	११	प्रधन	१३	४
प्रतिहार	१६	१२०	प्रपाचद	१८	११	प्रतिप्रमद	१६	३३
प्रतिहार	२१	४१	प्रपाचद	२१	११०	प्रपुत्र	१४	१४७
			प्रपाचद	२२	११	प्रपुत्र	१४	१२७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
प्रफुल्ल	...	१४ ७	प्रयत	...	१७ ४५	प्रथक्त	२१ ८१
प्रबंधकल्पना.	६	६	प्रयस्त	१९ ४५	प्रथ	६ १०
प्रबोधन	१६ १२२	प्रयाम	२२ २३	प्रथय	२२ २५
प्रभंजन	१ ६६	प्रयोगार्थ	२२ २६	प्रश्रित	२१ २५
प्रभव	२३ २१०	प्रलंबन	१ २४	प्रष्ट	...	१८ ७२
प्रभा	३ ३४	प्रलय.	{	४ २२	प्रष्टवाह	१९ ६३
प्रभाकार	३ २८		{	७ ३३	प्रष्टाही	१९ ७०
प्रभात	...	४ ३		{	१८ ११६	प्रसन्न	१० १४
प्रभाव.	{	१८ १९	प्रलाप	६ १५	प्रसन्नता	३ १६
	{	१८ २०	प्रवण	...	२३ ५६	प्रसन्ना	२० ४०
प्रभिन्न	१८ ३६	प्रवयस्	१६ ४२	प्रसभ	१८ १०८
प्रभु	२१ ११	प्रवर्ह	२१ ५७	प्रसर	२२ २३
प्रभूत	२१ ६३	प्रवह	२२ १८	प्रसरण	१८ ९६
प्रभ्रष्टक	१६ १३५	प्रवहण	१८ ५२	प्रसव,	{	२२ १०
प्रमथ	१ ३७	प्रवाहिका....	६	६		{	२३ २०८
प्रमथन	१८ ११५	प्रवारण	२२ ३	प्रसववधन.	१४	१५
प्रमथाधिप.	१	३३	प्रवाल.	{	७ ७	प्रसव्य	...	२१ ८४
प्रमद	४ २४		{	१९ ९३	प्रसह्य	...	२४ १०
प्रमदवन	१४ ३		{	२३ २०४	प्रसाद.	{	३ १६
प्रमदा	१६ ३	प्रवाह	२२ १८		{	२३ ९१
प्रमनस	२१ ७	प्रवासन	१८ ११३	प्रसाधन	१६ ९९
प्रमा	२२ १०	प्रवाहिका....	१६	५५	प्रसाधनी	१६ १३९
प्रमाण	२३ ५४	प्रवाहिका....	१६	५५	प्रसाधित	१६ १००
प्रमाद	७ ३०	प्रविहारण.	१८	१०३	प्रसारिणी	१४ १५२
प्रमाषण	१८ ११२	प्रविक्षेप	२२ २०	प्रसारिणी	१४ १५२
प्रमिति	२२ १०	प्रवीण	२१ ४	प्रसारिणी	१४ १५२
प्रमीत.	{	१७ २६	प्रवृत्ति.	{	६ ७	प्रसारिणी	१४ १५२
	{	१८ ११७		{	२२ १८	प्रसित	२१ ९
प्रमीला	{	७ ३७	प्रवृद्ध....	{	२१ ७६	प्रसिती	२२ १४
	{	२३ १७६		{	२१ ८८	प्रसिद्ध	२२ १०४
प्रमुख	२१ ५७	प्रवेक	२१ ५७	प्रसू...	{	१६ २९
प्रसूदित	२१ १०३	प्रवेणी.	{	१६ ९८		{	२३ २३०
प्रसोद	४ २४		{	१८ ४२	प्रसूता	१६ १६
			प्रवेष्ट	१६ ८०	प्रसूति	२२ १०
						प्रसूतिका	१६ १६

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
प्रसूतिज	९	३	प्राग्रहा	२१	५८	प्रातरूप	२४	१३१
प्रसून	{	१४ १७	प्राग्र्य	२१	५८	प्राति	२३	६९
		२३ १२०	प्राधार	१६	१०	प्राप्य	२१	९२
प्रसूननायितारी	१६	३७	प्राधुगक	१७	३४	प्राभृत	१८	२७
प्रसृत	२१	८८	प्राधूर्णिक	१७	३४	प्राय {	१७	५३
प्रसृता	१६	७२	प्राचिका	२५	८		२३	१५३
प्रसृति	१६	८५	प्राची	३	१	प्रायस्	२४	१७
प्रसेव	१९	२६	प्राचान	१२	३	प्रायित	२१	९७
प्रसेवक	७	७	प्राचीना	१४	८५	प्रात्व	१६	१३६
प्रस्तर	{	१३ ४	प्राचीनावित	१७	५०	प्रात्विका	१६	१०४
		२३ १६१	प्राच्य	११	७	प्रात्य	३	१८
प्रस्ताव	२२	२४	प्राजन	१९	१२	प्रावरण	१६	११८
प्रस्य	{	१४ ५	प्राजित	१८	५९	प्रावार	१६	११७
		१९ ८९	प्राज्ञ	१७	५	प्रावृत	१६	११३
		२३ ८८	प्राज्ञा	१६	१२	प्रावृष्	४	१९
प्रस्यपुष्प	१४	७९	प्राज्ञी	१६	१२	प्रावृषावर्णा	१४	८६
प्रस्यमान	१९	८५	प्राग्य	२१	६३	प्रास	१८	९३
प्रसथान	०८	९५	प्राङ्गिक	१८	५	प्रासग	१८	५७
प्रस्फोटन	१९	२६	प्राण {	१	६७	प्रासग्य	१९	६४
प्रस्राण	१३	५		१८	१०२	प्रासार	१२	९
प्रस्राव	१२	६७		१८	११९	प्रासिक	१८	७०
प्रहर	४	६		१९	१०४	प्राह	३	३
प्रहरण	१८	८२	प्राणिन्	४	३०	प्रिय {	१६	३५
प्रहस्त	१६	१४	प्रातर	२४	१९		२१	५३
प्रति	१०	२६	प्रायमकल्पिक	१७	११	प्रियक {	१४	७२
प्रहेलिका	६	६	प्रदुस्	{	२३ २५७		१४	४४
प्रहस्र	२१	१०३	प्रदेश	{	२४ १२	१४	७६	
प्रानु	२१	७०		१६	८३	१५	९	
प्राष्	{	२४ १६	प्रादेशन	१७	३०	प्रियगु {	१४	५५
		२४ २३	प्राधम्	२४	४		१९	२०
प्राशार	१२	३	प्रातर	११	१७	प्रियता	७	२७
प्रावृत	२०	१६	प्रात	{	२१ ८६	प्रियवद	२१	३६
प्राग्दक्षिण	११	७		२१	१०४	प्रियाल	१४	३५
प्राग्यश	१७	१६	प्रातपयत्	१८	११७	प्रिपान	२२	४

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
प्रीत	२१	१०३	प्लवंगम	२३	१३८	फाट	... २१ ९४
प्रीति	...	४	२४	प्लक्ष	१४	१८	फाल.	{ १६ १११
पुष्ट	२१	९९	प्लोहन्	१६	६६	{ १९ १३	
प्रेक्षा.	{	५	१	प्लोहशत्रु	१४	४९	फाल्गुन ४ १५
	{	२३	२२५	प्लुत	१८	४८	फाल्गुनिक.	४ १५
प्रखा	१८	५३	प्लुष्ट	२१	९९	फाल्गुनी	... २५ ६
प्रेखित	२१	८७	प्लुष	२२	९	पुष्ट १४ ८
प्रेत.	{	१८	११७	प्लात	२१	११०	फेन.	{ १९ १०५
	{	२३	६०	फ.				{ २५ १९	
प्रेता	९	२	फणा	८	९	फेनिल.	{ १४ ३१
प्रेत्य	२४	८	फणिजक	१४	७९	{ १४ ३६	
प्रेमन्	७	२७	फणिन्	८	७	फेरव १५ ५
प्रेषण	२२	३४					फेर १५ ५
प्रेष्ट	... २१	१११						फेला १९ ५६
प्रेष	२३	२२०	फल.	{	१८	९०	व.	
प्रेष्य	२०	१७		{	१९	१३	बक १५ २२
प्रोक्षण	१७	२६	फलक	१८	९०	बकुल १४ ६४
प्रोक्षित	... १७	२६		फलकपाणि.	१८	७१		वडिश १० १६
प्रोथ	१८	४९	फलत्रिक	१९	१११	वत २३ २४५
प्रोयत	२३	८५	फलपाकाता.	१४	६		वदर १४ ३७
प्रोष्ठपदा	३	२२	फठपूर	१४	७८	वदरा.	{ १४ ११६
प्रोष्ठी	१०	१८	फलवत्	१४	७	{ १४ १५१	
प्रोष्ठपद	.. ४	१७		फलाध्यक्ष.	१४	४५		वदरी १४ ३६
प्रौढ	... २१	७६		फालिन्	... १४	७		बद्ध...	{ २१ ४२
				फालिन १४	७		{ २१ ९५	
प्रक्ष....	{	१४	३२	फालिनी.	{	१४	५५	बधिर १६ ४८
	{	१४	४३		{	१४	१३६	बदिन् १८ ९७
	{	१०	११	फाली	... १४	५५		बन्दी १८ ११९
	{	१०	२४	फलेग्रही	... १४	६		बन्धकी	... १६ १०
प्लव....	{	१४	१३२	फलेषहा १४	५४		बधन.	{ १८ २६
	{	१५	३४					{ २२ १४	
	{	२०	१९	फल्गु	{	४	१५	बधनालय.	१८ ११९
					{	१४	६१	बंधस्तभ १८ ४१
प्लवग.	{	१५	३		{	२१	१६	बधु १६ ३४
	{	२३	२०	फणिता	... १९	४३			
प्लवंग	१५	३						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	
बधुजीवक	१४	७३	बले	१७	१४	बहुविध	२१	१३	
बधुता	१६	३५				१८	२७	बहुवेतस	११
बधुर	२१	६९	२३	१९५	बहुसुता	१४	१००		
बधुल	१६	२६	बलिभ्रसिन्	१	२१	बहुसुति	१९	७०	
बधुक	१४	७३	बलिन्	१६	४५	बाकची	१४	९६	
बधुकपुष्प	१४	४४	बलिपुष्ट	१५	२०	बाद	१	७०	
बधु	२३	१७०	बलिभ	१६	४५				२३
बर्बर	१४	९०	बलिभुज्	१५	२०	बाण	१८	८६	
बर्बरा	१४	१३९	बलिर	१६	४९				२३
बर्ह	१५	३१	बलिसन्नन्	८	१	बाणा	१४	७४	
		२३	२३७	बलीवर्द	१९	५९	बदर	१६	१११
बर्हपुष्प	१४	१३२	बलिव	१९	२७	बाघा	९	३	
बर्हि	१	५७	१९	५७	बाघिकिनेय	१६	२६		
बर्हिण	१५	३०	बलवज	१४	१६३	बाधन	१६	३४	
बर्हिन्	१५	३०	बध्कयणी	१९	७१	बाहिन	१४	१९	
बर्हिमुख	१	९	बस्त	१९	७६	बाल	१४	११२	
बर्हिष्ठ	१४	१२२	बस्ति	१६	७३				१६
बल	१	२५	बहेर्दार	१२	१६	२३	२०५		
		१८	७८	बहिष्ठ	२१	११९	बालगर्भिणी	१९	७०
		१८	१०२	बहिस	२४	१७	बालतनय	१४	४९
		२३	१९५	बहु	२१	६३	बाणतण	१४	१९७
२५	२२	बहुकर	२१	१७	बालमूषिका	१५	१२		
बलदेव	१	२४	बहुगर्वाक्	२१	३६	बाला	७	१४	
बलभद्र	१	२४	बहुपाद	१४	३२	बालिश	२१	४८	
बलभद्रिका	१४	१५०	बहुपद	२१	६				१३
बलवत्	१६	४४	बहुमूय	१६	११३	बालेय	१९	७७	
		२४	२	बहुरूप	१६	१२८	बालेयशाक	१४	९०
बलवि यास	१८	७९	बहुल	२१	६३	बाल्य	१६	४०	
बला	१४	१०७				२१	११२	बाष्प	२३
बलाका ...	१५	२५	२३	१९९	बाध्यिका	१९	४०		
बलाकार	१८	१०८	बहुला	१४	१२५	बाहु	१६	८०	
बलराति	१	४६	२३	१९९	बाहज	१८	१		
बलाहक	३	६	बहुलीकृत	१९	२३	बाहदा	१०	३३	
			बहुपारक ...	१४	३४	बाहुमल	१६	७९	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
बाह्ययुद्ध ...	११	१०६	बुक्ता	१६ ६४	ब्रह्मपुत्र	८ १०
बाहुल	४ १८	बुद्ध.	{	१ १३	ब्रह्मवधु	२३ १०४
बाहुलेय	१ ४२	बुद्धि	५ १	ब्रह्मविदु	१७ ३९
बालिहक.	{	११ ४५	बुद्ध्य	२५ १९	ब्रह्मभूय	१७ ५२
	{	२५ ३२	बुध	{	३ २६	ब्रह्मयज्ञ	१७ १४
बालर्हाक	{	१६ १२४	बुध	{	१७ ५	ब्रह्मवर्चस्...	१७	३९
	{	१९ ४०	बुध	{	२३ १००	ब्रह्मसायुज्य.	१७	५२
	{	२३ ९	बुधित	२१ १०८	ब्रह्मसू	१ २८
बाह्य	२४ १७	बुध	१४ १२	ब्रह्मसूत्र	१७ ५०
बाड	१९ ४२	बुभुक्षा	१९ ५४	ब्रह्माजली	१७	३९
बिडाल	१५ ६	बुभुक्षित	२१ २०	ब्रह्मासन	१७ ४०
बिडौजस्	१ ४४	बुस	१९ २२	ब्राह्म.	{	४ २१
बिदु	१० ६	बुस्त	२५ ३४		{	१७ ५१
बिदुजातक.	१८	३९	बृहत्	१८ १०७	ब्राह्मण	१७ ४
बिब	३ १५	बृहत्	२१ ६०	ब्राह्मणयष्टिका.	१४	८९
बिबिका	१४ १३९	बृहत्तिका...	१६	११७	ब्राह्मणी	१४ ८९
बिबिल	८ १	बृहती.	{	१४ ९३	ब्राह्मण्य	२२ ४१
बिलेशय	८ ८		{	२३ ७५	ब्राह्मी.	{	१ ३७
बिल्व	१४ ३२	बृहत्कुक्षि.	१६	४४		{	६ १
बिस	१० ४२	बृहद्भानु	१ ५७	भ.	{	१४ १३७
बिसकांटिका.	११	२५	बृहत्स्पति	१ २४	भ	३ २१
बिसप्रसन्	१०	४१	बोधकर	१८ ९७	भक्त.	१९ ४८
बिसिनी	१० ३९	बोधिद्रुम	१४ २०	भक्षक	२१ २०
बिस्त	१९ ८६	बाल	१९ १०४	भक्षित	२१ ११०
बीज.	{	४ २८	ब्रध	३ २८	भक्ष्यकार...	१९	२८
	{	१६ ६२	ब्रह्मचारिन्.	{	१७ ३	भग.	{	१६ ७६
बीजकोश...	१०	४३		{	१७ ४३		{	२३ २६
बीजपू	१४ ७८	ब्रह्मण्य	१४ ४१	भगदर	१६ ५६
बीजाकृत...	१९	८	ब्रह्मत्व	१७ ५२	भगवत्	१ १३
बीज्य	१७ २	ब्रह्मदर्भा	१४ १४५	भगिनी	१६ २५
बीभरस.	{	७ १७	ब्रह्मदार	१४ ४१	भंग	१० ५
	{	७ १९	ब्रह्मन्.	{	१ १६	भंगा	१५ २९
	{	२३ २३५		{	२३ ११४	भंगी	२५ ८
बुक	१४ ८१						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
भग्य	१९	७	भर्तृदारक	७	१२	भाद्र	४	१७
भजमान	१८	२४	भर्तृदारिका	७	१३	भाद्रपद	४	१७
भट	१८	६१	भर्त्सन	६	१४	भाद्रपदा	३	२२
भटिञ्च	१९	४५	भमन्	{ १९	९४	भानु	{ ३	३१
भट्टारक	७	१३	भल्ल	{ २०	३८		{ ३	३३
भट्टिनी	७	१३		२५	२१		{ २३	१०५
भटाजी	१४	११४	भल्लातकी	१४	४२	भाभिनी	१६	४
भडिल	१४	६३	भहुक	१५	३	भार	१९	८७
भडी	१४	९१	भहूक	१५	४	भारत	११	६
भद्र	{ ४	२५	भव	{ १	३६	भारती	६	१
	{ १९	४९		{ २३	२०६	भारद्वाजी	१४	११६
भद्रकुभ	१८	३२	भवन	१२	५	भरथाष्टि	२०	३०
भद्रदाह	१४	५२	भगनी	१	३९	भारवाट	२०	१५
भद्रपर्णी	१४	३६	भगिक	४	२६	भारक	२०	१५
भद्रबला	१४	१५३	भविट्ट	२१	२९	भार्गव	३	२५
भद्रसुरतक	१४	१६०	भविष्णु	२१	२९	भार्गवी	१४	१५८
भद्रयय	१४	६७	भय	४	२६	भार्गी	१४	८९
भद्रश्री	१६	१३१	भयक	२०	२२	भार्या	१६	६
भद्रासन	१८	३१	भत्या	२०	३३	भार्यापती	१६	३८
भय	७	२१	भस्मगधिनी	१४	१२०	भाव	{ ७	१२
भयम्बर	७	२०	भस्मगर्भा	१४	६३		{ ७	२१
भयद्रुत	२१	४२	भा	३	३४		{ २३	२०७
भवानक	{ ७	१७	भाग	१९	८०	भावबोधक	७	२१
	{ ७	२०	भागधेय	{ ४	२८	भाषित	{ १६	१३४
भर	१	६९	{ १८	२७	{ १९		४६	
भरण	२०	३९	भागिनय	१६	३२		{ ११	१०४
भरण्य	२०	३९	भा गिरयी	१०	३१	भावुक	४	२६
भरण्यमुञ्ज	२१	१९	भाग्य	{ ४	२८	भाषा	६	१
भरत	२०	१२	{ २३	१५५	भाषित	{ ६	१	
भरद्वाज	१५	१५	भागिन	१९	७	{ २१	१०७	
भर्ग	१	३५	भजन	१९	३३	भाष्य	२५	३१
भद्र	{ १६	३५	भाट	{ १९	३३	भास	३	३४
	{ १३	५९		{ २३	४४	भाम	२३	५८
						भास्कर	३	३८

शब्दः	पृष्ठाः	श्लोकः	अक्षरः	उप- सर्गः	उप- सर्गः	उप- सर्गः	पृष्ठाः	श्लोकः
भारथ	३	२९	भर्तृव्य	१	६	भृश	२१	६३
भिक्षा.	{ २०	६	भृशोपासी	१४	११५	भृशः	{ २१	६.
	{ २३	२०५	भृशुपिण	१६	११	भृशः	{ २१	१८३
भिक्षु.	{ १७	३	भृशोपर	१६	११	भृशोप	१०	१२३
	{ १७	४२	भृशोप	२०	११	भृशोप	११	५
भिक्ष	३	१६	भृश	{ १०	३	भृशः	१०	२१
भिक्षी	१२	४	भृश	{ ११	६	भृशः	१०	४६
भिक्षा	२२	५	भृश	११	२	भृशः	१६	१५१
भिक्षु	१	५०	भृश	{ १	११	भृशः	१२	१००
भिक्षाल.	१८	९१	भृश	{ २१	१००	भृशः	२१	२९
भिक्ष.	{ २१	८२	भृश	{ २३	१००	भृशः	१४	१५१
	{ २१	१००	भृश	१९	१११	भृशः	१३	५
भिक्षु	१६	५७	भृश	१५	१०	भृशः	{ १२	१३०
भिक्षता	१९	४९	भृश	१४	११	भृशः	{ ११	१६
भिक्षा	१९	४८	भृश	२२	१००	भृशः	{ १९	२९
भी	७	२१	भृश	१४	५८	भृश	१८	१५१
भीति	७	२१	भृश	{ १	३०	भृश	१८	२२
भीम.	{ १	३६	भृश	{ २०	६१	भृश	११	२८
	{ ७	३०	भृश	२१	१	भृश	१	२३
भीम.	{ १६	३	भृश	१	३३	भृश	२०	१५
	{ २१	२६	भृश	१५	२	भृश	२०	१८
भीमक	२१	२६	भृश	१७	४	भृश	२०	१५
भीमक	२१	२६	भृश	१७	४	भृश	२०	१५
भीमण	७	२०	भृश	१५	१४३	भृश	२०	१५
भीम	७	२०	भृश	१८	१	भृश	१	७०
भीमसू	१०	३१	भृश	१४	७०	भृश	१०	२४
भुक्त	२१	१११	भृश	२३	६१	भृश	१०	२४
भुक्तसमुपिज्ञत.	१९	५६	भृश	२४	१७	भृश	{ १८	२०
भुम.	{ २१	७१	भृश	११	२	भृश	{ १८	२१
	{ २१	९१	भृश	१४	३८	भृश	२१	१००
भुज	१६	८०	भृश	{ १४	११८	भृश	७	६
भुजग	८	६	भृश	२३	६१	भृश	१६	५०
भुजंग	८	६	भृश	१९	१	भृश	१७	४७
भुजंगभुज.	१५	३०	भृश	२१	६३	भृश	७	१९

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक				
भैरव	१६	५०	भूकृति	७	३७	मणिबध	१६	८१				
भोग	२३	२३	भ्रूण	{ १६ ३९ २३ ४५ २३ १३५	मड	{ १४ ५१ १९ ४९	मडन	{ १६ १०२ २१ २९				
भोगप्रती	२३	७०							भ्रेष	१८ २३	मडप	१२ ९
भोगिन्	८	८										
भोगिनी	१५	५	मकर	१० २०	मडलक	१६ ५४						
भोजन	१९	५५	मकरध्वज	१ ३७	मडलाग्र	१८ ८९						
भोस	२४	७	मकरद	१४ १७	मडलेश्वर	१८ २						
भोम	३	२५	मकुटक	१९ १७	मडहारक	२० १०						
भौरिक	११	७	मकूलक	१४ १४४	मडित	१६ १००						
भ्रंश	१८	२३	मक्षिका	१५ २६	मडीपी	१४ ९१						
भ्रकुस	७	११	मस	१७ १३	मडूक	१० २४						
भ्रकुटि	७	३७	मगध	१८ ९७	मडूकपर्ण	१४ ५६						
भ्रम	{ ५ ४ १० ७	२२ ९	मधवन्	१ ४४	मडूकपर्णी	१४ ९१						
			मधु	२४ ०	मडूर	१९ ९८						
भ्रमर	१५	२९	मगल	४ २५	मतगज	१८ ३४						
भ्रमरक	१६	९६	मगत्यक	१९ १७	मतलिका	४ २७						
भ्रमि	२२	९	मगल्या	१६ १२७	मति	५ १						
भ्रष्ट	२१	१०४	मगर्विका	४ २७	मत्त	{ १८ ३६ २१ २३ २१ १०३						
भ्रष्टव	१९	४७	मजा	१४ १२			मत्तकाशिनी	१६ ४				
भ्राजिष्णु	१६	१०१	मच	१६ १३८	मत्तर	२३ १७२						
भ्रातृ	१६	३६	मजरि	१४ १३	मत्स्य	१० १७						
भ्रातृजाया	१६	३०	मजिठा	१४ ९०	मत्स्यडी	१९ ४२						
भ्रातृभगिनी	१६	३६	मजीर	१६ १०९	मत्स्यपिता	१४ ८६						
भादव्य	२३	१४६	मजु	२१ ५२	मत्स्यवेधन	१० १६						
भ्रात्री	१६	३६	मजुल	२१ ५२	मत्स्याक्षी	१४ १३७						
भ्राति	५	४	मजूषा	२० ३०	मत्स्याख्यग	२३ २२०						
भ्राष्ट्र	१९	३०	मठ	१२ ८	मत्स्याघानी	१० १६						
भ्रुकुस	७	११	मड्ड	७ ८								
भ्रुकुटि	७	३१	मणि	{ १ ३० १९ ९३								
भ्रुकुप	१६	९२	मणिका		१९ ३१							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
मथित	...	१९ ५३	मधुरिका	१४ १०५	मनुष्यवर्धन्.	१	७२
मद.	{	१८ ३७	मधुरिपु	१ २०	मनोगुप्त	१९ १०८
		२२ १२	मधुलिङ्ग	१५ २९	मनोजवस्.	२१	१३
		२३ ९१	मधुवार	२० ४१	मनोज्ञ	२१ ५२
मदकल	१८ ३५	मधुव्रत	१५	२९	मनोभव	२३ १३८
मदन.	{	१ २६	मधुशिशु	१४ ३१	मनोरथ	७ २७
		१४ ५३	मधुश्रेणी	१४ ८४	मनोरम	२१ ५२
		१४ ७८	मधुष्ठील	१४ २८	मनोहत	२१ ४७
मदस्थान.	२०	४१	मधुचवा	१४ १४२	मनोह्ला	१९ १०८
मदिरा	२० ४०	मधूक	१४ २७	मतु	१८ २६
मदिरागृह...	१२	८	मधुच्छिष्ट	१९ १०७	मंत्र	२३ १६७
मदोत्कट	१८ ३५	मधूलक	...	१४ २८	मंत्रव्याख्याकृत.	१७	७
मदु	१५ ३४	मधूलिका.	१४	८४	मंत्रिन्	१८ ४
मदुर	१० १९	मध्य.	{	१६ ७९	मंथ	१९ ७४
मद्य	{	४ १५			२३ १६१	मयदंडक.	१९	७४
		१९ १०७	मध्यदेश	११ ७	मंथन्	१९ ७४
		२० ४१	मध्यम.	{	७ १	मयनी	१९ ७४
२३ १०३	११ ७	मथर			...	१८ ७२		
मधुक	१४ १०९	१६ १९	मंथान	१९ ७४		
		१९ २९	मध्यमा	{	१६ ८	मंद.	{	२० १८
२० ४१	१६ ८२	२३ ९५						
मधुद्रुम	...	१४ २७	मध्याह्न	...	४ ३	मदगामिन्.	१८	७२
मधुप	१५ २९	मध्यासव	२० ४१	मंदाकिना	१	५२
मधुपर्णिक.	{	१४ ३५	मनःशिला	१९	१०८	मंदाक्ष	७ २३
		१४ ९४	मनस्	४ ३१	मंदार.	{	१ ५३
मधुपर्णी	१४ ८३	मनसिज	१ २७			१४ २१
मधुमाक्षिका.	१५	१६	मनस्कार.	५	२	१४ २६		
मधुवष्टिक	१४	१०९	मनाक	२४ ८	मंदिर.	{	१२ ५
मधुर.	{	५ ९	मनित	२१ १०८			२३ १८४
		२३ १९१	मनीषा	५ १	मदुरा	१२ ७
मधुरक	१४ १४२	मनीषिन्	१७ ५	मंदोष्ण	...	३ ३५
मधुरसा	{	१४ ८३	मनु	२५ ३८	मंद्र	...	७ २
		१४ १०७	मनुज	१६ १			
मधुरा	१५२	मनुष्य	१६ १	मन्मथ.	{	१ २६
								१४ २१

इ द	वर्ग	क्रमां	शब्द	वर्ग	क्रमां	शब्द	वर्ग	क्रमां		
म धा	१६	६५	मर्कल	७	८	महाकल	१७	३		
म यु	{	७	२१	मर्क	२५	३०	महाग	१९	७५	
		१३	१५३	मर्क	६	३३	महाजाली	१४	११७	
म उत	४	२२	मर्कशु	२१	८३	महादेव	१	२४		
म य	१९	७५	मया	१८	२८	महाघन	१६	१७३		
म यु	{	१	७५	मल	११	६५	महानम	१९	२७	
		०९	१७	मल	२३	१९७	महागात्र	१८	५	
म यु	{	३	३३	मलपुत्र	२१	५५	महायज्ञ	१७	१४	
		३	१८	मलज	१६	१३१	महाजित	१९	९९	
म यु	{	१५	१११	मलय	१८	६३	महारजन	१९	१०६	
		१५	३०	माला	२१	५९	महागण्य	१७	१	
म यु	{	१४	८८	मलनी	१६	२०	महाराजिक	१	१०	
		१९	१०१	मन्त्रिपुत्र	१०	२१	महासाध	९	१	
म यु	१९	९२	ममस	२१	५५	महाशय	२३	३		
म यु	१८	११३	मल	२५	२१	महाशुनी	१६	१३		
म यु	१९	३१	मलक	२१	३७	महाश्रुता	१४	११०		
म यु	{	३	२७	मलहा	१४	६९	महाहा	{	१४	७३
		३	३३	मलहाक्ष	१५	२४	महासेन		१	४१
म यु	३	३९	मलपुत्र	१६	१२७	महाला	१६	२		
म यु	{	११	५	मली	२५	१०	महिलहया	१७	५४	
		२३	१६३	मल	१९	१७	महेश	१५	४	
म यु	{	१	६५	मनुविदला	१४	१०५	महाया	१६	५	
		३	२	मलय	१९	४६	मही	११	३	
म यु	२३	५९	मलक	१७	१६३	महीक्षित	१८	१		
म यु	१	४४	मलकरी	१७	४	महीध	१३	१		
म यु	१४	१३	मलक	१६	९१	मही	१४	५		
म यु	{	१४	५२	मलक	१६	६१	मही	१४	५	
		४	८९	मलक	१५	५५	महीलता	१०	२१	
म यु	१५	३	मल	७	२८	मही	३	२५		
म यु	१५	१३	मल	२३	७९	मही	२१	३		
म यु	{	१४	४८	मली	३	६९	मही	१०	१५४	
		१४	८७	मली	१०	६	मही	१	२२	
म यु	१६	१	मल	२९	२३२	मही	१९	६३		
म यु	१२	२२	महाकद	१४	१४८	मही	१०	३९		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
महोत्साह ...	२१	३	मातुलपुत्रक.	१४	७८	मार	...	१ २६
महोद्यम	२१	३	मातुलानी.	{ १६ ३०		मारजित	१ १३	
महोषध.	{ १४ १००		मातुलाहि.	८ ६		मारण	१८ ११४	
	{ १४ १४८		मातुली	१६ ३०		मारिष	७ १४	
	{ १९ ३८		मातुलंगक.	१४ ७८		मारुत	१ ६५	
मा.	{ १ २९		मातु.	{ १ ३७		मार्कव	१४ १५	
मांस.	{ २४ ११			{ ७ १४		मार्ग.	{ ४ १४	
	{ १६ ६३			{ १६ २९			{ ११ १५१	
	{ २५ २२			{ १९ ६६			मार्गण.	{ १८ ८७
मांसल ...	१६	४४	मातृष्वतेय.	१६ २५		{ २१ ४९		
मांसाक्षपशु...	२३	४२	मातृस्वर्णाय.	१६ २५		{ २२ ३०		
मासिक	२०	१४	मात्र	२३ १७८		मार्गशीर्ष	४ १४	
मासिक	१९	१०७	मात्रा.	{ २१ ६२		मार्गित ...	२१ १०५	
मागध	{ १८ ९७			{ २३ १७७		मार्जन	१४ ३३	
	{ २० २		माद	२२ १२		मार्जना	१६ १२१	
मागधी.	{ १४ ७१		माधव.	{ १ १८		माजार	१५ ६	
	{ १४ ९६			{ ४ १६		माजिता	१९ ४४	
माघ	४	१५	माघत्रक	२१ ४१		मार्निड ...	३ २९	
माघ्य	१४	७३	माघत्री	१४ ७२		मार्दीगिक ...	२० १३	
माठर	३	३१	माध्वीक	२० ४१		मार्ष्टि	१६ १२१	
माटि	२५	८	मान.	{ ७ २२		मालक	१४ ६२	
माणवक.	{ १६ ४२			{ १९ ८५		मालती	१४ ७२	
	{ १६ १०६		मानव	१६ १		माला	१६ १३५	
माणव्य	२२	४१	मानस	४ ३१		मालाकार.	२० ५	
माणिक्य	२५	३१	मानसौकस्.	१५ २३		मालाङ्गणक.	१४ १६७	
माणिमय	१९	४२	मानिनी	१६ ३		मालिक	२० ५	
मातंग.	{ २० १९		मानुष	१६ १		मालुधान....	८ ६	
	{ २३ २१		मानुष्यक....	२२ ४२		मालूर ...	१४ ३२	
मातरपितरौ.	१६	३७	माया	२० ११		माल्य	१६ १३५	
मातास्थिन्.	१	६४	मायाार	२० ११		माल्यवत्	१३ ३	
मातलि	१	४८	मायादेवीसुत.	१ १५		माषपर्णी	१४ १३८	
मातापितरौ.	१६	३७	मायु	१६ ६२		माषीण	१९ ७	
मातामह ...	१६	३३	मायूर ...	१५ ४३		माष्य ...	१९ ७	
मातुल.	{ १४ ७८							
	{ १६ ३१							

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
मास	४	१२	मक्ता	१९	९३	मुसली	{	१४ ११९
मासर	१९	४९	मुक्तावली	१६	१०५	मुसली	{	१५ १२
मासिक	१७	३१	मुक्त स्फोट	१०	२३	मुमक्ष्य	.	२१ ४५
मास्म	२४	११	मुक्ति	५	६	मुस्तक		१४ १५९
माहिष	२०	३	मुख {	१२	१९	मस्ता		१४ १५९
माहिषी	१९	६६		१६	८९	मुद्र		२४ १
मितपक्षः	२१	४८		२५	२२	मुद्रुर्माषा		६ १६
मित्र {	३	३०	मुखार	२१	३६	मुद्रुत		४ ११
	१८	९	मुखवासन	५	११	मुक		२१ १३
	१८	१२	मुख्य {	१७	४०	मुद		२१ ४८
	२३	१६७		२१	५७	मुत	.	२१ ९५
मिथस्	२३	२५७	मुड	{	१६ ४८	मत्र		१६ ६७
मिथुन	१५	३८			२५ ३४	मुत्रकृच्छ		१६ ५६
मिथ्या	२४	१५	मुडेत	{	१६ ४८	मुद्रित		२१ ९६
मिथ्य दृष्टि	५	४			२१ ८५	मुख		२१ ४८
मिथ्याभियोग	६	१०	मुडेन्		२० १०	मुच्छा		१८ १०९
मिथ्याभिप्रासन	६	१०	मद		४ २४	मुच्छाँल		१६ ६१
मिथ्यामति	५	४	मुदि		३ ७	मुच्छित {		१६ ६१
मिशी	१४	१३४	मदपूर्णा	.	१४ ११३			२३ ८२
मित्रेया	१४	१०५	मदर		१८ ९१	मूर्त {		१६ ६१
मि {	१४	१०५	सुधा		२४ ४			२१ ७६
	१४	१५२	मनि {		१ १४	मूर्ति {		१६ ७१
मिहिका	३	१८			१७ ४२			२३ ६६
मिहिर	३	२९	मनींद्र		१ १४	मूर्तिमद	..	२१ ७६
मीढ	२१	९६	मुजे		७ ५	मूर्दन्	.	१६ ९५
मीन	१०	१७	मुमर्दन		१ २३	मूर्धाभिवक्ति {		१८ १
मीनकेतन	१	२६	मुग		१४ १२३			२३ ६१
मुकुट	१६	१०२	मुषेत		२१ ८८	मूर्धा		१४ ८३
मुकुद {	१	२३	मुष्क		१६ ७६	मूल {		१४ १२
	१६	१२१	मष्कक		१४ ३९			२३ २०८
मुकुद	१६	१४०	मुष्टबध		२२ १४	मूलक		१४ १५७
मुकुद	१४	१६	मुसल		१९ २५	मूलवर्मान्		२२ ४
मुक्तकचुरु	८	६	मुसलिन	.	१ २५	मूलधन	१९ ८०

		१९०५	१९०६			१९०७	१९०८
मूल्य.	{	१९	५९	मत	{	१८	११०
		२०	३९			१९	३
मृगक	...	१५	१२	मृगनाद.	...	२१	१९
मृग.	{	२०	३३	मृगतल्प.	...	१८	१३१
		२५	३८	मृगका.	...	११	४
मृगिकपर्णी.	१४	८१	मृग	...	१८	११६	
मृगित	२१	८८	मृगजय.	...	१	३३
मृग.	{	१५	८	मृगसा	...	११	४
		२२	३०	मृगना.	{	११	४
		२३	३०			१४	१११
मृगणा	२२	३०	मृग	७	५
मृगतर्पणा	३	३५	मृग.	{	२१	७८	
मृगतदशक	२०	२१			२३	१४	
मृगधूक.	१५	५	मृगवन्.	१४	४६		
मृगनाभे.	१६	१२९	मृगल	२१	७८	
मृगनशाजीव.	२०	२१	मृग्रीका	१४	१०७	
मृगवधनी.	२०	२६	मृग	१८	१००	
मृगमद	१६	१२९	मृगा	२४	११
मृगया	२०	२३	मृगार्थक.	६	२१
मृगयु	२०	२१	मृग	...	२१	५६
मृगगमज.	१६	१११	मृगलकयथा	१०	३२		
मृगव्य	...	२०	२३	मृगला.	{	१६	१०८
मृगशिशु.	३	३३			१८	१०	
मृगशीर्ष.	३	३३	मृग	३	६	
मृगाक	३	१८	मृगव्योतिस्	३	१०	
मृगदन	१५	१	मृगनादानुलसिन्	१५	३०	
मृगित	२१	१०५	मृगनामन्.	१४	१५९	
मृगोद्ग	१५	१	मृगनिर्घोष.	३	८	
मृजा	१६	१२१	मृगपुष्प	१०	५
मृड	१	३३	मृगमाला	३	८	
मृडानी	१	३९	मृगवाहन	१	४७	
मृणाल	...	१०	४२	मृचक.	{	५	१४
मृणाली	...	२५	७			१५	३१
मृत्	११	४				
				मृ.	{	१६	७६
						११	७६
				मृग	२०	४२
				मृगस्	१६	६४
				मृदिनी	११	३
				मृटा	२१	३०
				मृथा	५	३
				मृथ	...	१९	१५
				मृथा	२१	५५
				मृथातमजा.	१	४०	
				मृत्	१	५२
				मृत्क	...	२२	२९
				मृत्	{	३	२७
						१९	७२
				मृत्तवत्.	१९	१०७	
				मृत्	१६	५६
				मृत्त	१६	५६
				मृत्तवर्षणि.	३	२०	
				मृत्ती	...	२५	३९
				मृत्थ	...	२५	३५
				मृथ.	{	१७	५७
						२३	१२९
				मृथे	...	२०	२२
				मृथ.	{	५	७
						१४	३९
				मृथ	...	२१	८१
				मृथा	१४	५४
				मृथक	१४	३३
				मृथा.	{	१४	४६
						१४	११३
				मृथक	२५	३३
				मृथट	१९	११०
				मृथटा	१४	८३

शुद्धातुत्रमणिका	पृ. नं.	अ.	पृ. नं.	श्लोक.	शुद्धातुत्रमणिका	पृ. नं.	श्लोक.			
माधक	२०	२४	वीतन्	१७	४४	२५	३८			
मोह	१८	१०९	यथा	२४	९	१४	१०९			
मात्तिक	१९	१२	यथाजात	२१	४८	१७	८			
मौद्गान	१९	८	यथातयम्	२४	१५	१७	१३			
मौन	१७	३६	यथ ययम्	२४	१४	२१	४९			
मरजिक	२०	१३	यथार्थम्	२४	१५	२१	४९			
मर्गि	१८	८५	यथावर्ण	१८	१३	१७	३२			
माले	२३	१९३	यथासम्	२४	१४	१९	३			
मौक्ष	२५	५	यथद्विस्त	१९	५७	१९	४			
मौर्त्त	१८	१४	यदि	२४	१२	याञ्जा	१७	३२		
मौर्त्तक	१८	१४	यद्वरुडा	२२	२		२२	६		
म्लष्ट	६	२१	यत्	१८	५९	याञ्जक	१७	१७		
म्लष्ट उदेश	११	७				२३	५९	यातना	९	३
म्लष्ट मुल	१९	९७	यन	१	६१	यत्ताम	२३	१४५		
य						१७	४०	यातु	१	६३
यकृत	१६	६९				२२	१८	यातधान	१	६३
यक्ष	१	११	५मराज्	१	६१	यात्	१६	३०		
		७३	५मना	१०	३२	यात्	१८	९५		
यथार्थम्	१९	१३३	मुनात्र ल	१	६१	यात्	२३	१७५		
यथासा	१९	१२७	यत्	१८	४५	यदपति	१०	२		
यथासा	१	७१	यत्	१९	१५	यात्	१०	२०		
यथामन्	१६	५१	यत्	१९	७	यादधीपति	१	६४		
यजमान	१७	८	यत्	१९	१८	यान	१८	१८		
यजुन्	६	३	यत्	१८	१९१		१८	५८		
यज्ञ	१७	१३	यत्	१८	१९७	यान्मुल	१८	५५		
यज्ञपुत्र	१	२१	यत्	१९	१०	यत्	२१	५४		
यज्ञोप	१७	२८	यत्	१९	१०८	यत्पयान	१८	५३		
यज्ञोप	१८	६२	यत्	१४	१४५	याम	४	६		
यज्ञोप	१७	२७	यत्	१४	९१		२२	१८		
यज्ञोप	१७	८	यत्	१६	४३	यामिनी	४	४		
यत्	२४	३	यत्	१९	७	यामुन	१९	१००		
यत्	२४	३	यत्	७	६	यायजूक	१७	८		
यत्	१७	४४	यत्	६	११	यात्	१६	१२५		

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः				
धावक	१९	१८	यूपखंड	२३	१६७	रक्तांग	१४	१४६	
धावत्	२३	२४७	यूपाय	१७	१९	रक्तोत्पल	१०	४२	
धावन्	१६	१२८	यूष	२५	३५	रक्षःसभ	...	२५	२७	
धाटिक	...	१९	७०	योक्त्र	१९	१३	रक्षस्.	{	१	११	
धास	१४	९१	योग	...	२३	२२		{	१	६३	
युक्त	१८	२४	योगेष्ट	१९	१०५	रक्षा	५	१	
युक्तरक्षा	१४	१४०	योग्य	१४	११२	रक्षित	२१	१०६	
युग....	{	११	३८	योजन	२५	३०	रक्षिवर्ग	१८	६	
	{	२३	२४	योजनबल्ली.	१४	९१		रक्षण	२२	८	
युगकालिक.	१९	१४	योत्र	१९	१३	रकु	१५	१०		
युगंधर.	{	१८	५७	योध	१८	६१	रंग	१९	१०६	
	{	२५	३५	योधसंराव...	१८	१०७	रंगाजीव	२०	७		
यमपत्	२४	२२	योनि	१६	७६	रचना	...	१६	१३७	
युगपत्रक	...	१४	२२	योषा	१६	२	रजक	२०	१०	
युगपार्श्वग...	१९	६३	योषित्	१६	२	रजत्.	{	१९	९६		
युगुल	१५	३८	यौतक	१८	२८		{	२३	७९	
युगाद्युग	१८	५७	यौतव	१९	८५	रजनी.	{	४	४	
युगम	१५	३८	यौवत	१६	२२		{	१४	१५३	
युग्य.	{	१८	५८	यौवन	१६	४०	रजनीमुख.	४	६		
	{	१९	६४						{	४	२९	
युद्ध	१८	१०३	र				रजस्.	{	१६	२१	
युष्	...	१८	१०६	रहस्	१	६७		{	१८	९८	
युवति	१६	८						{	२३	२३२	
युवन्	१६	४२	रक्त.	{	५	१५	रजस्वला....	१६	२०		
युवराज	...	७	१२		{	१६	६४	रञ्जु	२०	२७	
यूय	...	१५	४१		{	१६	१२४	रंजन	१६	१३२	
यूयनाय	१८	३५		{	२३	८०	रजनी	१४	९५	
यूयप	१८	३५	रक्तक	१४	७३		{	१८	१०४	
यूयिका	१४	७१	रक्तचंदन.	{	१६	१३२	रण....	{	२२	८	
यूय...	{	१४	४१		{	१९	१११		{	२३	४९	
	{	२५	३५	रक्तपा	१०	२२	रंडा	...	१४	८८	
यूयक	२५	१९	रक्तफला	...	१४	१३९	रत	...	१७	५७	
यूयकटक....	१४	१८	रक्तसंधयक.	१०	३६	रक्तसरोयद्ध.	१०	४१	रतिपति	...	१	३७

शब्द	वर्ग	श्लोक	गच्छ	ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
रत्न	{ १९ ९३		रवण	२१	३८	राजन्	{ १८ १	
	{ २३ १२६		रवि	३	३१		{ २३ १११	
रत्नसानु	१ ५२		रशाना	१६	१०८	राजन्य	१८	१
रत्नाकार	१० २		राशिम	{ ३ ३३		राजन्यक	१८	४
रत्नि	१६ ८६			{ २३ १३८		राजन्यत्व	११	१३
रथ	{ १४ ३०		रस	{ ५ ७		राजबन्ध	१४	१५३
	{ १८ ५१			{ ५ ९		राजबीजिन्	१७	२
रथकव्चा	१८ ५५			{ ७ १७		राजराज	१ ७२	
				{ १९ ९९		राजलिंग	२३ ९१	
रथकार	{ २० ४			{ २३ २०८		राजवश	१७	२
	{ २० ९		रसगर्भ	१९ १०२		राजवत्	११ १३	
रथगुप्ति	१८ ५७		रसज्ञा	१६ ९१		राजवृक्ष	१४ २३	
रथदु	१४ २६		रसना	१६ ९१		राजसदन	१२ १०	
रथांग	{ १८ ५५		रसवती	१९ २७		राजसभा	२५ ९	
	{ १८ ५६					राजसूय	२५ ३१	
रथांगाह्वयनामक	१८ २२		रसा	{ ११ २		राजहस	१५ २४	
रथिक	१८ ७६			{ १४ ८४		राजादन	{ १४ ३५	
			रसाजन	१९ १०१			{ १४ ४५	
रथिन्	{ १८ ६०		रसातल	८ १		राजाई	१६ १२६	
	{ २३ ७६					राजि	१४ ६	
रथिन	१८ ७६		रसाल	{ १४ ३३		राजिका	१९ १९	
रथ्य	१८ ४६			{ १४ १६३		राजिल	८ ५	
रथ्या	{ १२ ३		रसित	३ ८		राजीव	{ १० १९	
	{ १८ ५५		रसोनक	१४ १४८			{ १० ४१	
रद	१६ ९१		रह	१८ २३		राण्यांग	१८ १८	
रदन	१६ ९१		रहस्	१८ २२		रात्रि	४ ४	
रदनच्छद	१६ ९०		रहस्य	१८ २३		रात्रिचर	१ ६३	
रध	८ २		राका	४ ८		रात्रिचर ..	१ ६३	
रधस	२५ २१		राक्षस	१ ६२		राद्धात	५ ४	
रधणी	१६ ४		राक्षसी	१४ १२८		राघ	१ १६	
रमा	१ २९		राक्षा	१६ १२५		राघा	३ २२	
रमा	१४ ११३		रांकव	१६ १११				
रय	१ ६७		राज्	१८ १		राम	{ १ २४	
रयक	{ १६ ११६		राजक	१८ ३			{ १५ ११	
	{ २५ १७		राजकशेष	२३ १८८			{ २३ १४०	
रय	१ ६							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
रामउ	१९ ४०	रुचक्र.	}	१४ ५१	रंक.	}	२१ ५४	
रामा	१६ ४						१४ ७८	२३ ९३
रामि	१७ ४६					१९ ४३	रवतीरमण.	१ २४
राल	१६ १२७					१९ १०९	रवा १० ३२
राशि.	}	३ २७	रुचि.	}	३ ३४	रि....	}	१९ ९०	
		१५ ४२						२३ २९	२३ १६१
		२३ २१४						रुचिर २१ ५२
राष्ट्र	२३ १८४	रुच्य २१ ५२	रग १६ ५१			
राष्ट्रिका	१४ ९४	रुज्ज १६ ५१	रोगहारिन्	१३ ५७			
राष्ट्रीय	७ १४	रुजा १६ ५१	रुचन १४ ४७			
रासभ	१९ ७७	रुत ६ २५	रोचनी.	}	१४ १०८		
राज्ञा.	}	१४ ११४	रुदेन ७ ३५			१४ १४६		
		१४ १४०	रुद्र २१ ९०	रोचिष्णु १६ १०१			
रह	३ २६	रुद्र.	}	१ १०	रोचिस् ३ २४		
रिक्तक	२१ ५६				रुद्राणी १ ३९	रो.न १६ ९३
रिव्य	१९ ९०	रुधिर	}	१६ ६४	रो.नी १४ ९२		
रिंगण	७ ३६	४५ २२			रोदली २३ २३०		
रिति	१ ४३	रुह १५ १०	रोदरथी २३ २३०			
रिपु	१८ १०	रुशती ६ १८	रोघत् १७ ७			
रिष्ट	२३ ३६	रुप् ७ २६	राप १८ ८७			
रिष्टि	१८ ८९	रुहा १४ १५८	रोमन् १६ ९९			
रीढा	७ २३	रूप ५ ७	रोमय २५ ११			
रीण	२१ ९३	रूपा जीवा...	१६ १९	रोमहर्षण ७ २५			
रीति.	}	१९ ९७	रूपा	}	१९ ९१	रोनीच ७ ३५		
		२३ ६८				१९ ९६	रो.नी ७ २६	
रीतिपुष्प	१९ १०३	रूपधयक्ष	१८ ७	रोहिणी १९ ६७			
रुक्मतिक्रिया.	१६	५०	रुषित २१ ८९	रोहित.	}	५ १५		
रुक्म	१९ ९५	रोचित १८ ४८			१० १९		
रुक्मकारक.	२०	८	रणु १८ ९८	१५ १०				
रुक्ष	२३ २२६	रणुक्र १९ १६	रोहितक १४ ४९			
रुग्ण	२१ ९१	रणुका १४ १२०	रोहिताश्व...	१ ५८			
रुज्ज	३ ३४	रोतस् १६ ६३	रोहिन् १४ ४९			
					रोद्र.	}	७ १७		
							४ २०		

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	
रौमक	१९	४२	लता	१४	९	लस्तक	१८	८५	
रौरव	९	१		१४	११	लाक्षा	१६	१२५	
रौहिणेय	१	२५		१४	५५		२५	१०	
		५		२६	१४	७२	लाक्षामसादन	१४	४१
रौहिष	१४	१६६		१४	१३३	लांगल	१९	१३	
		१५	१०	१४	१५०	लांगलदह	१९	१४	
ल			लतार्क	१४	१४८	लांगलपद्धति	१९	१४	
लकुच	१४	६०	लपन	१६	८९	लांगलिकी	१४	११८	
लक्ष	१८	८६	लपेत	६	१	लांगली	१४	१११	
लक्षण	३	१७	२१	१०७	१४		१६८		
लक्ष्मण	२१	१४	लघ	२१	१०४	लांगूल	१८	५०	
लक्ष्मणा	१५	२५	लघ्वर्ण	१७	६	लाजा	१९	४७	
लक्ष्मन्	३	१७	लञ्चानुज्ञ	१७	१०	लाञ्छन	३	१७	
		२३	१२४	लभ्य	१८	२४	लाम	१९	८०
लक्ष्मी	१	२८	लबन	१६	१०४	लामजक	१४	१६५	
		१४	११२	लबोदर	१	४१	लालसा	७	२८
		१८	८२	लय	७	९		२३	२३०
लक्ष्मीवत्	२१	१४	ललना	१६	३	लाला	१६	६७	
लक्ष्म	७	३३	ललतिका	१६	१०४	लालाटिक	२३	१७	
		१८	८६	ललाट	१६	९२	लाव	१५	३५
लगुड	२५	१८	ललाटिका	१६	१०३	लासिका	७	८	
लग्न	३	२७	ललाम	२३	१४३	लास्य	७	१०	
लग्नक	२०	४४	ललामक	१६	१३५	लिकच	१४	९०	
लघु	१	६८	ललित	७	३१	लिक्षा	२५	१०	
		१४	१३३	लव	२२	२४	लिखित	१८	१६
		२३	२८		२१	६२	लिंग	२३	२५
लघुलय	१४	१६५	लग्न	१६	१२५	लिंगश्रुति	१७	५४	
लक्षा	२५	७	लवण	५	९	लिपि	१८	१६	
लक्षोपिका	३४	१३३		१९	४१	लिपिकर	१८	१५	
लजा	७	२३	२५	२३	लित	२१	९०		
लजाशील	२१	२८	लवणोद	१०	२	लितक	१८	८८	
लजित	२१	११	लवन	२२	२४	लिप्सा	७	२७	
लटा	२५	१०	लविम	१९	१३	लिवि	१८	१६	
			लशुन	१४	१४८	लीढ	२१	११०	

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
लीला.	{ ७	३२	लोलुप	२१	२२	वचस्	६	१
	{ २३	१९९	लोलुभ	२१	२२	वचा	१४	१०२
लुठित	१८	५०	लोष्ट	१९	१२	वज्र. {	१	५०
लुब्ध	२१	२२	लोष्टभेदन ...	१९	१२		१४	१०५
लुब्धक	२०	२१		{ १६	१२६		२३	१८४
लुलाय	१५	४	लोह. {	१९	९८	वज्रनिर्घोष.	३	१०
लूता	१५	१३		{ १९	९९	वज्रपुष्प	१४	७६
लून	२१	१०३		{ २५	२३	वज्रिन् ...	१	४५
लूम	१८	५०	लोहकारक.	२०	७	वंचक	२१	४७
लेख	१	८	लोहपृष्ठ ...	१५	१६	वंचित	२१	४१
लेखक	१८	१५	लोहल	२१	३७	वंचुक	१५	५
लेखर्षभ	१	४५	लोहाभिसार.	१८	९४		{ १४	२७
लेखा ...	१४	४	लोहित. {	५	१५		{ १४	३०
लेपक	२०	६		{ १६	६४		{ १४	६४
लेश	२१	६२	लोहितक....	१९	९२	वट	१४	३२
लेष्टु	१९	१२	लोहितचंदन.	१६	१२४	वटक	२५	१७
लेह ...	१९	५६	लोहिताश्व...	१	५८	वटी	२०	२७
लोक. {	११	६	लोहितांग....	३	२५	वडवा	१८	४६
	{ २३	२	व.			वडवानल....	१	५९
लोकजिव.	१	१३	व	२४	९	वडू ...	२१	६१
लोकमाट ...	१	२९	वंश. {	१४	१६०	वाणिकू	१९	७८
लोकायत	२५	३२		{ १७	१	वाणिकपथ....	२३	५२
लोकालोक.	१३	२	वंशक	१६	१२६	वाणिज्या	१९	७९
लोकेश	१	१६	वंशरोचना.	१९	१०९	वंटक ...	१९	८९
लोचन	१६	९३	वक्तव्य	२३	१५९	वत्स. {	१६	७८
लोचमस्तक.	१४	१११	वकट ...	२१	३५		{ १९	६२
लोघ्र	१४	३३	वक्र	१६	८९		{ २३	२२७
लोषामुद्रा ...	३	२०	वक्र ...	२१	७१	वत्सक	१४	६६
लोप्त्र	२०	२५	वक्षस्	१६	७८	वत्सतर	१९	६२
लोमन्	१४	९९	वंक्षण	१६	७३	वत्सनाभ....	८	११
लोमशा	१४	१३४	वंग	१९	१०६	वत्सर. {	४	१३
लोल. {	२१	७४	वचन	६	१		{ ४	२०
	{ २३	३०५	वचनेस्थित.	२१	२४	वत्सल	२१	१४
						वत्सादनी....	१४	६३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक											
वद	२१	३५	वषा	{	८	२	वराशि	१६	११६										
वदन	१६	८९					१६	६४	वराह	१५	२								
वदान्य	{	२१	६	वपुस्	.	१६	७०	वरिवसित	२१	१०२									
								२३	१६०	१२	३	वरिण्या	१७	३५					
वदाग्द	२१	३५	वप्र	{	१९	११	वरिवसित्त	२१	१०२										
वध	१८	११५					१९	१०५	वारिष्ट	१९	९७								
वध्य	२१	४५	वमयु	{	१६	५५	वारिष्ट ...	२१	१११										
वध्य	१४	७					१८	३७	वरो	१४	१००								
वध्या	१९	६९	वमि		१६	५५	वरोपस्	२३	२३६										
वधी	...	२०	वयस्		२३	२३१	वरुण	{	१	६४									
वधू	{	१४	१३३	वयस्या	{	१३					५८	३	२						
														१६	२	१४	१३७	१४	२५
														१६	९	१४	१४४		
वन	{	१०	३	वयस्य	{	१६	४२	वरुणात्मजा	२०	३९									
								१४	१	१८	१२	वश्य	१८	५७					
								२३	१२६	१६	१२	वह्ययिनी	१८	७८					
वनतित्तिका	१४	८५	वजस्या		१६	१२	वरेण्य	२१	५७										
वनप्रिय	१५	१९	वर	{	१६	१२४	वर्कर	२०	२३										
वनमाक्षिका	१५	२७					२२	८	वर्ग	१५	४१								
वनमालिन्	१	२१	२३	१७३	वरटा	{	१५	२५	वर्चस्	२३	२३२								
वनमुद्ग	१९	१७	१५	२७					१२	३	१७	१	१७	१					
वनशृगाट	१४	९९	वरण		१४	२५	वर्ण	{							१८	४२			
वनसम्ह	१४	४	१४	२५	२५	१८			२३	४८									
वनस्पाति	१४	६	वरत्रा		१८	४२	वर्णक	{			१६	१३३							
वनायुज	१८	४५	२०	३१	२१	७			२५	३८									
षनिता	{	१६	२	वरवर्णिनी			{	१६			४	वर्णित	२१	११०					
					२१	७४			१९	४१		वर्णित्	१७	४३					
वनीयक	२१	४९	वरांग		२३	२६	वर्तक	{	१५	३५									
वनौकस्	१५	३	वरांगक		१४	१३४					२३	११							
वदा	१४	८२	वराटक	{	१०	४३	वर्तन	{	१९	१									
वदाव	२१	२८									२०	२७	२१	२९					
वन्या	१४	४	२५	३८	वर्तनी	११	१५	वर्ति	.	१६	१३३								
			वराटका		१६	४	वर्तिका					...	१५	३५					

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वर्तिष्णु	२१ २९	वल्क	१४ १२	वसुधरा	११ ३
वर्तुल	२१ ६९	वल्कल	१४ १२	वसुधर्ता	११ ३
वर्त्मन्.	{	११ ५ २३ १२१	वल्गित	...	१८ ४८	वस्तु	२५ १३
वर्धक	१४ ९०	वल्गु	२३ १४४	वस्ति	१६ ११४
वर्धाकि	२० ९	वल्मीक	११ १४	वस्त्र	...	१६ ११५
वर्धन.	{	२१ २८ २२ ७	वल्मीकी	७ ३	वस्त्रयोनि.	१६	११०
वर्धमान	१४ ५१	वल्भ.	{	२१ ५३ २३ १३७	वस्त्रवेश्मन्	१६	१२०
वर्धमानक.	१९	३२	वल्हरी	१४ १३	वस्त्र	१९ ७९
वर्धिष्णु	२१ २८	वल्ही	१४ ९	वस्त्रसा	१६ ६६
वर्मन्	१८ ६४	वल्हूर	१६ ६३	वह	१९ ६३
वर्मित	१८ ६५	वल्श	२२ ८	वह्नि.	{	१ ६६ ३ २
वर्थ	...	२१ ५७	वल्शक्रिया.	२२	४	वह्निशिख.	१६	१०६
वर्था	१६ ७	वल्शा.	{	१८ ३६ १९ ६९ २३ २१७	वह्निसङ्गक.	१४	८०
वर्थाणा	१५ २६	वल्शिक	२१ ५६	वा.	{	२३ २५० २४ ९ २४ १५
वर्ष.	{	३ ११ ११ ६ २३ २३४	वल्शिर.	{	१४ ९७ १९ ४१	वाक्पति	२१ ३५
वर्षा	१८ ९	वल्शय	२१ २५	वाक्य	६ २
वर्षाभू	१० २४	वल्शट्ट	२४ ८	वागीश	२१ ३५
वर्षाभ्वी	१० २४	वल्शट्टकृत.	१७	२७	वागुरा	२० २६
वर्षायस्	१६ ४३	वल्शति	...	२३ ६७	वागुरिक	२० १४
वर्षोपल	३ १२	वल्शन	...	१६ ११५	वागिमन्.	२१	३५
वर्ष्मन्.	{	१६ ७० २३ १२३	वल्संत	४ १८	वाङ्मुख.	६	९
वलज	...	२३ ३१	वल्सा	१६ ६४	वाच्	६ १
वल्लजा	२३ ३१	वल्सा.	{	१ १० १४ ८१ १९ ९० २३ २२९	वाचंयम	१७ ४२
वलभी	१२ १५	वल्सु.	{	१ १० १४ ८१ १९ ९० २३ २२९	वाचक	६ २
वल्लय	१६ १०७	वल्सुक.	{	१४ ८० १९ ४२	वाचस्पति.	३	२४
वल्लयित	२१ ९०	वल्सुदेव	...	१ २३	वाचाट	२१ ३६
वल्लीक	१२ १४	वल्सुधा	११ ३	वाचाल	२१ ३६
वल्लीमुख.	१५	३				वाचिक	६ १७
						वाचोयुक्तिपटु.	२१	३५
						वाज	१८ ८७

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	
वाजपेय	२५	३१	वान	१४	१५	वारि	१०	३	
वाजिदत्तक	१४	१०३	वानप्रस्थ	{ १४	२८	वारिह	२	७	
वाजिन्	{	१५	३३	वानर	१७	३	वारिपर्णी	१०	३८
		१८	४४			३	वारिप्रवाह	१३	५
		२३	१०७	वानस्पत्य	१४	६	वारिखाह	३	६
वाजिशाला	१२	७	वानीर	१४	३०	वारी	१८	४३	
वाञ्छा	७	२७	वानेय	१४	१३१	वारणी	२३	५२	
वाटी	२५	४२	वाषी	१०	१८	वार्त	{	१६	५७
वाट्यालका	१४	१०७	वाप्य	१४	१२६			२३	७६
वाटव	{	१	५९	वाम	२३			१४४	६
		१७	४	वामदेव	१	३४	१९	१	
		१८	४६	वामन	{	३	३	२३	७५
१	५९	१६	४६			वार्ताकी	१४	११४	
२२	४१	२१	७०			वार्तावह	२०	१५	
वाडवानल	१	५९	वामलू	११	१४	वाधक	१६	४०	
वाडव्य	२२	४१	वामलोचना	१६	३	वाधुषि	१९	५	
वाणि	२०	२८	वामा	१६	२	वाधाधिक	१९	५	
वाणिज	१९	७८	वामी	१८	४६	वार्मण	२२	४३	
वाणिज्य	{	१९	२	वायदड	२०	२८	वार्षिक	१५	१५०
		१९	७९	वायस	१५	२०	वाल	१६	९५
वाणिनी	२३	११२	वायसाताति	१५	१५	वालधि	१८	५०	
वाणी	६	१	वायसी	१४	१५१	वालपाइया	१६	१०३	
वात	१	६६	वायसी	१४	१५१	वालहस्त	१८	५०	
वातक	१४	१४९	वायसीली	१४	१४४	वालुक	१४	१२१	
वातकिन्	१६	५९	वायु	१	६४	वालुका	२३	७३	
वातपोथ	१४	२९	वायुसख	१	५८	वालुक	१६	१११	
वातप्रभी	१५	७	वार	१०	३	वावदुक	२१	३५	
वातमृग	१५	७	वार	{	१५	३९	वाशिका	१४	१०३
वातरोगिन्	२६	५९			२३	१६१	वाशित	६	२५
वातायन	१२	९	वारण	१८	३४	वास	१२	६	
वातायु	१५	८	वारणशुषा	१४	११३	वासक	१४	१०३	
वातूल	२३	१९६	वारवाण	१८	१६	वासगृह	१२	८	
वात्पा	२३	१९६	वारमुल्या	१६	१९	वासती	१४	७२	
वात्सक	१८	६०	वारसी	१६	१९				
वादित्र	७	५	वाराही	१४	१५१				
वाध	७	५							

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वालयोग....	१६	१३४	विकासिन्.	२१	३०	विच्छाय ...	२५	२६
वासर	४	२	विकिर	१५	३३	विजन. {	१८	२२
वासव	१	४५	विकीरण.	१४	८०	२३	८२	
वासस् ...	१६	११५	विकुर्वाण.	२१	७	विजय	१८	११०
वासित. {	१६	१३४	विकृत. {	७	१९	विजिल	१९	४६
१९	४६	१६	५८	विज्ञ	२१	४		
वासिता	२३	७५	विकृति	२२	१५	विज्ञात ...	२१	९
वासुकि	८	४	विक्रम. {	१८	१०२	विज्ञान	५	६
वासुदेव	१	३०	२३	१४१	विद्.	{	१६	६८
वासू	७	१४	विक्रय	१९	८२	१९	१	
वास्तु	१२	१९	विक्रयिक.	१९	७९	विट	२५	१७
वास्तुक	१४	१५८	विक्रांत	१८	७७	विटंक	१२	१५
वातोष्पति.	१	४६	विक्रिया	२२	१५	विटप. {	१४	१४
वास्त	१८	५४	विक्रेत ...	१९	७९	२३	१३१	
वाह. {	१८	४४	विक्रेय	१९	८२	विटापिन्	१४	५
१९	८८	विक्रव ...	२१	४४	विट्खदिर.	१४	५०	
वाहद्विषद्.	१४	४	विक्षाव	२२	३७	विट्चर	२०	२३
वाहन	१८	५८	विगत	२१	१००	विडंग	१४	१०६
वाहस	८	५	विगतार्तवा.	१६	२१	वितंडा	२५	९
वाह्मिष्य	१८	३९	विग्र	१६	४६	वितथ	६	२१
वाहिनी. {	१८	७८	वियह. {	१६	७०	वितरण	१७	२९
१८	८१	१८	१८	वितर्दि	१२	१६		
२३	११२	१८	१०४	वितस्ति.	१६	८४		
वाहिनीपति	१८	६२	२२	२२	वितान. {	१६	१२०	
वि	१५	३३	विघस	१७	२८	२३	११३	
विशालि	१९	८३	विघ्न	२२	१९	वितुन्न	१४	१४९
विककत.	१४	३७	विघ्नराज	१	४१	वितुन्नक. {	१४	१२६
विकच	१४	७	विचक्षण.	१७	६	१९	३७	
विकर्तन	३	२९	विचयन.	२२	३०	१९	१०१	
विकलांग.	१६	४६	विचारिका.	१६	५३	वित्त. {	१९	९०
विकसा	१४	९०	विचारणा	५	२	२१	९	
विकसित.	१४	८	विचारित	२१	९९	२१	९९	
विकस्वर	२१	३०	विचिकित्सा.	५	३	विदर	२२	५
विकार ...	२२	१५	विच्छदक.	१२	११	विदल	२५	३२

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक			
विदारक	१०	१०	विधुत	२१	१०७	विपुल	२१	६१			
विदारी	{	१४	२०	विधुतुद	३	२६	विप्र	{	१७	०	
		१४	११०	विधुर	२२	२०			१७	४	
विदारिगघा	१४	११५	विधुवन	२२	४	विप्रकार	२२	१५			
विदित	{	२१	१०८	विधुवन	२२	४	विप्रकृत	२१	४१		
		२१	१०९	विधेय	२१	२४	विप्रकृत	२१	६८		
विदिशु	३	५	विनयग्राहिन्	२१	२४	विप्रतीसार	७	२५			
विदु	१८	३७	विना	२४	३	विप्रयोग	२२	२८			
विदुर	{	१४	३०	विनायक	{	१	१४	विप्रलब्ध	२२	४१	
		२१	३०			१	४०	विपलम	{	७	३६
१४	३०	२३	६			२२	२८				
विदुल	...	१४	३०	विनाश	२२	२२	विप्रलाप	६	१६		
विद्ध	२१	९९	विनाशो	२१	९१	विप्रश्रिका	१६	२०			
विद्धकर्णी	१४	८४	विनाशो मुख	१८	४४	विमुष्	१०	६			
विद्याधर	१	११	विनीत	{	२१	२५	विपुत्र	२२	१४		
विधुव	३	९	विदु	२१	३०	विपुष	१	७			
विदधि	१६	५६	विध्व	१३	३	विभव	१९	९०			
विदध	१८	१११	विच	{	२१	९९	विभाकर	३	२८		
विदुत	२१	१००	विच	{	२१	१०४	विभावरी	४	४		
विदुम	..	१९	१३	विच्यस्त	२३	४५	विभावसु	{	१	५९	
विदुमलता	१४	१२९	विपक्ष	१८	११	३			३०		
विदुस्	{	१७	५	विपर्चा	७	३			२३	२२७	
		२३	२३५	विपण	१९	८३	विभीतक	१४	५८		
विद्वेष	७	२५	विपणि	{	१२	२	विभूति	१	३८		
विधवा	१६	११	विपण	{	२३	५२	विभूषण	१६	१०१		
विधा	{	२०	३८	विपण	{	१२	२	विभ्रम	{	७	३१
		२३	१०१	विपण	{	१२	२			२३	१४२
विधाह	१	१७	विपण	{	१२	२	विभ्रज्	१६	१०१		
विधि	{	१	१७	विपण	{	१२	२	विमनस्	२१	८	
		४	२८	विपण	{	२३	५२	विमर्दन	२२	१३	
		१७	४०	विपण	{	१८	८२	विमला	१४	१४३	
		२३	१००	विपण	{	११	१६	विमाहज	१६	२५	
विधिदर्शिन	१७	१६	विपण	{	१८	८२	विमान	१	५१		
विधु	{	१	२२	विपण	{	१८	८२	विपत	...	२	२
		३	१४	विपण	{	१०	३३				
		२३	९९	विपण	{	१६	५२				
				विपाद	१०	३३					
				विपादिका	१६	५२					
				विपाशा	१०	३३					
				विपिन	...	१४	१				

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
वियद्गंगा....	१	५२	विवाद....	६	९	विश्वकट्ट....	२०	२२
विमय....	२२	१८	विवाह....	१७	५६	विश्वकर्मन्	२३	१०९
विघात....	२१	२५	विविक्त.	{	१८ २२	विश्वकर्मन्.	२१	३९
विधाय....	१२	१८		{	०३ ८२	विश्वभयज.	१९	२८
विरजस्तमस्.	१७	४५	विविध....	२१	९३	विश्वभर...	१	२२
विरति....	२२	३८	विवेक....	१७	३८	विश्वभरा....	११	२
विरल....	२१	६६	विज्योक....	७	३१	विश्वरूप....	१	२३
विराजू....	१८	१	विशू....	१७	२	विश्ववसु...	१	१०
विराव....	६	२३	विशू....	२३	२१४	विश्वसृज....	१	१७
विरिच....	१	१७	विशकट....	२१	६०	विश्वस्ता....	१६	११
विरिचि....	१	१७	विशद....	५	१२	विश्या...	१४	९९
विरिण....	२३	५७	विशर....	१८	११५	विश्वास....	१८	२३
विह्वपाक्ष	१	३४	विशल्या.	{	१४ ८३	विष्...	१८	६८
विरोचन.	{	३ ३०		{	१४ १३६	विष्.	{	८ ९
	{	२३ १०८		{	२३ १५५		{	२३ २२३
विरोप....	७	२५	विशसन....	१८	११४	विषधर....	८	७
विरोधन...	२२	२१	विशाख....	१	४२	विषमच्छद.	१४	२३
विरोधोक्ति.	६	१६	विशाखा...	३	२२		{	५ ७
विलक्ष....	२१	२६	विशाप....	२२	३२	विषय.	{	११ ८
विलक्षण....	२२	२	विशारण....	१८	११२		{	२२ ११
विलंबित....	७	९	विशारद....	२३	९५		{	२३ १५२
विलम्ब....	२२	२८	विशाल....	२१	६०	विषयि....	५	८
विलाप....	६	१६	विशालता.	१६	११४	विषयवध....	८	११
विलास....	७	३१	विशालत्वच्.	१४	२३	विषया....	१४	९९
विलीन....	२१	१००	विशाला....	१४	१५६	विषाक्त....	१८	८८
विलेपन.	{	१६ १३३	विशाला....	१४	१५६	विषाण....	२३	५६
	{	२२ २७	विशिख....	१८	८६	विषाणी....	१४	११९
विलेपी....	१९	५०	विशिखा....	१२	३	विषुव....	४	१४
विवव....	२३	९६	विशेषक....	१६	१२३	विषवत्....	४	१४
विवर....	८	१	विश्राणन....	१७	२९	विष्किर....	१५	३३
विवर्ण....	२०	१६	विश्राव....	२२	२८	विष्कंभ....	१२	१७
विवश...	२१	४४	विश्रुत....	२१	९	विष्टप...	११	६
विवस्वत.	{	३ २९		{	१ १०	विष्टर....	२३	१६९
	{	२३ ५७	विश्व.	{	१९ ३८	विष्टरश्रवस्.	१	१८
				{	२१ ६५	विष्टि....	१	३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
विष्ठा	१६	६८	विद्यसा	१६	४१	वीरपाण	१८	१०३
विष्णु	१	१८	विहग	१५	३२	वीरभार्या	१६	१६
विष्णुकांता	१४	१०४	विहग	१५	३२	वीरमातृ	१६	१६
विष्णुपद	२	२	विहगम	१५	३२	वीरवृक्ष	१४	४२
विष्णुपदी	१०	३१	विहगिका	२०	३०	वीराशसन	१८	१००
विष्णुपथ	१	३१	विहसित	७	३५	वीरसू	१६	१६
विष्य	२१	४५	विहस्त	२१	४३	वीरहनु	१७	५३
विष्णुकू	२४	१३	विहापित	१७	२९	वीरघू	१४	९
विष्णुसेन	१	१९	विहायसू	{	२ २	वीर्य	{	१० २९
विष्णुसेनप्रिया	१४	१५१	विहायस	{	१५ ३२	वीर्य	{	१६ ६२
विष्णुसेना	१४	५६	विहार	२	२	वीर्य	{	२३ १३४
विष्णुदचड्	२१	३४	विहार	२२	१६	वीरघ	२३	९६
विसाद	७	३६	विह्वल	२१	४४	वृक	१५	७
विसर	१५	३९	वीकाश	२३	२१५	वृकधूप	{	१६ १२८
विसर्जन	१७	२९	वीचि	१०	५	वृकधूप	{	१६ १२९
विसर्पण	२२	२३	वीणा	७	३	वृकण	२१	१०३
विसार	१०	१७	वीणाद	७	७	वृक्ष	१४	५
विसारिन्	२१	३१	वीणावाद	२०	१३	वृक्षभेदिन्	२०	३४
विद्यत	२१	८६	वीत	१८	४३	वृक्षरहा	१४	८२
विद्यत्वर	२१	३१	वीतस	२०	२६	वृक्षवाटिका	१४	२
विद्यमर	२१	३१	वीति	१८	४३	वृक्षादनी	{	१४ ८२
विद्यतर	२२	२२	वीतिहोन	१	५६	वृक्षादनी	{	२० ३४
विद्यतार	{	१४ १४	वीयी	{	१४ ४	वृक्षाम्ल	१९	३५
विद्यत	२१	८६	वीधी	{	२३ ८७	वृजिन	{	४ २३
विस्फार	१८	१०८	वीध्र	२१	५५	वृजिन	{	२१ ७१
विस्फोट	१६	५३	वीनाह	१०	२७	वृजिन	{	२३ १०९
विस्मय	७	१९	वीर	{	७ १७	वृत्त	२१	९२
विस्मयान्वित	२१	५६	वीर	{	७ १८	वृत्त	{	१२ ३
विस्मृत	२१	८६	वीर	{	१८ ७७	वृत्ति	{	२२ ८
विद्य	५	१२	वीरण	१४	१६४	वृत्त	{	२१ ६९
विद्यम	{	१८ २३	वीरतर	१४	१६४	वृत्त	{	२१ ९२
विद्यम	{	२३ १३५	वीरतर	१४	४५	वृत्त	{	२३ ७८
			वीरतर	१४	४५	वृत्तांत	{	६ ७
			वीरतर	१६	१६	वृत्तांत	{	२३ ६३

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
वैणिक	२०	१३	व्यजक	७	१६	व्याधिघात	१४	२४
वैतसिक	२०	१४	व्यजन	{ २३	११६	व्याधित	१६	५८
वैतनिक	२०	१५		{ २५	२३	व्यान	१	६७
वैतरणी	९	२	व्यङ्गक	१४	५१	व्यापाद	५	४
वैतालिक	१८	९७	व्यत्यय	२२	३३	व्याम	१६	८७
वैदेहक	{ २०	३	व्यत्यास	२२	३३	व्याल	{ ८	७
	{ १९	७८	व्यया	९	३		{ २३	१९६
वैदेही	१४	९६	व्यघ	२२	८	व्यालम्राहिन	८	११
वैद्य	१६	५७	व्यघ्न	११	१६	व्यावृत्त	२१	९२
वैद्यमातृ	१४	१०३	व्यय	२२	१७	व्यास	२२	२२
वैघात	१	५४	व्यलीक	२३	१२	व्याहार	६	१
वैधेय	२१	४८	व्यपधा	३	१२	व्युत्थान	२३	११८
वैनतेय	१	३१	व्यपसाय	२३	२१३	व्युष्टि	२३	३८
वैनीतक	१८	५८	व्यपहार	६	९	व्यूढ	२३	४५
वैमात्रेय	१६	२५	व्यवाय	१७	५७	व्यूढककट	१८	६५
वैयाघ्र	२०	५३	व्यसन	२३	१२०	व्युत्ति	२०	२८
वैर	७	२५	व्यसनार्त	२१	४३	व्यूह	{ १५	३९
वैरनिर्यातन	१८	११०	व्यस्त	२१	७२		{ १८	७९
वैरशुद्धि	१८	११०	व्याकुल	२१	४२		{ २३	२३९
वैरिन्	१८	१०	व्याकोश	१४	७	व्यूहपार्ष्णि	१८	७९
वैपथिक	२०	२५	व्यात्र	{ १५	१	व्योकार	२०	७
वैवस्वत	१	६२		{ २१	५९	व्योमकेश	१	३६
वैशाख	{ ४	१६	व्याघ्नख	१४	१२९	व्योमन्	२	१
	{ १९	७४	व्यात्रपाद	१४	३७	व्योमयान	१	५१
वैश्य	१९	१	व्यात्रपुच्छ	१४	५०	व्योष	१९	१११
वैश्रवण	१	७२	व्याघ्राट	१५	१५	व्रज	{ १५	३९
वैश्वानर	१	५६	व्याघ्री	१४	९३		{ २३	३०
वैसारिण	१०	१७	व्याज	{ ७	३०	व्रज्या	{ १७	३६
वौषट्	२४	८		{ ७	३३		{ १८	९५
व्यक्त	२३	६२	व्याड	२३	४२	व्रण	१६	५४
व्यक्ति	४	३१	व्याडायुध	१४	१२९	व्रणकार्य	२३	१८९
व्यग्र	२३	१९०	व्याघ	२०	२१	व्रत	१७	३८
व्यगा	२३	१७७	व्याधि	{ १४	१२६	व्रताति	{ १४	९
व्यजन	१६	१४०		{ १६	५१		{ २३	६७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
व्रतिन्	१७	७	शक्रधनुस्.	३	१०	शतमूली....	१४	१००
व्रश्चन	२०	३३	शक्रपादप.	१४	५३	शतयष्टिका.	१६	१०५
व्रात	१५	३९	शक्रपुष्पिका.	२४	१३६	शतवीर्या	१४	१५९
व्रात्य	१७	५४	शकु	२१	३६	शतवेधिनू.	१४	१४१
व्रीडा ...	७	२३	शंकर	१	३२	शतवृदा	३	९
व्रीहि.	{ १४ १९ १९ २१		शंकु.	{ १० १४ १८	{ २० ८ ९३	शतांग	१८	५१
व्रीहिभेद.	१९	२०	शंख.	{ १ १० १४ २३	{ ७५ २३ १३० १८	शत्रु.	{ १८ १८	{ ९ ११
व्रहेय	१९	६	शंखनक.	१०	२३	शनैश्चर ...	३	२६
श.			शंखिनी	१४	१२६	शनैस्	२४	१७
शंव	१	५०	शची	१	४८	शपथ	६	९
शकट ...	१८	५२	शचीपति....	१	४६	शपन	६	९
शकल	३	१६	शटी	१४	१५४	शफ	१८	४९
शकुलिन्	१०	१७	शठ	२१	४६	शफरी	१०	१८
शकुन	१५	३२	शणपर्णी....	१४	१४९	शबर ...	२०	२०
शकुनि	१५	३२	जणपुष्पिका.	१४	१०७	शबरालय.	१२	२०
शकुंत.	{ १ २३	{ २७ ५८	शणसूत्र	१०	१६	शबल	५	१७
शकुंति	१५	३२	शत	१९	८४	शबली	१९	६७
शकल	१०	१९	शतकोटि.	१	५०	शब्द.	{ ५ ६ ६	{ ७ २ २२
शकुलाक्षका.	१४	१५९	गतहृ	१०	३३	शब्दग्रह	१६	९४
शकुलादनी.	{ १४ १४	{ ८६ १११	शतपत्र	१०	४०	शब्देन	२१	३८
शकुलार्भक.	१०	१७	शतपत्रक	१५	१६	जम	२२	३
शकुत् ...	१६	६७	शतपदी	१५	१३	शमथ ...	२२	३
शक्रकरि.	१९	६२	शतपर्वन्....	१४	१६१	शमन.	{ १ १७	{ ६१ २६
शक्ति.	{ १८ १८ २३	{ १९ १०२ ६६	शतपर्विका	{ १४ १४	{ १०२ १५८	शमनस्वसृ.	१०	३२
शक्तिवर....	१	४३	शतपुष्पा.	१४	१५२	शमल	१६	६७
शक्तिहोतिक.	१८	६९	शतप्राप्त	१४	७६	शमित ...	२१	९७
शक्र.	{ १ १४	{ ४५ ६६	शतमन्यु	१	४५	शमी.	{ १४ १९	{ ५२ २३
			शतमान	२५	३४	शमीधा य.	१९	२४

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
शमीर	..	१४ ५२	शराव	..	२१ २८	शष्प	१४	१६७
शपा	.	३ ९	शराव	.	१९ ३२	शस्त	{ ४ २६	
शब	..	१ ५०	शरावती	.	१० ३४		{ २१ १०९	
शबर	{	१० ४	शरासन	.	१८ ८३	शस्त्र	{ १८ ८२	
		१५ १०	शरीर	.	१६ ७०		{ २३ १७९	
शबरारि	१	२७	शरीरास्थि	.	१६ ६९	शस्त्रक	.	१९ ९८
शबरी	...	१४ ८७	शरीरिन्		४ ३०	शस्त्रमार्ज	२०	७
शबल	..	२५ ३४	शर्करा	{	११ ११	शस्त्राजीव	१८	६७
शबाकृत	..	१९ ९		{	१९ ४३	शस्त्री	१८	१२
शबुक्	.	१० २३		{	२३ १७५	शाक	{	१४ १३६
शभली	.	१६ १९	शर्करावत्	.	११ ११		{	१९ ३४
शंसु	{	१ ३२	शर्करारिल	.	११ ११	शाकट	१९	६४
		२३ १३५	शर्मन्		४ २५	शाकुनिक	२०	१४
शम्या	.	१९ १४	शर्व	..	१ ३२	शाक्तीक	१८	६९
शम्याक	१४	२३	शर्वरी		४ ३	शाक्यमुनि	१	१४
शप	१६	८१	शर्वाणी	१	३९	शाक्यसिंह	१	१५
शपन	{	७ ३६	शल	१५	७	शाखा	.	१४ ११
		१६ १३८	शलभ	...	१५ २८	शाखानगर	१२	२
शपनीय	..	१६ १३७	शलल	१५	७	शाखामृग	१५	३
शपाल	२१	३३	शलली	१५	७	शाखाशिका	१४	११
शपित	२१	३३	शल्लाडु	१४	१५	शाखिन्	१४	५
शपु	८	५	शल्लक	२३	१३	शाखिक	.	२० ८
शप्या	१६	१३७	शल्य	{	१४ ५३	शाटक	२५	३३
शर	{	१४ १६२		{	१५ ७	शाटी	.	२५ ३८
		१८ ८७	शर	..	१८ ११८	शाठ्य	७	३०
शरजन्मन्	१	४१	शश	१५	११	शाण	२०	३२
शरण	..	२३ ५३	शशधर	३	१५	शाणी	२५	९
शरद्	{	४ १९	शशल्लोमन्	१९	१०७	शाहित्य	१४	३२
		४ २०	शशादन	१५	१४	शात	{	४ २५
		२३ ९३	शशीर्ष	.	१९ १०७		{	२१ ९१
शरभ	१५ ११	शश्वत्	{	२३ २४४	शातकुम	१९	९४
शरव्य	.	१८ ८६		{	२४ १	शातला	१४	१४३
शराभ्यास	१८	८६		{	२४ ११	शाश्रव	...	१८ ११
शराति	१५ २५						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
शाद.	{ १०	९	शाष्कालिक.	२२	४०	शापिपिट.	२३	३४
	{ २३	९०	शासन	१८	२५	शापा	१४	११
शादहरित.	११	१०	शास्य	१	१४	शापाकद.	१०	४३
शाद्वल	१०	१०	शाश्व	२३	१७९	शापिका ...	१८	५३
शात	२१	९७	शाश्वविद्....	२१	६	शापिर	१८	३३
शाति	२२	३	शाश्वय	२०	३०	शापा ...	१९	२३
शावर	१४	३३	शानियत	२१	८९	शास्य ...	१६	९५
शावरी	२०	११	शिक्षा	६	४	शास्य	१८	६५
शास्य	२३	१६६	शिक्षित	२१	४	शास्य ...	१६	९८
शास्य { १४	२३		शिक्ष्यंठ	१५	३१	शापा	१६	६५
	{ २३	९५	शिक्ष्यंठक....	१६	९६	शापिष	१४	६३
शास्यदी	१४	१११	शिक्ष्यर.	{ १३	४	शापिष्य ...	१४	१२
शास्यफल....	२०	४६		{ १४	१२	शापिषि	१६	८८
शास्यकर	११	११	शिक्ष्यरिन्	{ १३	१	शापिष्यन् ...	१६	१०२
शास्यी	१	३०		{ २३	१०६	शापिष्यह	१६	९५
शास्यिन्	१	१९	शिक्ष्या.	{ १	६०	शापिष्यि	१६	६९
शास्यूल.	{ १५	१		{ १५	३१	शापिष्यि	१६	६९
	{ २१	५९	शिक्ष्या.	{ १६	९७	शापिष्यि	१९	२
शास्यर	२३	१८८		{ २३	१९	शिला. { १२	१३	
शास्यल.	{ १०	१९	शिक्ष्यावत्.	१	५८		{ १३	४
	{ १४	५	शिक्ष्यावत्.	१५	३०	शिलाजतु.	१९	१०४
शाला.	{ १२	६	शिक्ष्याश्रीव.	१९	१०१	शिली ...	१०	२४
	{ १४	११	शिक्ष्यान्.	{ १५	३०	शिलीमुख.	२३	१८
शालावृक ...	२२	१२		{ २३	१०६	शिलोच्चय.	१३	१
शालि	१९	२४	शिक्ष्यावाहन.	१	४२	शिल्प ...	२०	३५
शालीन	२१	२६	शिक्ष्य.	{ १४	३१	शिल्पिन्	२०	५
शालुक	१०	३८		{ १९	३४	शिल्पिशाला.	१२	७
शालूर	१०	२४	शिक्ष्यज	१९	११०	शिव. { १	३२	
शालेय.	{ १४	१०५	शिक्ष्यजित	६	२४		{ ४	२५
	{ १९	६	शिक्ष्यजिनी	१८	८५	शिवक	१९	७३
शाल्मलि	१४	४६	शिक्ष्यजितशूक....	१९	१५	शिवमली....	१४	८१
शाल्मलीवेष्ट.	१४	४७	शिक्ष्यजित	२३	शिव. { १	३९	
शावक	१५	३८	शिक्ष्यजित	२३		{ १४	५२
शाश्वत	२१	७२	शिक्ष्यजित	२३		{ १४	५९
			शिक्ष्यजित	२३			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक			
शिरा	{	१४	गुह	{	१४	गुहर्तृ	३	५			
		१५			१५	गुहार्थ		३	१४		
		२३			१७	गुहक		१८	२७		
शिरि	{	३	गुह	२३	८३	गुह	{	१०	१०		
		४						१८	२०	२७	
शिरु	१५	३८	गुह	{	१०	गुह	{	२५	२३		
शिरु	१०	१८			१४			१३०	१०	३५	
शिरुय	१६	४०	गुह	{	१	गुह	८	५			
शिरुमार	१०	२०			३	२५		गुहमास	१६	६३	
शिश्र	१६	७६			४	६२		गुहम	१८	१०७	
शिभिदान	२१	४६	गुहल	२३	२२१	गुहम्	१	५७			
शिदि	१८	२६	गुहशिष्य	१	१७	गुह	१९	२३			
शिष्य	१७	११	गुह	{	४	गुहकटि	१	१४			
शिर	३	११			५	१२		गुहधातु	१९	२८	
शोम	१	६८	गुह	७	२५	गुहशिषि	१८	८०			
शीत	{	३	गुह	{	१	गुह	{	१७	-		
		१४			४			१६	२०	१	
		१४			५			१२	१६	११	
		२५			७			१७	१६	१२	
शीतक	२०	१८	२३	२८	गुह	११	५६				
शीतभीष	१४	७०	गुह	१९	२८	गुह	१८	७७			
शीतल	{	३	गुह	२०	४१	गुह	१९	२६			
		१४			१८९	१०		३३	२३	१०७	
शीतलिन	{	१४	गुह	{	१२	गुह	१९	४५			
		१४			१२३			२३	६६	१	३७
		१९			४७			२०	३२	१	३७
शीतु	२७	३४	गुहधातु	१	४४	गुह	१९	४५			
शीत	१६	९५	गुह	२०	३७	गुह	१८	५			
शीत	१८	६३	गुह	{	४	गुह	{	१६	१५५		
शीत	२१	४५			१९			७३	१८	४१	
शीत	{	११	गुह	२१	२३	गुह	१९	७			
		१८			६४			१८	४		
शीत	{	७	गुह	२१	५०	गुह	{	१८	१२७		
		१७			१९			२३	१६		
शीत	७	७५	गुह	२३	१७७	गुह	१९	३७			

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	
शृंगाटक....	११	१७	शोणरत्न ...	१९	९२	शृपाल	१६	३२	
शृंगार	७	१७	शोणित	१६	६४	शृयाव	५	१६	
शृंगिणी	१९	६६	शोय	१६	५२	शृयेत	५	१२	
शृंगी.	{	१	४३	शोयत्री	१४	१४९	शृयेन ...	१५	१५
		१०	२५	शोधनी ...	१२	१८	शृयेनपाता,	२५	६
		१४	१००	शोधित. {	१९	४६	शृद्धा	२३	१०२
		१४	११६		२१	५६	शृद्धालु. {	१६	२१
शृंगीकनक.	१९	९६	शोफ ...	१६	५२	शृद्धालु. {	२१	२७	
शृत	२१	९५	शोमन	२१	५३	शृयण	२२	१२	
शेखर ...	१६	१३६	शोभा	३	१७	शृयण	१६	९४	
शेफस्	१६	७६	शोष	१६	५१	शृयस्	१६	९४	
शेफालिका.	{	१४	७०	शोक	१५	४३	शृविष्टा ...	३	२२
		२५	७	शौकिकेय....	८	१०	शृणा	१९	५०
शेमुषी	५	१	शौक्य	१६	४१	शृद्ध ...	१७	३१	
शेल	१४	३४	शौड ...	२१	२३	शृद्धदेव	१	६२	
शेवधि ...	१	७५	शौडिक	२०	१०	शृय	२२	१२	
शेष	८	४	शौडी	१४	९७	शृयण	४	१६	
शैक्ष	१७	११	शौद्रोदनि.	१	१५	शृयणिक.	४	१६	
शैथरिक	१४	८८	शौरि	१	२१	श्री. {	१	२८	
शैल	१३	१	शौर्य	१९	१०२		१८	८२	
शैलालिन्.	२०	१२	शौतिक	२०	८	श्रीकंठ	१	३४	
शैलूय.	{	१४	३२	शौतिक	२१	१९	श्रीघन	१	१४
		३०	१२	श्योत	२२	१०	श्रीद	१	७३
शैलेय	१४	१२३	श्मशान	१८	११८	श्रीपति ...	१	२१	
शैवल	१०	३८	श्मश्रु	१६	९९	श्रीपर्णा. {	१४	६६	
शैवलिनी	५०	३०	श्याम. {	५	१४		२३	५२	
शैवाल	१०	३८		२३	१४३	श्रीपर्णिका.	१४	४०	
शैशव	१६	४०	श्यामल	५	१४	श्रीपर्णा	१४	३६	
शोक	७	२५	श्यामा. {	१४	५५	श्रीफल	१४	३२	
शोचिष्केश.	१	५७		१४	१०८	श्रीफली ...	१४	९५	
शोचिस्	३	३४		१४	११२	श्रीमत्	२१	१८	
शोण.	{	५		१५	२३	१४३	श्रीमान्	१४	४०
		१०	३४	श्यामाक	१४	१६५	श्रीत्	२१	१४

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
श्रीवत्स	१	३०	श्वन्	२०	२२	पहज	७	१
श्रीवत्सलाउन	१	२२	श्वनिश	२५	४०	पड	१९	६२
श्रीवास	१६	१२९	श्वपच	२०	२०	पट	{ १६ ३९ १८ ९	
श्रीवैष्ट	१६	१२९	श्वभ्र	{ १ २ २३ १८४ २५ २२	पट्टिक	१९		२४
श्रीसह	१६	१२५			पट्टिम्य	१९	७	
श्रीहास्तिनी	१४	६९	श्वययु	१६	५२	पाणमातुर	१	४३
श्रुत	२३	७७	श्ववृत्ति	१९	२	स		
श्रुति	{ ६ ३ १६ ९४ २३ ७३	श्वगर	१६	३१	सयत्	१८	१०६	
		श्वशरी	१६	३७	सयत	२१	४२	
		श्वशुष	२३	१४८	सयम	१२	८८	
श्रेणि	{ १४ ४ २० ५	श्वशू	१६	३१	सयाम	२२	१८	
		श्वशूश्वशरी	०६	३७	सयुग	१८	१०५	
श्रेयस्	{ ४ २४ ५ ६ २१ ५८	श्वशू	२४	२२	सयाजित	२१	९२	
		श्वसन	{ १ ६४ १४ ५२	सराव	६	२३		
		श्वसिध		१५	७	सलाप	६	१६
श्रेयसी	{ १४ ८४ १४ ९७	श्वित्र	१६	५४	सरात्	२४	१६	
		श्वत	{ ५ १२ १९ ९६ २३ ८०	सरात्सर	४	२०		
श्रेष्ठ	२१	५८		सरासन	१२	४		
श्रीण	१६	४८	श्वनगन्त	११	२३	सरात	४	२२
श्रीणि	१६	७४	श्वतउद	२३	२२७	सरातिका	१०	४३
श्रीणिफलक	१६	७४	श्वतमरिच	१९	११०	सरासय	१२	१९
श्रीत्र	१६	९४	श्वतरक्त	५	१५	सरासन	२२	२२
श्रीत्रिय	१७	६	श्वतसुरसा	१४	७१	सराद्	{ ५ १ ५ ५ २३ ९२	
श्रीषट	२४	८	प			सराक्षण		१९
श्रीक्षण	२१	६१	पट्टार्मन्	१७	४	सरास	२१	९०
श्रीय	२२	११	पट्टपद	१५	२९	सराग	७	२४
श्रीष्मण	१६	६०	पट्टभिज्ञ	१	१४	सराय	२२	६
श्रीष्मन्	१६	६२	पट्टानन	१	४१	सराय	७	३६
श्रीमल	१६	६०	पट्टमय	१४	४८	सरायान	१६	११८
श्रीधनातक	१४	३४	पट्टमया	१४	१०२	सरातय	१८	९८
श्रीोक	२३	२	पट्टमयिका	१४	१५४	सराय	५	९
श्रीप्रपस	४	२५						
श्रीरदा	१४	०८						

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः
सगयापन्नमानसः	२१	५	सग्री	१६ १२	संग्राम १८
संश्रव	५	संग्रह	१८ १२	संग्राह.	{ १८ २२
संश्रुत	२१ १०९	संग्रह्य	१६ २८	संग्र ११
संश्लेष	२२ ३०	संग्रह्य	१६ ३४	संग्रह्य ११
संश्लेष	२२ ३०	संग्रह्य	१६ ५१	संग्रह्य ११
संश्लेष	२१ ६८	संग्रह्य	२१ ८५	संग्रह्य ११
संश्लेष	१८ १५	संग्रह्य	१२ ८५	संग्रह्य ११
संश्लेष	{ ११ २३	१८ ५५	संग्रह्य	१२ १८	संग्रह्य २३
संश्लेष	७ ३०	संग्रह्य	१ २५	संग्रह्य ११
संस्कार	१६ १३४	संग्रह्य	२१ १३	संग्रह्य १८
संस्कारहीनः	१७	५४	संग्रह्य	५ २	संग्रह्य	{ १७ १८
संस्कृत	२३ ८१	संग्रह्य	१५ ४३	संग्रह्य १८
संस्तर	२३ १६१	संग्रह्य	२० ३८	संग्रह्य १५
संस्तव	२२ २३	संग्रह्य	{ २० २१ २३	१ ८५	संग्रह्य	१६
संस्तव	२२ ३४	संग्रह्य	{ ६ २१	५७	संग्रह्य १२
संस्तव	२२ ३४	संग्रह्य	{ ६ २१	५७	संग्रह्य १२
संस्तव	२३ १५१	संग्रह्य	{ ६ २१	५७ ८५	संग्रह्य १२
संस्तव	१८ २६	संग्रह्य	१६ १२४	संग्रह्य २३
संस्तव	२३ १२४	संग्रह्य	१ ४७	संग्रह्य १६
संस्तव	१८ ११७	संग्रह्य	२२ २५	संग्रह्य १६
संस्तव	१४ १५४	संग्रह्य	२० २१	संग्रह्य १५
संस्तव	१८ १०५	संग्रह्य	१८ १०४	संग्रह्य १५
संहत	२१ ७५	संग्रह्य	५ २	संग्रह्य	{ १७ २३
संहतज नुक.	१६	४७	संग्रह्य	२१ ६४	संग्रह्य १
संहतल	१६ ८५	संग्रह्य	१७ ५	संग्रह्य १६
संहति	१५ ४०	संग्रह्य	१५ ८३	संग्रह्य १५
संहनन	१६ ७०	संग्रह्य	२२ २६	संग्रह्य १७
संहृति	६ ८	संग्रह्य	६ १८	संग्रह्य २१
संकल	२१ ६५	संग्रह्य	{ २२ २५	२५ ३४	संग्रह्य	{ ४ २३
संकृत	२३ २४३	संग्रह्य	२३ १६६	संग्रह्य ११
संस्कृतज	१५ २०	संग्रह्य	२१ १०९	संग्रह्य	{ ६ २३
संस्कृतल	१४ ५२	संग्रह्य	२१ १३	संग्रह्य १९
संस्तव	१६ ७३	संग्रह्य	६ ६	संग्रह्य १९
संस्तव	१८ ६३	संग्रह्य	६ ६	संग्रह्य १९

शब्द	पृ	श्लोक	शब्द	पृ	श्लोक	शब्द	पृ	श्लोक
सत्यवचस्	१७	४३	सतत	२१	१०२	सपिंड	१६	३३
सत्यावृत्ति	१९	८०	सतमस	९	४	सपीति	१९	५५
सत्यावृत	१९	३	सतान	{	१ ५३	ससत्री	१६	१०८
सत्यापन	१९	८०		{	१७ १	ससततु	१७	१३
सत्र	२३	१८१	सताप	१	६०	ससतण	१४	२३
सत्रा	२४	४	सतापित	२१	१०२	ससर्पि	३	२७
सन्धिन्	१८	१५	सदान	१९	७३	ससला	{	१४ ७२
सहार	१	६८	सदानित	२१	९५		{	१४ १४३
सदध्याज्य	१७	२४	सदाव	१८	१११	ससर्चिसू	१	५९
सदन	१२	५	सदित	{	२१ ८५	ससाथ	३	२९
सदस	१७	१५		{	२१ ९६	ससि	१८	४४
सदस्य	१७	१९	सदेशवाच्	६	१७	सस्रद्धचारिन्	१७	११
सदा	२८	२२	सदेशहर	१८	१६	ससलका	१६	१०
सदागति	१	६४	सदेश	५	३		{	१० ६
सदासन	२१	७२	सदोह	१५	३९	समा	{	१७ १५
सदानोरा	१०	३३	सद्राज	१८	१११		{	१३ १३७
सदृक्	२०	३७	सधा	२३	१००	सभाजन	२२	७
सदृश	२०	३७	समान	२०	४०	सभासद	१७	१६
सदृक्ष	२०	३७		{	१८ १८	सभास्तार	१७	१६
सदेश	२१	६७	सधि	{	२२ ११	सभिक	२०	४४
सधन्	१२	४	सधिनी	१९	६९	सभ्य	{	१७ ३
सधस्	२१	३४	सध्या	४	३		{	१७ १६
सधर्मिणी	३	२०	सत्रकद्रु	१६	३५	सम	{	२० ३७
सध्वश्च	२४	९	सस्रद्ध	१८	६५		{	२१ ६४
सनत्कुमार	१	५४	सस्रय	२३	१५१	समग्र	२१	६५
सना	२४	१७	सस्रिकर्षण	२२	२३	समगा	{	१४ ९०
सनातन	२१	७२	सस्रिष्ट	२१	६६		{	१४ १४१
सनाभि	१६	३३	सस्रिधि	२२	२३	समज	१५	४०
सनि	१७	३२	सस्रिप्रेश	१२	१९	समजा	६	११
सनिष्ठो	६	२०	सस्रिन	१८	१०	समज्या	१७	१५
सनीड	२१	६६	सस्रिदि	{	२४ ०	समजस	१८	२४
सतत	१	५९		{	२४ ९	समधिक	२१	७५
सताति	००	१७	सस्रिया	{	१७ १४	समततस्	२४	१३
				{	१७ ३५	समतदुग्धा	१४	१०६

शब्द	पंक्ति	श्लोक	शब्द	पंक्ति	श्लोक	शब्द	पंक्ति	श्लोक
सखल	{ १४	६०	सखममला	१	३९	सहभाजन	१९	५५
	{ २१	८	सर्वस	१६	१२७		{ ४	१४
सखलद्रव	१६	१२९	सर्वला	१८	९३	सहम्	{ १८	१०२
सखला	१४	१०८	सखलिंगिन्	१७	४१		{ २३	२३३
सखस्	१०	२८	सर्ववेदस्	१७	९	सहसा	२४	७
सखसी	१०	२८	सर्वसत्रहन	१८	९४	महस्य	४	१५
सखसीबह	१०	४०	सखानुसृति	१४	१०८	सहस्र	१९	८४
सखस्यत्	{ १०	१	सखान्नभोजिन्	२१	२२	सहस्रदष्ट	१०	१८
	{ २३	५७	सखान्नीन	२१	२२	सहस्रपत्र	१०	४०
सखस्यती	{ ६	१	सखामिसार	१८	९४	सहस्रपीर्या	१४	१५८
	{ १०	३४	सखामिसिद्ध	१	१५	सहस्रपथि	१९	४०
सखित्	१०	०९	सखामिघ	१८	९४	सहस्रपेथिन्	१४	१४१
सखित्पति	१०	१	सखप	१९	१७	सहस्रशु	३	३१
सखिमप	८	७	सखिल	१०	३	सहस्रशक्ष	१	४७
सखि	२३	२२	सखिकी	१४	१२४	सहस्रिन्	१८	६२
सखि	१४	४४	सख	१७	१३	सहा	{ १४	७३
सखिक	१४	४४	सखन	१७	४७		{ १४	११३
सखिकस	१६	१२७	सखयस्	१८	१२	सहाय	१८	७१
सखिकाक्षार	१९	१०९	सखित्	३	३१	सहायता	२२	४१
सखि	८	६	सखिघ	२१	६७	सहिष्णु	२१	३१
सखिगज	८	४	सखिश	२१	६७	सायान्त्रि	१०	१२
सखिस्	१९	५२	सख्य	२१	८४	सायमीन	१८	७७
सखि	२१	६४	सख्येष्ट	१८	६०	सायन्तर	१८	१४
सखिवहा	११	३	सख्य	१४	१५	सायधिक	२१	५
सखि	{ १	१३	सख्यमजरी	१९	२१	साकम्	२४	४
	{ १	३५	सख्यशूक	१९	२१	साकन्य	०२	२
सखिसम्	२४	१३	सख्यसवर	१४	४४	साक्षात्	२३	२४४
सखितोमद	{ १४	१०	स	२४	४	सागर	१०	१
	{ १४	६२	सकार	१४	३३	साधि	२४	६
सखितोमदा	१४	३५	सकनरी	१४	७५		{ २०	३९
सखितोमुप	१०	४	सहज	१६	३४	साति	{ ०३	६७
सखिता	२४	००	सहयदिग्गी	१६	५		{ ०५	९
सखितावह	१९	९६	सहन	२१	३१	सातिसार	१६	५९
सखित्प्रेण	१९	६६				सातरय	७	१६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
सादिन्.	{ १८	६०	सांप्रतम्	{ २४	११	सिंहसंहनन.	२१	१२
	{ २३	१०७		{ २४	२३	सिंहाण ...	१९	९८
साधन ...	२३	११९	सायक	२३	२	सिंहासन	१८	३१
साधारण.	{ २०	३७	सायम.	{ ४	३	सिंहास्य	१४	१०३
	{ २१	८२		{ २४	१९	सिंही.	{ १४	१०३
साधित	२१	४०	सार.	{ १४	१२		{ १४	११४
साधिष्ठ ...	२१	११२		{ २३	१७१	सिकता	२३	७३
साधीयस्	२३	२३६	सारग.	{ १५	१७	सिकतामय.	१०	९
	{ १०	३		{ २३	२३	सिकतावत्.	११	११
साधु.	{ २१	५२		{ २३	२२५	सिक्यक.	{ १९	१०७
	{ २३	१०१	सारथि	१८	५९		{ १३	५
साधुऽहिन्	१८	४४	सारमेय	२०	२१		{ ५	१३
साध्य	१	१०	सारख	१०	३६	सित.	{ २१	९५
साध्वस	७	२१	सारस.	{ १०	४०		{ २१	९८
साध्वी	१६	६		{ १५	२२		{ २३	८०
सानु	१३	५	सारसन.	{ १६	१०९	सितछत्रा	१४	१५२
सांतपन	१७	५२		{ १८	६३	सिता	{ १४	७१
सांत्व.	{ ६	१८	सारिका ...	२५	८		{ १९	४३
	{ १८	२१	सार्थ	१५	४१	सिताभ्र ...	१६	१३०
सांष्टिक	१८	२९	सार्थवाह	१९	७८	सितांभोज....	१०	४१
सांद्र	२१	६६	सार्द्र ...	२१	१०५	सिद्ध.	{ १	११
सांद्रस्त्रिगध.	२१	३०	सार्धम्	२४	४		{ २१	१००
सान्द्रय्य	१७	२७	सार्धभोम.	{ ३	४	सिद्धांत	५	४
सातपदीन.	१८	१२		{ १८	६	सिद्धार्थ ...	१९	१८
साम	१८	२०	साल.	{ १२	३	सिद्धि	१४	११२
				{ १४	४४	सिद्धम	१६	५३
सामन्.	{ ६	३	सालपर्णी.	१४	११५	सिद्धमल	१६	६१
	{ १८	२१	साल्ता ...	१९	६३	सिद्धमला	२५	१०
सामाजिक.	१७	१६	साहस ...	१८	२१	सिध्य ...	३	२२
सामान्य.	{ ४	३१	साहस्र.	{ १८	६२	सिध्रका ...	२५	८
	{ २१	८२		{ २२	४३	सिनीवाली.	४	९
सामि	२३	२५०	सिह.	{ १५	१	सिदुक्त	१४	६८
सामिधेनी.	१७	२२		{ २१	५९	सिदुवार ...	१४	६८
साम्द्र	१९	४१	सिहनाद	१८	१०७			
सापरायिक	१८	१०४	सिहपुच्छी.	१४	९३			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
सिद्ध	{ १९	१०५	सुगधि	{ ५	११	सुमनस	१	७
	{ २५	३१		{ १४	१२१	सुमनस	१४	१७
सिधु	{ ९	२	सुचरित्रा	१६	६	सुमना	१४	७२
	{ १०	१	सुचेलक	१६	११६	सुमनोरजस्	१४	१७
	{ २३	१०१	सुत	{ १६	२७	सुमेघ	१	५२
सिधुज	१९	४२		{ २३	६०	सुर	१	७
सिधुसगम	१०	३५	सुतश्रेणी	१७	८८	सुरगा	२५	८
सिद्ध	१६	१२८	सुतात्मजा	१६	२९	सुराण्येष्ट	१	१६
सीता	१९	१४	सुत्रामन्	१	४५	सुरदीर्घिका	१	५२
सीत्य	१७	८	सुत्या	१७	४७	सुरद्विप	१	५२
सीधु	२०	४२	सुत्यन्	१७	१०	सुरनिम्नगा	१०	३१
सीमन्	१२	२०	सुदर्शन	१	२९	सुरपति	१	४६
सीमत्त	२५	१९	सुदाय	१८	२८			
सामन्तिनी	१६	२	सुदूर	२१	६९	सुरभि	{ ४	१८
सीमा	१२	२०	सुधर्मा	१	५१		{ ५	११
सीर	१९	१४	सुधा	{ १	५१		{ २३	१३७
सीरपाणि	१	२५		{ २३	१०२	सुरभी	१४	१२३
सीवन	२२	५	सुधाशु	३	१४	सुरर्षि	१	५१
सीसक	१९	१०५	सुधी	१७	५	सुरलोक	१	६
सीदुण्ड	१४	१०५	सुनासरि	१	४४	सुरवर्त्मन्	२	१
सु ..	{ २४	२	सुनिष्पगक	१४	१४९	सुरसा	१४	११४
	{ २४	५	सुदर	२१	५२	सुरा	२०	३९
सुकदक	१४	१४७	सुदरी	१६	४	सुराचार्य	३	२४
सुकरा	१९	७०	सुधेन्	११	१६	सुरामड	२०	४३
सुकल	२१	८	सुपर्ण	१	३१	सुरालय	१	५२
सुकुमार	२१	७८	सुपर्णन्	१	७	सुराष्ट्रज	१४	१३१
सुकुत्त	४	२४	सुपार्श्वक	१४	४३	सुवचन	६	१७
सुकृत्तिन्	२१	३	सुप्रतीक	३	४			
सुख	{ ४	२५	सुप्रयोगविशेष	१८	६८	सुवर्ण	{ १९	८६
	{ २५	२३	सुपलाप	६	१७		{ १९	९४
सुखपर्वक	१९	१०९	सुभगासुत	१६	२४	सवर्णक	१४	२४
सुखसदोक्षा	१९	७१	सुभिक्षा	१४	१२४	सुगलि	१४	९५
सुगत	१	१३	सुन	१४	१७		{ १४	७०
सुगधा	१४	११४	सुमम	१९	१८	सुगहा	{ १४	११५
							{ १४	११९

शब्दः	वगः	श्लोकः	शब्दः	वगः	श्लोकः	शब्दः	वगः	श्लोकः
सुवहा.	{ १४	१२३	सूत्रवेष्टन	२२	२४	सेनामुख	१८	८१
	{ १४	१४०	सूद.	{ १९	२८	सेनारक्ष	१८	६१
सुवासिनी.	१६	९		{ २३	९१	सेवक	१८	९
सुव्रता	१९	७१	सूना	२३	११३	सेवन	२२	५
सुषम	२१	५२	सूनु ...	१६	२७	सेवा ...	१९	२
सुषमा	३	१७	सूनुत	६	१९	से.य	१४	१६४
सुषवी.	{ १४.	१५५	सूपकार	१९	२७	सैहिकेय	३	२६
	{ १९	३७	सूर ...	३	२८	सैकत ...	१०	९
सुषिर.	{ ७	४	सूरण	१४	१५७	सैतवाहिनी.	१०	३३
	{ ८	१	सूरत	२१	१५	सैनिक	१८	६१
	{ ८	२	सूसुत	३	३२	सैधव.	{ १८	४४
सुषिरा	१४	१२९	सूरि	१७	६		{ १९	४२
सुषीम ...	३	१९	सूर्मी	२०	३५	सैन्य.	{ १८	६१
सुषेण	१४	६७	सूर्य	३	२८		{ १८	७८
सुषेणिका....	१४	१०८	सूर्यतनया	१०	३२	सैरधी	१६	१८
सुष्टु.	{ २४	२	सूर्यप्रिया	२३	१५७	सैरिक	१९	६४
	{ २४	१९	सूर्यदुसंगम.	४	८	सैरिभ ...	१५	४
सुसंस्कृत	१९	४५	सुक्लिणी	१६	९१	सैरेयक	१४	७५
सुहृद्	१८	१२	सुग ...	१८	९१	सोढ	२१	९७
सुहृदप ...	२१	३	सुणि	१८	४१	सोदर्य	१६	३४
सूकर ...	१५	२	सुणिका	१६	६७	सोन्माद	२१	२३
सूकम.	{ २१	६१	सुति	११	१५	सोपप्लव....	४	१०
	{ २३	१४४	सुपाटी ...	२५	३८	सोपान	१२	१८
सूचक	२१	४७	सुमर ...	१५	११	सोभांजन.	१४	३१
सूचन ...	२३	११५	सुष्ट ...	२३	३९	सोम	३	१४
सूचि ...	२५	८	सैक पात्र	१०	१३	सोमपा	१७	९
सूत.	{ १८	५९	सैचन ...	१०	१३	सोमपीथिन्.	१७	९
	{ १९	९९	सतु.	{ ११	१४	सोमगजी.	१४	९५
	{ २०	३		{ १४	२५	सोमवल्क.	{ १४	५०
	{ २३	६२	सेना	{ १८	७८		{ २३	९
सूतिक'गुठ.	१२	८	सेनांग	{ १८	३३	सोमवहरी.	१४	१३७
सूतिमास....	१६	३९	सेना नी	{ १८	६२	सोमवल्लिका.	१४	९५
सूत्यान	२०	१९				सोमवल्ली	१४	८३
सूत्र	२०	२८						

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
सोमोद्भवा	१०	३२	स्तनित	३	८	स्थली	११	५
सौगधिक	१०	३६	स्तवक	१४	१६	स्थविर	१६	४२
	१४	१६६	स्तवधरोमन्	१५	२	स्थविष्ठ	२१	१११
	१९	१०२	स्तव	१४	९	स्थाणु	१	३६
सौखिक	२०	६		१९	२१		१४	८
	सौदामनी	३	९	स्तवकारि	१९	२१	२३	४९
सौध	१२	१०	स्तवघन	२२	३५	स्थांडिल	१७	४५
सौभागिनिय	१६	२४	स्तवन्न	२२	३५	स्थान	१८	१९
सौम्य	३	२६	स्तवेरम	१८	३५		२३	११७
	२३	१६१	स्तभ	२३	१३५	स्थानीय	१२	१
सौरमेय	१९	६०	स्तव	६	११	स्थाने	२४	११
सौरभेयी	१९	६६	स्तितमित	२१	१०५	स्थापत्य	१८	८
सौराष्ट्रिक	८	१०	स्तुत	२१	११०	स्थापनी	१४	८४
सौरि	३	२६	स्तुति	६	११	स्थामन्	१८	१०२
सौवर्चल	१९	४३	स्तुतिपाठक	१८	९७	स्थायुक	१८	७
	१९	१०९	स्तूप	२५	१९	स्थाल	२५	३२
सौविद	१८	८	स्तेन	२०	२४	स्थाली	१९	३१
सौविदल	१८	८	स्तेम	२२	२९	स्थावर	२१	७३
सौवीर	१४	३७	स्तेय	२०	२५	स्थाविर	१६	४०
	१९	३९	स्तैन्य	२०	२५	स्थासक	१६	१२२
	१९	१००	स्तोक	२१	६१	स्थास्तु	२१	७३
सौहित्य	१९	५६	स्तोत्र	६	११	स्थिति	१८	२६
स्कद	१	४२	स्तोम	१५	३९		२२	२१
स्कध	१४	१०		२३	१४१	स्थिरतर	२१	७३
	१६	७८	स्त्री	१६	३	स्थिरा	११	२
२३	१००	स्त्रीधर्मिणी	१६	२०	१४	११५		
स्कधशाजा	१४	११	स्त्रीपुत्र	१५	३८	स्थिरायु	१४	४६
स्कन्न	२१	१०४	रूपगार	१२	११	स्थूणा	२०	३५
स्कलन	७	३६	स्थडिल	१७	१८		२३	५१
स्कलित	१८	१०८	स्थडिलशायिन्	१७	४४	स्थूल	२१	६१
स्तन	१६	७७	स्थपाति	१७	९		२३	२०४
स्तनधयी	१६	४१		२३	६१	स्थूललक्ष्य	२१	६
स्तनपा	१६	४१	स्थल	११	५	स्थूलशाटक	१६	११६
स्तनयिन्	३	६				स्थूलोद्यम	२३	१४६

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः			
स्थेयस्	२१	७३	स्फुट.	{	१४	७	सुक	१७	२५
स्थोणय	१४	१३२			२१	८१	सुत	२१	९२
स्थोरिन्	१४	४६	स्फुटन	२२	५	सुग	१७	२५
स्थौल्य	२३	१९५	स्फुरण	२२	१०	सुवा	१४	८३
स्त	२२	९	स्फुरणा	२२	१०	सुवावृक्ष	१४	३७
स्तातक	१७	४३	स्फुलिग	१	६०	स्रोतस्.	{	१०	११
स्तान	१६	१२२	स्फूर्जक	१४	३८		{	२३	२३४
स्तायु	१६	६६	स्फूर्जथु	३	१०	स्रोतस्विनी.	१०	३०	
	{	१८	२२	स्फेष्ठ	...	२१	११२	स्रोतोजन....	१९	१००	
स्त्रिध.	{	१९	४६	स्म....	{	२४	५	स्व...	{	१६	३४
	{	२१	१४		{	२४	१७		{	२३	२११
स्तु	१३	५	स्मर	...	१	२६	स्यच्छंद.	{	२१	१५
स्तुक्	१४	१०५	स्मरहर	...	१	३५		{	२१	१६
स्तुत	२१	९३	स्मित	७	३४	स्वजन	१६	३४
स्तुग	१६	९	स्मृति.	{	६	६	स्वतंत्र	२१	१५
स्तुही	१४	१०५		{	७	२९	स्वधा	...	२४	८
लेह	७	२७	रयद	१	६७	स्वधिति	१८	९२
स्पर्श.	{	५	७	स्यंदन.	{	१४	२६	स्वन	६	२२
	{	२२	१४		{	१८	५१	स्वनित	२१	९४
स्पर्शज.	{	१	६४	स्यंदनारोह.	१८	६०	स्वप्न	...	७	३६	
	{	१७	२९	स्यंदिनी	१६	६७	स्वप्नज्	२१	३३
स्पर्श.	{	१८	१३	रयन्न	...	२१	९२	स्वभाव	...	७	३८
	{	२३	२१४	स्यूत.	{	१९	२६	स्वभू	१	११
स्पष्ट	२१	८१		{	२१	१०१	स्वयंवर	१६	७
स्पष्ट	३	१४	स्यूति	२२	५	स्वयम्	२४	१६
स्पष्टका	...	१४	१३३	स्योनाक	१४	५७	स्वयंभू	१	१६
स्पृशो	१४	९३	सासिन्	...	१४	२८	स्वर.	{	१	६
स्पृष्टि	२२	९	सज्	...	१६	१३५		{	२३	२५५
स्पृष्टा	७	२७	सज्	२२	९	स्वर.	{	६	४
स्पृष्ट	२२	१४	सज्जर्भा	१९	६९		{	७	१
स्फटा	८	९	सजंती	...	१०	३०	स्वर.	{	१	५०
स्फाति	२२	९	सष्ट	१	१७	स्वर.	{	२३	१३७
स्फार	२१	६३	सस्त	२१	१०४	स्वर.	{	७	३८
स्फिच्च	१६	७५	साक्ष	२४	३	स्वरूप.	{	२३	१३१

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक
स्वर्ग	१	६	स्वैरिता	२२	२	हरित	{ ५	१५
स्वर्ग	१९	९४	स्वैरिन्	०१	१५		{ २५	१९
स्वर्णकार	२०	८		ह		हरितक	१९	३४
स्वर्णक्षीरी	१४	१३८	ह	२४	५	हरितल	२५	३२
स्वर्णदी	१	५२		{ ३	३१	हारितालक	१९	१०३
स्वर्भक्तु	३	२६	हस्त	{ १५	२३	हरिदश्व	३	२९
स्ववश्या	१	५५		{ २३	२२७	हरिद्रा	१९	४
स्वर्ग्य	१	५४	हस्तक	१६	११०	हरिद्राम	५	१४
म्वष्ट	१६	२९	हजिका	१४	८९	हरिटु	१४	१०१
स्वस्ति	२३	२४२	हजे	७	१५	हरि-मणि	१९	९२
स्वस्तिक	१२	१०	हष्ट	२५	१८	हरिमिय	१४	४२
स्वघोष	१६	३२	हष्टमिळासिनी	१४	१३०	हरिमिया	१	२८
स्वाति	२५	३८	हठ	१८	१०८	हरिमयक	१९	१८
स्वादु	२३	९४	हठे	७	१५	हरिवालुक	१४	१२१
स्वादुकटक	{ १४	६७	हत	२१	४१	ह्रीहय	१	४६
	{ १४	९८	हनु	{ १४	१३०	हरितश्री	१४	५९
स्वदुःखा	१४	१४४		{ १६	९०	होणु	{ १०	१२०
स्वादी	१४	१०७	हत	२३	२४५		{ १९	१६
स्वाध्याय	१७	४७	हत्र	२१	९६	हर्म्य	१२	९
स्वान	६	२३	ह्य	१८	४४	हर्षक्ष	१५	१
स्वात	४	३१	ह्यपुन्डी	१४	१३८	हर्ष	४	२४
स्वाप	८	३६	ह्यमारक	१४	७६	हर्षमाण	०१	७
स्वापतेय	१९	९०	हर	१	३५	हल	१९	१३
स्वाभिन्	{ १८	१७	हरण	१८	२८	हला	७	१५
	{ २१	१०	हारि	{ १५	१	हलायुष	१	२४
स्वाराज्	१	४६		{ ०३	१७५	हलाहल	८	१०
स्वाहा	{ १७	२१	हारिचदन	{ १	५३	हलिन्	१	२५
	{ २४	८		{ १६	१३१	हलिप्रिया	२०	३९
स्वित्	२३	२४३		{ ५	१३	हल्प	१९	८
स्वेद	७	३३	हरिण	{ १५	८	हल्पा	२२	४१
स्वेदज	२१	५१		{ २३	५१	हल्लक	१०	३६
स्वेदनी	१९	३०	हरिणी	२३	५०			
स्वैर	२३	११०	हरित	{ ३	१	हर	{ २२	८
स्वैरिणी	१६	११		{ ५	१४		{ २३	२०७

शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः	शब्दः	वर्गः	श्लोकः
द्विषः	{	१७ २७	हिसाकर्मन्.	२२	१९	इति.	{	६ ८
		१९ ५२	हिच २१	२८			{ २२ ८
द्वय	१७ २४	हिक्रा २५	८	इद्.	१ ५५
द्वयपाक....	१७	२२	हिगु १९	४०	इणीया	... २२	३२
द्वयवाहन.	१	५८	हिगुनियसि.	१४	६२	इद्.	{	४ ३१
द्वस	... ७	१८	हिगुल २५	२०			{ १६ ६४
द्वसनी १९	३०	हिगुली १४	१४४	इदय.	{	४ ३१
द्वसन्ती १९	२९	हिजल १४	६१			{ १६ ६४
द्वस्त.	{	१६ ८६	हिताल १४	१६९	इदयंगम ६	१८
		१६ ९८	हिम	{	३ १८	इदयालु २१	३
		२३ ५९		{	३ १९	इय	... २१	५३
द्वस्ताधारण.	२२	५		{	२५ २२	इयक ५	८
द्वस्तित् १८	३४	हिमवत् १३	३	इयकेश १	१८
द्वस्तितख.	१२	१७	हिमवालुका.	१६	१३०	इष्ट २१	१०३
द्वस्तितपक....	१८	५९	हिमसंहति.	३	१८	इष्टमानस....	२१	७
द्वस्त्यारोह.	१८	५९	हिमांशु ३	१३	हे २४	८
द्वहा २३	२५७	हिमानी ३	१८	हेति.	{	१ ६०
द्वहाटक १९	९४	हिमावती १४	१३८			{ २३ ७१
द्वहायन.	{	४ २०	हिरण्य.	{	१९ ९०	हेतु ४	२८
		२३ १०८		{	१९ ९१	हेमकूट १३	३
द्वहार १६	१०५		{	१९ ९४	हेमदुग्ध १४	२२
द्वहारीत १५	३४	हिरण्यगर्भ.	१	१६	हेमन्.	{	१९ ९४
द्वहार्द ७	२७	हिरण्यवाह.	१०	३४			{ २५ २३
द्वहाला २०	३९	हिरण्येतस्.	१	५८	हेमन्त ४	१८
द्वहालिक १९	६४	हिरक्.	{	२४ ३	हेमपुष्पक.	१४	६३
द्वहाव ७	३२		{	२४ ७	हेमपुष्पिका.	१४	७१
द्वहास ७	१९	हिलमोचिका.	१४	१५७	हेमाद्रि	... १	५२
द्वहास्तिक १८	३६	ही २४	९	हेरंवा १	४१
द्वहास्य.	{	७ १७	हीन.	{	२१ १०७	हेला ७	३२
		७ १९		{	२३ १२८	हेषा १८	४७
द्वहाहा १	५५	हुतभुक्तिप्रया.	१७	२१	है २४	७
द्वहि.	{	२३ २५८	हुतभुज् १	५८	हैम १८	३२
		५	हुम्.	{	२३ २५३			
द्वहिसा २३	२३०		{	२४ १८			

शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	शब्द	वर्ग	श्लोक	
हैमवती	{	१ ३८	हृद	१० २५	ह्लादिनी	{	१० ३०		
		१४ ५९	हृत्तिष्ठ	२१ ११२			२३ ११२		
		१४ १०३	ह्रस्व	{			१६ ४६	ह्री	७ २३
		१४ १३८					२१ ७०	ह्रीण २१ ९१
हेयगवीन	१९ ५२	ह्रस्वगवेषुका	१४ ११७	ह्रीत	.. २१ ९१				
होष्ट	१७ १७	ह्रस्वांग	१४ १४२	ह्रीवैर	१४ १२२				
होम	... १७ १४	ह्लादिनी	{	१ ५०	ह्रीपा	१८ ४७			
होरा	.. २५ १०				३ ९	ह्लादिनी	१४ १२४		
ह्यस्	.. २४ २२								

इति काळेहत्युपाह-काशीनाथात्मज-गणेशशा-
स्त्रिणा विरचिता सभाषामरकोशस्थ-
शब्दानुक्रमणिका समाप्ता ।

अथ सभाषामरकोशस्थक्षेपकश्लोकशब्दानुक्रमणिका.

शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्
अ		अवाग्भव	१६	इन्द्राणी .	.. ९
अशुपालिन्	.. २१	अवाचीन	१६	इला .	.. ५७
अक्षपाद .	१३०	अष्टमूर्ति	८	ईशित्व	... ९
अहज	५	अहिदष्टिका	४६	उ	
अच्छ	.. २२७	अहिर्वुच्य	... ८	उत्कालिका	.. २२४
अणिमन्	९	आ		उदग्भव	.. १६
अधोगत	९६	आक्रोश	३५	उदीचीन	... १६
अनेष्टमूक	२२४	आक्षेप	.. ३५	उद्धन ७
अतारिक्ष	१५	आदिकवि	१३६	उदुर	.. ९६
अग्निजनीपाति	२१	आर्हक १३०	उल्का	.. १२
अम्यजन	१७१	आशिस्	४६	ए	
अभियोग	३५	इ		एकदृष्टि	९८
अवधान .	२९	इन	.. २१	ओ	
अउलेप .	.. ४१	इन्द्रदुत्तक	.. ११२	ओलुपय	.. १३०
अवष्टभ ४१				

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
क.		गणिका	२२४	झ.	
कच्छ	२२७	गद	७	झंज्ञायात्....	१३
कञ्चुकिन्....	४६	गरिमन्	९	ट.	
कटक	२२३	गह्वरी ...	५७	टंक	२२४
कंटक	२२३	गाधेय ...	१३६	त.	
कंठीरव	९४	गुच्छ	२२७	तमिस्रन् ...	२१
कमलोद्भव	५	गो	५७	तार	३८
कर्ममोटी...	१०	गोकर्ण	४६	तारपथ	१५
कर्मसाक्षिन्	२१	गोसर्ग ...	२३	तिलै दन....	१७१
कापिल	१३०	गौरिला	६७	तेजसां राशि ...	२१
किजल्क....	२२४	ग्रंथ	२३८	त्रयीतनु	२१
कुट्टिम	६२	घ.		द.	
कुतुप	२४६	घूक	९७	दंतक	६६
कुंभिनी	५७	घ.		दर्प	४१
कुंभानिस....	४६	च.		दव	१२
कुलंकपा....	५४	चंद्रशाला...	६२	दारक	२२४
कुसर	१७१	चर्चिका....	१०	दाहक	७
केगन्न	११२	चर्ममुंडा....	१०	दाव	१२
कोमारी	९	चटु	३५	दिनमणि....	२१
कौशिक,	{ ९७	चाटु ...	३५	दिवसपृथिव्यौ	६०
	{ १३६	चामुंडा	१०	दिवांध	९७
क्षमा ...	५७	चार्वाक ...	१३०	दिवाभीत...	३७
क्षार	१२	चित्तेद्रिक....	४१	दुरेवणा ...	३५
क्षारसागरकन्यका.	७	चित्रकाय....	९४	देशिक	२२४
क्षौर	१३८	चिरं जीविन्	९८	द्विरसन	४६
ख.		चोद्य	३५	द्वैपायन	१३६
खद्योत	२१	छ.		द्यावापृथिव्यौ	६०
खनक	९६	छायानाय....	२१	द्यावाभूमी	६०
खेटक	२२४	ज.		घ.	
ग.		जगच्चक्षुस्	२१	घानिधि....	२१
गजारि	८	जगती	५७	घात्री	५७
गंजा ...	६०	जलशायिन्	६		
		जालिक....	२२४		
		जैमिनीय...	१३०		

शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्	शब्द	पृष्ठम्
न		प्राग्भय	१६	महीसूनु	१६
नाभिजन्मन्	१५	प्राचीन	१६	मोहेश्वरी	९
नायक	२२३	प्राचेतस	१३६	मीमांसक	१३०
नासामल	११५			मृगद्विष ..	९४
निघन	५	फ		मृगद्विष्टि ..	९४
निवहाम	६२	फणघर	४६	मृगरिपु	९४
निर्झारणी	५४			मृगाशन	९४
निशाटन	९७	ब		मृत	२३८
नैयायिक...	१३०	बलाहक	७	मुडन	१३८
प		बुध	१६	मेघपुष्प	७
पचनख	९४	बृहस्पति	१६	मेघाध्वन्	१५
पद्माक्ष	२१	ब्रह्मवादिन्	१३०	मैश्रावरुणि	१३६
पर्यक	२२३	ब्राह्मी	९	मौकुलि ..	९८
पाक	२२३			म्रक्षण	१७१
पादवल्मीक	११२	भ			
पाराशर्य	१३६	भग	२१	र	
पिंडू	११५	भणित	२६	रक्षा	१२
मुठरीक	९४	भद्राकरण	१३८	रजोमूर्ति	५
मुध्वज	९६	भसित	१२	रत्नगर्भा	५७
पुराणपुरुष	६	भस्मन्	१२	रतिकूजित	३६
पूर्व	२५	भानुज	१६	रावि	१६
पेटक	२२४	भार्गवी	७	रमा	६०
पौष	४५	भावना	२९	रोदसी	६०
पौषी	२४	भूतधात्री	५७	रोदसी	६०
प्रकपन	१३२	भूति	१२	रोधीवका	५४
प्रकटोदित	३६	भोग	४६		
प्रणिधान	२९	भोगघर	४६	ल.	
प्रत्यग्भय	१६			लपिमन् ...	९
प्रतीचीन	१६	म		लयणाकर	६०
प्राक्काम्य	९	मद	४१	लुचक	२२३
प्राप्ति	९	मनोहारिन्	३६	ले लहान	४६
प्रद्योतन	२१	मद्र	३८	लोकजननी	७
प्रभात	२२	महानट	८	लोकवपु ..	२१
		महाभिल	१५	लोकबाधव	२१
		महावात	१३	लोकामतिक	१३०
		मदिमन्	९		

श्री खरतरगच्छीय ज्ञान मन्दिर, जयपुर
शाब्दानुक्रमिका.

पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
व.	वैष्णवी ९	समाधान २९		
हुताशन ... १२	व्यास १३६	सरस्वती ... ५४		
ज ... ७	व्युष्ट २३	सांख्य १३०		
न ... १३८	श.	सागरांबरा ... ५७		
रण ... २३२	शाकशाकट ... १६३	सिंघाण ११५		
शित्व ... ९	शाकशाकिन ... १६३	सुग्रीव ७		
गाराही ... ९	शाप ३५	सोत्प्रास ३६		
पार्थक ... २२४	शिरोगृह ६२	सोछुंठन ३६		
पाल्मीक ... १३६	शुक्र १६	सौगत १३०		
वासना ... २९	शुल्क २२४	स्मय ४१		
विधु ... १६	शून्यवादिन् ... १३०	स्वर्मान् १३		
विपुला ... ५७	शैव्य ७	स्याद्वादिक ... १३०		
विभात्त ... २३	श्राव्य ३६		ह.	
विमर्श ... २९	श्लाघा ३५	हसवाहन... .. ५		
श्यामिन् ... १३६	श्लोपद ११२	हरि ४६		
... ३६	स. ३६		
... ७६	सत्यक ५			
... २३२	सत्यवतीसुत्र ... १३६			
... १३०	सत्य...			
... १३०	सत्य...			

इति समाधामरके शाब्दानुक्रमिका समाप्ता ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
“ लक्ष्मीवेंकटेश्वर ” छापाखाना,
करल्याण-मुंबई.

